घरके मरतेहैं तब उनकी हड्डियां इसमें डालतेहैं उनका यह निश्चय है कि यह कर्म्म करनेसे मृतक बैकुण्ठको जाताहै इस नदीसे और सोमनाथसे दो फ़रसख़ अर्थात् ६ मीलकी दूरीहै और इस नदीके पानी अर्थात् गंगाजल से अपने देवालयको धोतेहैं ॥

(मलक नदी) यह नदी बुग़दादमें बहुत पुरानी है प्रथम नदीको दाऊदके बेटा सुलेमानने खुदवायाथा और कोई २ कहते हैं कि सिकन्दरने खुदवायाथा ॥ कहते हैं कि यह नदी बर्षके दिनों की संख्यानुसार ३६० तीनसौ साठ गांवों पर है और इसीलिये ऐसी नदी बनवाई कि जो कदाचित् दुर्भिक्ष हो तो एक गांव की आमदनी एक दिनको होजाय और ऐसा ही प्रबन्ध हज़रतयूसुफ़ सद्दीक़ ने मिश्र में किया था ॥

(महरान नदी) यह नदी सनदमेंहै इसकी चौड़ाई दजला की बराबर है पूर्वसे दक्षिणका कोण लेतीहुई आती है और पछांह की ओर बहकर फ़ारसके समुद्रमें गिरतीहै इस्तख़रीने लिखाहै कियह नदी उस पहाड़से निकली है जहांसे कोई २ शाखाजेहून नदी की निकलीहैं यह नदी मुलतानकी सीमापर प्रकट हुईहै और मंसूरा पहुंच कर दरिया मदीनतुलदबील में गिरती है मदीनतुलदबील नदी अति रमणीक और उसका पानी दजला से उतरके मीठा है कहते हैं कि इस नदी में घड़ियाल बहुतहैं और लम्बाई चौड़ाई में दरिया नीलके नाकसे कुछेक कमहोते हैं जब यह नदी बढ़ती है तो इसका पानी चारोंओर फैलजाता है और उसपानी के सूखनेके उपरान्त वहां लोग खेती करते हैं ॥

(कमरां नदी) तोहफतुलगरायब के ग्रन्थकर्त्ता ने लिखा है कि कमरांकी धरतीमें एक बहुत बड़ी नदीहै जिसपै पत्थरका पुलबना है और यह पुल पत्थर का एकही टुकड़ा काटाहुआ है एक अद्भुतबात यहहै कि एकसे हज़ारतक जितने आदमी इसपर से उतरनेलगते हैं उन सबको वान्ति होनेलगती है जब तक उतर न जायँ तबतक वान्ति बन्द नहीं होती है

जो इस नदीमें बुराईकी वस्तुहैं उनको वे लोग दूरकिया करते हैं इमाम जाफ़रसादिक़ ने वर्णन कियाहै कि जो फ़रातका पानीपीके ईश्वरकी प्रशंसा करै तो अवश्य आरोग्यता होगी और इमामजाफ़रअलेहुस्सलाम ने भी कहाहै कि फ़रात के पानी का बड़ाप्रताप है जो लोग इसके गुणको जानते तो कभी इसके किनारेसे दूर न होते और इसमें स्नान करके शरीर निरोग्यकरते॥ सदयरहमतुलअलेह ने लिखाहै कि हजरत मुशकिलकुशाके ख़िलाफ़त के समय में फ़रात नदी कुछ चढ़ीथी उसमेंसे एक बड़ा अनार निकला सो हज़रतको मिला जब उसको तोडा तो उसके दाने बहुत बड़े २ और बहुत थे यहां तक कि मुसलमानो में बांटेगये॥ बहुधा विद्वानों के निकट यह बात बहुत पुष्टहै कि वह अनार बैकुण्ठका था॥

(करनदी) यहनदी आरमिनियां और अरानके बीचमें है और एजाजके देशसे निकल मदीना तफ़लीस, हुबरा और शमकूर होके बरवातक पहुचती है और फिर रसनाम नदीमें जो उससे छोटी है मिलतीहै और वहां से दरिया ख़िरजसे मिल सोरमा नामगांवको जो बरवासे तीन फ़रसख़ परहै जातीहै॥ इसपै बहुतसे एक मतिहै कि यहनदी क्षेमकीभरीहै जो कोई पशु अथवा मनुष्य इसमें गिरता है वह कुशलपूर्वक निकल आता है॥ किसी २ फ़कीहा, अर्थात् क़ुरानादि ग्रन्थ जाननेहारे ने अजायबुलमख़लूकातके ग्रन्थकारसे वर्णन किया कि हमने करनाम नदीसे डूबतेहुये मनुष्यको बाहिर निकाला तो उसमें कुछेकप्राण बाक़ीथे जब उसने सूखेकीबायुखाई तो आंखखोलके पूछने लगा कि यह कौन ठौरहै हमने उत्तरदिया कि बक़हवां॥ उसने कहा कि मै कज़ाफ़ीमें डूबाथा जो यहांसेपांच दिन राहकी दूरपर है अन्तको उसने भूखकेकारण भोजन मांगे तो लोग उसके वास्ते भोजन लाये इतने में एक संजिस दीवारकेनीचे वह बैठाथा वह गिरपरी जिसके नीचे वह दीन दब मरा॥

(गंगानदी) यह नदी हिन्दुस्तान से अति बड़ीहै हिन्दके निवासियोके निकट यह नदी अति पवित्र है जब हिन्दुओ के बड़े और

कहता है कि प्रथम इस यंत्रको हज़रत यूसुफ़ने बनवायाथा अब-दुलरहमन अबदुल्ला के बेटा अबदुलहुक्म के पोताने लिखा है कि जब मुसल्मानों ने मिश्रको जीता तब मिश्रदेश निवासी अमरबिन-उलनासके सन्मुख जाय प्रार्थना करने लगे कि हमारे देश में यह रीतिहै कि जब क़वती के महीनोंमें से नोवहका महीना आताहै तब उसकी बारहवीं रात्रीको किसी की कुमारी कन्याको उसके रक्षक से मांगलेते हैं और उसको बस्त्राभूषण से नखशिख अलंकृत कर नीलनदीमें बोरदेतेहैं तो उससमय नीलनदी लहरें लेतीहै और जो यह रीति न कीजाय तो नीलनदी बहती नहीं इसपै आसके बेटा उमरने उत्तर दिया कि मुसल्मानोंकी अमलदारीमें यह बातनही होसक्ती वरन मुसल्मानोंका यह धर्म्म है कि पुरानी चालोंकोमिटा दें यह आज्ञासुन मिश्र निवासी चुपके होरहे यहांतक कि उसके उपरान्त माहनोवह और माहअबीव और मनेरीतीनमहीनाबीतगये और नीलनदीमें बाढ़ न आई अन्तको प्रजाने देशछोटनेका अनुमान किया यहबातउमरने सुनी तब उमरने उमरबिनलखताब के नाम एक बिनयपत्र लिखा वहां से उत्तर आया कि जो तुमने लिखा कि मुसल्मानोंको पुरानीचालोंसे कुछ प्रयोजननहीं सो यहीठीकहै अब हम एकरुक्कानीलनदीकेनाम लिखतेहैं सो तुम नीलनदीमेंडालदेना ईश्वरनेचाहा तो नीलनदीबढ़ैगी॥ उसमें यहलिखाथा कि ईश्वरके धन्यवादउपरान्त नीलनदीको बिदितहो कि जो तू अपनी इच्छासे बहतीहै तो अबतू कभी न बहना और जो तू ईश्वरकी आज्ञानुसार बहती है तो ईश्वर से प्रार्थना कर जिसमें तुझे बहावें निदान उमरबिनुलनास ने पहुंचतेही उस पत्रीको नीलनदी में छोड़दिया और वही दिन मिश्र निवासियों ने अपने चलने का दिन नियत कियाथा फिर उसीदिन ईश्वरकी आज्ञासे नीलनदीको बढ़ते देखा और १६ सोलह ज़िरातक बाढ़ पहुंची इस नदीमें सात खाड़ीहैं॥ खाड़ीस्कन्दरिया१ खाड़ीदिमियात २ खाड़ीमनफ़३ खाड़ीमिही ४ खाड़ी अलफ्यून ५ खाड़ी शरीदूस ६ ये खाड़ी सदैव बहा करती

(नील नदी) कहते हैं कि इस नदीसे बढ़कर दुनियां में कोई नदी नहीं है यह नदी एक महीना की राह तक तो मुसलमानों के देशमे बहती है और दो महीनाकी राहतक तो वह देशमें बहती है और चार महीनाकी राहतक जंगल मे वहती है और वहांसे बलादकिस्म खारिजखतउस्तवा से प्रकट होती है इसके सिवाय और कोई नदी ऐसी नहींहै जो दक्षिणसे उत्तर तक आतीहो और इसी प्रकार यह भी जानना चाहिये कि कोई नदी और ऐसी भी नहीं जो ठीक गर्म्मियोमे बढ़े॥ कसाईने कहाहै कि इसके अद्भुत पदार्थों मेंसे एक यह है कि इसके किनारे वालों को वर्षाकी कभी ज़रूरत नहींहोती अवर्षणके दिनोमें भी इस नदीके चारोंओर जल रहता है और गर्मियों में इसके बढ़नेका यह कारण है कि उस ऋतु में ईश्वरकी आज्ञासे उत्तरकी वायु चलाकरती है उसके कारण समुद्र इसकी ओर को अपनी लहरें फेंकता है तिससे यह नदी बढ़ती है और वह खारी पानी इसमें आके मीठा होजाता है जब नीलनदी अपने दो किनारो को खेती करनेके समय पानीसे भरचुकती है तो ईश्वर की आज्ञा से दक्षिण की वायु चलती है तो फिर वह वायु इस नदीके पानीको समुद्र में करदेती है॥ वहांके निवासियोने एक यंत्र बनायाहै जिसके द्वारा नीलनदीके पानीकी बाढ़का माप करलेते हैं उसीके अनुसार खेती करतेहैं, यह यंत्र एक लम्ब है जो नील के किनारे एकहौजमे पड़ारहताहै और उसमें एक पोला नल लगाहै जिसमेंसे नदीकापानी उसहौजमे आया करताहै और उस यत्र में अधिक न्यून जाननेके हेतु रेखा बनी हैं जिस रेखातक पानीपहुचा उसीके हिसाबसे नदीका घटाव बढाव जानलेतेहैं जो चौदहज़िरा तक पानी पहुंचा तो जानलेतेहै कि अबकीसालपानी मध्यमहै सो खेती भी मध्यमही होगी और जो सोलह ज़िरातक पानी पहुंचा तो खेतीकी अधिकता मानते हैं और जो अट्ठारह ज़िरापर पानी पहुंचा तो मालूम हुआ कि बहुतही अच्छा सम्बत होगा बिदित हो कि ज़िरा एक प्रकारकी माप २४ अंगुलकी होतीहै॥ कसाई

(हीरमन्दनदी) यहनदी सजेस्तानदेशमें है कहते हैं कि यहएक बड़ा आश्चर्य्य है कि इसनदीमें एकहज़ारनदी और मिली हैं और एकहज़ार नहरें इसमें से काटीगई हैं परन्तु न तो उन नदियों के मिलनेसे कुछबढ़ीही और न उन नहरोंके बाहर निकलजानेसे कमतीही हुई दोनों दशामें एकरस रहतीहै ॥

व्याख्यान कूआं और सोतों के विषयमें ॥

विद्वानों के निकट पृथ्वीमें नन्हे२ छेद बहुत हैं उनमें केवल वायु और जल होते हैं जब वायुमें ठण्डअधिकहुई तो वह पानी होजाती है और बहुधा ऐसा होता है कि जो किसी दूसरीओरसे प्रथम के इकट्ठेहुये पानीमें अधिकताहुई और इसतरफ़से उसे सहायता मिली और अगलेछेदोंमें समा न सकी उसदशा में जो पृथ्वी नर्महुई तब तो पृथ्वीआपहीआप फटजातीहै और पानी बाहिरकीओर निकल परताहै और जो वहां पृथ्वी कड़ीभई तो वहां कूआंकेसमानखोदने की आवश्यकता होतीहै ॥ अबूउलरैहांख्वारजिमीने अपनी किताब आसारवाक़ियामें लिखाहै कि यमनमें ऐसीठौरहै जहां लोग कूआं खोदतेहैं बीचमें एक ऐसापत्थर अवरोधक पातेहैं कि उसके नीचेसे पानीनिकलसक्ताहै तो वे लोग उसपत्थरमें लोहेकेयंत्रोंसे छेद करते हैं और लोहेकी चोटके शब्दसे पहचानते हैं कि इस पत्थरके नीचे पानीहै या नहीं तब पहिले तो उसमें परीक्षा लेनेकेलिये छोटासा छेदकरतेहैं जो वह परीक्षाठीकहुई तबतो खोदके बनालिया और जो देखाकि इसमें पानीनहीं केवल पोलाहीहै तो चूनाकी गचसे बंदकर दिया क्योंकि ऐसेठौरोंपर बहुधा सोताहोकर बड़ी वहियाहोजाती है और जो उसमें बहनेकी शक्ति नहीं है तो उसकी पन्न करते हैं अर्थात् उसकोखोदके ठीककरलेते हैं पृथ्वी के नीचेके सोता और पहाड़ीगड़होंमें जिनमें लोन फिटकरी गुगुर अथवा बारूत होतीहै उनमें यहभेद है कि जाड़ेके दिनों में पृथ्वी के नीचे पानी गरम होजाता है और गर्मी में शरद सो उसका कारण यह है कि गर्मी और शरदी दोनों एक दूसरे के बिपरीति हैं एकही समय में एक

हैं इन्ही खाड़ियोंसे सम्पूर्ण मिश्रदेश जलसे सम्पन्न रहताहै जब नीलनदी की बाढ़ पूर्वोक्त यन्त्रतक पहुंचती है तो इन खाडियों को तोड़देतीहै और पानी बहनेलगताहै यहां तक कि सम्पूर्ण देशमें जलही जल होजाताहै जब वह पानी घटने लगताहै तो बीजबोने का आरम्भ होताहै और वर्ण २ के पशुओं के द्वारा खेत जोतने लगतेहैं ठीक निकलनेकी ठौर नीलकी जजमेंहै वहांसे निकलहवशा और नोवह होतीहुई दो पहाड़ोंके बीचमें से निकली है इन पहाड़ों के बीचमें बहुधा गांवबसेहैं और गर्मियोंकी ऋतु मेंइस नदीके बढ़ने का यह हेतु लिखाहै कि इसी ऋतु में जंगबार देशमें बर्षा अधिक होतीहै और बहुधा वहांके शहरोंमें बहियाका जोर होताहै निदान अनेक राहोंसे जब वह पानी नीलनदीमें गिरताहै जो उस समय की बाढ सोलह जिरातक पहुंचे तो उस समय लोग सब नहरों के द्वार खोलदेतेहैं तो उनमे पानी बहने लगताहै और जब पानी देश में यथोचित पहुच जाताहै तो फिर वह पानी सिमिट के नीलनदी में चलाजाताहै उस समय मिश्रकी धरती पानीसे अत्यन्त सम्पन्न दृष्टि आतीहै॥ इस नदीकी अद्भुत सृष्टिमें से रादानाम एक प्रकार की मछली होतीहै जिसका बर्णन हम ऊपर करआयेहैं जिसकेछूनेसे मनुष्यके अंगमें कँपकँपी आतीहै सो इसदेशमें एक प्रकार का साग होताहै जोउसकोहाथमें मलकर रादाकोछुये तोफिर कँपकँपी न आवे और नीलके अद्भुत सृष्टिमे एकजीव नहनग अर्थात् नाक है जब कोई मनुष्य हाथमुहँधोनेकेलिये नीलकेकिनारेजाताहै तो यहचांडालजीव पानीके नीचे२ निकटआजाताहै वहां उसदीनको लीलजाताहै॥ इस नदीको तिरस्कार करनेके विषयमें एककविने लिखाहै कि नाक के डरके मारे नीलनदीके पानीको कभी आंखसे न देखै इसका प्रयोजन यहहै कि उसके किनारेपै जाके न देखै किन्तु घरमें जो बर्त्तनो में है उसे देखै॥ इस नदी में एक ठौर है जहां मछलियां आपही आप इकट्ठी होती हैं उसदिन जो वहांजाय जितनीजी चाहै अपने हाथसे पकड़लावे परन्तु यहदशा वर्षभर में एक नियत दिनको होती है॥

(सोतास्कन्दरिया) यह सोता प्रसिद्ध है इसमें एकप्रकारकीसीप होतीहै जिसका मांस पकाके खातेहैं और उससीपका सोरवा पीने से कुष्ठ अच्छा होजाताहै ॥

(सोताईलावस्तां) तोहफ़तुलगरायबकाग्रन्थकार लिखता है कि इस्फरआईन और जरजानकेबीचमें एकगावँ ईलावस्तां है वहां एक खोहहै वहींसे यहसोता निकला है और इतना बड़ा सोता है कि इसमें पनचक्की चलतीहै परन्तु ऐसाहोताहै कि दूसरे तीसरे चौथे अथवा पांचवेंमहीने इसका बहना बन्दहोजाता है उससमय वहां के लोग गाते बजाते वहां जातेहैं और उस सोता के आगे बहुतसा नाचरंग करतेहैं तो नये सिरे से वह फिर बहता है ॥

(सोतावादखानी) तोहफ़तुलगरायब का ग्रंथकार लिखता है कि यहसोता दामग़ान की सीमापर है और वहां कहन नाम एक गावँहै वहां एकसोताहै उसका नाम वादखानी है सो जब वहां के लोग चाहतेहैं कि वायु वेगसे चले तब दश कपड़ा रजरक्त के बूड़े भये उसमें छोड़देतेहैं तो वायुबेगसे चलने लगती है और जो उस पानीको पीवें तो पेट में दर्दहोने लगता है और एकगुण और है कि जो सोते से बाहिर पानी लेजाना चाहैं तो थोड़ीदूर चलकर पानी पत्थर समान जमजाता है ॥

(सोताबामयान) तोहफतुलगरायब के ग्रंथकार का लेख है कि बामयानदेश में एकसोता है उसकेमुहँ से पानी बहुत निकलता है उससे गन्धक की बासआतीहै और उसके मुहँ के पास बादल की सी गरजन सुनाई देतीहै इसके पानी में स्नानकरना देहीकी चरक को दूरकरताहै और जो इसकापानी किसीबर्त्तन में भर मुहँबांधके धररक्खैं तो एकरात्रि दिनमें खट्टा और करुआ मदिरा के समान होजाता है और उससमय जो आग उसको दिखावैं तो तत्काल मदिरा के सदृश भकसे उड़जाता है ॥

(सोतावकर) यह सोता अक्का के पासहै मुसल्मान यहूदी और ईसाईलोग इसकेदर्शनकरतेहैं और कहतेहैं कि हजरतआदने जिस

ठौर इकट्ठी नहींहोती इसलिये जाड़ो में जो पृथ्वीके ऊपर शरदी होती है तो गर्मी पृथ्वीके नीचे जारहतीहै तो जहांकहीं गन्धक की खानहोतीहै उसकी गर्मीसे पृथ्वीकी तरी सूखजाती है और पानी भी उसीसे गर्महुआ करताहै जो कदाचित् ऐसानहीं है और पानी को शरद वायुलगी तो अधिक शरदी के कारण पानी गाढ़ाहोजाता है तो वही पारा अथवा क़ैर अथवा नुफ्त होजाताहै और ये उसके बिभाग वायु और माटीके गुण विभाग के कारण होजाते हैं इसलिये अवकुछ अद्भुत कुआं और सोतोकावर्णन वर्णमाला के अक्षरो के क्रमानुसार कियाजाता है॥

(सोता आज़ुरबायजान) तोहफ़तुलगरायबमें लिखाहै कि आज़ुरबायजानमें एकऐसासोताहै जिसकापानी निकलकर पत्थरसमान कड़ाहोजाताहै लोग मिट्टीकेसमान उसकेबर्त्तनबनाकेपानीभरते हैं तो इस रीति से पत्थर के बर्त्तन बहुत जल्द तैयारहोजाते हैं॥

(सोताउर्दीबिहशत) उर्दीबिहशत नाम एक गावँ क़जवीन से तीनफ़रसख़ की दूरीपरहै वहां एकसोताहै जिसकापानी जो कोई पीवे तो बड़ा कराल जुलावहोजाय बसन्तऋतु में बहुधा क़जवीन आदि शहरों के लोग जुलाब लेने के हेतु यहां इकट्ठे होते हैं और एकगिलास पानीपीके पेटका मल साफकरते हैं उसमें एक अपूर्व बात यहहै कि जो इसपानी को क़जवीनादि शहरों में लेजायँ तो उसमें वह गुण नहींरहताहै॥ अजायबुलमख़लूकात का ग्रन्थकार लिखताहै कि मैंने बहुधा क़जवीन के निवासियों से सुना है कि क़जवीन और इस सोता के बीच में एक नदी है जब आदमी उस सोता के पानी को लेकर उस नदी के पुलपर से जाते हैं तभी उसकागुण जातारहताहै॥

(सोतारावन्द) यहसोता सैस्तानकी धरतीमेंहै इसमें अपूर्व बात यहहै कि इसमें नरकुल पैदाहोता है सो जितना नरकुल पानी के भीतर रहता है उतना तो पत्थर का होताहै और जितना पानी के बाहिर रहताहै वह नरकुल रहताहै॥

है जहांसे सोता निकला है उसका पानी अतिही मीठा और स्वादिष्ट है और उसका रंग श्वेत है पीनेवाले को कुछ हानि नहीं करता है परन्तु जो उसको और ठौर लेजाओ तो जमके पत्थर होजाता है॥

(सोतादादाव) इससोता में एकघास ऐसीहोती है कि जो कोई वहां पानीपीने को जाय उससे लिपट जाती है और उसको लौटने नहींदेती और जितनाही अधिक छुड़ानाचाहै उतनाहीं अधिक और लिपटती जाती है परन्तु हां जो वह विकल न होय थोड़ीदेर चुप साधे तो आपही आप छूटजाती है॥

(दाराक़नामसोते) अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से शेख़ उमरइसलमी ने वर्णनकिया कि ये कई एक सोते एकही पहाड़ से निकले हैं कभी २ ऐसाहोताहै कि उसपहाड़ में अग्नि प्रज्वलित होतीहै और लूकों के रंग लाल पीले हरे और सफ़ेदहोते हैं और वह पानी दोहौजों में इकट्ठाहोता है उनमे से एक मे तो पुरुषों के वास्ते और दूसरे मे स्त्रियो के लिये इनसोतों मे कफ़वाला मनुष्य जो स्नानकरै तो अच्छा है परन्तु जो कोई क्रम २ से धसे तब तो उसको अच्छाहोताहै और जो एकसंगकूदपड़े तो वह जलजाताहै॥

(सोतारासुलनाऊर) इसके निकट एकगावँ जरा नाम मूसल के पूरबओर है वहीं एकसोता फुहारे के सदृश है उसका पानी अत्युत्तम उसमें कोकावेली फूलती है इसगावँ के अन्नादि बहुधा उत्तर की ओर बिकने को आते हैं॥

(सोताज़राबन्द) यह सोता आरमिनियामें बहीराके निकट है यहसोता अतिलाभदायकहै जो पशु अथवा घायल मनुष्यइसमेंहोके निकले तो तत्काल अच्छा होजाताहै किसीप्रकारके घाव का दुःख नहींरहता बहुधालोग इसप्रतीतिकिये इस सोतामे दूरदूरसे आतेहैं॥

(सोताज़ार) यह सोता बहरमिनियां के निकट है बहरमिनियां और बेतलमुकद्दस के बीच में तीन दिन की राह की दूरी है जार हज़रतलूत की बेटी का नाम था उसकी मृत्यु यहांहींहुई इसलिये उसीके नामसे यहसोता प्रसिद्धहुआ॥

बैलसे खेती कीथी वह बैल इसी सोता से निकला था और इस सोतापर एक मुशहिद है जिसका सम्बन्ध हजरतअमीरुलमोमिमीन से करते है ॥

(सोतातिराक़) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार ने लिखा है कि यहसोता मामयान मे है जब कोई जीव इसकेपानीसे अपनीप्यास बुझाना चाहताहै तब वह पानी नीचे होजाताहै जब वह जीव पानी के लिये नीचे उतरताहै तो एकसंग भरआता है थोड़ीदेर उपरान्त उसजीव की हड्डियां पानी के ऊपर तैरतीहुई दृष्टि आती हैं मांस का कहीं चिह्न नहीं रहजाताहै ॥

(सोताजाजरम) यह सोता जाजिरम और इसफ़रास के बीचमें है बहुतसे खुरासानी कुरानादि जाननेवालों के निकट इसमें खाज वालो को स्नानकरना उपयोगी है ॥

(सोताजाज) तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकर्त्ता कहताहै कि जब आसमान मे मेघ नहो तो उस समय उस सोता में भी पानी की एकबूंद नहीहोती और आसमान पै बादल होता है तो सोता भी पानीसे बराबर भराहोताहै बहुधा लोगोने इस परीक्षा को अपनी आंखों से देखा है ॥

(सोताजबलुद्दीलम) तोहफतुलगरायब के ग्रन्थकार का लेख है कि शीराजदेश मे किसी पहाड़ के पास यह सोता है इसका पानी गर्मी की ऋतुमें बरफ़ के समान ठण्डा रहताहै और जाड़े में इसका पानी खौलतेहुये पानी के समान गरम रहता है ॥

(सोताजबलसमरक़न्द) तोहफ़तुलगरायबका ग्रन्थकारलिखता है कि समरकन्द की धरतीमें एक पहाड़ है और उसमें एककन्दरा है जिसमें सदैव पानी भरारहताहै वह पानी गर्मीमें तो ऐसाशरद होताहै जैसे बरफ़ और जाड़ो मे ऐसागर्म कि जो कोई उसमेंहाथ डालदेय तो जलजाय ॥

(सोताजबलमुलतिया) अजायबुलमखलूक़ात के ग्रन्थकार से बहुत से कालीना लोगो ने कहा कि मलतिया के निकट एकपहाड़

(सोताशीरगीरां) शीरगीरां नाम एकगावँका है दो राहे के पास मरागां के आगे दो सोते हैं जिनमें से पानी निकल के उवलता है और इनदोनों सोतों के वीचमें एकगजका वीचहै॥ इनदोनों सोतों में से एकका पानी तो अतिशरद और दूसरे का गर्म्म है और यह समाचार हुस्नमरागी के मुखसे सुना॥

(सोतासक़लवा) सक़लवा नाम पश्चिम के समुद्र में अतिबड़ा एकटापू है यहां गन्धकी सोते वहुत हैं जिनसे अग्नि भड़काकरती है और रातको और भी अधिक होती है यहांतक कि दूरदूर तक उसके उजाले राहचलेजातेहैं जो कोई उस आग को वहांसेलेजाय तो तत्काल वुझिजाय॥

(सोतासवारज) यह सोता हज्जाज़ और यमन के बीच एक बिकट जंगल में है जहां किसीको पानीकी इच्छा नहींहै इब्राहीम बिनइसहाक़की कहावतहै कि एकबार यमनदेशीय हज़रतरसाल तमाव के दर्शनों को चले तो दैवयोग से राह भूलगये और तीन दिनतक बिना अन्नजल फिराकिये अन्तको मारेप्यास के प्राणोंकी आशाटूटी तो साथियों में से एकको दोवैतें (चौपाई) उमरायअल-कतीस की वनाईभई सवारज सोता के छिपेरहने के विषयमें याद थीं सो पढ़नेलगा इतने में अकस्मात एक शत्रु सवार दृष्टि आया उसने इनलोगों से पूछा कि ये शेरें किसकी वनाईभई हैं उन्होंने उत्तर दिया कि उमरायअलकतीस की उसने यह सुन के साक्षी दी और सोताका पताबताया निदान उसपते से एक सोता रमणीक पाया वहां सबोंने जलपानकिया और वहुतसा अपनेसाथ लैलिया वहांसे हज़रत के पास पहुंच सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णनकर कहने लगे कि उमराय अलकतीसकी दोशैरोंने हमसबो के प्राणवचाये इस पै हज़रतने कहा कि उमरायअलकतीस संसारमें तो बहुतप्रसिद्धहुआ तो क्या मरने पै उसका नामहीं मिटिजायगा अन्तसमय जव वह ईश्वर के सन्मुख आवेगा तो अग्निसे जलताहुआ एकतख्ता शेरों का उसके साथहोगा और उनशैरों का अर्थयहहै कि यद्यपि पानी

(सोतासलवां) यहसोता वैतुलमुक़द्दस में है बहुधा लोग इसके किनारे उतरते हैं इब्नुलवशार ने लिखा है कि सलवां नाम एक मुहल्ला वैतुलमुक़द्दस मे है यहां बाग़ बहुतहैं जो हज़रत उसमानने ईश्वर उसपै प्रसन्न हो कृष्णार्पण किये थे जो इस सोता का पानी किसी दुःखी अथवा शोचवश को पियावें तो तत्काल आनन्द और प्रसन्नचित्त होजाय ॥

(सोतासमीरम) शीराज़ और अस्फ़हान के बीचमें एक बड़ागावँ है जहां सोतोंका अधिकत्व प्रसिद्ध है इसमें अपूर्व बात यह है कि जहां खेतो में टीडी गिरती है वहां इस सोता का पानी इस रीति से लातेहैं कि वर्त्तन को न तो पृथ्वीपर रक्खें और न पीठिफेर के देखें और उस वर्त्तनको टीड़ियोके पास ऊंचेपर टागदें तो तत्काल एक प्रकार के जीव सोदाई नाम हजारों आय के सब टीड़ियो को खाजाते हैं और यहबात कुछ झूंठनहींहै वरन अजायबुल्मखलूक़ात का ग्रन्थकार कहताहै कि मैंने अपने हाथसे पानी लेकर क़ज़वीन देशमें टीड़ियोंको दूरकिया है ॥

(सोतास्याहसंग) तोहफ़तुलगरायब का लेखहै कि जरजान में एक सगस्याह नामक एक गावँ है और वहा एक टीला के ऊपर सोताहै जिसका पानी मनुष्यो के ख़र्च मे आता है और जिस राह से उससोता को जातेहैं उसराह में कीडे बहुतहैं सो जो कदाचित् किसीकीडापर पावँपरगया तो उस सोताका पानी कडुआहोजाता है एक अद्भुत बात वहांकी यहसुननेमे आईहै कि उसके आसपास की स्त्रियां जब उस सोताकापानी लाना चाहतीहैं तो वीस अथवा चालीस स्त्री इकट्ठीहोके एक मनुष्य को आगे भेजतीहैं जिसमें वह मनुष्य झाडूसे बहार के कीड़ा राहके साफ़करदे और वे स्त्री पंक्ति बांधके आगेपीछे चलतीहैं और पानीभरके फिर उसीरीतिसे लौट-तीहैं और जो धोखेमे भी पावँ किसी स्त्री का किसी कीड़ापर पर जाय तो सम्पूर्ण स्त्रियों का पानी कडुआ होजाय फिर वह पानी फेंक के दोबारा लाना पड़ताहै ॥

कामेंहै और अबूहामिद कहता है कि यह सोताग़रनातामें है परन्तु यह सम्पूर्ण ठौर इन्दलसहीमें है ॥

(सोताग़रना) ग़रनाके पास एक ऐसा सोताहै कि जो उसमें कोई उच्छिष्टवस्तु छोड़ें तो तत्काल और का औरही रंगदृष्टि आने लगै मेघ बरफ़ पत्थर और वायुके झकोरा आनेलगें और जबतक वह उच्छिष्ट उसमें से दूर न कीजावे तबतक यथापूर्वक न होगा इसी बातमें बातहै कि बादशाह सुबुक्तगीं ने ग़रनाको जीतने का अनुमान किया तो जब यह बादशाहग़रनाको चलनेलगता तो तभी यहां वालेलोग उस सोतामें कोई भ्रष्ट बस्तु छोड़देयँ जिसके कारण वायु मेघ गर्जन, बिजली आदि उत्पात होने लगें और बादशाही सेना इसभयको सन्मुख न होनेके कारण फिर लौटजाता अन्तको बादशाह पै इसका कारण बिदित होगया तो बादशाह ने ऊपरही ऊपर कुछ सेना के आदमी भेजि उस सोता की रक्षाकरी तिस उपरांत आप दलसाज ग़रना पै चढ़ा इस रीतिसे उसने इसदेशको आधीन किया ॥

(सोताग़राव) यह सोता रूमदेशमेंहै बहुतेरे कहते हैं कि इस सोता में एक बार स्नान करनेसे बर्ष पर्य्यन्त शरीर में रोग नहीं होता सम्पूर्ण बर्ष आनन्द पूर्वक बीतता है ॥

(सोताफ़रावर) खुरासानमें एक गांव फ़रावर नामहै बहुतों का वाक्य है कि इस सोतामें स्नान करने से सब प्रकार के रोग जाते रहते हैं ॥

(सोताक़ोतूर) यह किला आज़रबायजान में है शरीफ़महम्मद बिनजुलफिक़ारउलवीने अजायबुलमखलूक़ातके ग्रन्थकर्त्ता से वर्णन किया कि इसक़िलेके निकट कुछ सोते हैं जिनका पानी अतिहीगर्म है जो लोग किसी असाध्यरोग में फसेहों उनको इनसोतोंमें स्नान कराना उपयोगी है ॥

(सोताकंका) यह सोता आज़रबायजान में है महम्मदबिनजुलफिक़ार ने अजायबुलमखलूक़ात के ग्रन्थकार से कहा कि इस बड़े

इस सोता में अतिस्वच्छ और स्वादिष्ट है परन्तु राह उसपै जाने की ऐसी भ्रमित और कण्टक है कि वहां पहुंचना अति कठिन है॥

(सोतातवरिया) तवरिया की धरती में एकगावँ है वहां सात सोते लगातार हैं ये सोते सातवर्ष तक तो वहते हैं और सातवर्ष तक सूखेरहते हैं सदा यहीरीति रहती है॥

(सोताअब्दुल्लाबाद) हमदां और कजवीन के वीच एकअब्दुल्लाबाद गावँ है वहा एकगड़हा है वहींसोताहै जिसकेपानी निकलने में वड़ी गर्मीहोतीहै एक मरद के कदकी वरावर ऊंचा उठताहे जो पानी के ऊपर मुर्गी का अण्डारखदेयँ तो वहअण्डा भी न टूटे और पानी की गर्मीसे पकजाता है और उस सोता के पास एक हौज है उसमें उसकापानी आके इकट्ठा होताहै वहां सकल पथ के मनुष्य जातेहैं और उससोता में स्नानकरके आरोग्य होते हैं॥

(सोताउकाव) यह पहाड़ हिन्दुस्तान मे है तोहफ़तुलगरायब का ग्रन्थकार लिखता है कि जब उकाव वृद्धहोजाता है तब उसके बच्चे उसको उठाकर उस सोतापर बैठारदेते हैं और उसको स्नान कराके धूपमें बैठारदेतेहै इसकर्म्मसे उस वृद्ध उकाव के पुराने पख गिरजातेहै और नयेसिरे से पख निकलते हैं और नयेसिरे से युवा अवस्था होतीहै पर और वाल नये निकलते हैं॥

(सोतागरनातिया) ग़रनातिया एक शहर है इन्दलस देशमेंहै अवूहामिद इन्दलसी ने लिखाहै कि ग़रनातिया मे एक कनेसा है जहां जैतून के वृक्षलगे है सो इसके दर्शनोको इन्दलसके निवासी आया करते हैं और वर्षमें जो दिन इसके दर्शनोके लिये नियत हैं उसदिन उससोतामें पानी वहुत होजाताहै और जैतून में फूलफल प्रकट होते हैं और उसीदिन जैतून बढ़कर काला होजाताहै उस दिन जो कोई इस सोता से पानी अथवा जैतून लैजाय तो सब प्रकार के रोगसे आरोग्य होजाय ग्रन्थकार से फ़क़ीहा अब्दुलसईद बिन अब्दुल रहमन इन्दलसीने वर्णन किया कि यह सोता शकूरा मेंहै और अहमद बिनउमरुल अजरी ने कहा कि यह सोता लोर-

सोतामें नानाप्रकारके गुणहैं अर्थात् गर्मीमें तो सरद और सरदी में गर्मपानी रहता है॥

(सोतामुशक्क़) मुशक्क़ नाम हिज्जाज़ में एक जंगलहै इब्न इसहाक की वाक्यहै कि मुशक्क़ और हिज्जाज़में एक छोटासोता है जिससे इतनापानी निकलताहै कि जिसमें एक अथवा दो बड़ी हद तीन सवार पानी पीसक्ते हैं हजरतमहम्मदमुस्तफ़ासलल्लिल्ला अलैहोसल्लम ने तबूककी लडाई मे कहा कि जबतक हम सबलोग न पहुचें तबतक कोई इस सोता का पानी न पीवे परन्तु कुछ दुष्ट लोगोंने आज्ञाको भगकर वहांजाय सबपानीपीलिया जब हज़रत रसूलअल्लाह वहां प्रहुंचे तो पानी न पाया तब हजरतने कहा कि देखो हमने पानी पीने को नहीं कहाथा न तिस उपरान्त प्रबोध किया और अपना पवित्र हाथ उस सोता के पानी पर रखकर ईश्वर से प्रार्त्थना की तो पृथ्वी फटगई और एकशब्द बादल की गर्जन के सदृश उसकुआंमेंहुआ और पानी बहनेलगा तब सम्पूर्ण सेना ने पशुओ सहित आनन्द से जल पानकिया तिस उपरान्त हज़रत ने कहा कि जो तुम जीवो अथवा तुममें से कोई जीवे तो इसजंगलकाहाल सुनेगा और हजरतकी सिद्धाई का यह हालथा कि आंखों के आगे और फिर पीठ का सब हाल बराबरथा फिर जैसा हजरत ने भाषा वैसाहीहुआ ॥

(सोतामनकूर) अबूउलरैहांख़्वारज़िमी ने अपनीकृत किताब आसारबाकियामें लिखाहै कि कैमालदेशमें एकपहाड़ मनकूरनाम है उसपहाडपै एक सोताहै जिसमें एकबीतापानीहै जो उसमेंएक सेना पानीपीवे तौभी एकअंगुलभर पानी कमतीहोना सदिग्ध है और उससोताके पास एक पत्थरहै तिसपै किसीमनुष्यका स्वरूप अंकृत है॥ और हाथोकी हथेली और दोनो सघाके चिह्न तो ऐसे प्रकटहै कि मानो कोईमनुष्य दण्डवत् कररहाहै और एक गदहा के सुमोके भी चिह्न बने हैं जब अरबकेलोग यहां आते हैं तो इन चिह्नों को दण्डवत् करते हैं॥

(सोतामीनाहुशाम) मीनाहुशाम नाम तबरिया मे एक गांव है सालबी ने एक वार्त्ता वर्णन की है कि इसगांव में एक सोताहै जो सातबर्ष तक वह फिर सातवर्ष तक बन्दहोजाता है ॥

(सोतानार) अकहर और अनताकियाके बीच में एक सोताहै एक देखन हारेने अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से बर्णन किया कि जो कोई इस सोतामें नरकुल को डाले तो तत्काल पानी सूख जाताहै अलाउद्दीन बादशाह जब इस सोता पर आया तो लोगों से यहांका वृत्तान्त पूछा तब उसने आश्चर्य करके जो इसकी परीक्षा करी तो ठीकपाया ॥

(सोतानातूल) नातूल नाम मिश्र देशमें एक गांवहै और वहां एक गडहाहै वहांसे पानी निकलता है और जो पानीकी छींटेंउड़ के चारोंओर परती हैं उससे चूहे उत्पन्न होते हैं बहुत से इसबात को अपनी आंखोंकी देखी वर्णन करतेहैं कि यहां माटीमें अद्भुतगुण है कि उस सोतासे जो एक ओरको जो छींटे परतीहैं वह तो तत्काल चूहे बनजातेहैं और दूसरी ओर माटीकीमाटी रहती है ॥

(सोतानिहावन्द) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार ने लिखाहै कि दमावन्दके निकट पहाड़ो में पहाड़ी नदीसे एक सोता निकला है जिस किसीको पानी सींचनेकी आवश्यकता होतीहै तो वह वहां जाके कहताहै कि मुझे पानीकी आवश्यकताहै तिस उपरांत अपनी खेतीकी ओर को जाता है और पानी उसके पीछे २ दौड़ताहै जब उसका खेत सींचजाताहै तब पुकारके कहता है कि बस २ अबमेरी अभिलाप पूरीहुई उस समय वह पानी आपही आप बन्दहोजाताहै अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे हमदा के वृद्ध पुरुपने जो सचाईमें एक उपमाथा कहा कि भतकाल मे बादशाह सैफ़ुद्दीन अल्तमशबलाद और जबालका हाकिमथा और यह प्रदेश भी उसीके आधीनरहा करताथा सो एक बार अपनी सेना सहित इस ओरको निकला उसीके साथमें वर्णन करने वाला भी था उस समय इस पहाड़ के पास आ पहुंचे इतनेमें एक दिहाती

मिला उसने पुकारके कहा कि यहां सम्पूर्ण सृष्टिमें न ख
बस्तुहैं यहां आके तमाशा देखो यह सुनके बादशाहने उसके पं
घोड़ा किया॥

और हमलोगभी साथमेंथे चलतेर उसघोखनिवासीने पहाड़ी नदीपर पहुंचकर फ़ारसीभाषामें पुकारा कि हमारे जौ और गेहूंके लिये पानीकी आवश्यकताहै इस शब्दके सुनतेही बड़े बेगसे पानी बहा और जब खेत सींचचुका तब फिर पुकारके कहा कि बस बस अबमेरी अभिलाष पूरीहुई बस तत्काल पानी लौटपरा, यह देख बादशाहको बड़ा आश्चर्य्य हुआ तब बादशाहने समझा कि किसी मनुष्यकी जबान में यह प्रभावहै कि और भी लोगोंकी परन्तुनहीं जो देखा तो वहांके सम्पूर्ण निवासियोंका काम इसी प्रकार निकलता है जब हमने यह हाल सुना तो हमको निश्चय नहीं हुआ तब उसने सौगन्द खाई कि नहीं मैंने यह सब अपनी निज आंखों से देखा है॥

(सोताहरमास) यह सोता नसीबैन से एक दिनकी राहकी दूरीपरहै इस सोताका मुंह पत्थर और रांगसे बन्दहै जिसमें इसके पानीके बेगसे शहर न बहजाय एक बार मुतवकिलअली अल्लाहने अपनी बादशाहत के समयमें इसका मुंह खुलवायाथा परन्तुउसका बेगदेख घबराके फ़िर बन्द करादिया क्योंकि इसके बे ... आने काबड़ाडरथा इसीसोतासेहर्मा और नसीबैनकी न ...
और इसी सोताके पानीसे खेतसींचे जातेहैं जो पानी ...
वह ज़ाबूरमें गिरकर दजलामें जा गिरताहै॥

(सोताहम) तोहफ़तुलग़रायब के ग्रन्थकारने ... जबना होकर जरजानकी ओर चलो तो एक पहाड़ दिखाई और उसमें एक सोताहै जिसका पानी एक तालमें इकट्ठा और उस तालमें एक बिना डालियोंका वृक्ष है वह ...तके ऐसा मालूम होताहै कि मानों वह वृक्ष तालमें घूमताहै और चार२ महीनातक अदृष्ट होजाताहै किसी मनुष्य को उसका ह।

मिला उसने पुकारके कहा कि यहां सम्पूर्ण सृष्टिमें अनोखीअपूर्व वस्तुहैं यहां आके तमाशा देखो यह सुनके बादशाहने उसके पीछे घोड़ा किया ॥

और हमलोगभी साथमेंथे चलतेर उसघोखनिवासीने पहाड़ी नदीपर पहुंचकर फ़ारसीभाषामें पुकारा कि हमारे जौ और गेहूंके लिये पानीकी आवश्यकताहै इस शब्दके सुनतेही बड़े वेगसे पानी वहा और जब खेत सींचचुका तब फिर पुकारके कहा कि बस बस अबतेरी अभिलाष पूरीहुई बस तत्काल पानी लौटपरा यह देख बादशाहको बड़ा आश्चर्य हुआ तब बादशाहने समझा कि किसी मनुष्यकी जबान में यह प्रभावहै कि और भी लोगोंकी परन्तुनहीं जो देखा तो वहांके सम्पूर्ण निवासियोंका काम इसी प्रकार निकलता है जब हमने यह हाल सुना तो हमको निश्चय नहीं हुआ तब उसने सौगन्द खाई कि नहीं मैंने यह सब अपनी निज आंखों से देखा है ॥

(सोताहरमास) यह सोता नसीबैन से एक दिनकी राहकी दूरीपरहै इस सोताका मुंह पत्थर और रांगसे बन्दहै जिसमें इसके पानीके वेगसे शहर न बहजाय एक बार मुतवकिलअली अल्लाहने अपनी बादशाहत के समयमें इसका मुंह खुलवायाथा परन्तुउसका वेगदेख घबराके फ़िर बन्द करादिया क्योंकि इसके वेगसे बूड़आनेंकाबड़ाडरथा इसीसोतासेहर्मा और नसीबैनकी नदियां निकली हैं और इसी सोताके पानीसे खेतसींचे जातेहैं जो पानी इससे बचताहै वह ख़ाबूरमे गिरकर दजलासे जा गिरताहै ॥

(सोताहम) तोहफ़तुलग़रायबके ग्रन्थकारने लिखाहै कि जब जुबना होकर ज़रजानकी ओर चलो तो एक पहाड़ दिखाई देताहै और उसमें एक सोताहै जिसका पानी एक तालमें इकट्ठा होता है और उस तालमें एक बिना डालियोंका वृक्ष है वह रातके समय ऐसा मालूम होताहै कि मानों वह वृक्ष तालमें घूमताहै और कभी चारर महीनोंतक अदृष्ट होजाताहै किसी मनुष्य को उसका हाल

(सोतामीनाहुशाम) मीनाहुशाम नाम तवरिया में एक गांव है सालवी ने एक वार्त्ता वर्णन की है कि इसगांव में एक सोताहै जो सातवर्ष तक वह फिर सातवर्ष तक बन्दहोजाता है ॥

(सोतानार) अकहर और अनताकियाके बीच में एक सोताहै एक देखन हारेने अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से वर्णन किया कि जो कोई इस सोतामें नरकुल को डाले तो तत्काल पानी सूख जाताहै अलाउद्दीन बादशाह जब इस सोता पर आया तो लोगों से यहांका वृत्तान्त पूछा तब उसने आश्चर्य करके जो इसकी परीक्षा करी तो ठीकपाया ॥

(सोतानातूल) नातूल नाम मिश्र देशमें एक गांवहै और वहां एक गडहाहै वहांसे पानी निकलता है और जो पानीकी छींटेंउड़ के चारोंओर परती हैं उससे चूहे उत्पन्न होते हैं बहुत से इसबात को अपनी आंखोंकी देखी वर्णन करतेहैं कि यहां माटीमें अद्भुतगुण है कि उस सोतासे जो एक ओरको जो छीटें परतीहैं वह तो तत्काल चूहे बनजातेहैं और दूसरी ओर माटीकीमाटी रहती है ॥

(सोतानिहावन्द) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार ने लिखाहै कि दमावन्दके निकट पहाड़ों में पहाड़ी नदीसे एक सोता निकला है जिस किसीको पानी सींचनेकी आवश्यकता होतीहै तो वह वहां जाके कहताहै कि मुझे पानीकी आवश्यकताहै तिस उपरांत अपनी खेतीकी ओर को जाता है और पानी उसके पीछे २ दौड़ताहै जब उसका खेत सींचजाताहै तब पुकारके कहता है कि बस २ अबमेरी अभिलाष पूरीहुई उस समय वह पानी आपही आप बन्दहोजाताहै अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे हमदा के वृद्ध पुरुषने जो सचाईमें एक उपमाथा कहा कि भूतकाल में बादशाह सैफ़ुद्दीन अल्तमशवलाद और जबालका हाकिमथा और यह प्रदेश भी उसीके आधीनरहा करताथा सो एक बार अपनी सेना सहित इस ओरको निकला उसीके साथमें वर्णन करने वाला भी था उस समय इस पहाड़ के पास आ पहुंचे इतनेमें एक दिहाती

(सोतामीनाहुशाम) मीनाहुशाम नाम तवरिया में एक गांव है सालबी ने एक वार्त्ता वर्णन की है कि इसगांव में एक सोताहै जो सातवर्ष तक वह फिर सातवर्ष तक बन्दहोजाता है ॥

(सोतानार) अक़हर और अनताकियाके बीच में एक सोताहै एक देखन हारेने अजायबुलमख़लूक़ात के ग्रन्थकार से वर्णन किया कि जो कोई इस सोतामें नरकुल को डाले तो तत्काल पानी सूख जाताहै अलाउद्दीन वादशाह जब इस सोता पर आया तो लोगों से यहांका वृत्तान्त पूछा तब उसने आश्चर्य करके जो इसकी प-रीक्षा करी तो ठीकपाया ॥

(सोतानातूल) नातूल नाम मिश्र देशमें एक गांवहै और वहां एक गडहाहै वहांसे पानी निकलता है और जो पानीकी छींटैंउड़ के चारोंओर परती हैं उससे चूहे उत्पन्न होते हैं बहुत से इसबात को अपनी आंखोंकी देखी वर्णन करतेहैं कि यहां माटीमें अद्भुतगुण है कि उस सोतासे जो एक ओरको जो छींटैं परतीहैं वह तो तत्काल चूहे बनजातेहैं और दूसरी ओर माटीकीमाटी रहती है ॥

(सोतानिहावन्द) तोहफ़तुलगरायब के ग्रन्थकार ने लिखाहै कि दमावन्दके निकट पहाड़ो में पहाड़ी नदीसे एक सोता निकला है जिस किसीको पानी सींचनेकी आवश्यकता होतीहै तो वह वहां जाके कहताहै कि मुझे पानीकी आवश्यकताहै तिस उपरांत अपनी खेतीकी ओर को जाता है और पानी उसके पीछे २ दौड़ताहै जब उसका खेत सींचजाताहै तब पुकारके कहता है कि बस २ अबमेरी अभिलाष पूरीहुई उस समय वह पानी आपही आप बन्दहोजाताहै अजायबुलमख़लूक़ातके ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे हमदा के वृद्ध पुरुषने जो सचाईमें एक उपमाथा कहा कि भूतकाल में बाद-शाह सैफ़ुद्दीन अल्तमशबलाद और जवालका हाकिमथा और यह प्रदेश भी उसीके आधीनरहा करताथा सो एक बार अपनी सेना सहित इस ओरको निकला उसीके साथमें वर्णन करने वाला भी था उस समय इस पहाड़ के पास आ पहुंचे इतनेमें एक दिहाती

मिला उसने पुकारके कहा कि यहां सम्पूर्ण सृष्टिमें अनोखीअपूर्व वस्तुहैं यहां आके तमाशा देखो यह सुनके बादशाहने उसके पीछे घोड़ा किया ॥

और हमलोगभी साथमेंथे चलतेर उसघोखनिवासीने पहाड़ी नदीपर पहुंचकर फ़ारसीभाषामें पुकारा कि हमारे जौ और गेहूंके लिये पानीकी आवश्यकताहै इस शब्दके सुनतेही बड़े वेगसे पानी बहा और जब खेत सींचचुका तब फिर पुकारके कहा कि बस बस अबंनेरी अभिलाष पूरीहुई बस तत्काल पानी लौटपरा यह देख बादशाहको बड़ा आश्चर्य हुआ तब बादशाहने समझा कि किसी मनुष्यकी जबान में यह प्रभावहै कि और भी लोगोंकी परन्तुनहीं जो देखा तो वहांके सम्पूर्ण निवासियोंका काम इसी प्रकार निकलता है जब हमने यह हाल सुना तो हमको निश्चय नहीं हुआ तब उसने सौगन्द खाई कि नहीं मैंने यह सब अपनी निज आंखों से देखा है ॥

(सोताहरमास) यह सोता नसीबैन से एक दिनकी राहकी दूरीपरहै इस सोताका मुंह पत्थर और रांगसे बन्दहै जिसमें इसके पानीके वेगसे शहर न बहजाय एक बार मुतवकिलअली अल्लाहने अपनी बादशाहत के समयमें इसका मुंह खुलवायाथा परन्तुउसका वेगदेख घबराके फिर बन्द कराादिया क्योंकि इसके वेगसे बूढ़ाआने कावड़ाडरथा इसीसोतासेहर्मा और नसीबैनकी नदियां निकली हैं और इसी सोताके पानीसे खेतसींचे जातेहैं जो पानी इससे बचताहै वह ज़ाबूरमें गिरकर दजलासे जा गिरताहै ॥

(सोताहम) तोहफ़तुलग़रायब के ग्रन्थकारने लिखाहै कि जब जबना होकर ज़रजानकी और चलो तो एक पहाड़ दिखाई देताहै और उसमें एक सोताहै जिसका पानी एक तालमें इकट्ठा होता है और उस ताल में एक बिना डालियोंका वृक्ष है वह रातके समय ऐसा मालूम होताहै कि मानों वह वृक्ष तालमें घूमताहै और कभी चारर महीनातक अदृष्ट होजाताहै किसी मनुष्य को उसका हाल

नहीं मालूम कि कहां से वह वृक्ष प्रकट होताहै और कहां छिपजाता है बहुधा जब वर्षा अधिक होती है तब यह वृक्ष बहुतजल्द प्रकट होताहै बहुधा लोगोंने इस वृक्षकाहाल जाननेके लिये इसवृक्ष को रस्सोंसे पुष्टकरके पहाड़ोंमें बांधा परन्तु तिसपरभी जब इसकेछिपने का समय आया तो प्रातःकाल को जो देखा तो रस्से तो टूटपरे हैं और वृक्ष नहीं है अन्तको इस आश्चर्यित बात के समाचार राफ़ा बिन हज़ीना के कानतक पहुंचे जो उस समय जरजान और खुरा-सानका हाकिमथा उसने कुछलोग उस वृक्ष के छिपने और प्रकट होनेके समाचार जाननेके हेतु नियत किये और इस रक्षाकेलिये चार मनुष्य नियत किये कि निशिबासर इसको देखा करें परन्तु हरीच्छासे जब उसके छिपनेका समय निकट आया तो पहरुओंको कहीं जानेकी आवश्यकता आयलगी निदान उस ओर उनकाजाना था कि इस ओर वृक्ष अलक्ष होगया जब यह समाचार बादशाह को पहुंचा तब उसकीसेनामें एक डूबाकोफ़ाकारहने वाला था उसको बादशाहने आज्ञादी कि वहां जाके डूडकमार अभिलाप के मोतीको निकाले अर्थात् उस वृक्षका पतालगावे कि यह वृक्ष कहां गया उस गोताख़ोरने बहुतेरी बुड्डीलगाई पैदीकी माटी ला दिखाई परन्तु उस वृक्षकी थाह न पाई इस सोताका नाम चश्मा हम भी कहतेहैं और यह सोता नहरकी ओरहै और इन दोनों नदियोंके बीचमें एक दिनकी राहकी दूरीहै ॥

(सोतादशलिया) दशलिया नाम एक गांव मदीनाके आधीन आज़ुरबायजानके निकट है यहां एक सोताहै उसका पानी जोपीवे तत्काल उसको जुलाब होजाय और ऐसा कराल जुलाब हो कि जो वह किसी चीज़के दानेखाके पानी पीवे तो वे भी उसके पेटसे तत्काल गिरेंगे ॥

(सोतायासीजमन) अरज़नरूम और अखलातके बीचमें एक गांव यासीजमन नामहै वहां एक सोताहै जहां से बड़ेवेग से पानी बहताहै और उसपानीकावेग ऐसाहै कि दूरसे उसकेपानीकाशब्द

मिला उसने पुकारके कहा कि यहां सम्पूर्ण सृष्टिमें अनोखोअपूर्व बस्तुहैं यहां आके तमाशा देखो यह सुनके बादशाहने उसके पीछे घोड़ा किया॥

और हमलोगभी साथमेंथे चलतेर इसघोखनिवासीने पहाड़ी नदीपर पहुंचकर फ़ारसीभाषामें पुकारा कि हमारे जौ और गेहूंके लिये पानीकी आवश्यकताहै इस शब्दके सुनतेही बड़े वेगसे पानी बहा और जब खेत सींचचुका तब फिर पुकारके कहा कि बस बस अबमेरी अभिलाष पूरीहुई बस तत्काल पानी लौटपरा, यह देख बादशाहको बड़ा आश्चर्य्य हुआ तब बादशाहने समझा कि किसी मनुष्यकी जबान में यह प्रभावहै कि और भी लोगोकी परन्तुनहीं जो देखा तो वहांके सम्पूर्ण निवासियोंका काम इसी प्रकार निकलता है जब हमने यह हाल सुना तो हमको निश्चय नहीं हुआ तब उसने सौगन्द खाई कि नहीं मैंने यह सब अपनी निज आंखो से देखा है॥

(सोताहरमास) यह सोता नसीबैन से एक दिनकी राहकी दूरीपरहै इस सोताका मुंह पत्थर और रांगसे बन्दहै जिसमें इसके पानीके वेगसे शहर न बहजाय एक बार मुतवकिलअली अल्लाहने अपनी बादशाहत के समयमें इसका मुंह खुलवायाथा परन्तुउसका वेगदेख घबराके फ़िर बन्द करादिया क्योंकि इसके वेगसे डूबजाने कावड़ाडरथा इसीसोतासेहर्मा और नसीबैनकी नदियां निकली हैं और इसी सोताके पानीसे खेतसींचे जातेहैं जो पानी इससे बचताहै वह ख़ाबूरमें गिरकर दजलामें जा गिरताहै॥

(सोताहम) तोहफ़तुलग़रायब के ग्रन्थकारने लिखाहै कि जब जुबना होकर जरजानकी ओर चलो तो एक पहाड़ दिखाई देताहै और उसमें एक सोताहै जिसका पानी एक तालमें इकट्ठा होता है और उस तालमें एक बिना डालियोंका वृक्ष है वह रातके समय ऐसा मालूम होताहै कि मानो वह वृक्ष तालमें घूमताहै और कभी चारर महीनातक अदृष्ट होजाताहै किसी मनुष्य को उसका हाल



नहीं मालूम कि कहां से वह वृक्ष प्रकट होताहै और कहां छिपजाता

स्नानकरने की आज्ञादेते थे और उनके आशीर्वादसे उसको आरोग्यता होती थी और इसविषय में हज़रत अबूबकरसद्दीक़ ने कहा है कि हम बीमारोंको तीनदिनबज़ात कुआंकेपानी में स्नान कराते हैं वह आरोग्य होजाते हैं ॥

(कुआंबूक़ैर) अजायबुलमख़्लूकात के ग्रन्थकार ने लिखा है कि मुझसे इन्दलस के कुछ फ़क़ीहोंने अर्थात् कुरानादि ग्रन्थ जाननेहारों ने कहा कि इसकुआं में से ऐसेवेग से वायु निकलती है कि जो बस्त्रादि वस्तु इसमें छोड़ो तो बाहर निकलआती है भीतर नहीं रहती है ॥

(कुआंबेज़न) यहकुआं दरबन्दके निकटहै यह वहीकुआंहै जिस में अफ़रासिआब ने बेज़नबिन गोदरज़ को क़ैदकियाथा और उस के मुखपर बड़ाभारी पत्थर रखदियाथा अन्तको रात्रीसमय रुस्तम वहांके पहरुओंको मारके बेजनको बन्दिसेछुड़ाके ईरान को लैगया था यह इतिहास बहुत प्रसिद्ध है ॥

(कुआंक़ैसूर) यहकुआं हिन्दुस्तान के एकटापू में है जहां कपूर होताहै और वहांका कैसूरी कपूर प्रसिद्ध है इसकुआं में एकप्रकार की मछलीहै जब उसको बाहरनिकालो तो संगखारा होजाती है ॥

(कुआंखन्दक) मराग़ानाम देश में एक खन्दक़नाम गावँ है इस कुआंसे कबूतर बहुत निकला करतेहैं [illegible] लोग [illegible]
मुख पै जालफैला के कबूतरों को पकरा [illegible]
राई की थाह आजतक किसीको नहींमिली [illegible]
के द्वारा अजायबुलमख़्लूकात के [illegible]
लोगोंने उसकुआंकी [illegible]
वहां गोताखोर पांचसौगज़त [illegible]

सुनाई देताहै और जो कोईजीव उसके निकटजाय तो तत्कालगिर जाय इसी कारण पशू और जीवोंकी हड्डियां इसके चारोंओर दृष्टि आती हैं और इसीकारण पहरुआ नियतहैं जो लोगोंको उस ओर जानेसे रोकते हैं॥

(सोताईल) क़जवीन के गांवोंमें से एक गांवका नाम ईल है यहां एक पहाड़है उसके दर्रासे एक सोता निकलाहै जिसका पानी अति गरम निकल उसीके निकट एक हौजमें इकट्ठा होताहै इसके पानी में यह गुणहै कि इसमें कुष्ठी लँगड़े लखजून और नक़रस रोगवालों और खाजवालों को इसके पानीमें स्नान कराते हैं और पान कराते हैं तो वे आरोग्य होतेहैं इसका नाम चंचमाईलकम्मी है ईश्वरकी दयासे सोतोंका वृत्तान्त तो समाप्तहुआ अब कुओं का हाल भी वर्णमालाके अक्षरानुक्रमणि अनुसार ईश्वरही के भरोसे वर्णन करताहूं॥

कुओंका व्याख्यान॥

(कुआं अनवद) इस कुआं के विषय में कालीना लोगों नें लिखाहै कि जो कोई इस कुआंका पानी पिये वह अहमक अर्थात् दुर्बुद्धि होजाय जो कोई मनुष्य उसदेश में कुछ वर्जित अथवा अति अनुचित कामकरे तो वहां के निवासी उसको इस उपमासे धिक्कार-तेहैं कि हम भैयातेरी बराबरी नहीं करते क्योंकि तैंने अनवदनाम कुआंका पानी पियाहै॥

(कुआंअरीस) यह कुआं मदीनामेंहै एक बार इसकुआंमें हज़्-रत उसमान तृतीय खलीफ़ाके हाथसे हजरत रिसालतमाब अर्थात् हजरत महम्मदकी दीभई अंगूठी गिरपरी तो उसको बहुतेरा ढूंढ़ा परन्तु अंगूठी न मिली तब लोगोंने कहा कि इनके हाथ से इस कुआंमें अंगूठी गिरगई सो न मिलनेका यह कारणहै कि जोशेखों का उचित धर्म्महै उसके विपरीत अपनी जीविका करते थे॥

(कुआंबाबुल) आमशने लिखाहै कि मजाहिद नाम एकमनुष्य था उसकी यह प्रकृति पड़गई थी कि जिस अद्भुत वस्तुका नाम

ईश्वरके तब हाजिरानेहरीचछ्याकहकर इस्माईलको अ
लिया और जितनापानीपासथा जबतकरहा तबतकहज़रतइस्माईल
को पघाया और जब पानी न रहा और हज़रत इस्माईल अधिक
तृषितहुये तो माताकी दया न रहागया अन्तको हजरतइस्माईल
को एकठौर आड़मेंबैठालके आप पानीकीटोहमें सफ़ाकीओरचली॥
और वहां जाकर बहुतकुछ ढूंढ़ा पर पानी न पाया और न कोई म-
नुष्य दिखाईदिया फिर वहवेहांसे मरवेकीओर आई वहां भी पानी
ही ढूंढ़रही थीं कि अकस्मात् किसी दुःखदायी पशुका शब्दसुनाई
दिया उससमय बच्चेकी प्रीति से उसआवाज़ से डरकर तुरन्त ही
हजरत इस्माईल की ओरआईं यहां आकर क्या देखतीहैं कि उनके
निकट जलकासोता चलताहै तो झटपट हाज़िरा ने थोड़ीसी मिट्टी
लेकरपानी के गिर्द मुंडेरवांधदी कि इधर उधरवह न जाय कहतेहैं
कि यह चश्मा हज़रत इस्माईलकी गर्दनके नीचेसे जारीहुआ यदि
हाजिरा मिट्टीसे चारोंओरकी राह बन्द नकरती तो यहकुआं ज़म-
ज़मनामी सोते की तरहपर बह निकलता—हजरत पैग़म्बर साहब
का वचनहै कि अब्दुलमुत्तलिब किसीमकान में सोते थे अकस्मात्
उन्हेंस्वप्नमें आज्ञाहुई कि कुआं ज़मज़म खोदो उन्होंनेकहा कि ज़मज़म
क्या वस्तुहै उत्तर मिला कि तुम ऐसे कामको मत बिगाड़ो क्योंकि
उसकुवेंसे हज्जाजके काफले तृप्तहोंगे और वहकुआं विष्टा और लहू
आदिसेपटापड़ा हुआहै जहांपरकव्वा अपनीचोंचसे खोदरहाहै तो
अब्दुल मुत्तलिब जागकर अपने हरब नामी पुत्र सहित चले क्या
देखते हैं कि एक कव्वा अपनी चोंच से पृथ्वी खोदरहा है अब्दुल-
मुत्तलिब ने उसीस्थान पर खोदना शुरूकिया तो कुआं प्रकटहुआ
और पानी दिखाईदिया सो क़रीश ने उनसेदावाकिया और अब्दुल
मुत्तलिब से कहा कि यहकुआं हमारे पिता इस्माईल और हमारी
माता हाजिराका है और हमारा हक़ इसपर अच्छीतरह से सूचित
है सो इसविवाद के निर्णयके लिये एकप्रश्न कहनेवाले से आज्ञाकी
और उसकीओरचले राहमें जो पानी साथथा वह खर्च होगया और

दिनके समयमें यहांसे धुआं निकला करताहै और रात को आग प्रज्वलित रहती है इस कुआं का यह प्रभाव है कि जो वस्तु इस कुआंमें छोड़ीजाय वह घरीभर तो भीतररहती है और फिर बाहर निकल आती है ॥

(कुआंदरवां) इसका नाम चाहकमली भीहै इब्नअब्बास प्रसन्न हो ईश्वर उसपर कहताहै कि एक बार हज़रत रिसाल तमाब पर जादू कियागया और आप कठिन बीमारपरे उसीबीमारीने हजरत को कुछ नींदसी आई तो क्या देखता कि एकफरिस्ता तो शिरहाने खड़ाहै और दूसरा पांयतकी ओर खड़ाहै तब पांयतवालेने पूछाकि अब कौनसी दशाहुई तब उसने उत्तरदिया कि अब जादू भरपूर है तब फिर उसने पूंछा कि किसने जादूकिया तो उसनेकहा कि लबीं दबिन आसिम यहूदी ने यह काम कियाहै तब उसने पूंछा कि कहां यह काम कियागया है तब उसने फिर उत्तरदिया कि चाहकमली में पत्थरके नीचे निदान जब हजरतजागे तो यह सब वार्ता याद रही तब हजरत अमीरुलमोमिनीन औरसहाबानुस कुआंपर आये तो सब पानी उसका निकाल डाला तो एक पत्थर दृष्टिआया जब उसे उठाया तो एकबाल उसके नीचे था जिसमें ग्यारहगिरहें लगी थीं तो इनलोगोने उसको जलादिया तो तत्-कालहजरत आरोग्य होगये तब ईश्वर ने उसके विषय में ग्यारह आयतें कुरानमें भेजीं ॥

(कुआज़मजम) यह कुआ शुभ प्रसिद्धहै इस कुआंकी गहराई ऊपरसे पेंदीतक चालीस गजहै और इसकुआंसे सरकोह तक जहां कि यह कुआं खोदा गयाहै ग्यारहगज़है ज़मजमपर एक कुबाहरम के बीच में बाबतबाफके पास काबाके दरवाजे के बराबर है हदीस (शास्त्र) मे लिखाहै कि जबवह हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाहज़रत इस्माईल और उसकी माता हाजिरा को काबामें अनाथ छोड़के चलने लगे तब हाजिराने कहा कि यहांमुझे और मेरे बेटेको किस के भरोसे पे छोड़जातेहो इसपै हज़रत इब्राहीमने उत्तर दिया कि

कहाहै कि यह कुआं स्वर्ग के सोतोंमेंसेहै और इब्नअमरने हजरत से एक कथा वर्णनकी है कि एक बेर वे इस कुयें की जगतपर बैठे थे कहा कि मैंने एक रात्रिको स्वप्नमें देखाथा कि मैं एक सोतेपर जो स्वर्गके सोतोंमेंसे है बैठाहूं वहसोता यहीकुआंहै—कुआंफ़िरयां अब्दुलरहमान—यह फ़ारसमेंहै इसकी चौड़ाई मनुष्य के डील के बराबर है और लम्बाई बरसभर की राह और बिल्कुल सूखा है वर्षभरमें एक ऐसा समय आताहै कि इस सोतेसे पानी उबलताहै और इस अधिकतासे निकलताहै कि उस समयलोग इस कुयेंसे खेती आदिकोसींचते हैं—कुआं कलबेहलबके देशोंमें से एक मौजे परहै जिस किसीको बावले कुत्तेने काटाहो जो वह इस कुयेंका पानी पिये तो अच्छा होजावे और हलबके कई रहनेवालोंने कहा है जो चालीस दिन बीतने के पीछे पियेगा कभी आरोग्य नहोगा लोग वर्णन करतेहैं कि तीन मनुष्यों को बौरहे कुत्तेने काटाथा दो मनुष्य तो चालीस दिन बीतने के पहले इस कुयेंके जलसे आराम पागये और तीसरा मनुष्य जिसको चालीस दिन व्यतीत होगये थेमरगया—कुआं मतरिया—मतरिया एक मौजा मिसर देशमें है और उस गांवमें एकस्थानहै जहांबलसांकावृक्षहै इस कुयेंसे पानी पीतेहैं कहतेहैं कि मरियमके पुत्र मसीहने इस कुयेमें स्नान किया है और जिस देशमें बलसां का वृक्ष उगताहै उसके चारों ओर चार दीवारी बनाई गईहैं इस कुयेंका जल अति मिष्टहै और कुछ उसमें चिकनापन भी है एकवेर काबुलके बादशाहने अपने पितामुमलिक आदिलसे आज्ञा मांगी कि बलसांकेवृक्षको और जमीनमें बोयेंउसने आज्ञा देदी और रुपया बहुत खर्च किया पर कुछ लाभ न हुआ फिर आज्ञा मांगी कि कुयें मतरियेमे जल लाकर उस वृक्षकोसीचें जब उसनेआज्ञादी और उसकेजलसेसींचा तो बलसांकावृक्षउत्पन्न हुआ और प्रकटहो कि [illegible] मर दे [illegible] र कहीं बलसांका वृक्ष नहींहै परन्तु जब [illegible] से [illegible]
निशापुरके—इन कु [illegible]

प्यास ने ज़ोरकिया यहांतक कि सबकी ज़बान न निकलपड़ी उस समय अब्दुलमुत्तलिब के मोज़े के नीचे से सोता प्रकट हुआ और उसने उनलोगोंकी प्यासबुझाई तो लोगोंने मानलिया कि वास्तव में ईश्वर ने उस कुयें को आप के हिस्से के लिये पैदा किया है हम लोगोंका कुछ हकनहीं पहुंचता और वास्तव में तुझे जिसकी ओर से इसजङ्गल में पानीमिला उसीने कुआं ज़मज़म भी तेरेही हिस्से में प्रकट कियाहै और वहलोग हारमानकर चलेगये और अब्दुल मुत्तलिब ने कुआं जमज़म खोदना शुरूकिया और उसकुयें में से सोने की ढालें और कलईकी तलवारें जो उनके दादा ने गाड़ी थीं उनको मिलीं और यहशस्त्र उससमय गाड़ेगये थे जब आप मक्के से चलेथे सो उन्होंने इनवस्तुओं से अब्दुलमुत्तलिब ने दरवाज़ा काबे का और हव्ज़ का जलस्थान बनाया इसका पानी तृषित और क्षुधित को तृप्त करताहै ॥

(कुआं साबक) यह कारै अरजां में है यहां के वासी कहाकरते हैं कि इस कुये को गहराई की परीक्षा लीगई है पर उसकी पेंदी तक न पहुंचसके और क़सबे के रहनेवालों के प्रयोजन के अनुसार पानीजारी रहता है ॥

(कुआंअरवा) यहअफ़ीकमदीनियांमें है और जबीरकेपुत्र अरवा से सम्बन्ध रखता है इब्न इब्नजबीर ने कहाहै कि जोकोईमदीना आदिसे निकलकरअफ़ीकजत्रादे की ओर जाता है अरवा के पानी को साथ लाताहैबहुत मनुष्य इसके जलको पवित्र समझकर लेजा-याकरतेहैं किसीयात्रीने कहा कि हमने एकमनुष्यकोदेखा कि उसने यहासे शीशेमें जल भरलिया और हारूंरशीदकी सेवामें सौग़ातकी रीतिपरलेगया इसकुवेंकेजलमें यह गुणहै कि गर्मीमेंठंढा औरसर्दीमें गरम और अंधेरी रातमें चिराग़की सूरतहोजाताहै कुआं फरस यह पवित्रकुआं मदीनेमेंहै हजरतपैग़म्बरसाहब इसकुयेंकी बहुतप्रशंसा किया करते थे और इस कुयेंको उत्तम जानते थे इसमें हजरत ने अपने मुंहकी लार छोड़ीथी कहतेहैं कि हज़रत ने इस कुयेंके लिये

पहले यह सृष्टि मिट्टी थी फिर इसको जीव का संयोग हुआ ॥

पहले खानोंकी वस्तुओ का वर्णन ॥

वह जस (गच) है जो मट्टी के अनुमान है वा मलह (नमक) है जो जलके अनुमान है जस एकप्रकारकी रेत है जो वर्षामे भीगकर बँध जाती है और मलह एक प्रकारका जल है जो खारी भागों से मिलकर मट्टीके भागोंमें मिलजाता है और नमककी तरह पर बँध जाता है और खान का अंत जो स्थावर के निकट है उसको (कमात कुंभी एकजड़है कि पृथ्वीकी दुर्गंधसे रबीके वक्त रेतवाली जमीनों और पहाड़ोंकी गुफ़ाओं में बहुत जमती है गोल और लाल और पेड़ु और पत्तों बिना उसका कच्चा पक्का दोनों खाते हैं परन्तु उसमें विशेष करके कोई स्वाद और गंधनहीं) कहते हैं और वास्तवमें यह प्रकार सृष्टि से वर्त्तमान होता है कि मिट्टी में खानकी तरह और गीली जगह पर रबीमें और यह बिजली के शब्द और वर्षा से बढ़तीहै जिस तरह वृक्ष इत्यादि हरे भरे होते हैं जोकि इसमें पत्ते और फल नहीं और मट्टी से उत्पन्न होता है जिस तरह कि सब खान की चीज़ें इस लिये वह कमात खान की चीजों के सदृश हुआ परन्तु धरतीपर उगता है इसलिये उसका प्रारम्भ खानोसे है और अन्त जीवधारियों इसलिये कि प्रारम्भ और अंत वृक्षादि वों का कि मिट्टीके निकट है उसको खिज़रायउद्दमन और उत्तमोत्तम वृक्ष रजो जीवधारियों के निकट है छुहारे का दरख़्त है और खिज़राय उद्दमन वह एक भाफ़ है जो पृथ्वीसे निकलती है और वर्षासे हरी होकर घास की तरह लहलहाती है तो जब उसे सूर्य्य की गर्म्मी पहुंचे सूखजाती है और फिर ओस और प्रभात की पवन से हरी होती है और कमात और [illegible] नहीं उगता है परन्तु रबी की ऋतु में होता [illegible] का स्थावर है और दूसरी स्थावर [illegible] सदृश है वह छुहारे का वृक्ष है [illegible] कुछ स्थावरसे [illegible] नहीं [illegible]

ओं की अधिकता बहुत होगई है इस डरसे किसीकी हिम्मत नहीं पड़ती कि कोई उधर मुख करे (कुआंहिन्दवाने) हिन्दवान एक मौज़ा है फ़ारस देश मे दो पहाड़ों के मध्य जहां से धुआं निकलता है और पानी उसका इतना उबलता है कि किसी को उस तक पहुचने की मजाल नहीं है जो पंछीभी उसपरसे उड़े तो तुरन्तही जल कर गिर पड़े (कुआं यूसफ़सदीक़) यह वह कुआं है जहां हज़रतयूसुफ़ को उनके भाइयोंने गिराया था कहते हैं कि यह कुआं अखनताबलस और तुरियासे चार कोसकी दूरीपर दमिश्कके एक बड़े पत्थरपर है- कइयोके विचारमें हजरत याक़ूब का मकानताबलस था जो फ़लतैन की धरती पर है और जिसकुये में कि हज़रत यूसुफ़ गिराये गयेथे वह फ़लसतीन और ताबिलस के बीच में है और उसस्थान का नाम संजल है और यह कुआं आम राह पर है ईश्वर की कृपा से पहाड़ों नहरों सोतों और कुओं का वर्णन पूरा हुआ॥

वर्तमान सम्पूर्ण सृष्टिका वर्णन॥

इसके कई प्रकार है जो माता पिता से उत्पन्न होते हैं सो हम कहते हैं कि सम्पूर्ण उत्पन्न हुये शरीर बढ़ने वाले होते हैं और जो बढ़नेवाले प्रकार नहीं हैं वह खानेकी चीज है और जो बढनेवाले हैं उनके दो प्रकार हैं एक तो चलने फिरने की शक्ति रखते हैं वह जीवधारी हैं और जो नहीं वह स्थावर वृक्षादि हैं और न बढनेवालोंको और बुद्धिमानोंका विचार उनकी उत्पत्ति भाफ़ और गर्दसे है और भाफ वह वस्तु है जो दरियाओं और नदियोंकी सफाईसे उठकर ऊपर को चढ़ती है कि जब सूर्य्यकी गरमी उनमें अपना प्रभाव करती है और वह पानी और गर्द धरतीमें दूसरा रूप धारण करता है और वही इकट्ठा होकर मट्टीके भागो में मिल कर गाढ़ा होजाता है और जो गर्मी पृथ्वीकी गहराई में प्राप्त हुई है उसे पकाती है सो वही मूल वस्तु खान स्थावर और जीवधारियों के लिये होता है जिसका क्रम ईश्वर चाहे तो निकटही वर्णन करता हूं और यह खानें स्थावर और जीवधारियों से कइयों के साथ मिली हुई है

उजियालाभी देखें और उस विश्वम्भर परमेश्वरके दियेहुये पदार्थों से अपने मनको प्रसन्न करें और अपने मनकी स्वच्छतामें प्राणोंके समूहको देखें और इस असार संसार के पदार्थों की इच्छा छोड़ें सो यह लोग फरिश्तोंके प्रकारोंसे हैं॥

मिहदीनिजुर खानकी वस्तुओं का वर्णन॥

यहधातें पृथ्वीकीभाफ़ और गर्दसे पैदाहोतीहैं जो ज़मीनमें बन्द हैं कि जब हरएक नानाप्रकार की भाफ़के दोषोंको सदृश मिले हों इनके स्वभाव और पृथक्२ हैं तो यहधातें यातो सख़्त हैं या नरम और जो सख़्त हैं वह हथोड़ेसे निहाईपर कूटी और बढ़ाई जाती हैं वहेसातहैं १ सोना २ चांदी ३ तांबा ४ सीसा ५ लोहा ६ कलई ७ हारसेनी (यहधातुचीनकीहै) यह पारे और गन्धकसे पैदाहोती हैं और जो नरमहै जैसे पारा और सख़्त और कई तरधातु नमकदार हैं जैसे फिटकरी और नौसादर और इसके विरुद्ध चिकनी हैं जैसे हरताल और गन्धक और ऊपर लिखेहुये सातों प्रकार भी पारे और गन्धक के मिलनेसे उत्पन्नहोतेहैं परन्तु स्वभाव और तोलमें विरुद्धहै पारा वायु मट्टी और जलके भागोंसे उत्पन्न होता है जब इनतीनोंको बलवान् उष्णता पकाती है उस समय तेल के सदृश होजातेहैं और कठोर और साफधातें उसजलसे उत्पन्नहोतीहैं और सख़्तपत्थरों के बीचमें होतीहैं और मुद्दतमें गाढ़ी और साफहोती और गरमीसे पकतीहैं और मैलीधातें पानी और मिट्टीके मिलने से पैदाहोती हैं जब तक उनमें मुद्दततक धूपका प्रभाव पहुंचता रहे जो धातें तरीकीतरफ़ झुकीहोतीहैं वहपानीमें पैदाहोतीहैं जब पानी मट्टीके भागोंसे मिलकर सूखजाताहै और चिकनी धातुतरी से प्रकट होतीहैं जो [illegible] गरमी पहुंचती है उससमय गलती और [illegible] में मिल जातेहैं और खान [illegible]
ईश्वर [illegible]
है किस [illegible] जगह

में नर व मादा हैं और जो छुहारेके दरख़्त का शिर काटडालें तो सूखजावे और फिर न बढ़े जिसतरह पशुकी गर्दन मारनेसे उसका नाश होजाताहै इसीनिश्चयसे छुहारेका वृक्ष स्थावरजीवधारीहै— रहपशुप्रारम्भ उसका स्थावर के सदृशहोताहै क्योंकि तुच्छमेतुच्छ वहपशुहै जिसकी केवल एकइन्द्री हो और जिस जीवधारीका नाम हलज़ूनहै वह एक कीड़ाहै जो पत्थरके खोल में दरियाकिनारे होता है और वहकीडा उसमेंसे अपनाआधाअंग निकालताहै और दहने बायें लम्बा चौड़ा होताहै और अपना भोजन ढूंढ़ताहै तो जबहवा की तरी या नरमीपाताहै तो अपनेको और फैलाताहै और जो कठोर पृथ्वी पाताहै तो अपने को उसीमें छिपालेताहै कि ऐसा न हो कि कोई दुःखपहुंचे और इसजीवमें सुनने देखने चखने और सूंघनेकी इन्द्री नहीं परन्तु स्पर्शन इन्द्री रखताहै और इसीप्रकार बहुतकीड़े होते हैं जो मट्टी से पैदा होते हैं सो इनप्रकारों के जीवधारियों को स्थावरजीवधारी कहते हैं कि वृक्षादिकोंकेसदृश उगाकरते हैं और जिस पशु का पद मनुष्य के निकट है उनमे से घोड़ा है क्योंकि घोड़ेमें समझकी तेजी और अदब अर्थात् बड़ेका लिहाज़ और उत्तमोत्तम शील होती है बहुधा ऐसा होताहै कि बादशाह के सामने या जबतक बादशाह सवार न हो ले लीद नहीं करता है लड़ाई में मनुष्यकासाथ देताहै घावखानेसे मुंहनहींमोडताहै जो उसकानाम रक्खो समझजाताहै और आज्ञामानताहै रोकनेसे रुकजाताहै और पशुओंके बराबर वह मनुष्यहैं जो नाना प्रकारके संसारके भोजन के सिवाय और कुछ इच्छा नहीं रखते और कुत्ते और मेढ़क की तरह मैथुन करते और अपनी आवश्यकतासे अधिक चींटीकीतरह संग्रह करते और संसार की सूखी रोटीपर इस तरह गिरते जैसे कुत्ते मुरदारचीज़पर गिरतेहैं तो ऐसेमनुष्य चाहे मनुष्य रूप रखते हैं परन्तु उनके कर्म्म पशुओंके हैं और जिस मनुष्यको पदवी फ़रिश्तोंकीसी लिखी है वह उन मनुष्योंकी पदवी है जो भूलकी नींद से जगे और उनकेमनके नेत्रखुलेहैं कि प्रकट प्रकाशके सिवाय मनका

विपरीतहोतेहैं परन्तु इनसबकामूल पारे और गन्धकसे हैं कि पारे औरगन्धकके अन्योन्य स्वभावसे रूपान्तर होजाताहै और यहबातें कारीगरोंको अभ्याससे मालूमहुईहैं अब यहांकुछ वर्णन उन धातों का लिखाजाताहै—सोना यह गर्म औरनर्महै जो कि इसके पानी के खण्ड मट्टीके खण्डों से वहुत मिले रहते हैं आग से नहीं जलता क्योंकि अग्नि उसके खण्डोंको अलगनहींकरसक्ती और मट्टीमेंनहीं गलता और समय के बीतनेपर भी उसपर जंग नहीं लगता और वहुत नर्म पीला और बुर्राक़ मीठा सुगन्धित संगीन और प्रकाश युत होताहै और उसमें पीलाई अग्निके खण्डोंकी है और नर्मी चिकनाई के खण्डोंसे और बुर्राक़ी पानी की सफाई के खण्डों से और संगीनी मट्टीके खण्डोंके कारणसे है और ईश्वरके दियेहुये बड़े पदार्थोंमें से है क्योंकि इसीके कारण संसारी कार्योंका प्रबंधदिया गयाहै और सम्पूर्ण सृष्टि इसी की आवश्यकता रखती है प्रकट है कि हर मनुष्य खाने पहनने और मकान वग़ैरह की आवश्यकता रखताहै और कभी ऐसा होताहै कि मनुष्यकेपास कोईवस्तु होती है और वह मनुष्य दूसरी वस्तु की इच्छा रखताहै जैसे किसी के पास कपड़ाहै औरवह गेहूंकी आवश्यकता रखता है और गेहूं वाला अपनी बेपरवाई से कपड़ेसे वदला नहीं करता तो इस दशामें अवश्य हुआ कि कोई ऐसी चीज़ पैदा कीजावे कि जिसको दोनोंकी इच्छा हो सो ईश्वरने अशर्फ़ी आदि उत्पन्न कीं जो हर एकके लिये बरा-वरहैं और सव लोग उससे बदलाकरतेहैं इसीलिये इसको ईश्वरने गाड़ने और ख़ज़ाना करने से निषेध किया है जैसे लिखा है कि जो लोग चांदी और सोनेको संग्रह करते हैं और उसको ईश्वर निमित्त व्ययनहीं करते तो ऐहमारे रसूल उनलोगोंको आज्ञादो कि तुम्हारे लिये परलोकमें बड़ा दुःख तय्यारहै और ईश्वरने इस वचनसे कोष के संग्रह करने वालों को भयदिया है क्योंकि सोने और चांदी के उत्पन्न करनेसे तो प्रयोजन यह था कि लोगोंकी आवश्यकता दूर हो तो जोमनुष्य . . . की आज्ञाको झूठाकरता

पैदानहींहोता और तांबा लोहाआदि तर या गीलीज़मीन के विशेष और किसीस्थान मे प्रकट नहींहोते और खारी धरती मे होता है और फिटकरी ऐसी ज़मीनमेंहोतीहै जिसकी मट्टीका स्वाद बेकठाहो और सपेदा वहां पैदाहोता है जहां की मट्टीमे गच मिलीहो इसी प्रकार हर एक जवाहिर एक २ धरतीमें मुख्य है जो जहांसे पैदाहो उसको उसी जमीनका स्वभाव समझना चाहिये और इन सबके तीन प्रकारहैं फलजात अर्थात् गलनेवाली धातें १ अहजार अर्थात् पत्थर आदि जो पिघलन सकें २ अजसामुद्दोहनियां अर्थात् चिकनी चीज़ें ईश्वर चाहे तो हर एकका विस्तार निकटही बर्णन किया जावेगा॥

पहला प्रकार पिघलने वाली खानकी चीज़ोंकावर्णन॥

यह सातहोतीहैं कहतेहैं कि इनकी उत्पत्ति पारे और गंधक के मिलनेसे होती है पृथ्वीपर जो पारा और गन्धक दोनो साफ और सख्त और आपुसमे मिलेहो और गन्धकातरीको पीजाय और जमीन पानी की तरीको और गन्धकभी रंगनेवाली शक्ति हो और दोनों अनुमानसेहो और खानकी गर्मी दोनोंको बराबर पकाले और उस खानको सर्दी या गर्मी मे कोई रोग न हो जबतक कि दोनोंको पका न ले तो उससमय यह गन्धक और पारा बंधकर सोना होजाता है परन्तु बहुतसमय मे और जो गन्धक और पारा दोनो साफहो और अच्छीतरह से पकजावे और गन्धक सपेदहो तो वह चादी होजावे और जो इसकेपकनेके पहले सर्दीकेकारण वह चीजेंमिलगई तो वह हारसेनी है और जो पारा साफहो और गन्धक साफ न हो और जलने की ताकत जियादह हुई और दोष भी पूर्णहुआ तो उससे तांबा पैदाहोता है और जो गन्धक पारे से मिलजावे और दोष भी पूरा न हो तो कलई पैदाहो और जो गन्धक और पारा दोनो बुरे हो और पारेमें मिट्टी मिलीहो और जलनेकी शक्ति अधिकहुईहो तो लोहा उत्पन्नहोगा और जो दोनो बुरे और सख्त न हो तो जस्तापैदाहोगा निदान यह खान के जवाहिर वस्तुओं के विपरीत मिलने से भी

का तांबा उत्तम होता है और जो स्याही लिये है वह बुरा है यदि इसको ख़टाई में छोड़दें तो जंगार बन जाता है जो कोई तांबे के बरतन में खाया पियाकरे उसके नानाप्रकार के रोगहोंगे जिनकी औषधि न होसके जैसे पीलपांव और वह बुरा फोड़ा जो पीठ में नेवलेकी तरह पर होताहै और हृदय की पीड़ा और तिल्ली और प्राकृतिक उपद्रव यदि उसके वर्त्तनमें खटाई या शराब या मिठाई रखकर खायें और एकरात दिन उसकेवर्त्तनमें किसीप्रकार भोजन रखकर खावें तो वह मनुष्य मरजावेगा (लोहा) यह भी ऊपर लिखीहुई धातोंकी तरहपर पैदाहोतीहै परन्तु इसमें समता नहीं है क्योंकि इसका माद्दा अर्थात् मूल गंधक और पारेका मैलहै इसका रङ्ग गन्धक की गर्मी से काला होता है परन्तु इसके गुण बहुत हैं यद्यपि यह सबधातोंसे मोलमें कमहै पर ईश्वरका वचनहै कि इस कीसख़्ती गांसीमें है और उसके लाभ सब हथियारोंमें हैं कहते हैं कि कोई ऐसी कारीगरी नहीं है कि जिसमें किसी प्रकार से यह लोहानहो लोहा तीन प्रकारका है साबूरकां १ अनीस २ ज़क़र३ अरस्तू ने इसका स्वभाव इसरीति से लिखा है कि इसके बुरादे का गंडा बनाना जो मनुष्य कि स्वप्न में बरोता हो उसके लिये गुणकरे अरस्तू के सिवा और मनुष्यों ने कहाहै जो मनुष्य थोड़ा लोहा अपनेपास रक्खेगा उसका मन दृढ़ और निर्भय रहेगा उस कादुःस्वप्न देखना दूरहो लोगों के मनो में उसका भय हो इसके सुरमें से आंखों का मैल दूर होजाता है पलक के गिरने को गुण दायक है और नेत्रोंकी पीड़ाकोलाभदे रतौंधी और शिरकीबीमारी भी दूरहोती है इसकारङ्ग बवासीर को गुणदायकहै और इस का बुझायाहुआ पानी तिल्ली और मन्दाग्निको लाभकरे यदिलोहे कीमेख गर्मकरके तलवारको सैकलकरें तो उसमें कभीजङ्ग न लगे गा (कलई) अरस्तूने लिखाहै कि यहचांदीका बदलाहै परन्तुइसके मूलमें तीन ख़राबियां हैं दुर्गन्धि १ नर्मी २ मैल ३सो तीन ख़राबियोंमें धरती के भीतर ।है जैसा कि किसीलड़के को मांके पेट

है और जानना चाहिये कि सोने की प्रतिष्ठा कुछ उसकी कमी के सबबसे नहीं है क्योंकि सोना सदा जिन खानोंसे निकालाजाता है वहां किसी प्रकार की हानि नहींहोती जितना चाहे निकाले बराबर निकलता रहेगा सिवाय तांबे और लोहे के कि यह दोनों नष्ट होजाते हैं और सोनेसे कमनिकलते हैं परन्तु सुवर्णकी प्रतिष्ठा उसके गौरवसे है कि यह संसारी कार्यों के प्रबन्ध के लिये नियत है अरस्तातालीसने सुवर्ण के स्वभाव में लिखा है कि मन का बल कारक और मिर्गी को दूर करने वालाहै यदि इसका गडा बनादें फफोले कोगुणकरे यदि इसकी सलाई बनाकर सुर्मालगावे आखोंमे ज्योति अधिक होतीहै और ज्योति का बलकारकहै जो कोई कानकी लोल को सोनेकी सूईसे छेदकरे तो वह छेद बन्द न होगा जिसमनुष्यको सोना गर्म करके दागदें बहुत जल्द अच्छा होजायेगा और कोई घाव की दशा उत्पन्न नकरेगा शेख रईस ने लिखा है कि सोने को मुहमे रखना मुखकी दुर्गंधिको दूर करताहै और मानसी पीड़ाऔर उन्माद रोगको गुणकारी है(चांदी) यहभी सोनेके निकट है यदिइसको पकने के पहले शर्दी पहुंचे तो निश्चय है कि सोना बनजाय चांदी आगमे जलकर भस्महोजातीहै और मट्टीसे सड़जाती है परंतु बहुत समयमें अरस्तूने लिखा है कि चांदीमे मैलहोता है और सोने मे नहीं होता यदिचांदीको पारे या रांगेकी गन्ध पहुंचे तो टूटजाती है और गन्धक की गन्ध से काली पड जाती है इसके स्वभाव में लिखा है कि इसके खाने से चिपकने वाली तरी दूर होती है और मुखकी दुर्गंधि नाशहोती है और खुजली मूत्रके कठिनतासे उतरने और उन्माद रोगोंको गुणदायक है यदि पारेके साथ मिलाके मलें तो बवासीर को दूर करे (तांबा) यह चांदी के निकट है सिवाय सुर्खी और खुश्की के और अन्तर नहीं इसकी सुर्खी गन्धककी गर्मी के कारण है और खुश्की मैल की अधिकता और मोटापन माद्दे से है तो जो कोई इसको नर्म और सुपेद करना चाहे तो उसकी इच्छा पूर्ण होगी अर्थात् चांदी होजाता है अरस्तू के विचार में सुर्ख रंग

प्रकारहैं (प्रथम)यहकि जिस समय वर्षा का जल या तरीकानों या गढ़ोमें इकट्ठा हो जातीहै और उनमें कोईखण्ड मिट्टी का मिलजाता है तो जब कानकी गर्मी उसमें पहुंचतीहै और वह जल बहुतसमय तक उस स्थानपर ठहरता है तो वह जल पत्थर की तरह बहुत सफाईसंगीनी और मोटाईकीतरफ झुकजाताहै और उससेकठोर२ ऐसे पत्थर बनजातेहैं जिनमें आग और पानी अपना प्रभाव नहीं कर सक्ता जैसे याकूत आदि और उनके रंगोंका फर्क खानकीगर्मी के सबबसे होताहै और थोड़ीसी गर्मी और सर्दी में फर्क होजाताहै कई मनुष्योंका वचनहै कि रंगके अन्तरका कारण यह है कि ग्रहों के अनुसार रंग होजाताहै जैसे कि काला रंग शनिश्चर के प्रभाव से और हरा वृहस्पति और लाल मंगलसे और पीला सूर्यसे और नीला शुक्रसे और जंगाली बुधसे और सपेद चन्द्रमासे (दूसरा प्रकार) यूं है कि पृथ्वी और जलके मिलनेसे पैदाहों और जो कि धरतीमें एकप्रकारकी लसहोतीहै और सूर्यकी गरमीने उसमें एक समयतक प्रभावपहुंचाया जैसा कि आग कच्चीईटमें प्रभावकरजाती है अर्थात् उसको पकादेतीहै इसीप्रकार यह पत्थर अन्य२ प्रकार के होतेहैं और अन्य२ होनेकाभी दृष्टान्त ईंटसे देना पूराहोगा जैसे सेवरी—पकी—ठर्रा होतीहै क्योंकि उसका होना आंच पहुंचने पर है इसी तरह पर इन पत्थरों का आपस में विरुद्ध होना स्थान के स्वभावपर समझागयाहै जैसे खारीपृथ्वीसे नमक और गेरू और फिटकरी उत्पन्न होते हैं यदि पृथ्वीमीठे स्वादकीहो वहांपरकेवल फिटकरी हर प्रकार की लाल पीली और सपेद पैदा होतीहै यदि कंकरीली या पथरीलीधरतीहै तो वहां केव[illegible] पैदाहोगा कई स्थान ऐसेदेखेगयेहैं जहां [illegible] स्था[illegible] से पानी पत्थर होजाताहै कईस्थानऐसेहैं [illegible]
हुआ करतीहै [illegible]दि उन बूंद [illegible]
हाथमें लेले [illegible]
तो पत्थर [illegible] कहानी [illegible]

में कोई ख़राबी पड़जातीहै तो उसलड़के में उपद्रव और जोड़ो की क्षीणता आदि होजाती है कहतेहैं जो मनुष्य उसकी हसलीबनाकर दरख़्त की जड़ में पहनादेवे तो उसवृक्ष के फूल और फल न झड़ैंगे और जो उसकी तख़्ती बनाकर छाती पर रक्खे तो स्वप्न प्रमेहरोग (अर्थात् जिसको स्वप्नमें वीर्य निकले) दूर होजायेगा यदि क़लईका टुकडा डेगचीमें छोड़देवे तो भोजन कच्चा रहेगा यह धातु सूर्यकी गर्मीसे भी गलती है परन्तु केवल अग्नि की गर्मी से जलतीहै यदि उसको नमक और तेलमिलाकररगड़ें और जोस्याही उसमे निकलै तलवार आदि जिसप्रकार के लोहेमें लगावें जग न लगेगा (शीशा) यहरांगेसे बुराहोता है कारणयहहै कि इसमें मैल अधिक होताहै इसमें यहगुण है कि सोनेको गलाता है और हीरे को तोड़ता है यूंतो हीरे को निहाई हथौड़े से भी लाख यत्न करे न टूटे गा वरन हथौड़े या निहाई में घुसजावेगा और जो शीशे पर रखकर थोडीसी चोटदें तुरन्त दोटूक होजाय शेख़रईस लिखता है कि इसकी तख़्तीबनाकर बांधना कंठमाला औरगर्द्द और जोड़ोंके घाव को गुणकरें और कामदेव की अधिकताके ठहरानेवाला और स्वप्न प्रमेहको दूरकरताहै (अलहारसेनी) यहभी उन्हीधातुओंकी सदृश पैदा होता है उसकी खान चीनमें है रंगउसका स्याही और सुर्खीलियेहै बहुधा इसकीगांसबनाते है वह बहुतदुख दायीहोतीहै इसके कांटेसे बड़ी २ मछलियां शिकार होसक्ती हैं क्योंकि इसके कांटे में यह प्रभाव है कि जिसवस्तुमे अटकावें फिर बड़ीकठिनता से अलगहोताहै उसकाशीशा बनाकर और क़लईकरके अंधियारे घरमेंरखकर उसपर दृष्टिकरना अर्द्धाङ्ग रोगको अति गुण दायक है इसके मोचने तीनबेर जहां के बाल उखाड़ें और वहांपर तेलमलदे फिर कभी बाल न निकलेंगे ॥

दूसरा प्रकार पत्थरोंका वर्णन ॥

यह पत्थर वर्षा और पृथ्वीके तरीके प्रभाव से उत्पन्न होते हैं सूर्यकी गर्मी ऐसे पत्थरों में अधिकतर प्रभाव रखती है इसके इ

है और सुधारता है जैसा कि हीरा जो सम्पूर्ण प्रकारके पत्थरों को छेदता है परन्तु शीशेमें आप टुकड़े होताहै बाज़े ऐसेहैं जिनको साफ़ करनेकी शक्ति है जैसे नौसादर जो सम्पूर्ण प्रकारके पत्थरों को मैल आदिसे शुद्धकरताहै संक्षेप यहहै कि अब इस स्थानपर थोड़ा थोड़ा सा हाल हरएक प्रकार के पत्थरों का लिखा जाता है(असमद) सुरमे का पत्थर है अरस्तूने लिखा है कि यह प्रसिद्ध पत्थर है इसकी बहुत खानेंहैं इसके उत्तम प्रकारोंमें अस्फहानी हैं और इस पत्थरमें रांगे का भी संयोग होता है इसके सुरमें का यह स्वभाव है कि नेत्र को हरप्रकार का गुण होजाताहै और ढकेको गुणदायक और पलकों को और नेत्रकी पीड़ाको नष्ट करता मुख्य करके वुड्ढोंकी आंखको बहुत गुण कारी है अब्दुल्ला के पुत्र जाबिर ने लिखा है कि पैगम्बर साहब का वचन है कि असमदको सदा काममें लाओ कि असमद के सुरमा लगाने से पलकें बहुत उगती हैं और मज़बूत होती हैं और ज्योति अधिक होती है यदि कुछ कस्तूरी भी उसके साथ अधिक करलेवें तो बहुतही लाभदेगा यदि असमदको चरबी के साथ मिला कर जलीहुई जगह पर लगावें तो बहुतही गुण देता है (अरमियों) यह पत्थर रूममें पैदाहोताहै इसके पांचकोने होतेहैं यदि इसके हज़ार टुकड़े करें तौभी हरएक टुकड़ा पांच कोने काहोगा जो मनुष्य इसका सुरमा लगावे उसकी आंख हर उपद्रवसे रक्षित रहेगी जो कोई इस पत्थर को अपने पास रक्खें तो अधिष्ठाताओं की दृष्टिमें प्रिय होगा इसकी पहचान यहहै कि इसमें सपेदरंग नीलाई लीहुई रेखा होती हैं॥

(अस्फ़ेदाज) यह कलई की राख है और इसी को सफ़ेदा का) शगरी भी कहते हैं यदि इसको औषधि में मिलाकर लगावें आंखों की पीड़ाको गुणकरे यदि इसको अच्छी तरह पर जलावें तो जस्त होजाता है इसको सांपके काटेहुये पर लगाना बहुत गुण करे ज-लानेके समय इसकी गन्धसे हटना चाहिये कि बहुत दुःखदायी है बलीनाशने खवासकी किताब अर्थात् स्वभावकी पुस्तकमें लिखाहै

ने पशु और स्थावरको पत्थर बना दियाहै तो सम्भव है कि ऐसा हो और उसकावर्णन इसतरहपर है कि ईश्वरने उस धरतियोंमें ऐसीही शक्ति रक्खीहै तो जववहांके मनुष्योंपर क्रोधी हुआ तो वहां की धरती से कुछ इस प्रकारकी बाफे उठी जिनके प्रभावसे वहांके जीवधारी पत्थर होगये शेख़ुलरईसने लिखाहैकि मैं जाजूममे था एक गोल पत्थर दिखाई दिया जिसके किनारे साबित थे और बीच उसका कुछ गहरा जैसा कि रोटी का गिर्दा होता है और उसकी पीठपर रेखाओं के चिह्न प्रकट थे जैसा तन्नूरी रोटियो पर होती हैं सो इन चिह्नो के द्वारा यह दृढ़ विचार हुआ कि यह निस्संदेह गिर्दा रोटी का होगा जो यहाके प्रभाव से पत्थर होगया—प्रगट है कि कानोके जौहर असंख्य हैं उनमे से कुछको मनुष्य पहचानते हैं तो कई प्रकारो का वर्णन इस पुस्तकमे किया जाता है—बाजे जवाहर ऐसे हैं जिनका प्रभाव बहुत अद्भुत है कई ऐसे कठोरहोतेहैं कि न आगसे जलें न उनको लोहेसे कुछ हानिहो जैसे याकूत के प्रकार और कई ऐसे नरम है कि पानीसे घुलजाते हे जैसे नमक और फिटकरी आदि बाजे वृक्षके सदृश होतेहै जैसे मूंगा कई पशुओं से प्राप्त होते हे जैसे मोती बाज़े वायु से उत्पन्न होते हैं अर्थात् ओले जो बादल और बिजली के साथ प्रकट होते है बाज़े पानी या मिट्टी से बढ़ने हैं कई मनुष्योकी कारीगरीसे होते हैं जैसे सोने चांदीका मेल और ज़ंगार—बाजे ऐसे दोपत्थर होते है कि परस्पर प्रीति रखते है जैसे सोना और हीरा हीरे का यह प्रभाव है जो सोने के पास लेजावें तो तुरन्त एक दूसरेसे चिपकजावें यहभी कहते है कि हीरा सोनेकी खानके सिवा और स्थानपर नहीं पायाजाता कई ऐसे होते हैं जिनमें अधिकतर आकर्षण शक्तिहोती है जैसे लोहा चुम्बक पत्थर और यह दोनों आपसमें बहुत चिमटते हैं यहां तक कि जब लोहेको चुम्बक पत्थरकी गन्धमिली तुरन्तही उसको खींचता है जिसतरह से कि प्रीतम अपने प्यारेको गोदमे खींचताहै बाज़े ऐसे दोपत्थर होते हैं जिनकी परस्पर शत्रुताहै जैसे कुरंड कि वहसब पत्थरोको काटता

पर पड़े अपने आप हँसी आती है यहां तक हँसता है कि जान निकल जाती है कहते हैं कि इस पत्थर में चुम्बक पत्थरका सा प्रभाव मनुष्य के लिये है एक कहानी है किसी हब्शके शहरों में इसकी एक दीवार है जो मनुष्य उधर जाता है और उसको देखता है वह हँसते२ उसी में जा मिलता है यह भी कहते हैं कि उसी शहर में इसी पत्थरका एक खम्भा है वह भी अपने साम्हने वालेको खींच लेता है और जिसकी दृष्टि उस पर जा पड़े हँसी प्रबल हो जाती है कहते हैं कि एक पक्षी फरफीर नामी गौरय्यासे कुछ छोटा काले रंगका लाल आँखें और लाल हंसली और लाल पांव किये होता है जब वह पक्षी उस खम्भे पर आ बैठता है तब वह पत्थर झूठा पड़ जाता है (बसद) अर्थात् मूंगेकी जड़ इस पत्थर का वृक्ष दरिया में उगता है जिस तरह कि पृथ्वी पर दरख़्त उगा करते हैं इनका रंग सपेद सुर्ख़ पीला और काला होता है लहू टपकने को गुण करे और इसका सुरमा नेत्र को बल दे और आंखके पानी बहने को दूर करता है और मनका बल कारक है और मूत्र के बन्द हो जाने में गुण करे मिर्गी वालेको लाभ दे उचित है कि मिर्गी वालेके गले में यन्त्र बनाकर डालें (बिल्लूर) अरस्तू ने इसको शीशे के प्रकार में लिखा है परन्तु यह शीशे से बहुत सख़्त होता है और इसकी उत्पत्ति खान से होती है बिल्लूर एक उत्तम प्रकार का शीशा है बहुत साफ़ और सख़्त और याक़ूत के रंगका सा है बादशाहों के पास उसके बरतन होते हैं क्योंकि उनमें बहुत गुण होते हैं यदि बिल्लूर को सूर्य्य के सामने करें और काला कपड़ा या रुई उसके पीछे लगावें तुरन्त आग निकल आवेगी तो जो चीज चाहो उससे जलालो बिल्लूर के छः प्रकार हैं एक ऐसा प्रकार है जिसकी सफ़ाई कुछ कम होती है और देखने में नमक की तरह पर मालूम होता है जब इस पत्थर को बुझाये हुये लोहे में रगड़ें तुरन्त आग निकलेगी बहुधा बादशाही गुलाम इसको आग निकालने के वास्ते अपने पास रखते हैं अरस्तू के सिवाय और बुद्धिमानों ने लिखा है कि काले रंग का बिल्लूर दांतों की पीड़ा वालेके पास रहना बहुत गुण दे (बोरक)

यदि इरफ़ेदाजको चचेंड़के जलमे जो ककड़ी के प्रकार से होता है घोलें और मकान में छिड़कें उस मकान से मच्छड़ दूर होजावेंगे अरस्तूने लिखा है इरफ़ैराज़ शीशे को सिरके में मिलाकर आंख में आंजना आंखोंकी सफ़ेदीको गुणदायकहै सड़ेहुयेमांसको दूरकरता और नवीन मांस निकालता है और उसके मरहममेंयहभी गुणहै कि दाहको लाभदे और अच्छेहुये घावके दाग़को अपने मूलरूपमें लाता है (आफ़रवख़्श) अरस्तूके विचारमें यह पत्थर हरतालकी खानोंमेंमिलता है उसका गुणहै कि जो उसकी भस्म एकमिस्काल अर्थात् साढ़े चार मासे भरके बराबर लेकर पचास मिस्काल सुर्ख़ तांबे में छोड़दें तुरन्त सपेद करदेगा यदि इसको चूनेमे मिला कर लगावें बालोंको गिरादेगा यह पत्थर हरतालसे अधिकतर तेज़ है इसको घिसकर सूजनमें लगाना गुणकारी है ॥

(अक़्लैमियायजर)अरस्तूने लिखा है जो सोनेका बुरादा किसी पत्थरके बुरादेमें मिलजाय तो औषधियोंकी शक्तिसे उसको अग्नि पर रखकर सोना अलग करते हैं उस समय सोना नीचे बैठजाता है और वह बुरादा पत्थर का ऊपर आजाता है परन्तु कालेरंगका और शीशेके सदृश चमकता हुआ उसको अक़्लीमियायज़र कहते हैं आंखोंकी पीडा और उसकी सफ़ेदीको दूरकरताहै और आंखकी तरीको भी गुणकारक है और लोगोंके विचारमे मोतियाबिंद प्रारम्भको भी गुणदायक है और आंख के नासूरको भी लाभदे और मैल साफ़ करता और बदगोश्तको दूरकरता और दाह बिना घाव को सुखाताहै (अक़्लीमियाय नुकरा) अरस्तू ने लिखाहै कि जब अक़्लीमियायज़र की रीतिपर इसकोभी अग्निपर रक्खें उसीतरह से उसका स्वरूप निकलता है जिसको अकलीमियायनुकरा कहते हैं कि इसको तेलों में मिलाकर घाव वग़ैरह पर लगाना गुणदायक है अरस्तूके सिवा और हकीमों के विचारमें नेत्र पीड़ा को गुण करे और इसका मरहम घावके भरनेमें जल्दी गुण करता है (बाहत) यह सपेद पत्थर बहुत ख़ूबीसे चमकता है जब मनुष्यकी दृष्टि इस

की बीस जौ भरकी अँगूठी बनाकर अपने पासरक्खे वह भय देने वाले स्वप्नों से बचा रहेगा जो कोई बेहादिक को सूर्य्य के सामने रखके दृष्टि लड़ावे तो नेत्रके ज्योतिकोवृद्धिहो और यह पत्थर घास फूसको कहरबा की तरह अपनी ओर खींचता है यहांतक कि जो कोई मनुष्य अपने बालों में लगाकर सोरहे तो जितनी घासफूस उसके शिर के पास होगी वहसब उसके बालों मे लिपट जायेगी (तद्दीर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर पश्चिम में नदीके किनारे पैदा होताहै और सपेद रंगका होताहै और सिवाय यहां के और जगह नहीं मिलता इसका गुण यहहै कि जो मनुष्य इसको सूंघे तुरन्तही उसका लहू सूखकर मरजाय (तङ्कार) अरस्तूने लिखा है कि यह पत्थर नमकके प्रकार से होताहै और उसमें कचलोनका स्वाद मिलताहै नदी किनारे खानोंमें पाया जाताहै सोनेके गलाने और नर्म करने में सहायक है और कीड़े खाये हुये दांतों को लाभ करे कीड़ोंको मारकर दांतोंकी पीड़ाशान्तकरताहै औरदांतोंको बहुत साफ़रखताहै दांतों के हर प्रकारकी पीड़कोगुण करताहै (तूतिया) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थरहै इसकारंग सपेदपीला और सब्ज़ होताहै और कुछ सुर्खी लिये होताहै इसकी खानें सिन्ध और हिन्दकी नदियों में होतीहैं इसको हरप्रकार आंखोंकी तरीको गुण दायक है बगलकी बदबू को नाश करती है अरस्तू के सिवाय और लोगोंने लिखाहै कि तूतिया एक प्रकार का तेलहै कि तांबा साफ करनेके समय पत्थर और रेतकेद्वारा निकलता है जो कि उस सोने में मिली होती है आंखों की पीड़ाको भी नष्ट करता है (जालिबुन्नूम) अरस्तूने लिखा है कि यहपत्थर बहुतसुर्ख और रंग का साफ़ होताहै जो इसको दिनमें देखे तो ऐसा मालूम होताहै कि धुवांऐसा निकलरहाहै और रातको ऐसा प्रकाश होता कि उसके ओर पासकी चीज़ें दिखाई देतीहैं और यदिइस पत्थर को सात माशे भी जिस मनुष्यके शरीरमें पहनादें वहतुरन्तही सोजावेगा यदि सोतेहुये मनुष्यके शिरहाने रखदें जबतक उसे अलग न करें

(अर्थात् कचलोन) यह धरतीके भागों का खारीपन है और नमक की तरहपर निकला करताहै परन्तु नमकसे अधिक प्रबलहै और उसकेप्रकार बहुत होतेहैं जैसे तनरून और उसको कारीगरीकरके चूनेकीतरहपर बनातेहैं जिसको तिन्कार कहतेहैं इसेहिन्दुस्तानसे लातेहैं और यह मुख्यकर उसीस्थानमें होताहै जहां मुर्दोंको जलाते हैं और यहप्रकार बहुत प्रिय होताहै इसे बौरक़ जराबिन्दी सुर्खी मायल बौरक खुवाजैन बौरक किरमानी और बौरक़ मगरबी कहते हैं कि यह प्रकार पश्चिम के वृक्ष से प्राप्त होताहै इसका गुण यह लिखाहै कि जो हम्माममें थोड़ीदेर बैठकर झाईपर इसको लगावें तो तुरन्तही उक्तदाग़ दूरहोजायेगे यदि किसीकेकण्ठमें जोंकलटक गईहोतो बौरकको सिरकेमें मिलाकरकुल्लीकरें तुरन्त जोंक निकल जायेगी यदि बौरक़को सिरकेमेंघोलकर उसकेअन्दर मुर्ग़ का अण्डा रक्खेंतो उसकी छालदूरहोगी अरस्तूके विचारमें बौरकबहुतप्रकार का होताहै जिनमें कई बहती नदीमें पैदाहोतेहैं और बाजे पत्थरों की खानमें होतेहैं बाज़े उनमें से सपेद सुर्ख और खाकी रंग होते हैं सिवाय इनके और बहुतसे रंगका होताहै सो जब उसको किसी बरतनमें रखकर उसपर सिरकाछोड़े तो बिना आगके उबाल खाता है और बौरक सब खानकी चीजों को नर्म करदेताहै और गलाता है अरस्तूके सिवाय और लोगों का विचारहै कि बौरक़ से खुजली कोढ़ और वह रोग जिसमें सपेद और काले दाग़ शरीरमें प्रकट होते हैं गुण पहुंचाता है और फोड़ों को पकादेता है और कान के भारीपन को लाभदे और जलधर वालेको अजीरके साथ खाना बहुतही उचित है और आंखकी पुरानी सपेदी को दूर करसक्ता है और नेत्रपीड़ा को गुणकरे यदि मरहम बनाकर लगावें घावों को भरताहै (बेहादक़) अरस्तू ने लिखा है कि उसका रंग सुर्ख होता है और पूर्वके शहरों में उसकी खानहै जब इसको खानसे बाहर निकालतेहैं काले रंगका होजाताहै और जब इसे कारीगर लोग साफ़ करतेहैं तो इसका रूप दूना होजाताहै जो मनुष्य इसपत्थरें

होगा और कोई खराबी उस फलपर न आवेगी (बंज़ पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि जो मनुष्य इसपत्थरको छीले जो छीलन उसकी पीली निकले तो उसका अद्भुत प्रभावहै कि जिसमनुष्यके पासहो चाहे वह सच कहे या झूठ सब लोग अंगीकार करेंगे यदि छीलन लालहो तो उसके रखने वाला जो क्रिया करे सिद्धहो यदि छीलन नीले रंगकीहै तो जिस बातके लिये वह किसीके लिये पापकी क्षमा ईश्वरसे चाहे अंगीकारहो यदि छीलन आसमानी रंगहै तो उसके पास रखने से वह मनुष्य सर्वदा प्रसन्न रहेगा यदि छीलन का रंग सब्जहै तो उसको बागमें लटकाना बहुत गुणकारीहै कि तुरन्त बोयेहुये बीजको हरा करता है यदि कोई मनुष्य हलाहल बिष पान करगयाहो वा सांप बिच्छूने काटाहो तो उसे उचितहै कि इस पत्थरका यन्त्र बनावें या उसको धोकर पीजावे तुरन्तही बिष उतर जावेगा (अहमर पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर सुर्खहै इसको भी छीलतेहैं यदि छीलन उसकी सफ़ेद रंगकीहोतो जो मनुष्य उसको अपने पासरक्खे जो कार्य करै सिद्धहो और उसका रंग कालाहै तो उसके रखनेवालेका जिस बस्तुको मन चाहेगा तुरन्त प्राप्तहोगी पीले रंगका डंडपर बांधना सृष्टिकी दृष्टिमेंप्रिय करताहै यदि मट्टीकी रंगतका हो तो उसका स्वभाव यहहै कि हर एक कार्य सफलहो यदि सब्जरंगहो तो जिसके पासहो उस पर हथियार काम न करेगा (खिज़्र पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि पत्थर सब्जहोता चाहिये कि उसको भी छीलें यदि उसकी छीलन सफ़ेद निकले अपनेपासरक्खे और जो वृक्षबोवे अथवाखेतीका कामकरे उसकी जड़में इस पत्थरको घाससे ढांकदे इस क्रिया से वह उत्तम प्रकार हराभराहोताहै यदि काली रंगतकी हो तो हरओरसे उसके लिये भलाइयों का समूह तय्यारहोगा और पीले रंगमें यह गुणहै कि जो मनुष्य इसको अपने पास रक्खे उसको जो औषधिदीजायेगी गुणकरेगी यदि सुर्खरंग है तो बहुतसे पारितोषिक धनवानोंसे उसे मिलेंगे और लोगों में प्रिय होगा तो कोई ऐसा रोग न होगा जो

कभी न लगेगा, यदि मकतोंपर मर्दन करे गुणकरे (जज़ा) यह कई प्रकारका होताहै इसको यमन या चीनके शहरसे लातेहैं, यमनका पत्थर बहुत उत्तम होताहै और इसका रंग बहुतकाला और सिपेद होताहै चीनके रहनेवाले इससे ग्लानि रखतेहैं उनमेसे एक जाति मुख्य करके ऐसीहै जो इसको खानोंसे निकाल कर चीन शहरके सिवाय और शहरोंमें लेजाकर बेचतेहैं और जो विक्री प्राप्तकरते हैं और यमनके बादशाह इसको न तो अपने खज़ाने में रखते न गर्दनमें लटकाते हैं यदि भूलकर भी कोई मनुष्य इस पत्थरको उठाकर अपने पास रक्खे तो बहुत दुःखी हो और भय देने वाले स्वप्न देखे उसकी इच्छा सिद्ध न हो जो लड़कोंको पहनादें तो उस की राल बहुत बहे और वह बहुत रोवेगा और भयमान होगा यदि उसको घिसकर पिये तो नींद उड़ जायेगी और भयमान दुश्शील और कठोर होगा याकूतको इसीसे साफ करतेहैं तो उस में बड़ी बुराकी और प्रकाश आजाताहै अरस्तू के विचार में इस पत्थरको प्रतिसमय दृष्टिके सामने रखना बहुत शोकवान् और दुःखी करता है, यदि इसको किसी अज्ञात जाति के बीचमें रखदें तो अवश्य करके उनमें वैरहोगा और जबतक यह लड़ाई उठाने वाला पत्थर बीच में रहेगा शत्रुता जाती रहेगी यदि गर्भवती स्त्री इसका यन्त्र बनावे प्रसूतिकी पीडासे आराम पावे और पास रखने से भी शीघ्र प्रसव होताहै (हामी) यहपत्थर बहुत सुर्ख काले नुक़ते रखताहै इसको हिन्दके शहरोंसे लातेहैं जो मनुष्य इस को पावे और उसके काले चिह्नों की सफ़ाई करडाले तो वह लाल होजावेगा जो उस समय गालेहुये तांबेपर छोड़ें वहभी सुर्खरंग स्वर्णवत् होगा यदि इसको नाकमें लटकावे अर्द्धाङ्ग रोगको गुण करे हजरत बलैनासने अपने गुणों की पुस्तक में लिखाहै कि जब ऊंट बहुत बिलबिलावे उसके गले में इसको बांध दे वह तुरन्तही चुप होजावेगा और साहब फलाहाने लिखाहै कि जिसपत्थरमें स्वाभाविक छिद्रहो दुरुस्त करे जो इसको किसी वृक्षमें लटकादे तो उसमें फल बहुत

उसकी ओषधिसे आराम न पावे (अरमनीपत्थर) इसपत्थरमें कुछ लाजवर्दपन होताहै बहुधा ऐसाहोता कि मुसव्विरलोग लाजवर्दके बदले इसको काममेंलाते हैं इसकेगुणोंमें लिखाहै कि सौदा अर्थात् जलेहुये दोषको निकालदेताहै और इसका नक्श धोनेसे नाश नहीं होता (आसमांजूनी पत्थर) अरस्तूने कहा है कि जब इस पत्थरको छीलें जो उसकी छीलन सफेद रंग निकले तो जो कोई उसकोपास रक्खे वहकभी दुर्बुद्धि नहोगा नाउसकेपास शोक और दुःख आवेगा यदि उसकाकालारंग प्रकटहो तो जोकोईउसको अपनेसाथरक्खेगा उसका काम जारी न होगा यदि पीलेरंगका हो तो हरएक कामको सुधारनेवाला होगा यदि उसको किसी नदी या कुयेंमें छोड़ें तो उसका जल कम होजायेगा किन्तु पानी निकलना बन्द होगा यदि छीलनकी रंगत सुर्ख हो तो उसका रखनेवाला हर एकसे भलाई पावेगा यदि सब्ज रंगहो तो उसका रखनेवाला जहां कुछ बोदे वहांके वृक्ष आदि उत्तमतासे प्रकटहों यदि पीलेरंग का है तो उसका काम सदा जारी रहेगा (असफेनजपत्थर) शेखरईसने कहा कि यह पत्थर खोखला है नमदे की तरह पर कहते हैं कि एक जीवधारी पानी में रहता है और जिस चीज़को पाताहै लिपट जाताहै इसके पेटमें एक पत्थर होताहै कि वह अति प्रियहै उसका गुण यह है कि पथरी को टुकड़े २ करताहै (असवदपत्थर) अरस्तू लिखता है कि यह काला पत्थर है जब इसको छीलें तो जो उसकी छीलन सफेद हो तो सांप और बिच्छूको बहुत गुणकरे और जिसकेपास पीलेरंग काहो तो वह दीन नहीं होताहै या जिसमकान में हो वहां के स्त्री पुरुष रोगोंसे शान्तिपाते हैं और कभी बीमार नहीं होते हैं कालेरङ्ग का गुण यहहै कि जिसके पासहो उसके सम्पूर्ण कार्य सिद्धहों और बुद्धि में वृद्धि प्रकटहो यदि सब्जरंग है तो उसको डंकमारनेवाले जानवर कभीदुःख न पहुंचावेंगे (असफरपत्थर) अरस्तू ने लिखाहै कि जो पत्थर पीलाहै और उसको छीलें यदि उसकी छीलन सफ़ेद हो तो उसका पास रखनेवाला जो कुछ जिससे मांगे वह हासिल

उसको मिर्गीवाले के बांधे तो तुरन्तही आरोग्य हो और बीर्य की वृद्धिकेलिये अद्वितीय है दुर्द्दष्टि के लिये तुरन्तही गुणादे जो लड़के स्वप्नमें डरतेहों जो उनके शिरहानेपर उसकोरक्खें भय जातारहेगा (रहीपत्थर) इसको फ़ारसीमें संगआसिया कहते हैं जो इसका नीचे का टुकड़ा गर्भवतीस्त्री के बांधे कभी गर्भपात न हो और जो प्रसूति की पीड़ाके समय बांधे तो प्रसव में सुगमता हो जो उसको गरम करके सिरका छिड़कें और फिर जिसमनुष्य के लहू जारी हो वह उसपर बैठजाय तुरन्त लहू बन्दहोजावे और गर्मीकेशोथको गलाने वालाभी है (सामूर पत्थर) यह उस प्रकार का पत्थरहै जो हरएक पत्थरको छीलताहै लिखाहै कि जब दाऊदकेपुत्र सुलेमानने मक्केकी नेव डालनीचाही शैतानको पत्थर के काटनेका हुक्मदिया लोगोंने उससमय पत्थरोंके कटनेका शब्दसुना और उसके शब्दसे घबरा- कर चिल्लाये सो सुलेमान ने उलमायबनीइसराईल को जिन्नोंसमेत जमा किया और कहा कि तुममें से किसीको ऐसा उपाय स्मरणहै कि शब्दहोने के बिना पत्थर चीरजावे उन्होंने कहा कि हमनहीं जानते और यह भी कहा कि हां येजिनहैं जिसका सहरनामहै और वह आपके सामने विद्यमान नहीं है वह निस्सन्देह ऐसी विद्या जानताहै यह सुनकर सुलेमान ने उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी और उसने आकर विनयकी कि ऐसे पत्थर के काटने के वास्तेएक प्रकारका पत्थर है जिसको मैं जानता हूं परन्तु जहां वह होताहै वह नहींजानता हां एकउपाय मुझे यादहै तो कहा कि एकउक़ाब पक्षी का घोंसला और उसका अण्डा ढूंढ़कर लाओ तो जिनों ने
तुरन्त सब संग्रह करदिया और [illegible] को बहुत
साफ़ मंगवाकर उक़ाब का घ[illegible] से [illegible] और आप
अलग होरहा तो जब उक़ाब [illegible] और [illegible]
सिलिको शीशके [illegible]
न हुआ उसने [illegible]
चोंचमें एकप[illegible] उसने [illegible]

हलका होताहै कि डूबता नहीं उसका गुण इस तरह लिखाहै कि जो मनुष्य इस पत्थर को अपने पास रक्खे नदीमें डूबने से निर्भय रहे यदि इस पत्थर को शिकारी जानवरों के स्थानमें रखदें फिर वहांसे उठाकर हुवारी पक्षियों के स्थानमें रखदें फिर वहांसे उठाकर मनुष्य की कमरपर बांधें तो स्वप्न में भय दूर होजावेगा और अवासीर को भी गुणकरे (हबश पत्थर) यह पत्थर हबश के शहरों में पाया जाता है इसका स्वभाव यह है कि रतौंधी और आंखों की सूजन और नेत्रपीड़ा को गुणकरे और घावके चिह्नको दूर करके शरीरके वर्णके अनुसार करदेताहै (हसात पत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरमें नरमी बहुत होतीहै और पश्चिमकी नदीसे निकलता है उसका स्वरूप चर्खके नकलके सदृश होताहै जो मनुष्य इस पत्थर को दशजौके बराबर खावे तुरन्तही उसकी पथरी टूटजावे (हीत पत्थर) इसको फ़ारसी भाषामें मारमोहरा कहतेहैं इसकी सूरत सीठेकी तरह पर होतीहै और बहुधा सर्पोंके शिर पर प्रकट होताहै इसके गुण इस तरह पर लिखेहैं कि जिसे सांपने काटाहो वह मनुष्य इस पत्थरको पानी या दूधमें घिसकर घावपर रक्खे तुरन्तही चिपकजावेगा और सारे ज़हरको चूसजायेगा शेखरईसने लिखाहै कि यह पत्थर सर्पके विषको दूर करताहै जालीनूसने कहाहै कि मैंने इसका यह गुण सच्चे आदमीसे सुनाहै इसके सिवा और लोग वर्णनकरते हैं कि इस पत्थरही में विष होताहै और यह कोई कालेरंग का और कोई खाकी रंगका है जिस पत्थरमें छेद होतेहैं वह भूलकी ओषधि है बाकी सब प्रकार इसके पथरी के लिये गुणदायक हैं॥

(खिताब पत्थर) अर्थात् अबाबील का पत्थर यह दो पत्थर हैं जो उसके घोसलेमें पाये जातेहैं सुर्ख और सफ़ेद तो जो मनुष्य स्वप्न में भयमानहो उसको लाल पत्थर का पास रखना अति गुणदायक होगा और मिर्गीवालेको सफ़ेदरंगका लाभदे और कमलबायुको भी लाभ दे (दजाज पत्थर) इसपत्थरको मालूमुर्ग के पोटेमें पातेहैं जो

*हुवारा यह पक्षीहै कि मुर्गाबीके बराबर होताहै एउसका पीला और कालाहोताहै

उसको मिर्गीवाले के बांधे तो तुरन्तही आरोग्य हो और वीर्य की वृद्धिकेलिये अद्वितीय है दृष्टि के लिये तुरन्तही गुणदे जो लड़के स्वप्नमें डरतेहों जो उनके शिरहानेपर उसकोरक्खे भय जातारहेगा (रहीपत्थर) इसको फ़ारसीमें संगआसिया कहते हैं जो इसका नीचे का टुकड़ा गर्भवतीस्त्री ने बांधे कभी गर्भपात न हो और जो प्रसूति की पीड़ाके समय बांधे तो प्रसव में सुगमता हो जो उसको गरम करके सिरका छिड़कें और फिर जिसमनुष्य के लहू जारी हो वह उसपर बैठजाय तुरन्त लहू बन्दहोजावे और गर्मीकेशोथको गलाने वालाभी है (सामूर पत्थर) यह उस प्रकार का पत्थरहै जो हरएक पत्थरको छीलताहै लिखाहै कि जब दाऊदकेपुत्र सुलेमानने मक्केकी नेव डालनीचाही शैतानको पत्थरके काटनेका हुक्मदिया लोगोंने उससमय पत्थरोंके कटनेका शब्दसुना और उसके शब्दसे घबरा-कर चिल्लाये सो सुलेमान ने उलमायबनीइसराईल को जिन्नोंसमेत जमाकिया और कहा कि तुममें से किसीको ऐसा उपाय स्मरणहै कि शब्दहोने के बिना पत्थर चीराजावे उन्होंने कहा कि हमनहीं जानते और यह भी कहा कि हां येजिनहै जिसका सहरनामहै और वह आपके सामने विद्यमान नहीं है वह निस्सन्देह ऐसी विद्या जानताहै यह सुनकर सुलेमान ने उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी और उसने आकर विनयकी कि ऐसे पत्थर के काटने के वास्तेएक प्रकारका पत्थर है जिसको मैं जानता हूं परन्तु जहां वह होताहै वह नहींजानता हां एकउपाय मुझे यादहै तो कहा कि एकउक़ाब पक्षी का घोंसला और उसका अण्डा ढूंढ़कर लाओ तो जिनों ने तुरन्त सर्व संग्रह करदिया और एकप्याला सख़्त शीशे का बहुत साफ़ मँगवाकर उक़ाब का घोंसला उसमें रख दिया और आप अलग होरहा तो जब उक़ाब अपने घोंसलके पासआया और घों-सलको शीशेके प्यालेमेंदेखा तो उसमें चुंगलमारा पर कुछ असर न हुआ उससमय वह किसी ओर गया दूसरे दिन आया उसकी चोंचमें एकपत्थर था सो उसने उसपत्थरको शीशेपर रक्खा जिस

के रखतेही वहशीशा दोटूक होगया और किसीप्रकार का शब्द न हुआ सो हज़रत सुलेमानने उकाबपक्षीसे पूछा कि यहपत्थरकहांसे लाया उसनेविनयकी कि इसको पश्चिमके पर्वतसे लायाहूं जिसका नाम सामोरीहै तो हजरत सुलेमान ने जिन्नोंकीसेना उधर भेजकर आवश्यकता के अनुसार पत्थर उठवा मँगवाये और पत्थर का कटना विनाशब्दके शुरूहोगया(समपत्थर) यहपत्थर जज़े (अर्थात् सुलेमानी मोहर जो सफ़ेद और कालीहोतीहै) उसके सदृश होताहै और बादशाही कोषो के सिवाय और जगह नहीं मिलता इसका गुण यहहै कि किसी मनुष्य के पास विषहो और वह मनुष्य उस पत्थर के निकट हो तो वह पत्थर हिलता है अलीकेपुत्र वजीरनिज़ामुलमुल्कने सैर मलूकनामी पुस्तकमें लिखाहै कि अब्दुलमुल्कके पुत्र सुलेमानने एक दिन कहा कि मेराराज्य दाऊदके पुत्र सुलेमां के राज्यसे कम नहीं परन्तु यही न कि सुलेमां को ईश्वरने जिन्न मनुष्य वायु और पक्षियोंका भी राजा बनाया था परन्तु मेरे पास जितने माल और हथियार हैं किसी बादशाह की भाग्य में नहीं उस समय सभा के विद्यमान लोगो मे से एक मनुष्य ने विनय की कि एक ऐसी वस्तुहै जिसकी आवश्यकता सब बादशाहरखते हैं और वह चीज हजरतके पास नहीं है तो अब्दुलमलिक के पुत्र सुलेमांने उस चीज़को पूछा उसने विनयकी कि वजीर बेटावजीर का जैसा कि तू ख़लीफ़ा बेटा ख़लीफा काहै तो सुलेमांने कहा कि तू ऐसे वजीर को जानताहै उसने कहा हां बरमकके पुत्र जाफरने वज़ारत की पदवी को कुलकी थातीसे पाया और अर्दशेर के समय से उसके घराने में यह पदवी चली आतीहै बहुतसी उसके बड़ों की बनाईहुई वजारत की किताबें उसकेपासहैं सिवाय उसके और कोई तेरा मंत्री होनेके योग्य नहीं है सो सुलेमां ने बलख़के अधिपतिके नाम आज्ञा लिखी कि जाफर को दमिश्ककी ओर प्रतिष्ठापूर्वक भेजो चाहे लाख अशर्फी भी राह ख़र्च पड़ें तो जिस समय जाफ़र दमिश्कमें आया और सुलेमांके सामने पहुंचकर उसने चरण

चुने तो सुलेमांने उसके स्वरूप को बहुत अच्छा पाया और अति आदर से अपने पास बैठनेकी आज्ञादी परन्तु थोड़ी देरमें सुलेमां ने मुंह खट्टा करके आज्ञादी कि मेरेपास से दूरहो और द्वारपालों ने ज़ाफ़र को आज्ञानुसार वहां से बाहर निकाल दिया लोगों को आश्चर्य हुआ कि इसका कारण विदित न हुआ निदान बादशाह ने एकान्तमें सभा होनेकी आज्ञादी उस समय एक मन्त्रीने विनय की कि हे महाराज ज़ाफ़र को खुरासां से बुलवाना और इतनी प्रतिष्ठाके साथ सभासद बनाना और घड़ी भरमें आंखों से दूर करना इसका क्या कारणहै सुलेमांने कहा यदि वह दूरसेआया न होता तौ परमेश्वरकी सौगन्दहै कि उसको मारडालता क्योंकिजब वह मेरे साम्हने आया तो हलाहल विप अपने साथ रखताथा तो क्या अच्छी बात कि पहिले भेंट मेरे वास्ते वह हलाहल विष थी सो उस मंत्री ने कहा यदि आज्ञा दीजिये तो ज़ाफ़र को भी यह हाल बताऊं आज्ञा हुई कि बहुत अच्छा सो वह मनुष्य ज़ाफ़र के पास आया और वह सारा वृत्तान्त मुखपर लाया ज़ाफ़र ने कहा वास्तव में मेरेपास विषथा और इस अगूठीके नगीनेके नीचे अभी मौजूद है इसकाकारण यहहै कि हमारे बाप दादोंपर बहुधा बादशाहोंने कोप किया और बहुतसे दुख कष्ट प्राणों पर उठाये तो मुझे यह भय रहा करता है कि ऐसा न हो कि जो हमारे बड़ों के साथ बर्त्ताव हुआहै वही हमारे साथभी हो इसलिये हरसमय यह विप विद्यमान रहता है कि जब ईश्वर न करे ऐसे दुःख मे फसूं तो तुरन्त इस अंगूठोको चूसकर संसार छोड़दूं इस वृत्तांत को सुनकर वह मंत्री तुरन्त लौटा और सम्पूर्ण वृतान्त सुलेमांको सुनाया सुलेमां इस अग्रशोची का हाल सुनकर अति प्रसन्न हुये और फिर उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी और आदरपूर्वक अपने निकट स्थान दिया और आज्ञादी कि थोड़े तौक़ीयात लिखिये (तौक़ी उस बादशाही पत्रको कहते हैं कि कोपकी अवस्थामें लिखेजावें) तो जबएक समय बीता और ज़ाफ़र खुलाहोगया तो उसने बादशाह से विनय

के रखतेही वहशीशा दोटूक होगया और किसीप्रकार का शब्द न हुआ सो हज़रत सुलेमानने उक़ाबपक्षीसे पूछा कि यहपत्थरकहांसे लाया उसनेविनयकी कि इसको पश्चिमके पर्वतसे लायाहूं जिसका नाम सामोरीहै तो हज़रत सुलेमान ने जिन्नोंकीसेना उधर भेजकर आवश्यकता के अनुसार पत्थर उठवा मँगवाये और पत्थर का कटना विनाशब्दके शुरूहोगया(समपत्थर) यहपत्थर जज़ै (अर्थात् सुलेमानी मोहर जो सफ़ेद और कालीहोतीहै) उसके सदृश होताहै और बादशाही कोषों के सिवाय और जगह नहीं मिलता इसका गुण यहहै कि किसी मनुष्य के पास विषहो और वह मनुष्य उस पत्थर के निकट हो तो वह पत्थर हिलता है अलीकेपुत्र वज़ीरनिज़ामुलमुल्कने सैर मलूकेनामी पुस्तकमें लिखाहै कि अब्दुलमुल्कके पुत्र सुलेमानने एक दिन कहा कि मेराराज्य दाऊदके पुत्र सुलेमां के राज्यसे कम नहीं परन्तु यही न कि सुलेमां को ईश्वरने जिन्न मनुष्य वायु और पक्षियोंका भी राजा बनाया था परन्तु मेरे पास जितने माल और हथियार हैं किसी बादशाह की भाग्य में नहीं उस समय सभा के विद्यमान लोगो में से एक मनुष्य ने विनय की कि एक ऐसी वस्तुहै जिसकी आवश्यकता सब बादशाहरखते हैं और वह चीज़ हजरतके पास नहीं है तो अब्दुलमलिकके पुत्र सुलेमांने उस चीज़को पूछा उसने विनयकी कि वजीर बेटावज़ीर का जैसा कि तू ख़लीफ़ा बेटा ख़लीफ़ा काहै तो सुलेमांने कहा कि तू ऐसे वजीर को जानताहै उसने कहा हां बरमकके पुत्र जाफ़रने वज़ारत की पदवी को कुलकी थातीसे पाया और अर्दशेर के समय से उसके घराने में यह पदवी चली आतीहै बहुतसी उसके बड़ों की बनाईहुई वजारत की किताबें उसकेपासहैं सिवाय उसके और कोई तेरा मन्त्री होनेके योग्य नहीं है सो सुलेमां ने बलख़के अधिपतिके नाम आज्ञा लिखी कि जाफर को दमिश्ककी ओर प्रतिष्ठापूर्वक भेजो चाहे लाख अशर्फी भी राह ख़र्च पड़ें तो जिस समय जाफ़र दमिश्कमें आया और सुलेमांके सामने पहुंचकर उसने चरण

चूमे तो सुलेमांने उसके स्वरूप को बहुत अच्छा पाया और अति आदर से अपने पास बैठनेकी आज्ञादी परन्तु थोड़ी देरमें सुलेमां ने मुंह खट्टा करके आज्ञादी कि मेरेपास से दूरहो और द्वारपालों ने ज़ाफ़र को आज्ञानुसार वहां से बाहर निकाल दिया लोगों को आश्चर्य हुआ कि इसका कारण विदित न हुआ निदान बादशाह ने एकान्तमें सभा होनेकी आज्ञादी उस समय एक मन्त्रीने विनय की कि हे महाराज ज़ाफ़र को खुरासां से बुलवाना और इतनी प्रतिष्ठाके साथ सभासद बनाना और घड़ी भरमें आंखों से दूर करना इसका क्या कारणहै सुलेमांने कहा यदि वह दूरसेआया न होता तो परमेश्वरकी सौगन्दहै कि उसको मारडालता क्योंकिजब वह मेरे साम्हने आया तो हलाहल विष अपने साथ रखताथा तो क्या अच्छी बात कि पहिले भेंट मेरे वास्ते वह हलाहल विष थी सो उस मंत्री ने कहा यदि आज्ञा दीजिये तो ज़ाफ़र को भी यह हाल बताऊं आज्ञा हुई कि बहुत अच्छा सो वह मनुष्य ज़ाफ़र के पास आया और वह सारा वृत्तान्त मुखपर लाया ज़ाफ़र ने कहा वास्तव में मेरेपास विषथा और इस अंगूठीके नगीनेके नीचे अभी मौजूद है इसकाकारण यहहै कि हमारे बाप दादोंपर बहुधा बाद-शाहोंने कोप किया और बहुतसे दुख कष्ट प्राणों पर उठाये तो मुझे यह भय रहा करता है कि ऐसा न हो कि जो हमारे बड़ों के साथ बर्त्ताव हुआहै वही हमारे साथभी हो इसलिये हरसमय यह विष विद्यमान रहता है कि जब ईश्वर न करे ऐसे दुःख मे फसूं तो तुरन्त इस अंगूठीको चूसकर संसार छोड़दूं इस वृत्तांत को सुनकर वह मन्त्री तुरन्त लौटा और सम्पूर्ण वृत्तान्त सुलेमांको सुनाया सु-लेमां इस अग्रशोची का हाल सुनकर अति प्रसन्न हुये और फिर उसके हाज़िर होनेकी आज्ञादी और आदरपूर्वक अपने निकट स्थान दिया और आज्ञादी कि थोड़े तौक़ीयात लिखिये (तौक़ी उस बाद-शाही पत्रको कहते हैं कि कोपकी अवस्थामें लिखेजावें) तो जबएक समय बीता और ज़ाफ़र खुलाहोगया तो उसने बादशाह से विनय

को कि आपको किस तरह से मालूम हुआ कि मेरे पास विषहै सुलेमां ने कहा कि मेरे पास दो मोहरे यमन के मोहरे के सदृश हैं उनका गुण है कि अगर कोई विष लेकर किसी तरह पर सामने आवे तो वह मोहरे हिलेंगे तो जब तुम दरबारमें आये वह मोहरेहिले इस चिह्नसे हमने तुमको विषलियेहुये समझा और जबतेरे उठ जानेसे मोहरे शांतहुये तो मुझेअधिक निश्चय होगया कि निस्संदेह तेरे पास जहर था और सुलेमां ने दोनो मोहरे जाफ़र को दिखाये (शयार्ती पत्थर) अरस्तू ने कहा कि यह पत्थर सदा सुर्ख़ है इसका रंग याकूत के सदृश होता है और जब इसको तोड़ें तो भीतर से भी याक़ूतके रंगका होता है परन्तु यह बहुत साफ़ नहीहोता जब पानी में छोड़ें हरताल की तरह पीला होजाता है यदि इसको तीनबेर गलावे तो शिंगरफ की तरह लाल होजावे यदि एक भाग इसका चारभाग चांदी में छोड़ें तो सुर्ख़ सोना तय्यार हो (सफ़पत्थर) यह लाल रंग का पत्थर कुछ स्याही लिये होता है और किरमां की धरती में पाया जाताहै इसको हजरलहमार भी कहते हैं जिसे शराबका नशा जियादह हो या शिरपीड़ाहो कजलीकरके इसको पिये तुरन्तही आरोग्य होजायेगा बहुत इसको पीसकर शिंगरफ के साथ लिखते हैं लाल रोशनाई तय्यार होजाती है पर कुछ स्याही लिये (सनोवर पत्थर) अरस्तूने इस पत्थर को कमल वायु के लिये बहुत उत्तम लिखा है और इस पत्थरको अबाबीलके घोसले में पाते हैं अरस्तूके सिवाय औरमनुष्योंने लिखा है कि इस पत्थर के पानेके वास्ते यह उपायहै कि अबाबीलके बच्चोंको पकड़लें और उनके शरीरको केसरसे रंगदें और उनके घोंसलो मे छोड़दें तो वह मालूम करती है कि मेरे बच्चोंको कामला होगया तो वह अपने बच्चों के इलाजके वास्ते यह पत्थर लाकर अपने घोसलेमें रखतीहै—आगे ईश्वर जाने (ओजी पत्थर) शेख़रईसके विचारमें यह पत्थर हाथी दांतके सदृश होता है जिस जगहसे लहू बहताहो जो इसकोघिस कर उस जगह पर इसका लेप करें तो तुरन्त वन्द होजायेगा इसे

पारसी भाषा में शकर संग कहते हैं और शीराजी भाषा में संग ज़ख्मनोक्रते हैं(असली पत्थर) शेख़रईस का लेख है कि यह पत्थर हकाक के प्रकार से है अर्थात् जिस पर मोहर खोदी जातीहै जब इसकोघिसें तो इसकी तरी बहुत मीठी होती है जब इसको किसी बहुतमोटे आदमीके शरीर पर रक्खें पतला होजावेगा और नेत्रके घाव को गुण करे मुख्य करके मुर्ग़ के अंडे की सपेदी के साथ और नेत्रकी आरोग्यता के लिये लाभ दे (उक़ाबपत्थर) यहपत्थर छुहारे की गुठली के सदृश होताहै जब इसको हिलावें तो अन्दर से आवाज़ खटखटाहट की पाईजाती है यदि उसको तोड़ डालेंतो उसके अन्दरसे कुछ भी नहीं निकलता बहुधा उकाब पक्षीके घोंसले में मिलताहै और वह हिन्दुस्तान की धरतीमें होता है जब कोई उकाबके घोंसले की ओर मुख करताहै तो उकाब उन्हीं प्रकारके टुकरों को लोगोंकी ओर फेंकना आरम्भ करताहै कि लोग उसको लेकर अपनारस्तापकड़ें मानों उक़ाबको इसबातकानिश्चय होगयाहै कि जोलोग उसकेघोंसले कीओर ध्यानकरतेहैं वहकेवल उन्हीं पत्थरोंको ढूंढ़ने आतेहैं इस पत्थरकेगुणमेंलिखाहै कि गर्भवती स्त्रियों के बांधना प्रसूति की पीड़ा में गुणकरे जोकोई मनुष्य इस पत्थरके टुकड़ेको जिह्वाके नीचे रक्खे शत्रुपर प्रबल होगा और जिस मनुष्यसे जो मांगे वह देगाऔर बहुधा इस पत्थरके टुकड़ेको करगस के घोंसलेमेंभी पातेहैं (कमरपत्थर) इसको बजाकुठकमर और ज़न्दुलबहरभी कहते हैं शेख़ रईस ने लिखा है कि यह पत्थर पश्चिमकी धरतीपर महीने के आरम्भ में पाया जाताहै यह पत्थर बहुत हल्का होताहै इसकागुण यहहै कि इसको पासरखने से मिर्गी नाशहोतीहै जो वृक्षपर लटकावे बहुत फलेगा शेख़के सिवाय और लोगोंनेकहाहै कि यहपत्थर सफ़ेदरंगका बहुत साफ़होताहै और उसके अन्दरभी सफ़ेदी पाईजातीहै और वह सफ़ेदी महीनेकेबढ़ने पर बढ़तीहै और घटने पर घटती जातीहै हिन्दुस्तान के चारोंओर एकप्रकार का ऐसापत्थरहोताहै कि चंद्रग्रहणकेसमय उससे पानी

को कि आपको किस तरह से मालूम हुआ कि मेरे पास विषहै सुलेमां ने कहा कि मेरे पास दो मोहरे यमन के मोहरे के सदृश हैं उनका गुण है कि अगर कोई विष लेकर किसी तरह पर सामने आवे तो वह मोहरे हिलेंगे तो जब तुम दरबारमे आये वह मोहरेहिले इस चिह्नसे हमने तुमको विषलियेहुये समझा और जबतेरे उठ जानेसे मोहरे शांतहुये तो मुझेअधिक निश्चय होगया कि निस्संदेह तेरे पास जहर था और सुलेमां ने दोनो मोहरे जाफ़र को दिखाये (यार्ती पत्थर) अरस्तू ने कहा कि यह पत्थर सदा सुर्ख है इसका रंग याकूत के सदृश होता है और जब इसको तोडें तो भीतर से भी याक़ूतके रंगका होता है परन्तु यह बहुत साफ़ नहींहोता जब पानी में छोडें हरताल की तरह पीला होजाता है यदि इसको तीनबेर गलावें तो शिंगरफ की तरह लाल होजावे यदि एक भाग इसका चारभाग चांदी में छोड़े तो सुर्ख सोना तय्यार हो (सफ़पत्थर) यह लाल रंग का पत्थर कुछ स्याही लिये होता है और किरमां की धरती में पाया जाताहै इसको हजरलहमार भी कहते हैं जिसे शराबका नशा जियादह हो या शिरपीड़ाहो कजलीकरके इसको पिये तुरन्तही आरोग्य होजायेगा बहुत इसको पीसकर शिंगरफ के साथ लिखते हैं लाल रोशनाई तय्यार होजाती है पर कुछ स्याही लिये (सनोबर पत्थर) अरस्तूने इस पत्थर को कमल वायु के लिये बहुत उत्तम लिखा है और इस पत्थरको अबाबीलके घोंसले में पाते हैं अरस्तूके सिवाय और मनुष्योंने लिखा है कि इस पत्थर के पानेके वास्ते यह उपायहै कि अबाबीलके बच्चोंको पकड़लें और उनके शरीरको केसरसे रंगदें और उनके घोसले मे छोड़दें तो वह मालूम करती है कि मेरे बच्चोको कामला होगया तो वह अपने बच्चों के इलाजके वास्ते यह पत्थर लाकर अपने घोसलेमें रखतीहै—आगे ईश्वर जाने (आजी पत्थर) शेख रईसके विचारमें यह पत्थर हाथी दांतके सदृश होता है जिस जगहसे लहू बहताहो जो इसकोघिस कर उस जगह पर इसका लेप करें तो तुरन्त बन्द होजायेगा इसे

हैं यदि पानी बरसानेवाले कुछ देर इस पत्थर को जल में रख दे तुरन्त बादल आजावे और फुहार बरसनेलगे बहुधा ऐसा होता है कि पानी ज़ोरसे बरसताहै और ओलेभी पड़ते हैं एकमनुष्य वर्णन करता है कि एक वज़ीर ने इस पत्थरके टुकड़े का गुण देखनाचाहा तो एक तुर्कके रहनेवाले मनुष्यको आज्ञादी कि हमारेसाम्हने इस पत्थर का गुण दिखा तो उस मनुष्यने एक तसले में पानी भराकर उस प्रकारका पत्थर का टुकड़ा उसमें डाल दिया थोड़ी भी देर न हुईथी कि बादल आया और जल बर्षने लगा (नाक़ा पत्थर) यह पत्थर उस स्थानपर मिलता है जहां ऊंट चरा करता है यदि इस पत्थरको किसी पशुपर बांधें तो जो चीज़ उस पशुपर सवारहोकर कोई पिये उसका स्वाद मालूम न होगा यदि इस पत्थर को किसी दीवाने आशिक़ अर्थात् प्यारकरनेवाले के दगड पर बांधदें तो तुरन्त उसकीप्रीति दूरहोगी और अपने होशमें आजावेगा (हिन्दीपत्थर) अरस्तु के विचार में यह पत्थर सूराख़दार होता है और सूराख़ इसके पीले और सपेद होते हैं जलन्धर रोगी के उदरपर रखने से उसके पेट का पीला पानी बिल्कुल चूस लेता है और तमाशा यह कि जो उस पत्थरको तोलाजावे तो जितना पीला पानी रोगी के उदर से चूसलियाहै उसका भार इस पत्थरमें अधिक होजाता है जहां चाले न निकलें इसको कामर्में लावें तुरन्त प्रकट होजावेंगे (त्योलदफिलइन्सां) यह पत्थर मनुष्य के उदरमेंसे उत्पन्न होता है अरस्तूने लिखा है कि यदि इसका सुरमा बनाकर लगावें आंखों की सपेदी नाशहो (त्योलदफि[illegible] यह पत्थर जो बँधेहुये पानी जैसे कि तालाव [illegible] के वि-चार में इस [illegible] वाले [illegible]
दीवाने की [illegible]
इसपत्थरको [illegible]
इसपर [illegible] है
सैतूनी [illegible]

टपकता है उसकोभी हजरुलक़मर कहते हैं (फारपत्थर) पश्चिम की धरती में चूहे के सदृश एक पत्थर होता है बहुधा लोग उसको अपने मकान में रखते हैं तो तुरन्त सब चूहे उस घरके उसकेपास इकट्ठे होते हैं और मनुष्य के पास आने से भी भागते नहीं उसी समय मनुष्योंके हाथसे मारेजाते हैं निदान उसधरतीमें यहपत्थर का टुकड़ा बहुत काम आता है क्योंकि वहां बिल्लियां नहीं है (केर पत्थर) अरस्तू के विचार में इस पत्थर को पश्चिमीय धरती पर पाते हैं उस स्थान के निकट जिसको सिकन्दर ने बनाया था इस पत्थर का काला रंग होता है और बहुत सख़्त जो इस पत्थर के टुकड़ेका एक खंड जो एक हज़ार खंड की (अर्थात् वह तेल जो दरज़ोंके बन्द होने के लिये जहाज़ में लगाते हैं बाज़ोंने उसे राल लिखा है) पर डालें तो तुरन्तही उबाल खायेगा जिस तरह कोई चीज आगपर पके यदि ऐसी नदीके किनारे जो बहुत सख़्त और तेज बहतीहो डालदें तो वह नदीवहांसे हटकर दूसरीओर जावेगी (असलीपत्थर) यह पत्थर मिसर की धरतीपर पाये जाते हैं जब मनुष्य अपने हाथमें लेताहै उसे मूर्च्छा आजातीहै और जो वस्तु उसकेमेदे (अर्थात् पक्वाशयमें होतीहै कै होजातीहै यदि इसपत्थर को अपने पाससे अलग न करदेवे तो मृत्यु का भयहै अलकल्ब जो पत्थर कुत्ते को मारें और कुत्ता उस पत्थर के टुकड़े को दांतों से उठा ले उसी को कलबपत्थर कहते हैं यदि उस पत्थर को मद्यमें घिस कर किसी को पिलावें वह मनुष्य लड़ाई पर तय्यार होजावे या अगर एक समूह उस मद्य को पीलें तो उन सब में परस्पर युद्ध और बैर होजावे (लबनीपत्थर) जिस समय इस पत्थर को जल में छोड़ें तो वह पानी दूध होजाता है परन्तु उसका रंग मटियाला और मीठे स्वाद का होता है सूजन को गुणकारक है और सुरमा इसका आंख से कीचड़ निकलेको दूर करनेवाला और रोकनेवाला है और आंख के घाव को गुणदायक है (मतर पत्थर) इस पत्थर को तुर्कसे लाते हैं वह कई तरह का होताहै और इसके कईरंगहोते

से उत्पन्न होता है यदि इस पत्थर को सात जौ के बराबर घिस कर दो रंगे मुर्ग़ के पित्ते के पानी में घोलकर पियें और टेढ़ी हुई हड्डियों की जगह पर उसको मर्दन करें हड्डी अपनी जगह पहुंच कर सीधी होजावेगी यदि इस पत्थर को सात जो के अनुमान लेकर पीसें और पारेकी भस्म में मिलाकर तांबे पर डालें तो वह तांबा चांदी होजावेगा (हिरस) अरस्तू ने इस पत्थर को पीला रंगका सपेदी और सब्ज़ी मिलाहुआ हल्का और नरम लिखा है बहुधा यह पत्थर पश्चिम की धरती में होता है इस के गुण में लिखा है कि सब डंक मारने वाले जानवरों के विष को दूरकरता है (हूसाय) यह लोहे के मैलसे है अरस्तू ने लिखा है कि गर्म करने और कूटने के समय लोहे से यह पत्थर सा अलग होता है इसको खुब्सुलहदीद कहते हैं इस के अद्भुत गुण हैं कि बवासीर और नानाप्रकार के घावों के अच्छा करने में आज़माया हुआ है और मन्दाग्नि और विलम्ब में भोजन के पचने को गुणकरै और पक्काशय को बलदेता है और बवासीर को बहुत गुणकारक है (खुब्सुलतेन) अर्थात् गुल की मैल अरस्तू ने लिखा है कि जब कोई बरतन बनाकर आग पर रखते हैं तो हर बरतन से तरी शहदकी तरह पर टपकती है और वही पत्थर सी होजाती है गुण उसका यहहै कि रंगरेज़ लोग उसको सिरकेमें पीसकर कपड़ों को काला रंगते हैं और यह पत्थर चारपायों के घावों के वास्ते चाहे वह कहीं घावहो बहुत गुणदायक है (खुसियैइबलीस) यह पत्थर मिसर की धरती में मिलता है जिसमनुष्यके पास हो उसके गिर्द कभी चोर न आवेंगे और उसकी प्रतिष्ठा हर एककी दृष्टिमें होगी (दुरदरयायजोशन्दा) अरस्तू ने लिखा है कि उक्रयानूस दरिया जो कि संसार को घेरेहै और उस दरिया को मसलूक दरिया घेरे है और मसलूक उस दरिया को कहतेहैं जहां ग़ोतेखोर मोती निकालने के लिये ग़ोता लगाते हैं और यह दरिया वसन्त ऋतु में जोश मारता है और इस में तीक्ष्णपवन के झोकों से बहुत उपद्रव

करे और मूत्रशोध और मन्दाग्नि को अति लाभदायक है इस शर्त पर कि आधामिस्काल अर्थात् पौने दो माशे गर्म पानीके साथ पियें परन्तु वीर्यको काटताहै शैखके सिवाय और लोगोंने कहा है इस पत्थर की मरवांत नदी के किनारे पातेहैं और यह पत्थर हरदिन अपनी खानिमें हिलता रहताहै परन्तु शनिश्चरको स्थिर रहता है इसीलिये इसका नाम संग यहूदी है इसका गुण यह है यदि इसको जलमें पीसकर पियें पथरी तुरन्त टुकड़े २ होजावेगी यदि इस पत्थरके कई टुकडे किसी जगह पर थोड़ा दिनों के वास्ते रखदें तो चालीस दिनके पीछे संख्या में अधिक होजावेंगे (यकूम अलल्मापत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर ऐसा हल्का होता है कि पानीपर तैरा करताहै और रातको बिल्कुल पानी से ऊपर निकलताहै और नामको थोड़ा सा जलमें रहताहै और जब सूर्य्य निकलताहै तो सबपानीमें होजाताहै थोड़ासाभीबाहर निकलारहता है और इस पत्थरमें यह गुणहै कि जो मनुष्य अपने साथ रक्खे उसके सवारीका घोड़ा कभी आवाज़ न देगा जबकभी सिकन्दर रूमी रातके धावेकी इच्छा करता था इस पत्थर को सब साथियो के पास बंधवा देता था (जिंदुलसाबिक) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर और उक्त पत्थर दोनों एकही जगह पर हुआ करतेहैं परन्तु यह उसके विपरीतहै ज्योंरि सूर्य निकलताहै त्योंरि यह पत्थर भी निकलना शुरूहोता है और जब आकाश बादल से घिराहो उस दिन यह पत्थरबिल्कुल जलकेअन्दर छिप जाताहै और इसका गुण यहहै कि जिस घोड़े आदि के बांधें वह सारादिन और रात चला करेगा (सरलियूंपत्थर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर सोने और चांदीकी खानोंमें होताहै रंग उसका कभी पीला कभी लाल कभी सब्ज़ कभी काला होताहै और जिसमें चारोरंगहोंगे वहसब से उत्तम होगा पीले रंगको तोसोने चांदीमें मिलताहै और काला चांदीमें इन प्रकारोंमें एक उत्तम पत्थर होताहै जिसमें चांदी और सोना और तांबा मिलाहो और यह पत्थर इन्हीं धातुओं की भाफ

उक़यानूस दरियामें एकजगह पारे की तरहपर पानीहै और जिस बूंदसे कि मोतीपैदाहोताहै वह उसीपानीकीबूंदें हैं जो हवाकेझोंकों से सीपके पेटमें जातेहैं और मोतीबन जातेहैं तो जब मोती सीपके पेटमें पूर्ण होजाताहै दूसरीजगह सीप जातीहै और वहां पहुंचकर थोड़ेदिन रहतीहै फिर वहांसे वहरैन (वह नद रूमऔर शाममेंहैं) की तरफ़ झुकती है और उसके वहरैनमें आनेका मुख्य समय होता है कि लोग मालूम करलेतेहैं कि अब सीपों का समूह आपहुंचा सो उस समय ग़ोतेख़ोर गोता लगाते हैं और सीप को निकालते हैं तो जो लोग नियमित समयपर ग़ोता लगाते हैं वह मोती बहुत साफ़ और सुंदर पाते हैं और जो कम या ज़ियादह वक़्में ग़ोता लगाते हैं तो मोती ख़राब होजाता है अरस्तूने मोतीके स्वभावमें लिखा है कि ख़फ़क़ान अर्थात् उन्माद रोग को बहुतही जल्दी गुण करता है और हृदयके रुधिरको साफ़करता है और इस सबबसे बहुधा हकीम मोती को सुरमे की औषधियों में मिलाते हैं कि आंखों के पट्ठे बल पहुंचे यदि बरसके रोगीको मोतीके पानीसेमलें जो ईश्वर चाहे आराम होजायेगा (धनज) पारसीमें इसको दहाना कहते हैं अरस्तू ने लिखा है कि यह पत्थर सब्ज़ है हुरमुसने लिखा है कि यहपत्थर तांबेकी खानि में पाया जाता है और इसका वर्णन इस तरह है कि जबहवाकी गर्मी और ज़मीनकी भाफ़ तांबेको उसकी कानमें पकाते हैं तो उससे भाफ़ निकला करती है और इस भाफ़ का निकलना उस गन्धक के गुणसे है जो कि पृथ्वी में होती है सो वह भाफ़ ऊंचे होकर एक दूसरे पर जमा होजाती है और जब वायुका स्वभाव बदल जाता है तो वह भाफ़ जमाहोकर धनज बनजाता है यह पत्थर कई प्रकार का होता है बाजा बहुत सब्ज़ होता है और कोई मोरपंखके सदृश और बहुधा सबरंग एकही धनज़में प्रकट होते हैं जिस तरह कि ज़बरजद जो एकप्रकार का पत्थर सब्ज़रंग ज़र्दी लिये है और उसका सुवर्ण से सम्बन्ध है उसीतरह पर धनज का सम्बन्ध तांबेसे है और यह कानकी भाफ़से अपने आप पैदा होता है और

होताहे सो इसवायु के उठतेही मसलूक दरियाकी सीपें दरिया से ऊपर आजातीहैं और हवा के झोकोंसे इस दरियाके पानीकी छांटें मसलूक दरियामें गिरतीहैं जिसको सीप मनुष्य के बीज के सदृश अपने उदर में धारण करती है और दरिया में जाड़ रहती है और वह वीर्य्य मांस और जल से मिलकर बडा होता है जितनी बड़ी बूंद सीप के मुंहमें जातीहै उतनाही बड़ा मोती बँधता है जब कि सीपके मुंहमें बूंद गिरती है सीप दरियाकी गहराई से निकल कर पानीपर आजातीहै परन्तु सूर्यके उदय और अस्तहोने और दक्षिणीय पवन के चलने के समय परन्तु जब दोपहर हो तो जल के अन्दर चली जातीहै क्योंकि जब सूर्य्यकी गर्मी अधिक होतीहै तो मोती खराब होजाताहै तो जब सुबहको सीप निकली है तो अपने मुखको दक्षिण की हवाके सामने खुला करतीहै कि उस वायु से उसका मोती साफ़ और सुथराहो इसलिये दक्षिण की पवन और सूर्य्यकी गर्मीसे जमताहै जिस तरह स्त्री के उदर में बच्चा बढ़ता है और जो उस सीप के पेटमें पहिलेका खारी पानी बाकी होताहै तो मोती पीली रंगतका या ऐसा कालाहोताहै जिसको अलग नहींकर सके और जो नही होताहै तो मोती बहुत साफ़ होताहै और इसी तौर पर जो दोनों उक्त समयों के विरुद्ध अर्थात् प्रभात और सन्ध्याके सीप दरियाकी गहराई से बाहरको निकले तौभी उसका मोती बदरंग होजाताहै और जो बहुधा मोतियों में कीड़े या मोती बीचसेखोखले दिखाईदेतेहैं इसकाकारण यहहै कि जबबहुधा सीप दरिया की गहराई मे जाती है तो उसकी पेंदी में मजबूत बेठती है और फिर वहांसे उभरती नहींहै यहांतक कि उसमेंसे घासकी तरह जड़ें निकलीहैं और सीपका जीव जाता रहता है यदि गोतेखोर उस दशामे बहुत समयके पीछे उसको बाहरलावें तो जरूर उसका मोती खराब और ऐबदार होताहै जैसा कि मेवाका हालहै कि जो पकनेके पीछे वृक्षसे तोड़ा न जाय तो कुछ दिनोंकेपीछे वहउसी वृक्ष में सड़ जाता है अरस्तू के सिवाय और बुद्धिमानो का वचनहै कि

मट्टी और पानी के भाग रलमले हुयेहैं इसीलिये उसमें नमकपाया जाता है और जोकि गर्मी से पककर चिकनाई को प्रकट करती है गन्धक भी है और जोकि सूर्यकी गर्मीसे पानी और मट्टी आपसमें मिलगये इस सबबसे पत्थरसी है रहा रंगका लाना प्रकार का होना तो यह खानिके स्वभावके अनुसारहै कई लोगों के विचार से इसके सर्व्व प्रकारों की उत्पत्ति मरेहुये पारे और सब्ज रंग की गन्धकसे है और फिटकरीका रंग सुर्ख,सब्ज़,पीला, सब्ज़पीलाऔर सफ़ेद होताहै सुर्खको सूरी कहतेहैं और यह सर्व प्रकारों में उत्तम होतीहै और कैरसकी ओरसे लातेहैं सब्जको कलकतार कहते हैं इसका स्वाद मीठाहै और पीली एक प्रकार की रोशनाई है जब इसको तोड़िये उसके अन्दरसे गोंद ऐसा निकलताहै और यह भी बहुतअच्छीहोतीहै और रँगरेजो और जूताबनानेवालोंकी फिटकरी वहहै जिसमें तोड़ने से आंखें ऐसीदिखाई देतीहैं और सबसे उत्तम सफ़ेद फिटकरी होतीहै जिसे जरजान और तबरिस्तान से लातेहैं इसकागुण यों लिखाहै कि शिरके घाव और खुजली और नासूर और नकसीर को गुणकारक है और जो मुंह दांत और नाक में अकलेकी बीमारी होतीहै उसको भी गुणकरै जब फिटकरीकी धूनी देवें उसकीगन्ध से चूहे और मक्खियां भागतीहैं अब उसके हर-एक रंग और प्रकारों के गुण लिखे जाते हैं (ज़ब्दुलबहर) शेख-रईस ने लिखाहै कि ज़ब्दुलबहर कईप्रकार का होताहै फारसी में इसको कफदरिया(समुन्दरफेन)कहतेहैं बाज उनमेंसे फितरकीतरह पर होताहै जो बालो के गिरजाने में नरेका गुण रखताहै झांई को भी उपयोगी है और बाज़ी अरफंज के सूरवकी मैटीहोती है और उसकी गन्ध मछलीकी गन्धसी आतीहै यहदरिया के किनारे ब-हुतमिलती है और दांतोंका खूबमाफ़ करती है और एकप्रकार का नाम दुर्दहै कि पांवकी रगकीपोड़ा और तिल्ली और जलन्धर को गुणदायकहै शेख के सिवाय और मनुष्योंने कहाहै कि सिरकेमें मि-लाकर बालखोरेपर लगाना ८ ९ इसमें अद्भुत गुणयहहै

यह पत्थर हवाकी सफ़ाईसे साफ़ होता है और हवाके मैले होनेसे मैला होताहै इसके स्वभावमें लिखाहै यदि बिच्छू के डंकके घाव पर मलें तो गुणदायक होगा यदिकोई यह पत्थर घिसाहुआ पिये तो फिर कोई विष अपना अवगुण न करेगा यदि सिरके में घिस कर दादपर लगावें तो गुणकरे और सब घावोंको उपयोगी है यह आंखकी ओषधियोंमें भी काम आताहै आंखकी सपेदीको दूरकर-ताहै और यन्त्र बनाने से वीर्य्य अधिक होताहै (दीमाती) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बहुत कालेरंगका होताहै बहुधा नदीमें पाया जाताहै इसे जलाकर पारेके साथ खरल करें तो पाराबँधजाता है यदि इसको अबरक पर लगाकर आग दिखलावें तो अबरकपानी की तरहपर होजातीहै(रुख़ाम) यह मशहूर पत्थरहै अरस्तूने लिखा है कि जो यह मनचाहे कि स्त्री गर्भवती न होतो इस पत्थरको घिस कर एक टंक उसको पिलावें कभी गर्भ धारण न करेगी बलीनासने अपने स्वभावकी पुस्तकमें लिखाहै कि रुख़ामके अन्दर कीडेहोते हैं जो उनकीडोंमेंसे दो तीन लेकर किसीकपड़ेमें लपेटकर स्त्रीकीभुजा पर बांधदेवें तो कभी गर्भधारण न करेगी (ज़फ़ती) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर ज़फ़त (अर्थात् वह काली गोंद जो चीड़केवृक्षसे मिल-तीहै)केसदृश कालाहोताहै और तोडनेपर शीशेकीतरहपर टूटजाताहै बहुधा पश्चिम की धरतीमें से निकलता है इसका स्वभाव लिखा हैकि जो पीसकर तेलके साथ नाकमें टपकावें कोढ़ और पीले पानी का निकलना बन्द करताहै और जख़्मो को साफ करताहै (रेवस) अरस्तू ने कहा है कि इस पत्थर को अख़ज़र नद के निकट पाते हैं इसका गुण अद्भुत है कि यदि मनुष्य इसको अपनी उंगुली में पहने तो शोक और दुःख उसका नाश होजाय (ज़ाज़ाव) अर्थात् फिटकरी इसके सम्पूर्णप्रकारो की उत्पत्ति मट्टी और पानीके भागों से होतीहै जब मट्टी के भाग पानीसे मिलते हैं तो चिकनाई पैदा होती है सो गलने के लायक़ होजाती है और इसी कारण नमक गन्धक और पत्थर के कण उसमे पाये जाते हैं तो जो कि उसमें

और तांबेके पतरमले तांबा सफ़ेद होजाताहै और तांबेकी गन्धभी जाती रहतीहै जो हरतालको आगमें जलावें और दांतोंमें मलें तो गुणकरे और दांतोंके सम्पूर्ण रोग दूर होजाते हैं अरस्तूके सिवाय और लोगोंने लिखाहै कि सब प्रकार के घावोंको अच्छा करती है और जो थोड़े ज़ैतके तेलमें मिलाकर शिरमें डालें तो सब शिर के जुयें मरजाते हैं और गुलाब तेलके साथ ववासीर को बहुत लाभ करे यदि मनुष्य अपने शरीर पर मर्दन करे कि बाल दूरहों तोयह डर है कि झाईके दाग दिखाई न दें तो चाहिये कि इस औषध के सेवन के उपरांत चावल और गोखरू पीसकर सम्पूर्ण शरीर में उबटनकरे कि उसकी तेज़ी दूरहोजावे पीले हरतालकी गन्ध से मक्खियोंकी मौतहै और जो इसको किसी प्रकारके रसमें छोड़कर मक्खियों के साम्हने रक्खें तो भी मक्खियों के वास्ते हलाहल है (ज़मुर्रद) इसे जबरजदभी कहतेहैं अरस्तू लिखताहै कि ज़मुर्रद एक प्रकारकापत्थरहै जो सोनेकी खानिमें पैदाहोताहै इसकारंगसब्जा और साफ़होताहै और जो ज़मुर्रद कि बहुतसब्ज़होताहै और जिस का ज़ोहर बहुत साफ़होताहै वह ज़मुर्रद काले रंगसे बहुत उत्तम होताहै इसकेस्वभावमें लिखाहै कि जो इसकोपानीमेंघिसकरपियें तो विषैके कीड़ोंके विषसे छुट्टीपावें और जबकि विषने अपनाप्रभाव न कियाहो और मांस इधर उधर गिरा न हो तो तीनजौ के अनुमान घिसकर पीना गुणकारी होगा ज़मुर्रदकी ओर दृष्टि दौड़ाना नेत्रकी ज्योति को अधिक करताहै जो मनुष्य जमुर्रद को हाथ या गर्दनमें रक्खे मिर्गीकी बीमारी से छुट्टीपायेगा किन्तु जो इसरोगके उत्पन्न होनेके पहिले यह क्रियाकरें तो बहुत उत्तमहै और इसकेपास रखने से भूतप्रेत भागते हैं इसी दृष्टिसे [illegible] ने [illegible] इसका रखना गुणकारी समझा है इब्नमा[illegible] लिखाहै [illegible] निकलने और अतीसारकेवास्ते [illegible] की [illegible] दपर पड़ जाय तो उ[illegible] ढलकेकी [illegible] (ज़ंज[illegible]
इसे फ़ारसी में [illegible]

कि बाल निकालतीहै और गिराती भी है और त्वचा के रोग जैसे झांई छीप आदि सबको गुणकरे परन्तु ऐसे स्थान पर नाम और रौगनन अर्थात् गुलाबतेलसे काममे लानी चाहिये और जलन्धर मूत्ररोधको लाभकरे वाजोंकेविचारमे इसका स्त्रीकीरानमें लटकाना प्रसूतिकीपीड़ा में सुगमता करताहै यदि साढेतीनमाशे के अनुमान दस रतिल अर्थात् पांचमन खारीपानीमे छोडें और उबालें तोवह पानी तुरन्तही मीठा होजायेगा (जिजांज) अर्थात् कांच अरस्तूने लिखाहै कि यह कईप्रकारकाहोताहै बाज़े इनमेंसे रेतहोते है कि जिनके नीचे आगजलाकर उसमें मुग़नीसिया पत्थर डालतेहैं और उसको इकट्ठा करके एक टुकडा वनातेहै और एक प्रकार यहहैकि संगरेजा और संग कलीको अ टाकरके और उसको गलाकर ऐसे सांचेमें छोडते हैं जो कि आग पर खूब गरम होरहाहो फिर आग पर से उतार कर हवामें रखतेहैं और धुयेंसे बचाते है क्योंकि उसको उस समय धुवालगजाय तो तुरन्त टूटजावे और कोई उसमे अर्थ सिद्ध न हो और जो रंग कांचमे छोडे पकड़ लेताहै क्योंकि उसमे नरमी बहुत होतीहै कहते है कि यह पत्थर कुल पत्थरोंमे अहमक होताहै जिस तरहसे बाजे मनुष्य अहमक़ होतेहैं क्योंकि हरमनुष्य का रंग पकड़ लेताहै शेखरईसने लिखाहै कि यदि काचको पारके साथमलें तो दांतों में चमक लाताहै और बालोंको उगाता है आंख मे लगानेसे आंखकी ज्योतिकी वृद्धिहोतीहै और सफेदी उसकीदूर होतीहै बलीनासने अपने स्वभावके पुस्तकोंमें लिखाहै यदि कांचको घिसकर ऐसे बरतन में छोड़ें जिसके अंदर कुछ शराब और पानी मिलाहुआहो तो पानी शराबसे अलगहोजाताहै और इसकी परीक्षा बहुत सुगमहै (जरनेख) अर्थात् हरताल अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर प्रसिद्धहै इसके रंगके बहुत प्रकारहैं लाल पीला और खाकी प्रसिद्ध है सुर्ख और पीलारंग देखनेमे सोना मालूम होताहै यदि चूनेके साथ काममेंलावें बालोंके दूरकरने में बहुत तेजहै और लाहलह विषहै जो मनुष्य हरतालको आगपर रखकर सफ़ेद करे

और तांबेके पत्तरमले तांबा सफ़ेद होजाताहै और तांबेकी गन्धभी जाती रहतीहै जो हरतालको आगमें जलावें और दांतोंमें मलें तो गुणकरे और दांतोंके सम्पूर्ण रोग दूर होजाते हैं अरस्तूके सिवाय और लोगोंने लिखाहै कि सब प्रकार के घावोंको अच्छा करती है और जो थोड़े ज़ैतके तेलमें मिलाकर शिरमें डालें तो सब शिर के जुयें मरजाते हैं और गुलाब तेलके साथ बवासीर को बहुत लाभ करे यदि मनुष्य अपने शरीर पर मर्दन करे कि बाल दूरहों तोयह डर है कि झाईंके दाग दिखाई न दें तो चाहिये कि इस औषध के सेवन के उपरांत चावल और गोखरू पीसकर सम्पूर्ण शरीर में उबटनकरे कि उसकी तेज़ी दूरहोजावे पीले हरतालकी गन्ध से मक्खियोंकी मौतहै और जो इसको किसी प्रकारके रसमें छोड़कर मक्खियों के साम्हने रखदें तौ भी मक्खियों के वास्ते हलाहल है (ज़मुर्रद) इसे जबरजदभी कहतेहैं अरस्तू लिखताहै कि जमुर्रद एक प्रकारकापत्थरहै जो सोनेकी खानिमें पैदाहोताहै इसकारंगसब्जा और साफ़होताहै और जो ज़मुर्रद कि बहुतसब्ज़होताहै और जिस का ज़ौहर बहुत साफ़होताहै वह ज़मुर्रद काले रंगसे बहुत उत्तम होताहै इसकेस्वभावमे लिखाहै कि जो इसकोपानीमेंघिसकरपियें तो विषके कीड़ोंके विषसे छुट्टीपावें और जबकि विषने अपनाप्रभाव न कियाहो और मांस इधर उधर गिरा न हो तो तीनजौ के अनुमान घिसकर पीना गुणकारी होगा ज़मुर्रदकी ओर दृष्टि दौड़ाना नेत्रकी ज्योति को अधिक करताहै जो मनुष्य जमुर्रद को हाथ या गर्दनमें रक्खे मिर्गीकी बीमारी से छुट्टीपायगा किन्तु जो इसरोगके उत्पन्न होनेके पहिले यह क्रियाकरैं तो बहुत उत्तमहै और इसकेपास रखने से भूतप्रेत भागते हैं इसी दृष्टिसे बादशाहों ने अपने हाथमें इसका रखना गुणकारी समझा है इब्नमासूया ने लिखाहै कि लहू निकलने और अतीसारकेवास्ते लाभकारकहै यदि सर्पकी दृष्टि जमुर्रदपर पड़ जाय तो उसकोतुरन्त ढलकेकी बीमारीहो और अंधाहोजाय (ज़ंजार इसे फ़ारसी मेंज़ंगार कहतेहैं अरस्तूके विचारसे इस पत्थरको तांबे

और पीतलकी खानिसे निकालतेहैं यहपत्थर बहुधा सिरकेके साथ नेत्र रोगमें सेवन किया जाताहै नाख़ूना (अर्थात् वह सपेदीलिये मांस नाख़ून के सदृशहो और नेत्र को अन्धाकरे) और सफ़ेदी और खारिश और ढलका और कमजोरी और नेत्र के रोगों को गुण करे और घाव के बदगोश्तको नाशकरे अरस्तूके सिवाय और लोग कहतेहैं कि ज़ग दो प्रकारका एक खानिका दूसरा बनाया हुआहोताहै परन्तु खानि का बहुत उत्तम होताहै और खानिवाले को तावे की खानिसे निकालता है और मोम रोगनके साथ ख़ारिश कोढ़ और झाईंकेवास्ते लाभकरे यदि उसका अरक़ नाकमें बनाकरटपकावें तो बदबूदूरकरदे यहउचितहै कि पहिलेसे मुंहमे पानीभरलें कि उसके गर्द न पहुंचे और २ औषधियों के साथ आंखकी सफ़ेदी दूर करने में शीघ्रही गुणकरे और बवासीर की बीमारी को भी गुणदायक है (ज़ंजफर) इसे फ़ारसी मे शिंगरफ कहते हैं अरस्तू ने लिखा है यदि पारेको शीशेमें रखकर जोश दें और देग का मुंह बहुत मज़बूत और कपरमिट्टी करदें तो उसीमे शिंगरफ पैदाहोता है और उसकी सफेदी जर्दीसे बदल जातीहै यहांतक कि सुर्ख होजाताहै जो ईश्वर चाहे कहीं जोशदेने के समय देगका मुखटूटजावे और उसका धुआं मनुष्य के शरीरमें लगजाय तो ऐसाकठिन रोगहोगा कि वह उससे मरजाय अरस्तू के सिवाय और लोगों ने लिखाहै कि शिंगरफ दो प्रकारका एक खानी और दूसरा बनायाहुआ होताहै सो खानिका तो गन्धक गिरने से पारे की खानिमे पैदा होताहै और बना हुआ वहीहै जो अरस्तू ने अपने ऊपर लिखीहुई क्रिया मे लिखाहै उसका गुण यों है कि बुरेमांस और जलेहुयेजोड़ और कीड़े खायेहुये दांतों और २ विषों के लिये बहुत गुणदायक है (सैज) अरस्तूने लिखा है कि पत्थर हिन्दुस्तान से आता है बहुत कालेरंग का और बुर्राक़ अर्थात् चमकदार होता है और नरमी इतनी होतीहै कि और पत्थरों से जल्दीटूटजाताहै जब मनुष्यके नेत्रकीज्योति कमहोजावे तो इसपत्थरकी ओरदृष्टि करना बहुत गुणकारीहै और इसीप्रकार ढलकावाले

को भी गुणदायक है आंखोंसे पानी उतरने का पूर्वरूप यह है कि मनुष्यको अपने आप अपनी दृष्टि के साम्हने मक्खियां या कीड़े उड़ते हुये मालूमहो तो जब यह तमाशा दिखाई देनेलगे तो अवश्यहै कि मनुष्य हमेशा सैजको आंखोंके साम्हने न रक्खे जो ईश्वर चाहे तो यह रोग दूरहोजायेगा यदि सैजका यन्त्र बनावे तोउसको दृष्टि कभी प्रभाव न करेगी और उसको घिसकर आंखों में सुरमा लगाना भी लाभदायक है यदि शिर में यन्त्र बनाकर लटकावे तो शिर पीडा दूरहोगी, (सिलशीश) अरस्तूने कहाहै कि यह पत्थर हलका और ख़ालीहोताहै जब उसमें हाथ लगावे तो ऐसा मालूम होताहै कि मानो इससे बायु निकलतीहै और जब पवन अति प्रचण्डता पूर्वक नदी की लहरो पर जाती है तो यह पत्थर उस हवा और पानीके कफसे पैदाहोता जो मनुष्य इस पत्थरको तीनरत्तीके भी बराबर अपने साथ रक्खे तो शत्रुसे बचारहेगा (संवादज) अर्थात् कुरण्ड अरस्तूके निश्चय मे इसकी उत्पत्ति द्वीपान्तरोंमें है और यह पत्थर सख़्त रेतकी तरह पर होताहै और उनमें छोटेबड़े भी होतेहैं लिखाहै कि जो सम्बादज को जलाकर सुरमा बनाकर लगायें तो पुराने घाव भरआवें और उसका मंजन दातों को साफ करता है (सताज़ंज) इसे हजरुद्दम और दरख़्तमिसमैल भी कहते हैं यह भी दो प्रकार का खानी और बना हुआ होता है जब मिक़नातीस पत्थर को जलाते हैं तो वह बनाहुआ होजाता है परन्तु लोहा खींचनेकी ताक़त नाश नही होती हा एकबात होतीहै कि बाज़े नर होते हैं और बाज़े मादा जो नेत्रके लिये बहुत गुणकारीहै, किन्तु नेत्रकी हरएक बीमारी को गुणकरे मुख्यकरके आंख की सफ़ेदी और पलकों की सख़्ती और मांस की अधिकता को जो शराब में मिलाकर सेवन करे तो अधिक मूत्र के आने और स्त्री के ऋतु के रुधिर के बहुत जाने को तत्काल गुण दायक है (शब) अर्थात् फिटकरी बहुत प्रकार की होती है इसको ज़ाजबिल्लोर भी कहतेहैं देसीकोरेदस कहता है कि सब प्रकारों में उत्तमय मानी है

जो सफ़ेदरंगकी पीलाई लिये और खट्टीहोतीहै कहतेहैं कि शवप-
मानी पहाड़से टपकतीहै और वह पहाड़ यमनमेंहै और वह पसीने
की तरह टपकतीहै जब जारी होकर पृथ्वी पर गिरतीहै फिटकरी
होजाती है लहू चलने को बन्द करतीहै यदि सिरकेकी तल छटके
साथ उसको पिये तो कठिन२ घावोंको भरे यदि सिरके और शहद
में मिलाकर कुल्ली करे तो हिलते हुये दांतों को दृढ़ करतीहै और
प्रवर्द्ध ज्वरोंको नाश करतीहै मुख्य करके लड़कों के वास्ते बहुत
उत्तमहै अरस्तूके विचारमें यह पत्थर सपेदरंग सुर्खी लियेहै कहते
हैं कि रंगरेज लोग पहिले कपड़े को इसके रसमें भिगोते हैं और
कारण इसका यहहै कि इस क्रियाके उपरान्त जिस रंगपर कपड़े
तय्यार करें उसकारंग मज़बूत और पक्का होजाता है शेख़रईस का
विचारहै कि फ़िटकरीज़फ़्त (अर्थात् वह कालीगोंद बहुतचिपकाने
वाली जो सनोवरकेवृक्षसे पाईजातीहै)के साथ जहांकहींरक्खें वहां
की मक्खी और मच्छड़ दूर होजायँगे और जूं भी मारडालती है
और मुख और बगलकी गन्धको भी दूर करतीहै और इसकापानी
नमक के साथ आगसे जलेहुये को लाभकरे इसके जोशांदे अर्थात्
काढ़े का रस दांतोंकी पीड़ाको ठहराता है और यदि रांगे के खोल
में फिटकरी को रखके नाभि पर बांधें तो कुलंज अर्थात् पहलू की
पीड़ा कभी न होगी (सदफ़) अर्थात् सीप प्रसिद्धहै कि कई इनमें
मीठे समुद्र में होती हैं और बाज़ी खारी समुद्र मे पहली दूसरी से
उत्तमहोतीहै उसका गुणयहहै कि कांटेआदिको जोड़मेंसे निकालती
है यदि इसकोपीसकर लेपकरें तोपांवके रगकीपीड़ादूरहो और जो
सिरके में पीसकर नाक में टपकावे तो नकसीर का लहू बन्द हो
और पीनेसे मेदे अर्थात् कोठेकी बीमारियां दूरहों इसका रुधिकर
दीवाने कुत्तेके घावपर गुणदायक है और जलीहुई सीप का मञ्जन
दांतों को साफ़करे यदि आंखों में बाल बहुत उगे तो उनको उखाड़
कर इसका सेवनकरें वहां बाल न उगेंगे आग से जलेहुये के लिये
लाभदायकहै घावको सुखाती है जो सीपके टुकड़ेको साफ़ कपड़ेमें

रखकर लड़के के गले में लटकावें तो वह लड़का दांत निकलने के समय दुःख न पावे (तारदुलनोम) अरस्तू के निश्चयमें यहपत्थर सफ़ेद रंग स्याही लिये होताहै और क़लई के बराबर उसका भार होताहै बहुधा इसकारंग तिल्ली के सदृश होताहै कहतेहैं कि जो इस पत्थर के दशदाने या कुछकम लेकर किसी मनुष्य के गर्दन में यंत्र की रीतिपर बांधें तो दिनरात आंखोंमें नींद न आवे और कुछ इस जागने से दुःख न हो जैसा कि एक दिन के जागने से मनुष्य को दुःख हुआ करतेहैं और जब इस पत्थर के यंत्रको अलगकरें तो भी कई दिन उसका इतना प्रभाव रहेगा कि कुछ दिनों तक थोड़ी २ नींद आवेगी कोढ़ीकी नाकमें इसकी आठजौ के बराबर बूंदेंटपकाना रोग नष्ट करताहै (ताळीक़ून) यहतांबेका प्रकारहै कि ओषधियों से इसको बनातेहैं इसका फ़ारसीभाषा में हफ़्तजोश नामहै कहतेहैं जो ताळीक़ून से तीर की गांसी बनावें और जिस पशु को उससे घायलकरें तो तुरन्त मरजायेगा अरस्तू के विचार में यह हफ़्तजोश बिल्कुल तांबेका प्रकार है और ओषधियां इसमें इसवास्ते मिलाते हैं कि उसमें विषकीशक्ति अधिक होजावे यदि इसके कांटे बनाकर नदी में छोड़ें तो सम्भव नहीं कि कोई मछली उससे छूट जावे हां कांटा मुंहमें पहुंचना चाहिये फिर छूटना कठिनहै चाहे मछलीकैसी ही बड़ीहो क्योंकि कांटा मांसमें जाके फिर निकलता नहीं है और जिसमनुष्य को लक़वेकी बीमारी हो उसे उचितहै कि एक मकान में जावे जहां नाम को भी प्रकाश न हो और ताळीक़ून का शीशा अपने सामने रक्खे इसउपाय से यहरोग शान्तहोगा यदि ताळी-क़ूनको आगमें ताव देकर जिस दरिया के किनारे पानी में बुझादें उसघाटपर कोई पशु पानीके वास्ते दृष्टि न करेगा यदि ताळीक़ून को शहदमें मिलाकर धूपमेंरखदें मक्खी तक उसकेगिर्द न जायेगी जोमनुष्य ताळीक़ूनका मोचना बनाकर उसके द्वारा बालोंको चुने कभीवहां फिर बाल न निकलेगे (तलक़) अर्थात् अबरक अरस्तू के विचार में लाल और सफ़ेद दो प्रकारकी होतीहै सफ़ेद मोटी और

साफ़ होती हैं और सुर्ख़ हलकी होती है इस पत्थर को उत्तमोत्तम लिखाहै कहतेहैं कि जो उसको तांबे और क़लई और लोहे परछोड़ें जो ईश्वर चाहे तो चांदी बनजावेगी सिकन्दर ने लिखाहै कि जब मुझे यह मालूमहुआ कि सोनावुरोक़ रंग चाहताहै तो हमने सोने को अवरक़ से रंगा और वह बहुत उत्तमहोगया यह अवरक़ बहुधा जादू आदिमें काम आती है अरस्तूके सिवाय और लोगोने लिखा है कि इसकानाम कौक़बुलअरज़ है अवरक़ का उत्तम प्रकार यह है कि बहुत पतली उत्तमहो और आग से न जले और साफ़ करने में भी उत्तमहो लहूको रोके जिस मनुष्य को अवरक़ का कजली करना अंगीकारहो उचितहै कि किसीकपड़े में बांधे और उसमें थोड़ेपत्थर के टुकड़े भी छोड़देवे और पानीमें रखदे कि कल्क होकर वहबारीक़ होजावे उस समय गोंद के रस में उसका सेवन करे (तूतीस) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर चांदी और तांबेकी खानमेंपैदाहोताहै इसका रंगसब्ज़ होताहै इसकी प्रकृति धनज और तूतिया के सदृश होतीहै क्योंकि तूतिया चांदीकी खान और धनज तांबेकी खान के सिवाय और जगह नहींहोता है इसका गुण यह है कि जो इसका पानी आंख में छोड़ें तो पुरानी सफेदीको दूरकरे जो आंख में सफ़ेदी न होगी तो हानिहोगी (अक़ीक) अरस्तू के विचारसे इसके बहुत प्रकारहैं उत्तम वहीहै जो यमन से आताहै कभीर् रूसकी नदी के किनारे पर भी हाथआताहै अक़ीक़ लाल साफ़ और अच्छा होताहै जो इसकी अँगूठी पहिनकर क्रोधी शत्रु के सामने जावे तुरन्त उस पर प्रबल होगा लहू के बहने को बहुत गुण दायक है मुख्य स्त्रियो के लिये जिनका लहू हमेशा जारी रहता है जो इसका मञ्जन बनावें तो दांतों के रंग को दूरकरता है और मुख की दुर्गन्धि भी दूर होती है और दांतों की जड़ों के लहू बहने को दूर करता है हज़रत पैग़म्बर साहब ने कहाहै कि जो मनुष्य अक़ीक़ की अँगूठी अपने हाथमें रक्खेगा वह सर्वदाप्रसन्न रहेगा और मालिक के पुत्र उन्सने एकबचन लिखाहै कि पैग़म्बर ने कहा कि अक़ीककी अँगूठी

पहनो क्योंकि उसका गुणयहहै कि चिन्ता दूर करताहै कहतेहैं कि अक़ीक़ की भस्म आंख और मनको बलकारक और उन्माद रोगके दूर करने वालीहै (अम्बरी) अरस्तू ने कहाहै कि यह पत्थरख़ाकी रंग सब्ज़ीलिये होताहै परन्तु सब्ज़ी प्रकट नहींहोती और उसमें काले पीले और सफ़ेद नुक़ते होतेहैं इसमें अम्बरकीसी सुगन्ध पाई जाती है इसकी बादशाहों की दृष्टि में बड़ी प्रतिष्ठा है बहुधा इसके प्यालेआदि बनाकर रखते हैं तो पहिले पहिल जिसने इसपत्थर को केवल सूंघने के वास्ते निकाला वह शैतानथा इस दृष्टि से जो मनुष्य इसके बर्त्तन में खानेपीने का सेवनकरे उस मनुष्यको सौदा अर्थात् जलेहुये दोषोंकेरोगउत्पन्न होंगे और फिर कठिन चिकित्साओं केलिये दीनहोजावेगा यहबात बहुधा बादशाहोंपर होचुकी है इस-लिये इसके प्यालोंके सेवनकी मनाहीहै (अतास) अरस्तू ने इसकी प्रशंसा में लिखा है कि जो इसको आग मे डालदें तो आग ठण्डी होजावेगी और जो इसको जिह्वाके नीचेरखकर मद्यपानेका प्रारंभ करें कभी नशा न आवेगा और मूर्च्छा भी न आवेगी क्योंकि गर्मी भाफ़की ब्रह्माण्ड तक न पहुंचेगी (फ़ाद ज़हर) अर्थात् संगज़हर यहनाम हर पत्थरका होसक्ताहै परन्तु जो वह पत्थर ऐसा हो कि प्राणों के बलको रक्षाकरे और विषकी हानिको दूरकरे कहतेहैं कि विष दो प्रकारका होताहै गर्म और सर्द गर्मविष रुधिरको जलादेता है और जीवकी तरीका नाश करनेवालाहै जो जीवन की कारण है और शरीरमें फैल जाताहै जैसा कि नलमें केसरका रंग फैलता है और शीतल विष वहहै कि जो उत्तम तरी और लहू को बांधे जैसा कि पनीर कि जोमाया दूधमें छोड़ें तो दूध तुरन्त बंधजाताहै और फ़ादज़हर का प्रभाव खटाई के सदृशहै जैसा कि केसर के रंग को खटाई काटदेतीहै उसी तरह यह विष के प्रभाव को नष्ट करता है अरस्तू के विचार में फ़ादज़हर कई प्रकार का है बाज़ा पीला और कोई ख़ाकीरंग और इसकी खान चीन हिन्दुस्तान और ख़ुरासान में होतीहै जो तीन रत्ती के अनुमान घिसकर पिये तुरन्त विष से

छुट्टीपावे बिच्छू या दूसरे विषैले जानवरों के घावपर इसका सेवन करें लाभहोगा यदि काटने के साथही इसका लेपलगावें तो बहुत जल्दी आराम होगा (फरसलूम) अरस्तू ने लिखाहै कि इसपत्थर को ज़ुल्मात में सिकन्दर ने पाया था और उसके कोष में वर्त्तमान था रंग इसका काला और यह भारी होताहै आगमें गिरनेसे गुप्त होजाता है जो इसको पारे में डालकर आगपर रक्खें तो पारे को बांधदेताहै और दोनों एक होजाते हैं और नरम चांदी होजाती है यदि मनुष्य इसका यंत्र बनावे तो उसको बड़ा स्मरण होगा और ईश्वरकी स्मृति कभी न भूलेगी जो भोगकरे तो शुभपुत्र उत्पन्नहो और दृष्टिके लिये तो मानो ढालहै यदि इसको गायके दूधमें घिस कर बरस (अर्थात् जिसरोग में त्वचापर सफ़ेद और काली चित्तियां पड़जाती हैं) के दाग़पर लगावें आराम होगा ईश्वरकी आज्ञा से (फरसिया) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरको बड़े २ पहाड़ों के नीचेपातेहैं यह पत्थर रात्रिकेसमय जलीहुई ज्योतिके सदृश चमकताहुआ दिखाई देताहै जो इसको अजमोद के पानीसे धोवें तोसम्पूर्ण पशुओंके लिये हलाहल विष होजावेगा (फरफूस)अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर अग्निकीभांति होताहै इसके प्रभावमेंलिखा कि जो इसको घिसकर किसी घाव पर रक्खे तुरन्त भर जावेगा (फीरोज़ज) अरस्तूका लेख है कि यह पत्थर सब्ज़ रंग नीलाई लियेहै देखने में बड़े बहारका है इसकी खान खुरासान में होतीहै वायुकी सफाई से इसका रंग पीला होताहै जो इसको सुरमे में मिलाकर सेवन करें गुणदायक है बहुधा बादशाह इसकी अंगूठी नहीं पहनते हैं कि इसके पहनने से भय कम होजाता है मुहम्मद सादिक़के पुत्र इमाम ज़ाफरका बचन है कि इसकी अंगूठी जिसके हाथमें हो वह कभी फ़क़ीर और दरिद्री न होगा(फैलकूस)अरस्तू ने कहाहै कि यह कई रंगका होताहै इसमें एक दिनमें कई रंग प्रकट होतेहैं कभी सुर्ख़ कभी पीला कभी सब्ज़ निदान हर समय एक नया रंग लाताहै रातको शीशेकी तरह चमकता है जब सिक-

न्दर रूमीने इस पत्थरकी खान पाई तो अपने सम्बन्धियोंको आज्ञा दी कि इसको बहुत उठालेवें लोगों ने आज्ञाका पालन किया रात्रि को हर मनुष्यपर चारों ओरसे पत्थर पड़नेलगे और कोई मनुष्य मालूम न होताथा तो उस समय यह प्रकट हुआ कि यह पत्थर जिन्न मारतेहैं और वह नहीं चाहते हैं कि इस पत्थरको कोई यहां से लेजाय सो सिकन्दर वहांसे बहुत जल्दीसे चलाआया और इस पत्थर के रक्षा करनेकी आज्ञादी उस समय से यह पत्थर सिकंदर के कोष में रहताथा और सिकन्दर सफर में अपने पास रखताथा इसका यहप्रभावथा कि जहां सिकन्दरपहुंचताथा वहांसे जिन्न और देव भागते थे और इसी तरह से चीरने फाड़ने वाले जानवर भी दूर होतेथे (कैहार) अरस्तूका वचन है कि इस पत्थर को पूर्वकी धरती पर पाते हैं और सोनेकी खान में होताहै इसका रंग याक़ूत सुर्ख़के सदृश है इसके प्रभाव यह हैं कि जादूको दूर करता है जो इसको दोजौके बराबर घिसकरपियें तो दिवानापन विस्मरणहोके रोग दूरहों (क़रबातीसून) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्द की धरती में हाथ आता है यह लहू को बन्द करता है जो इसको मुखमें रखकर फरद खुलवायें तो कभी लहू न निकलेगा (क़रूम) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरको नदीसे निकालते हैं सफ़ेदलाल पीला और सब्ज़ होताहै इसका प्रभाव है कि जिसके पासहो वह मनुष्य सत्यवक्ता होगा और उसके पाससे भूतप्रेत और जिन्नभाग जावेंगे जो एक जौ के अनुमान घिसकर थोड़े ऊद अर्थात् अगर लकड़ीके साथ पियें तो बहुत प्रकारकी पीड़ाको जैसे जोड़ोंकी पीड़ा आदिको लाभकरे (कलक़दीस) यह एक प्रकार की फिटकरी है इसमें अत्यन्त गर्म्मीहै और क़लक़तार और क़लक़न्द जो आगेबर्णन किये गये हैं इन दोनों से इसका गुण हर विषय में अधिकतर है (क़लक़तार) यह भी एक प्रकारकी फिटकरीहै जालीनूसने लिखा है कि यह भी क़लकदीसहै परन्तु उससे गर्म्मी कम है इसका स्व-भावहै कि सूजनको दूर करतीहै और अधिकमांस को नष्टकरती है

छुटीपावे बिच्छू या दूसरे विषैले जानवरों के घावपर इसका सेवन करें लाभहोगा यदि काटने के साथही इसका लेपलगावें तो बहुत जल्दी आराम होगा (फरसलूम) अरस्तू ने लिखाहै कि इसपत्थर को ज़ुल्मात में सिकन्दर ने पाया था और उसके कोष में वर्त्तमान था रंग इसका काला और यह भारी होताहै आगमें गिरनेसे गुप्त होजाता है जो इसको पारे में डालकर आगपर रक्खे तो पारे को बांधदेताहै और दोनों एक होजाते हैं और नरम चांदी होजाती है यदि मनुष्य इसका यंत्र बनावे तो उसको बड़ा स्मरण होगा और ईश्वरकी स्मृति कभी न भूलेगी जो भोगकरे तो शुभपुत्र उत्पन्नहो और दृष्टिके लिये तो मानो ढालहै यदि इसको गायके दूधमें घिस कर बरस (अर्थात् जिसरोग में त्वचापर सफ़ेद और काली चित्तियां पड़जाती हैं) के दाग़पर लगावें आराम होगा ईश्वरकी आज्ञा से (फरसिया) अरस्तूने लिखाहै कि इस पत्थरको बड़े २ पहाड़ों के नीचेपातेहैं यह पत्थर रात्रिकेसमय जलीहुई ज्योतिके सदृश चमकताहुआ दिखाई देताहै जो इसको अजमोद के पानीसे धोवें तोसम्पूर्ण पशुओंके लिये हलाहल विष होजावेगा (फरफूस)अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर अग्निकीभांति होताहै इसके प्रभावमेंलिखा कि जो इसको घिसकर किसी घाव पर रक्खे तुरन्त भर जावेगा (फीरोज़ज) अरस्तूका लेख है कि यह पत्थर सब्ज़ रंग नीलाई लियेहै देखने मे बड़े बहारका है इसकी खान खुरासान में होतीहै वायुकी सफाई से इसका रंग पीला होताहै जो इसको सुरमे में मिलाकर सेवन करें गुणदायक है बहुधा बादशाह इसकी अँगूठी नहीं पहनते हैं कि इसके पहनने से भय कम होजाता है मुहम्मद सादिक़के पुत्र इमाम ज़ाफरका वचन है कि इसकी अँगूठी जिसके हाथमें हो वह कभी फ़क़ीर और दरिद्री न होगा(फैलकूस)अरस्तू ने कहाहै कि यह कई रंगका होताहै इसमें एक दिनमें कई रंग प्रकट होतेहैं कभी सुर्ख कभी पीला कभी सब्ज़ निदान हर समय एक नया रंग लाताहै रातको शीशेकी तरह चमकता है जब सिक-

कठोर और हलका होताहै इसको सोहनसे खण्ड २ करते हैं जो इसको पीसकर कलई परडालें और अग्निमें रक्खें तो नरमी और उसकी दुर्गन्धि जाती रहती है और अग्नि पर स्थिर होजाती है जैसे चांदी (करसिया) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्दुस्तान की धरती में पाया जाताहै काले रंगका होता है बहुधा मछलियां इस पर इकट्ठी होती हैं और बहुत हलका और सख़्त होताहै और दवातकी स्याही की तरह काला होताहै इसमें सोहन भी नहींचल सक्ता पर सातबेरकी आंच देनेसे गलजाताहै उस समय सफ़ेदरंग प्रकट करताहै यदि गलेहुयेमें थोड़ा सा नौसादर मिलादें तो एक खण्ड उसका सातखण्ड पारेको पत्थर की तरह बांधदेगा (कुर-सियान) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हिन्दुस्तानकी धरती में पाया जाताहै और सब्ज़रंग चमकता हुआ साफ़ और संगोनक़लई की भांति होताहै जब इस पत्थर को आंच देतेहैं सफ़ेद होजाता है फिर लाल शिंगरफ़कीभांति बनजाताहै सो जब उसकोक़जलीकरके उसी अनुमान से मुशनीसिया उसमें मिलावें और बिल्लूर को भी आगपर गर्मीदेके इसबनीहुई कुरसिया मेंसे दश जो बराबर लेकर पौने चारतोले बिल्लूर परडालें तो तुरन्त वहबिल्लूर याक़ूतहोजावेगा जो इसपत्थरको तीनरत्ती भी मनुष्यकेगलेमें लटकावें ज्वरकीगर्म्मी से बचारहेगा (करक) अरस्तूने लिखाहै कि सफ़ेदरंगका होता है और इसकी छीलन हाथीके दांतोंके सदृशहै सिन्धनदी के क़िनारे पर मिला करता है इसका सुरमा आंख की खाज को गुणदायक है हिन्दुस्तान के निवासी उसकी अंगूठी बनाते हैं और दृष्टि और जादू और भूतप्रेत के आवेशके दूरकरने के लिये बहुत आज-मायाहुआ है पिछले बुद्धिमानलोग इसपत्थर को अपनेपास रक्खा करतेथे कि भूतप्रेत उनके पास न आवें (किरमानी) अरस्तूने लिखा है कि यह पत्थर कालेरंग का और कईप्रकार के रंगकाहै शेरों के जंगल में होताहै बहुधा इसकारंग तिल्ली के सदृश होताहै जो इस को फिटकरी और दूधमें पीसकर कोढ़वाले की नाक में टपकावें

और नाकके लहू और दांतोंकी जड़ोकी सूजनके लिये लाभ दायक है और आंखोंके साफ करनेमें बहुत गुण करती है (क़ऊकन्द)यह भी जलीहुई फिटकरीके प्रकारो मेंसेहै यह बहुतही मांसको सुखा-तीहै और नाकके नासूर और नकसीर को गुण करतीहै और कान और पेटके कीड़ोके लिये मानो हलाहल विषहै यदि इसको जलमें छोड़दें और मकान में छिड़काव करें तो उसकी गन्ध से खटमल मच्छडदूरहोजायेंगे यदि इसमें कुछ गन्धक और कालादानाभी मिलावें तो यह और प्रवल होगी चूहे भी इसकी गन्धसे दुःखीहोते और मरजाते हैं यदि नाई लोग अपने उस्तुरे को इस पत्थर पर तेजकरें तो वालोंकी सफाईमें बहुतही तेजी दिखाताहै यदि मनुष्य के नथुनों में यह पत्थर मलें जबतक जैतूनका तेल न लगावें नींद न आवेगी (कली) यह वह पत्थरहै जिससे शनान हाथ आता है इसकी भस्म सफाई करने वालीहै और नमकसे अधिक बलकारक है झाईं और खाज और निकम्मेमांसको लाभकरे तो लहसुन और नमकमें मिलाकर बिच्छूके डंकपर लगावें पीड़ा ठहर जावेगी (क़ै-सूर) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर हलका और खोखलाहोताहै यहां तक कि पानी पर तैरा करताहै इसकीखानें बहुधा सकलबा और आरमीना में हैं इसको हजरुलदफातिर भी कहते हैं क्योंकि यह पत्थर यह स्वभाव रखताहै कि लिखेको मिटादेताहै और गुण उसका यहहै कि दांतोंको साफ करता है और इसका और ओष-धियोंके साथ सुरमा लगाना नेत्रकेलिये गुणदायकहै और मासर-हूया कहता है कि चांदी को भस्म भी करताहै और शरीरके रोमों की सफाई भी करता है और घावको बहुत जल्दी भरताहै (कैरा-तीर) अरस्तूने कहाहै कि यह गोल होताहै और पत्थरके टुकड़ेकी तरह दरियासे निकलताहै और बन्दूककी गोलीकी तरह होता है इसका गुण यहहै कि इसका पीना पथरीको टुकड़े २ करके बाहर निकाल देता है (कसदामी) अरस्तू का वचन है कि यह पत्थर दरिया किनारे पाया जाताहै और सब्जरंग स्याहीलियेहै और बहुत

सक्तेहैं जो बालोंको उड़ाकर उस जगह इसपत्थरको मलदें फिरकभी बाल न निकलेंगे जो इसकीसुगंध गलेहुये सोनेमेंपहुंचे तो सब सोना खराब होजायगा और शीशेकेसदृश वह सोनाटूटजाया करेगा और फिर किसी उपाय से वह सोना अपने मुख्य दशापर न आयेगा (लाक़ितुस्सूफ़)अरस्तूने लिखाहै कि इसकारंगसब्ज़ है और इसमें बहुधा सब्ज़ और पीलेरंग की रेखाहोती है और बहुतहल्काहै और कुछसपेदी लिये है और गोल और छोटा बडा होता है जिस समय पशमें उसके बराबरकरें तुरन्त लिपट जाती हैं इसका सुरमा पुरानी आंखकी सपेदी को दूर करता है जो इसको गलाकर इसमें ज़ब्द्र-तुलबहर मिलावें तो पारेको दृढ़ बांधता है (लाक़ितुज्ज़फर)अरस्तू ने लिखा है कि यह पत्थर सपेद ख़ाकी रंग बराबर नरम बिंदुओं बिना होता है और यह पत्थर नाखूनको अपनी ओर खींचता है जो नाखून पृथ्वीपर गिरे हों उनको चुनकर उठा लेता है जो हीरे पर रक्खें तो हीरा टुकड़े२ होजावेगा यदि इस पत्थर पर स्त्री के ऋतु का रुधिर डालें तो पत्थर रेत की तरह होजावेगा जो इसको पानी में छोड़कर पियें तो पीने वाले का मांस और हड्डियां अलग होजावें और मूत्राशय और कलेजा टुकड़े२ होजाय (लाक़ितुल्अज़्म) अरस्तू का लेख है कि यह पत्थर पीला और कठोर बलखके देशों से आता है और हड्डियों का खींचने वाला है (लाक़ितुल्फ़ज़्ज़ा) अरस्तू ने कहा है कि यह पत्थर सपेद रंग का होता है यदि इसको चांदी से पांच गज़के दूरी पर रक्खें तो भी चांदी को अपनी ओर खींच लेगा यदि चांदीकी मेख किसी चीज़में जड़ी होगी उखड़कर इसके पास आजावेगी (लाक़ितुलक़तन)अरस्तूका वचन है कि यह पत्थर नदीके किनारे होता है सपेद रंगका और रूईको खींचताहै इसका गुण यह है कि जो इसको रेतमें कजली करके तांबेपर छोड़ें तांबे को चांदी बनावेगा जो किसी मनुष्यके निकट हो तो आंख का ढलका बन्द करदेगा (लाकितुलमिस) अरस्तू का वचन है कि यह पत्थर तांबेको खींचता है और पीतलको भी खींचता है इसके रंग में कुछ

गुणकरेगा (कुहरवा) पीली सपेदी लिये है और बहुधा लाल भी होताहै इसकास्वभावयहहै कि तिनको और सूखीलकड़ीको अपनी ओर खींचताहै और यह पत्थर रूमके अखरोटके वृक्ष का गोंद है जो कोई इसका यन्त्र बनावे सूजन और उन्माद रोग को गुणकरे और वमन के रोगको भी गुणदायकहै और लहूके बहने गर्भपात की रक्षा के लिये और कमलवायु को गुणकरे कुहरबासन्दरूस अर्थात् चन्दरस के स्वरूप से बहुत मिलताहै पर इतना अन्तर है कि सन्दरूस सपेदीलिये होताहै (लाजवर्द) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर बहुत प्रसिद्धहै इसकी अंगूठी जिसकेपासहो वह ईश्वर की सृष्टि की दृष्टिमे निश्चय योग्यहोगा जो इसका सुरमा नेत्रों में लगावें लाभकरे शेखरईस ने लिखाहै कि लाजवर्द मस्सों को दूर करताहै औरो का वचनहै कि निद्रानाशरोग को दूरकरता है और उन्मादरोग के लिये तत्काल गुणकरे (लाक्रितुलजहब) अर्थात् यह पत्थर सोनेको अपनीओर खींचताहै अरस्तूनेलिखाहै कि पश्चिमी धरती के बाजे पहाड़ोमें होताहै और इसपत्थरमें सोनामिलाहुआ होताहै और इतना सोनेसे उसका स्वरूप मिलताहै कि देखने में सुवर्ण मालूम होता है इसका गुण यह है कि जो सोनेका बुरादा मिट्टी में मिलगयाहो तो इसपत्थर को उसमिट्टीपरमलें तो जितना सोनाहोगा वह इसपत्थर में लिपट जायेगा और खालीमिट्टी रह जायेगी (लाकितुलरसास) अरस्तूने लिखाहै कि यहपत्थर बदरंग और दुर्गन्धियुक्त होताहै और कुछ सपेदी सी मिलीहुई होती है और जोकि कलई संगीन है तोभी उसको अपनी ओर खींचलाता है जो उसको अग्नि में जलाकर कोयले की भांतिकरलें और फिर पारे में डालकर अग्निपर रक्खें तो पारा बँधजाता है जैसे चांदी (लाकितुश्शोरा) अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर बालको खींचता है और कुछ अन्दरसे पोलाहोताहै और पत्थरसे भारमें कमहोता है मनुष्य के शरीर में लगानेसे नूरेकीतरह बाल उड़जाते हैं यदि बाल पृथ्वीपर बिखरेहो तो इसपत्थरकेद्वारा एक२करकेउनको चुन

कोई मनुष्य वहां जानेको राज़ी न हुआ तब सिकन्दरने बुद्धिमानों से सम्मति की तब उन्होंने सिकन्दर से कहा कि इसगार में मांस के लोथड़ेडाले जायँ और पक्षी इसमें छोड़े जावें कि हीरे उन मांस के टुकड़ों में लिपट जावे और वह पक्षी वहां जाकर उन मांस खण्डोंको बाहर निकालें सो सिकन्दरने ऐसाही किया और लोगो को आज्ञादी कि जो मास पक्षियों के पंजों और चोंचसे इधर-उधर गिरे उसको चुनकर लावे और हीरेमें अद्भुत स्वभाव यह है कि जो हथौड़े से निहाई पर रखकर तोड़ें कभी न टूटेगा किन्तु उसका खण्ड हथौड़े या निहाई में घुस जावेगा और जब सीसे से तोड़ें तुरन्त टूट जावेगा यदि हीरेको नरबकरेके रुधिर में डालकर आग दिखलावें पिघल जायेगा और वह पेचिश और पक्काशयके उपद्रव को गुणकारी होगा बहुधा उसकी खानें सरन्द्वीप के पहाड़ में हैं और वह जंगल बहुत गहरा और काले नागों से भराहै और जो हीरा वहांपर हाथ आताहै वह मसूर या चनेकी बराबर होताहै या आधे बाक़ला के बराबर होताहै यद्यपि इससे बड़े हीरे वहां होतेहैं परन्तु पक्षियों के द्वारा बड़े वज़न का हीरा वहां मिल नहीं सक्ता लोग मांसके लोथड़े फेंककर वह पक्षी जो मरेहुये पशु खातेहैं उन के द्वाराउठवातेहैं और उसेवह टुकड़ा २ चुनलिया करतेहै निदान इसमें कुछ विरुद्ध नहींहै कि हीरा दांतों को तोड़ देताहै यदि उस को मुखमें रक्खें हलाहल विषका प्रभाव दिखलावेगा (मानतस) अरस्तू ने लिखाहै कि हिन्दुस्तानी पत्थरहै उस पर लोहेकी चोट कुछ असर नहीं करती जिस मकानमें हो वहां जादू जिन्न और प्रेत का प्रवेश न होगा जो मनुष्य यन्त्र बनाकर रक्खे जिन्नोंके उत्पात से बचा रहेगा जब सिकन्दर शाहको इस पत्थर का गुण मालूम हुआ तो उसने अपनी सम्पूर्ण सेनाको आज्ञादी कि इसको अपने साथ रक्खें सो इस आज्ञाके पालनसे बहुत स्थान पर जादू और जिन्नो के भयसे रक्षा रही (मारवन) अरस्तूका वचनहै जो सुरमे के पत्थरको भूनकर इस पत्थरकेसाथ पीसें और वह सुरमा आंखों

गर्द मिली हुई होती है जो छः रत्ती के अनुमान उसको लेकर दश दिरम* चांदी कजली करके गलावे और इससे पहले कि वह गल कर बँधजावे उसको डालदे तो वह चांदी पीली सोने की तरह हो जावेगी और दूसरी वार भी यही क्रिया करे तो बहुत समय तक उसकी जरदी दूर न होगी जो इस पत्थरको एक जौके बराबर मीठे पानीमें घिसें और मिरगी वालेको नाकमें टपकावें तो तुरन्त रोग जातारहेगा (लजाऐतूस) यह पत्थर काली रंगतका है इसमें खीरे की गंधआती है बहुत खुश्क होता है और गहरे घावोंको भरताहै और मिरगीवालेको गुणदायकहै और दुःखदाई छोटे२ जानवरोंको भगाताहै (लवनकरदीस) शेखरईस लिखताहै कि यह पत्थर मिसर का है धोवीलोग इसके द्वारा कपड़े साफ करते हैं और यह पत्थर वहुत साफ़ और पानी में छोड़नेसे जल्दी पिसजाताहै रुधिरके वहने को गुणकरता है (अल्मासहीरा) अरस्तू का लेख है कि इसकारंग नौसादरके सदृश होता है और सब पत्थरोंको टुकड़े २ करता है और जो इसको हज़ार टुकडे करें तो हर टुकड़ा इसका तिकोना टूटेगा जितना टुकड़ा इसका वडा होगा उतनीही इसमें स्वभाव शक्ति अधिक होगी कारीगर लोग इसकी नोकका वरमाबनाकर कठोर२ पत्थरोंको उसके द्वारा छिद्र करते हैं अरस्तूने लिखाहै कि सिकंदर इस पत्थर के स्वभाव में वडा आश्चर्य करता था और इस आश्चर्य का यह कारण था कि एक ऐसा मनुष्य सिकन्दर के सामने आया जिसको पथरी का रोग था और इसी कारण उसका मूत्र वन्द था सिकन्दर ने तुरन्त हीरा लेकर थोडी मस्तगी उसके शिरमे लगाकर उसकेलिंगके छिद्रमें प्रवेश किया तो तुरन्त हीरेने पथरी को टुकड़े २ करदिया अरस्तूने लिखाहै कि जहां हीराहोताहै कोई मनुष्य वहां नहींजासक्ता और उसकी खान हिन्दुस्तान के एक जंगलमेंहै और वह इतनीगहरीहै कि नेत्रकीगति वहांतक नहीं और उसमें अजदहे बहुत हैं जब सिकन्दर उस जंगल में पहुंचा और चाहा कि हीराले

* दिरम साढेतीन माशे का होता है।

वह ,एक सख्त लकड़ी एक गज़की लम्बी लेकर उसको सूली की तरह पर बनातेहैं और उसमें भारी पत्थर बांधतेहैं और किश्तीमें बैठकर नदीमें जाते हैं कहतेहैं कि दरियाके किनारेसे डेढ़ मीलपर मूंगे की उत्पत्तिका स्थानहै वहां जाकर उस लकड़ी को जलमें छोड़तेहैं कि वह पेंदीतक पहुंच जावै उस समय किश्तीको दायेंबायें फेरते हैं कि उस लकड़ी में मूंगेकी डालें अटकजायँ फिर जोरसे उस लकड़ीको अपनी ओर खींचतेहैं तो उसमें मूंगा भी उलझकर निकल आता है परन्तु उस समय इस मूंगेकारंग कालाहोताहै जब उसको छीलतेहैं तो उसके अन्दरसे लालरंगका मूंगा निकलताहै बाज़ेलोग कहते हैं कि यहपत्थर अंदलसनद की गहराई में मिलताहै गोतेखोर उधर को जातेहैं और उसको निकालतेहैं इसकेगुण बुसदपत्थरके वर्णन में लिख चुके अब कुछ वर्णन की आवश्यकता नहीहै क्योंकि बुसद मूंगे को कहते हैं (मुरदारसंज) इसको फ़ारसीमें मुरदारसंग कहतेहैं अरस्तूने लिखाहै कि यह पत्थर क़लईकी मिट्टीहै इसकामरहमतर घावोंकोसुखाताहै और पुरानेज़खमोंको अच्छाकरताहै और बगल गन्धको दूरकरने वालाहै शेखरईस लिखताहै कि मुरदारसंग बगल और शरीरकी दुर्गन्धिको दूर करताहै और झाईके काले चिह्नोंको फफोले के चिन्होंसमेत नाश करताहै मूत्रको बन्द करताहै नेत्रों में प्रकाश करताहै और दूसरा गुण उसका यह है कि जो सिरके मे छोड़ें सिरका मीठाहोगा जो आरोग्य शरीरमें मर्दनकरें शरीरकाला होजावे बगल में लगाने से दुर्गन्धि दूर होतीहै परन्तु इसमें हानि यहहै कि बगलके विकारको मनकी ओर प्रेरणा करताहै तो उसके लिये यहउपायहै कि, पहिले उसको गुलाब तेलमें मिलाले (मरक़-शीशा) (सोनामाखी) अरस्तू ने इसको कईप्रकार का लिखा है बाज़ीजहबा सुर्खरंगकी और बाज़ी फज़िया सपेद और बाज़ी नजा-सिया काली होतीहै और सबप्रकारों में गन्धकमिली होतीहै जब जलावें आटे की तरह होजाती है और गन्धक दूर होती है बहुधा कीमिया के बनाने में काम आतीहै जो इसको गलेहुये खोटे सोनेमें

में लगावें तो नेत्रोंकी पीड़ा और उसकी सफ़ेदी को लाभदायक है (महानी)अरस्तूनेकहाहै कि इसकारंग सफ़ेद और पीलाहोताहै और खुरासानकी धरतीमें पायाजाताहै सकता अर्थात् वह रोग कि जिसमें मनुष्य हिलजुल नहींसक्ता गुण करे और इसकीभस्म बवासीरको दूरकरतीहै जिसकेपास इसकी अंगूठीहो वह हरभय से निर्भय रहेगा (मराद) यह अद्भुत प्रकारका पत्थरहै और दक्षिण के शहरोंमेंपायाजाताहै यदि खानिसे निकालनेकेसमय सूर्य्यउत्तरकी ओरहोतो उसकास्वभाव गरम और खुश्कहोताहै और इसका सुर्ख रंग होताहै और जो सूर्य्य दक्षिण मे होतो उसका गुण ठंढा और तरहोताहै और रंगसब्ज़होताहै इसको यूनानी भाषामे सर्वतालीस कहतेहैं अर्थात् उडनेवालापत्थर॥ कारणयहहै कि यहपत्थर वायुमें उत्पन्न होताहै जब उत्तम भाफ पृथ्वीसे उठतीहैं और वहभाफ़ें वायु में घूमतीहैं तो यह पत्थर पैदाहोताहै और जब सूर्य्य उदयहोताहै तो यह पत्थर हवामें फिरा करताहै उससमय इसकारंग सब्ज और काला होताहै जैसा कि नीलका रंग और सूर्य्य के अस्त होने पर ठहर जाताहै सो उस समय इस पत्थरके टुकड़े पृथ्वी पर गिरतेहैं और लोग उसको पाते हैं दिनको यह पत्थर इसी तरह वायु पर जाताहै और रात्रिको पृथ्वी पर गिरता है कहतेहैं कि यह पत्थर जिसके पासहो सम्पूर्ण प्रकार के भूत प्रेत उसके आधीन हों और जो चाहे उनसे सीखलें (मरजा) अर्थात् मूंगा अरस्तूका लेखहै कि इसका रंग लाल होताहै और नदीमें घासकी तरह उगताहै बहुधा इसकी भस्म उत्तम होती है जो इसकी कजली करके सेवन करें पारेको बांधदे और रंग इसका सोने की तरह करदे यह आंखकी औषध है अरस्तूके सिवाय और लोगोंका वचनहै कि मूंगा मरशीना में एकस्थानसे उत्पन्नहोताहै और यहस्थान अफरीकाकेओर पासहै व्योपारी इकट्ठे होकर वहांके निवासियोंको मज़दूरीमें नौकर रखते है और उन्हींसे निकलवाते हैं वहांका बादशाह उन व्योपारियों से महसूल नहीं लेताहै तो जो लोग मूंगेके निकालने में प्रवृत्त होतेहैं

और खींचता है इसमें उत्तम प्रकार काले रंगका सुरखीलिये होता है इसकी खान हिन्दके समुद्रके किनारे परहै बहुधा किश्तियां जो उधर जातीहैं उस मिक़नातीस के बराबर तो किश्तियों की कीलें आदि जो लोहेकी चीज़ें होतीहैं निकलकर पहाड़से चिपक जाती हैं और वह्ने तबाह होजाते हैं सो इसी भय से उन किश्तियों में लोहेकी कीलों का लगाना निषेध है और यहनवीन अद्भुत बात है कि जो मिक़नातीस को लहसुन या प्याजकी गन्धदें तो उसकायह सारा गुण जाता रहता है और फिर जब सिरके या बकरे के ताज़े लहू में रक्खें उस समय उसका फिर वही स्वभाव होजाता है यदि कोई लोहे का खण्ड जलकेसाथ पी गयाहो और वह मिक़नातीस को दूधमें घिसकर पिये तो तुरन्त वह टुकड़ा कै में निकलेगा यदि कोईमनुष्य विषसे बुझेहुये हथियारका घावखाये और वह मिक़ना-तीसको दूधमें घिसकरपिये तो तुरन्त विषका अवगुणजातारहेगा ईश्वर ने इस पत्थर को ऐसा बल दिया है कि इसमें और लोहे में प्रिया प्रीतमसी प्रीति मालूमहोती है अररतूके सिवाय और लोगों ने लिखाहै कि इसका पास रखना जोड़ों की पीड़ा के लिये गुण-कारकहै और प्रसूति में भी अति सुगमताकरे यदि इसपर ज़ैतून का तेलमलें तो फिर लोहा इससेभागेगा और जब नर बकरेके ताज़े लहूमेंगोतादें अपने मुख्यदशाकास्वभाव दिखलायेगा यदि किसीके पैरमें पांवकी नसकी पीड़ाहो तो हाथ में रखना गुणकारी है और गठियाकी बीमारीभी दूरहोतीहै (मलह) अर्थात् नमक यह उसजल से पैदा होताहै जो मट्टी के जले हुये भागों से मिला हो परन्तु न कठोर क्योंकि जो कठोरता से मिलाहोताहै तोकडुवा होताहै और यही कारणहै कि बाज़े नमक कडुवे होतेहैं लिखाहै कि नमकवर्षा के उपरान्त ख़रीफ़की फसलमें पैदाहोताहै क्योंकि महीन और अच्छा मूल गर्मीकी ऋतुमें गल जाता है और कठोर मूल रहजाताहै उस समय सूर्य्यके स्वभाव से नमक बँधा करताहै नमक दो प्रकारपर होताहै पानीका और पहाड़ का नमकका गुण यहहै कि सब सड़ी

छोड़ें तो तुरन्त शुद्ध सुवर्ण बनावेगी और जो उसको गलाकर तांबे या शीशेपर छोड़ें सपेद और खुश्क करदेगी और उत्तम चांदी के सदृश कर देगी और इनके प्रकार यह हैं—सुनहरी, रुपहरी, पीतल के रंगकी, तांबेके रंगकी, इसका हरप्रकार उसीधातु के सदृश होताहै जिससे पैदा होतीहै फ़ारसी में इसको संगशेशनाई कहतेहैं और नेत्रों की ज्योतिके बढ़ानेमें सेवन की जातीहै और कुष्ट और सपेद काले दागों के रोग और निमिश (त्वचाकारोग कुष्ठ आदि) के लिये बहुतगुण करे इसके मर्दनसे बाल दूर होतेहैं और घुंघरवाले होजाते हैं जिस लड़केके गलेमें लटकावें वह बड़प्पन पावेगा (मिसन) एकप्रकार का पत्थर है जिस पर छुरी तलवार आदि तेज करते हैं अरस्तू ने लिखाहै कि मिसन सब्ज़ रंगका होताहै और उसपर तेल लगाकर औज़ार तेज़करतेहैं मुरुधकर के आंखकी सपेदीको गुणदायकहै और उसके सदृश एकपत्थर सुम्बादजहोताहै जिसे हिन्दुस्तानमें दरिया के किनारे पातेहैं और यह दांतों के लिये भी गुण दायक हैं शेख़ रईस ने लिखाहै कि मिसनके चुरानेको कन्याके कुचोंमें लगाना वा लड़कोंके अंडकोशमें लेपकरना बहुत गुणदायकहै इसमें बड़ेहोनेका भय जातारहताहै (मुसहिलुल हिदायत) अरस्तूके विचार से सह पत्थर भी सिन्धमें होताहै जो इसको हिलावें तो ऐसा मालूम होता है कि शायद इसके अन्दर और भी पत्थरका टुकड़ाहै इसकी खानि हिन्दुस्तान में उसपहाड़ में है जो बहरैन के अन्तर्गत मदीना कुमार है एक अद्भुत गुण यह है कि जो करगस (एक प्रकारका पक्षी जो मुरदार चीज़ें खातीहै) की प्रसूतिसे प्रकटहुईहै कहतेहैं कि करगस की मादा प्रसूति के समय मरने के निकट पहुंचतीहै तो उस समय वह बिचारा पक्षी पहाड़कीराह लेताहै और वहांसे इसपत्थरको लेकर अपनी मादाके नीचे रखताहै तुरन्तही बच्चा होताहै हिन्दुस्तान के निवासियोंने इसका गुण करगस से पाया है प्रसूति की पीड़ा के समय जो यह पत्थर हो तो जननेका दुःख न होगा (सिकनातीस) फ़ारसीमें इसे संगआहनरुबा कहते हैं यह पत्थर लोहेको अपनी

करनेवाला है और सम्पूर्ण विषों के वास्ते गुण कारक है परन्तु कलेजे और मनको हानि कारक है और रगोंके अंदर रुधिर को उपद्रव कारक करता है आवश्यकता पर विषके दूर करने के लिये इसको सेवन करते हैं कभी ऐसा होता है कि प्राणोंके मार्गों को रोकता है इसकारण मनुष्य मूर्च्छागत होता है सो चाहिये कि इसका सेवन विषके अवगुण करने से पहले करे तो उसका प्रभाव विषही परहो और जो पीछे सेवन किया तो यही मनुष्यके मारने वाला है (नूरा) यह जलेहुये पत्थरके प्रकारों से है लहूके चलने को बन्द करता है और आगसे जलेहुये पर तुरन्त गुण करता है और हम्माममें बालों के दूर करनेके लिये इसका सेवन बहुत उत्तम है परन्तु सेवनके उपरांत बिनफशे और गुलाब का सेवन भी उत्तम है यह बात जिन्नों से मालूम हुई है क्योंकि जब दाऊदके पुत्र सुलेमानने बिलकीस से विवाह किया तो इनके रूपमें कोई अवगुण न था परन्तु पिंडलीमें दाढ़ीके बालोंकी तरह अधिकता थी तो सुलेमांने जिन्नोंसे पूछा कि बालोंके दूरकरने में कोई उपाय मालूम है तो जिन्नोंने नूरा तय्यार किया यहभी लिखा है कि नूरेको जहां छिड़क दे मक्खियोंकी अधिकता न होगी (नौसादर) इसका उत्पन्नहोना नमककी तरह लिखा है परन्तु इतना अन्तर है कि इसमें मट्टीके भाग कम हैं और अग्निके भाग अधिक होते हैं इसी कारण जबइसे आगपर रखते हैं तो यह बिल्कुल उड़जाता है किसी ने लिखा है कि पानी और धुयें के भागोंसे बहुत क्षीणतासे पैदा होता है बहुधा ऐसा होता है कि उसको हम्मामके धुयेंसे पाते हैं अरस्तूने लिखा है कि इसकी खानें बहुत होती हैं और इसके नाना प्रकार के रंग हैं बाजा नौसादर खाकीरंग कोई बिल्लूरके सदृश सपेद होताहै आंखको सपेदीकेलिये अति गुणकारी है जो उसको दूसरी औषधियों के साथ पका कर सेवनकरें तो कफ़की पीनसको गुणदायक है शेख़ रईस लिखता है कि जो नौसादर को जलमें कजली करके छिड़कें कीड़े मकोड़े दूर होजाते हैं (हादी) अरस्तू लिखता है कि यह पत्थर उत्तर और

हुई चीज़ोंके दूरकरताहै और उसको जलाकर मंजन बनानादांतों को साफ़ करताहै पैग़म्बर साहब ने कहा कि ऐ अली प्रारम्भखाने का नमक परकरो और उसीपर अन्त करो क्योंकि इसके सेवन में सत्तर रोगों से आरोग्यता होता है नमक का सेवन समरीतिपर अच्छाहोता है अधिक मांस को दूर करता है और दाद खाज को दूर करे और अलसी के साथ मरहम बनाना और बिच्छू के घावपर लगाना गुणदायक है जो सिरके और शहदमें मिलाकरलगायें तो खनखजूरे और भिड़के घाव को लाभ करे और कफ़की, खाज और पांवके नसकी पीड़ाको भी लाभकरे जोनमक कि सपेद और महीन होता है उसको हिन्दी में इन्दरानी कहते हैं रंगमे बिल्लूर की तौरपर होता है उसको खाना समझ को तेज़ और दांतो की जड़ोको मजबूत करता है अरस्तू के विचार में नमक कई तरह का होता है बाजा तो पत्थर के सदृश और कोई नमक की तरह कोई खारी और यह नमक खारी समुन्दरफेन के प्रकार में से है और दरिया के किनारेकेस्थलों में पैदा होकर मिलता है ईश्वर ने कोई वस्तु बुद्धिमानी के सिवाय पैदा नहीं की इसप्रकार को बहुधा वृक्ष और नाली और पत्थरोंमेंसे पातेहैं और जिस वस्तुमें मिलावें उसको दुरुस्त करताहै यहांतक कि सोनेका रंग साफ करताहै और उसकी जर्दीको अधिक करता है बहुधा पत्थरों का मैलसाफ़ करता है (नतरून) अरस्तू ने लिखा है कि यद्यपि यह पत्थर कचलोन के प्रकारों से है परंतु उसका स्वभाव उससे विरुद्ध है वस्तुओं को साफ और टेढ़ेको सीधा करताहै और रंग रूपको साफ करता है इसको स्त्रियों की योनिमें पहुंचाना बहुत गुणकारी है कि मिया की कारीगरी में इसके गुण बहुत हैं अरस्तू के सिवाय औरोंका बचन है कि नतरून अरमनीं का नमक है बहुत कठिन कूलंज की बीमारी को गुण करे और आंखकी सपेदीको नष्ट करता है जो इसको खमीर में मिलावें रोटीको खुशरंग करता है जो देगमें छोड़दें मांस बहुत जल्दी गल जाता है (नोली) अरस्तूने लिखा है कि इसनाम के अर्थ विषके दूर

पत्थरको अपने कमरबन्दमें रक्खाकरतेहैं और एकस्वभाव इसका यहभी है कि मुहँमेंरखना प्यासको दूरकरताहै (यक़तान) अरस्तू ने लिखाहै कि यह पत्थर सदैव हिलता रहताहै और ठहरतानहीं जबतक कि मनुष्य उसपर हाथ न लगावे उन्मादरोग और कांपनी और जोड़ों की सुस्ती के लिये लाभदायक है यदि इसका यन्त्र बनावें तो समझ तेज़होगी स्मरणा बढ़जावे बड़े २ बुद्धिमानों ने इस पत्थर के गुण सबलोगों से छिपारक्खे हैं ॥

अपनी बुद्धिसे प्रकटकीहुई वस्तुओं का वर्णन ॥

कहते हैं कि जो तरीपृथ्वी के नीचे छिपी है सर्दी में गरम होती है और गरमी में ठण्डी इस कारण कि गरमी और सरदी परस्पर के बिरोध के कारण एक जगह नहीं ठहरसक्ती तो जब शीतऋतुआई और ठण्ढीहवाहुई गर्म्मी मिटजाती है और गुफाओं और पहाड़ों में स्थित होती है तो उनस्थानों में जो चीजे चिकनी होती हैं जब वहां सरदी और हवा पहुंचती है वह चिकनाई फैलती और फैलकर सख़्त होजाती है तो जब उस पर समय बीतता है तो वहतरी और चिकनाई सरदीके सबब बँधकर गंधक या पारा या गोंद या नमक के सदृश होजाती है और यह नाना-प्रकार के परस्पर विरुद्ध पदार्थ वायु और पृथ्वी के विपरीतहोने से होते हैं कि पहले पहिल यहशक्तियां अर्थात् गरमी सरदी तरी और खुश्की यह सबमिलके पारे के रूप होतीहैं इसतरह पर कि जो तरी मट्टी के भागो मे छिपी होती है और जो भाफें बहगुप्त हैं जब उसमे खान और गरमी की गरमी पहुंची तो वह क्षीणऔर हलकीहोकर ऊपरको झुकतीहैं तो दरारों और छिद्रों और गुफाओं में स्थितहोती हैं और उनकीभाफें कुछ समय पर्य्यन्त ठहरी रहती हैं जब शीत की सरदी का वेगहुआ तो कठोर और बँधजाती हैं और उनही ग़ारों और गढ़ों में पृथ्वीसे मिली रहती हैं और एक समयतक वहांपर रहतीहैं और इससमयमें खानकीगरमी उनको पकाया करतीहै और शुद्धकरतीहै तो वह तरी पानी की या मिट्टी

दक्षिण की सीमाओं मे होता है और इसका रंग तिल्ली के सदृश है जो मनुष्य अपने पास रक्खे कुत्ते उसपर नभोंकेंगे जोउसको गला कर उसमें गन्धक मिलावे तो पारेको बांधसक्ता है और फिर पारे में यह शक्ति न होगी कि आगपर उड़ जाय (याक़ूत) याक़ूत अति कठोर खुश्क और साफ़ चमकता हुआ नाना प्रकारके रंग अर्थात् सुर्ख पीला सब्ज नीलेरंग का होता है इसकी उत्पत्ति मीठे पानीसे होती है जो कि खानके बीच पत्थरोंमें समयतक रहताहै तो गाढ़ा होकर साफ और रंगीन होजाताहै और खानकी गरमी इससमय में पकाकर सख़्त पत्थर बनाती है आगसे नहीं गलता और कुछ चिकनापनभी रखता है और उसकी तरी हरसमय बढ़ा करती है और उसमें सोहन भी असर नहीं करता परन्तु उसमें हीरा और सम्बादज (कुरंड) असर करता है इसकी खान उत्तरके देशोंमे विष-वत्रेखा के निकट बताते हैं और छोटा होनेसे बहुत प्रिय होता है अरस्तूने लिखा है कि मुख्य करके याकूत चार प्रकार का होताहै लाल, पीला, और सब्ज सुर्ख हरएक प्रकारमें अति उत्तम और शुद्ध है और जब आंच दिखलावें बहुत सुर्ख और उत्तम होता है और जो उसमे कठोर २ बिन्दु होते हैं तो अग्नि में रखने से वह बिन्दु बिलकुल पत्थर में फैलजाते हैं और जो काले बिन्दु होतेहैं तो आंच पातेही उनका रंग और भी चमक दमक लाता है (पीलायाकूत) लालसे आग पर अधिक ठहर सक्ता है और सब्ज़ याकूत अग्नि पर नहीं ठहर सक्ता सिवाय इनके और प्रकारके रंगभी हैं परन्तु वहऐसे उत्तमनहीं सो जो मनुष्य ऊपर वर्णन कीहुई इन तीनों प्र-कारोंमें अपने पास रक्खे संसारमे प्रतिष्ठित और आदरीक होगा और उसपर जीविका के कार्य सुगम होंगे अरस्तू के सिवाय औरों ने लिखा है कि याक़ूत पानीके बधजानेसे रोकताहै (यशब अर्थात् यशम) यह सफेद रंगका पत्थर प्रसिद्ध है पक्वाशयके रोगोंको दूर करता है जो मनुष्य अपने निकट रक्खे उसपर कोई प्रबल नहोगा न युद्धमें न वाद विवाद में और इसीदृष्टि से बादशाह लोग इस

मुखसे दुर्गन्ध आतीहै और पारा उड़नेवाला होता है और इसके धुवेंसे दुखदेनेवाले जीव भागते हैं शेख़ के सिवाय और लोगों का वचन है कि पारे का कान में टपकाना बुद्धि के निर्व्वल होने का कारण है और क्या आश्चर्य कि सकता (यह वह रोग है जिसमें मनुष्य हिलजुलनहींसक्ता और मुर्दासा मालूमहोताहै) और मिर्गी का रोग होजाय जो अकस्मात् किसी के कान में पारा गिरपड़े तो उसके बाहर निकालने की क्रिया इसरीति पर है कि एकपावँ से खड़ाहोकर कूदे और अपने शिरको उस कान की ओर झुकावे जिधर पारा गिरा हो और अख़्तिताराात वदीही के निर्म्मापक ने लिखाहै कि पारे के निकालने की यहरीति है कि रांगे की सलाई उसकान में डाले पारा उसमें चिपक कर निकलआवेगा जो कोई कच्चापारा खाजावे तो तुरन्त रांगा घिसकरपीजाय पारे का दुख न होगा कै, या दस्त के साथ निकल जायेगा (गन्धक) यह पानी हवा और मट्टी के भागों से उत्पन्न होती है जब वह तीनों अपने स्वभावानुकूल कठोरता से परस्पर मिलते हैं तो तेल की तरह पर होजातेहैं और फिर सरदी के सबब जमजाते हैं अरस्तू ने लिखा है कि गंधकके रंग बहुत प्रकार के हैं कोई सुर्ख़ कोई सपेद कोई ज़र्द लाल गन्धक की खान सूर्य्यास्त के स्थान पर है वहां पर मनुष्य का चिन्हभी नहीं है उक़यानूस समुद्र के किनारेसे कई फ़रसख़ (तीनमील) पर उसकी खानहै और लाल गंधक अपनी खान में रात्रि के समय अग्नि के सदृश प्रकाशमान रहती है और जब खानसे बाहर निकालें यह स्वभाव उसका जाता रहता है इसका धुवाँ सकते मिरगी और आधाशीशी रोगोंको गुणकरे और कीमिया में सोना बनानेके लिये काम आताहै और सपेद गंधक सपेदवस्तुओंको काला करती है कभी गंधककी खान बहते पानीकी नदियों में छिपी होतीहै इसकारण उन नदियो का जल दुर्गंधि युक्त होता है तोजोमनुष्य वायुके समान रहनेकी ऋतुमें ऐसे सोते पर नहाये तो हरघाव सूजन और खाज आदि को जो सौदा और दग्ध दोष

की जो उससे मिलीहुई है और उस संगीनी और मुटाई समेत जो पाईगई है उसकोगरमीकी दृढ़ता पारासगीन बनाती है और मट्टी के भाग जो नीचेकी ओर रहजाते हैं वह जलीहुई गन्धक होजाती है सो जब पारा और गन्धक आपस में मिले तो खानों के नाना-प्रकार के रंग बरंगे जवाँहर मिलते हैं जिनका वर्णन होचुका है (जीवक) इसे फ़ारसी मे सीमाबकहते हैं और हिन्दी में पारा यह जलके भागोंसे उत्पन्न होता है कि जो गन्धकदार मट्टी के उत्तम भागोसे मिलकर कठोर होजातेहैं इसतरह से कि मट्टी और पानी में अन्तर नहीमालूम होता न उसको अलग करना सम्भवित है उसपर केवल एक मट्टीकापरदा ढंकारहताहै तो जब दोनो परस्पर एकहुये और परदा उसपर ढँकगया तो बहुधा ऐसा होता है कि उसबूंद के पास और बूंद जमतीहै और उसढकने को तोड़डालती है और यह बून्द भी उसमें मिलजाती है उस समय फिर मट्टी के ढकनेसे ढकजाती है पारे की सफ़ाई पानी की सफाई से होती है और गंधकदार मट्टी के होने के कारण अरस्तू कहता है कि पारा चांदी के प्रकारसे है परन्तु इसपर खान के अन्दर आफतेआतीहैं और आफतें वहीहैं जो रांगेके वर्णनमें लिखीगईं जो मनुष्य मारे हुये पारे को अपने शरीर मे लगावे जूं मारडालेगा जो उसकी भस्मको आंटे में मिलाकर दें चूहे मरजायेंगे इसीतरह जो पारेकी भस्म आगपर छोड़ें तो जो उसके निकटहोगा उसे नानाप्रकारके रोग जैसे मुखगन्ध, अर्द्धांग, नेत्रकीज्योतिकी क्षीणता, रतौंधी, और पीलारंग, कांपनी और ब्रह्माण्ड की खुश्कीआदि होगे पारेकेधुवे से सांप बिच्छूआदि भागते हैं या मरजाते हैं शेखरईस ने लिखा है कि पारे की खानसे बहुधा सोना और चांदी निकालते हैं पारे का कुश्ता भी जूं दूरकरता है और खाज़ और बुरेघावोंको गुणकारीहै और इसकाधुवां ज्वर अर्द्धांग और कांपनी पैदाकरताहै और आंखों को अन्धा करताहै और यहीकारण है कि कीमियागर लोगों की आंखोसे ढलका जारी रहताहै और बहरेभी होजातेहैं और उनके

मुखसे दुर्गन्ध आतीहै और पारा उड़नेवाला होता है और इसके धुवेंसे दुखदेनेवाले जीव भागते हैं शेख़ के सिवाय और लोगों का वचन है कि पारे का कान में टपकाना बुद्धि के निर्बल होने का कारण है और क्या आश्चर्य कि सकता (यह वह रोग है जिसमें मनुष्य हिलजुलनहींसक्ता और मुर्दासा मालूमहोताहै) और मिर्गी का रोग होजाय जो अकस्मात् किसी के कान में पारा गिरपड़े तो उसके बाहर निकालने की क्रिया इसरीति पर है कि एकपावँ से खड़ाहोकर कूदे और अपने शिरको उस कान की ओर झुकावे जिधर पारा गिरा हो और अख़्तियारात बदीही के निर्म्मापक ने लिखाहै कि पारे के निकालने की यहरीति है कि रांगे की सलाई उसकान में डाले पारा उसमें चिपक कर निकलआवेगा जो कोई कच्चापारा खाजावे तो तुरन्त रांगा घिसकरपीजाय पारे का दुख न होगा कै, या दस्त के साथ निकल जायेगा (गन्धक) यह पानी हवा और मट्टी के भागों से उत्पन्न होती है जब वह तीनों अपने स्वभावानुकूल कठोरता से परस्पर मिलते हैं तो तेल की तरह पर होजातेहैं और फिर सरदी के सबब जमजाते हैं अरस्तू ने लिखा है कि गंधकके रंग बहुत प्रकार के हैं कोई सुर्ख़ कोई सपेद कोई जर्द लाल गन्धक की खान सूर्य्यास्त के स्थान पर है वहां पर मनुष्य का चिन्हभी नहीं है उक़्थानूस समुद्र के किनारेसे कई फरसख़ (तीनमील) पर उसकी खानहै और लाल गंधक अपनी खान में रात्रि के समय अग्नि के सदृश प्रकाशमान रहती है और जब खानसे बाहर निकालें यह स्वभाव उसका जाता रहता है इसका धुवाँ सकते मिरगी और आधाशीशी रोगोंको गुणकरे और कीमिया में सोना बनानेके लिये काम आताहै और सपेद गंधक सपेदवस्तुओंको काला करती है कभी गंधककी खान बहते पानीकी नदियों में छिपी होतीहै इसकारण उन नदियों का जल दुर्गंधि युक्त होता है तोजोमनुष्य वायुके समान रहनेकी ऋतुमें ऐसे सोते पर नहाये तो हरघाव सूजन और खाज आदि को जो सौदा और दग्ध दोष

की प्रबलतासे हो आराम होजाता है और उदरकी पवन के लिये भी लाभकरे शेखरईस लिखताहै कि गंधक बरसरोगकी औषधियों में से है परन्तु जब तक आंच न खाईहो जो गंधकको बुनके गोंदमें मिलाकर बदरंग नाखूनपर लगाये तो उन चिन्हों को नाश करता है सिरकेमे मिलाकर झाईं पर मर्दन करना गुण दायक है बिच्छू के विषको भी दूरकरतीहै और खाने और लगाने से सम्पूर्ण प्रकार के घाव खाज और दाद गुण करे और नतरून के साथ पांव की रगकीपीड़ाकेलिये और इसकाअरक़ ऋतुके रुधिरको जारीकरताहै और इसकी धूनी ज़ुकाम नज़लेको गुणकारकहै जो इसका बुरादा शरीर पर मले पसीने का निकलना बंद करेगी यदि गर्भवती स्त्री की योनिमे धुआकरे तुरन्त गर्भपात होगा अरस्तू के सिवाय और साहिबोंका लेख है कि पीली गधकको डकमारनेवाले जानवरों के घावपर लगाना लाभ करे इसका धुआं बालों को सपेद करता है और इसकी गधसे सांप बिच्छू भागते हैं मुख्यकर चरबीके तेल के साथ और जो तुरंज अर्थात् जम्भीरी नींबूके वृक्षके नीचेधुआदे तो सब नींबू गिर पड़ेगे (क़ीरया) बाज़े पहाडोंमें जोशखाता है और कई दरियाओंमे परन्तु उस चश्मे का पानी गरम २ जोशखाता है तो जब पानीका उतार हुआ तोनरम होताहै और जब गरम पानी से अलग हुआ ठंढा होकर सूख जाता है उस समय उसको लेकर पृथ्वीपररखतेहैं और फिरदेगमे छोड़तेहैं और कुछ रेतभी मिलाकर छोड़ते हैं और चुमटेसे हिलाते जाते हैं तो जब उसका उचित रूप दिखाई दिया तो उसके टुकडे अलग २ पृथ्वी पर डालते हैं उस समय वह सख़्ती पकड़ते हैं शेखरईसने लिखा है कि जो क़ीर को पियें तो जो लोहू पेटके अंदर सूख गया हो उसको पिघलाता है नाखून की सपेदी के लिये गुणकारक है कंठमाला पर लगाना बहुत लाभकरे और दाद को दूरकरे और जोडों की पीड़ापर लेप करना गुणदायक है और रांधन और खांसी और खुनाक अर्थात् पीनसकी बीमारियों में इसका शरबतपीना गुणकरे (नफ़्त) पानी

मुखसे दुर्गन्ध आतीहै और पारा उड़नेवाला होता है और इसके धुवेंसे दुखदेनेवाले जीव भागते हैं शेख़ के सिवाय और लोगो का वचन है कि पारे का कान में टपकाना बुद्धि के निर्व्वल होने का कारण है और क्या आश्चर्य कि सकता (यह वह रोग है जिसमे मनुष्य हिलजुलनहीसक्ता और मुर्दासा मालूमहोताहै) और मिर्गी का रोग होजाय जो अकस्मात् किसी के कान में पारा गिरपड़े तो उसके वाहर निकालने की क्रिया इसरीति पर है कि एकपावँ से खड़ाहोकर कूदे और अपने शिरको उस कान की ओर झुकावे जिधर पारा गिरा हो और अख़्तिताराात बदीही के निर्म्मापक ने लिखाहै कि पारे के निकालने की यहरीति है कि रांगे की सलाई उसकान में डाले पारा उसमें चिपक कर निकलआवेगा जो कोई कच्चापारा खाजावे तो तुरन्त रांगा घिसकरपीजाय पारे का दुख न होगा कै, या दस्त के साथ निकल जायेगा (गन्धक) यह पानी हवा और मट्टी के भागों से उत्पन्न होती है जब वह तीनों अपने स्वभावानुकूल कठोरता से परस्पर मिलते हैं तो तेल की तरह पर होजातेहैं और फिर सरदी के सबब जमजाते हैं अरस्तू ने लिखा है कि गंधकके रंग बहुत प्रकार के हैं कोई सुर्ख़ कोई सपेद कोई जर्द लाल गन्धक की खान सूर्य्यास्त के स्थान पर है वहां पर मनुष्य का चिन्हभी नही है उक़यानूस समुद्र के किनारेसे कई फरसख़ (तीनमील) पर उसकी खानहै और लाल गंधक अपनी खान में रात्रि के समय अग्नि के सदृश प्रकाशमान रहती है और जब खानसे बाहर निकालें यह स्वभाव उसका जाता रहता है इसका धुवाँ सकते मिरगी और आधाशीशी रोगोंको गुणकरेऔर कीमिया में सोना वनानेके लिये काम आताहै और सपेद गंधक सपेदवस्तुओंको काला करती है कभी गधककी खान बहते पानीकी नदियों में छिपी होतीहै इसकारण उन नदियों का जल दुर्गंधि युक्त होता है तोजोमनुष्य वायुके समान रहनेकी ऋतुमें ऐसे सोते पर नहाये तो हरघाव सूजन और खाज आदि को जो सौदा और दग्ध दोष

की प्रबलतासे हों आराम होजाता है और उदरकी पवन के लिये भी लाभकरे शेखरईस लिखताहै कि गंधक बरसरोगकी औषधियों में से है परन्तु जब तक आंच न खाईहो जो गंधकको बुनके गोंदमें मिलाकर बदरंग नाखूनपर लगाये तो उन चिन्हों को नाश करता है सिरकेमें मिलाकर झाईं पर मर्दन करना गुण दायक है बिच्छू के विषको भी दूरकरतीहै और खाने और लगानेसे सम्पूर्ण प्रकार के घाव खाज और दाद गुण करे और नतरून के साथ पांव की रगकीपीड़ाकेलिये और इसकाअरक़ ऋतुके रुधिरको जारीकरताहै और इसकी धूनी ज़ुकाम नज़लेको गुणकारकहै जो इसका बुरादा शरीर पर मलें पसीने का निकलना बंद करेगी यदि गर्भवती स्त्री की योनिमें धुआंकरे तुरन्त गर्भपात होगा अरस्तू के सिवाय और साहिबोंका लेख है कि पीली गंधकको डकमारनेवाले जानवरो के घावपर लगाना लाभ करे इसका धुआं वालों को सपेद करता है और इसकी गधसे सांप बिच्छू भागते हैं मुख्यकर चरबीके तेल के साथ और जो तुरंज अर्थात् जम्भीरी नींबूके वृक्षके नीचेधुआंदें तो सब नींबू गिर पड़ेगे (कीरया) वाजे पहाड़ोंमें जोशखाता है और कई दरियाओंमें परन्तु उस चश्मे का पानी गरम २ जोशखाता है तो जब पानीका उतार हुआ तोनरम होताहै और जब गरमपानी से अलग हुआ ठंढा होकर सूख जाता है उस समय उसको लेकर पृथ्वीपररखतेहैं और फिरदेगमे छोड़तेहैं और कुछ रेतभी मिलाकर छोड़ते है और चुमटेसे हिलाते जाते हैं तो जब उसका उचित रूप दिखाई दिया तो उसके टुकडे अलग २ पृथ्वी पर डालते हैं उस समय वह सख़्ती पकड़ते हैं शेखरईसने लिखा है कि जो कीर को पिये तो जो लोहू पेटके अंदर सूख गया हो उसको पिघलाता है नाखून की सपेदी के लिये गुणकारक है कंठमाला पर लगाना बहुत लाभकरे और दाद को दूरकरे और जोड़ो की पीड़ापर लेप करना गुणदायक है और रांधन और खांसी और खुनाक अर्थात् पीनसकी बीमारियों में इसका शरबतपीना गुणकरे (नफ्त) पानी

के ऊपर आताहै दोप्रकारका होताहै सपेद और काला कभी ऐसाभी होजाता है कि कालेनफ़्त को कद्दू के रसमें डालकर पकाते हैं तो सपेद होजाता जो उसको लक़वा फ़ालिज (अर्द्धांग) और जोड़ों की पीड़ापरलगावें तो गुणदायक होगा और आंखकीसपेदी और नज़लेके पानीकोभी गुणदायकहै जो गरमपानीमें आधामिस्काल पिये तो पेचिश दूरहोगी और मरेहुये बच्चेतक उदर से निकालता है और जो बच्चे की झिल्ली गर्भाशय में रहगई हो तो उसको भी बाहर निकाल देता है और कीड़ों और फफ़ोले के दानों के लिये उपयोगी है और डंक के घावोंको भी लाभदेके बहुधा थोड़ेघिसने से बग़ैर आग के भी जल उठताहै साहब अख़तियारात ने लिखाहै कि सुद्देको खोलता है और दोनों चूतड़ों की पीड़ा के लिये लाभ करे पुरानीखांसी को दूरकरता है और कालेरंग का नफ़्त पीड़ाके दूरकरने और मूत्राशय की सरदीकेलिये गुणकारी है और इसका बदला क़तरान है (मोमियाई) यह भी काली गोंद याक़ीर की तरह है परन्तु यह अतिप्रिय है इसकीखानें फारसकी धरती और मवस्सल में पाई जाती हैं टूटीहुई हड्डियों को पूरा गुण करती है और फालिज़ और लकवे को गुणकारी है और आधाशीशी और शिरपीड़ा और मिरगी के लिये भी अति उत्तमहै—यदि मरज़जोश अर्थात् दूने के अरक़ के साथ नाक में टपकावें या तीन रत्ती के अनुमान पियें जिह्वा का भारीपन और खुनाक और उन्माद को गुणदायकहै तेलकेसाथ डंककेघावपर लगाना गुणदायकहै साहब अख़्तियारातबदीही का निश्चय है कि बैसूक़ोरे दोस ने कहाहै कि मोमियाई अतिगुणदायक वस्तु है इसका स्वभाव तीसरे दरजे में गर्म्महै और बहुत उत्तम और गलानेवाली है शेख़रईस के विचार में दूसरेदरजे के अन्त में गर्म्म और पहलेमें खुश्क और प्राणों के बलदेनेवाली है कफ़केशोथों को गुणदायक और बिगड़े रुधिर को लाभदे एकक़ेरात अर्थात् चारजौकेबराबर सिकंजबीनकेसाथ पीना कंठकीपीड़ा और हौलदिलको लाभदायकहै और आठजौकेअनुमान

बिच्छूके घावके वास्ते फायदाकरे इसकापीनाटूटेहुये जोड़ोंकेवास्ते बहुत गुणदायकहै जो चाररत्तीके बराबर जोशदेकर जलंधर रोगी के उदरपर मर्दन करें गुणकरेगी और मूत्ररोध के वास्ते हरदिन किरफ्स अर्थात् विलायती अजमोद के पानी में पीना गुणदायक है कोढ़ और सपेद कालेदाग जो शरीर पर प्रगट हो पीलपांव इनरोगोंके प्रारम्भ में सातदिन तक अफतीमूं* के साथ पकाकर चारजौके बराबर पीना गुणदायक है शीत कोपकाशय की पीड़ा और मंदाग्निकेलियेभी हरदिनमद्यमेंपीना गुणदायकहै औरबिच्छू और सर्पके विषऔर विषखायेहुये को लाभकरता है परन्तु पहाड़ी पोदीना और मनीसून (रंदनी) के जोशदिये हुये पानी में मिलाकर यह गुण होगा यदि जोड़ोमें कांपनी हो तो हरदिन सातर फारसी में इसका जोशांदा पीना गुण करे और गर्भाशय के बंदहोने और संपूर्ण स्त्रियोंकेरोगोंको जो शरदीसेहो तेजपातके पानीकेसाथपीना गुण दायक है और चौथिया तप की बीमारी में हरदिन पहले बीस दिरम वाद आवर्दको जोशदें फिर उसीके जोशांदे में मोमियाई को पियें गुणकरेगी इसके इतने गुण संक्षेपमें कहे गये और मोमियाई के बहुत प्रकार और भी हैं कि पहाड़ी और दरियाओंसे मिलती हैं और उसको फकरूल यहूद कहते हैं और मनुष्य की भी बनी हुई मोमियाई होती है इसके गुणभी इस मोमियाई के निकट हैं अब यहां पर साहब अखतियारात बदीहीके वचन पूर्ण हुआ (अम्बर) इसकी खानमें अन्तर है बाजोंके विचारमें यह नरम मेंह है जो कई स्थानोंके पत्थरों पर दरियाके अंदर जमता है जैसा कि तुरंजबीन भी नरममेंह और उसीके सदृश है जो मुख्य करके खुरासान के कांटेदार वृक्षों पर जमती है कोई कहते हैं कि यह दरियाई गाय की विष्टा है और यहभी कहते हैं कि जो चीज़ें दरिया में उगती हैं और जल जंतुओं के खानेमें आती हैं यहीहै और कइयों का वाक्य है कि मछली के उदरसे पाया जाता है कि वह इसको खाकर मर

* इस को हिन्दीमें अमलवेल या आकाशबेल कहते हैं ॥

जाती है शेखरईस कहता है कि अंबर चश्मे से मिलता है निदान बहुतोंके वचन इस विषयमें लिखे हैं अखतियारात वदीही का निरूपक लिखता है कि निश्चय करनेसे यह बात सिद्धहुई है कियह एक प्रकार का मोम है और इस प्रकार में उत्तम अशहब होता है जिसको स्पन्द कहते हैं दूसरा नीलेरंग का जिसको फितकी और तीसरे पीले रंगका जिसको खश खाशी कहतेहैं और उसके दरिया में पैदा होनेमें कुछ विरुद्धता नहीं है निदान यह दरिया में उत्पन्न होता है और दरिया इसको किनारे पर पहुंचाता है कहते हैं कि जंग दरिया किसी ऋतु में इस अंबर को इतना अपने किनारे पर फेंकता है कि एक टीलासा मालूम होता है बहुधा जो देखागयातो हरटुकड़ा अंबरका शिरकी खोपड़ीके सदृश होता है जिसका वज़न हज़ार मिसकालके अनुमान होता है और बहुधा मछली के पेट से भी निकालते हैं कहते हैं कि जब मछली इसको खाती है तुरन्त मरजाती है और पानी पर उभर आती है उस समय लोग उसका पेटफाड़ कर निकालते हैं व्योपारी उसको खूब पहचानते हैं अंबर जितना सपेद और हल्काहो उत्तम होगा उसका स्वभाव दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दरजेमें खुश्क है बुड्ढोंके लिये अति गुणकारी है ब्रह्माण्ड और इन्द्रियों को लाभ देता है और मनका बल कारक और प्राणों को बलदेता है और आजायरईसा अर्थात् कलेजा, मन, और भेजे और शिरपीड़ा और पक्वाशय को गुणदायक है और जो विकार कि आंतों आदि में होते हैं उनका दूर करनेवाला है कदाचित् ठंढेदोषों से आधाशीशी और शिरपीड़ाहो तो धुवाँदेना गुणकारी होगा और जो तरी और उपद्रव कारक विकारोंसे जोड़ोंकी पीड़ाहो उसपर इसका लेपकरना गुणदायक होगा जो गरम तेल जैसे कि दूना या बाबूना के तेल में कुजली करके नाक में टपकावे जो बुड्ढों को कफ के मोटेहोने के सबब ब्रह्माण्ड मे रोगहो उसको गलाताहै यदि उसका लखलखा (कईसुगन्धदार चीजेंमिलाकर सूंघीजाती हैं) बनावें तो फालिज़

बिच्छूके घावके वास्ते फायदाकरे इसकापीनाटूटेहुये जोड़ोंकेवास्ते बहुत गुणदायकहै जो चाररत्तीके बराबर जोशदेकर जलंधर रोगी के उदरपर मर्दन करें गुणकरेगी और मूत्ररोध के वास्ते हरदिन किरफस अर्थात् बिलायती अजमोद के पानी में पीना गुणदायक है कोढ़ और सपेद कालेदाग जो शरीर पर प्रगट हों पीलपांव इनरोगोंके प्रारम्भ में सातदिन तक अफतीमूं* के साथ पकाकर चारजौके बराबर पीना गुणदायक है शीत कोपकाशय की पीड़ा और मंदाग्निकेलियेभी हरदिनमंद्यमेंपीना गुणदायकहै औरबिच्छू और सर्पके विषऔर विपखायेहुये को लाभकरता है परन्तु पहाड़ी पोदीना और अनीसून (रंदनी) के जोशदिये हुये पानी में मिलाकर यह गुण होगा यदि जोड़ोंमें कांपनी हो तो हरदिन सातर फारसी में इसका जोशांदा पीना गुण करे और गर्भाशय के बंदहोने और संपूर्ण स्त्रियोंकेरोगोंको जो शरदीसेंहो तेजपातके पानीकेसाथपीना गुण दायक है और चौथिया तप की बीमारी में हरदिन पहले बीस दिरम बाद आवर्दको जोशदें फिर उसीके जोशांदे में मोमियाई को पियें गुणकरेगी इसके इतने गुण संक्षेपमें कहे गये और मोमियाई के बहुत प्रकार और भी है कि पहाड़ों और दरियाओंसे मिलती है और उसको फ़क़रुल यहूद कहते हैं और मनुष्य की भी बनी हुई मोमियाई होती है इसके गुणभी इस मोमियाई के निकट है अब यहां पर साहब अखतियारात बदीही के वचन पूर्ण हुआ (अम्बर) इसकी खानमें अन्तर है बाजोंके विचारमें यह नरम मैंह है जो कई स्थानोंके पत्थरों पर दरियाके अंदर जमता है जैसा कि तुरंजबीन भी नरममैंह और उसीके सदृश है जो मुख्य करके खुरासान के कांटेदार वृक्षों पर जमती है कोई कहते हैं कि यह दरियाई गाय की विष्टा है और यहभी कहते है कि जो चीज़ें दरिया में उगती हैं और जल जंतुओं के खानेमें आती हैं यहीहै और कइयों का वाक्य है कि मछली के उदरसे पाया जाता है कि वह इसको खाकर मर

* इस को हिन्दीमें अमलबेल या आकाशबेल कहते हैं।

जाती है शेख़रईस कहता है कि अंबर चश्मे से मिलता है निदान बहुतोंके वचन इस विषयमें लिखे हैं अख़तियारात वदीही का निर्पक लिखता है कि निश्चय करनेसे यह बात सिद्धहुई है कियह एक प्रकार का मोम है और इस प्रकार में उत्तम अशहव होता है जिसको रुपन्द कहते हैं दूसरा नीलेरंग का जिसको फ़िताक़ी और तीसरे पीले रंगका जिसको खश खाशी कहतेहैं और उसके दरिया में पैदा होनेमें कुछ विरुद्धता नहीं है निदान यह दरिया में उत्पन्न होता है और दरिया इसको किनारे पर पहुंचाता है कहते हैं कि जंग दरिया किसी ऋतु में इस अंबर को इतना अपने किनारे पर फेंकता है कि एक टीलासा मालूम होता है वहुधा जो देखागयातो हरटुकड़ा अंबरका शिरकी खोपड़ीके सदृश होता है जिसका वज़न हज़ार मिसकालके अनुमान होता है और बहुधा मछली के पेट से भी निकालते हैं कहते हैं कि जब मछली इसको खाती है तुरन्त मरजाती है और पानी पर उभर आती है उस समय लोग उसका पेटफाड़ कर निकालते हैं व्योपारी उसको खूब पहचानते हैं अंबर जितना सपेद और हलकाहो उत्तम होगा उसका स्वभाव दूसरे दर्जेमें गरम और पहले दरजेमें खुश्क है बुड्ढोंके लिये अति गुणकारी है ब्रह्माण्ड औरइन्द्रियों को लाभ देता है और मनका बल कारक और प्राणों को बलदेता है और आजायरईसा अर्थात् कलेजा, मन, और भेजे और शिरपीड़ा और पक्वाशय को गुणदायक है और जो विकार कि आंतों आदि में होते हैं उनका दूर करनेवाला है कदाचित् ठढेदोषों से आधाशीशी और शिर पीड़ाहो तो धुवांदेना गुणकारी होगा और जो तरी और उपद्रव कारक विकारोंसे जोड़ोंकी पीड़ाहो उसपर इसका लेपकरना गुणदायक होगा जो गरम तेल जैसे कि सूना या बाबूना के तेल में कज़ली करके नाक में टपकावें जो बुड्ढों को कफ के मोटेहोने के सबब ब्रह्माण्ड में रोगहो उसको गलाताहै यदि उसका लखलखा (कईसुगन्धदार चीजेंमिलाकर सूंघीजाती हैं) बनावें तो फ़ालिज

और लक़वेको गुणदायक है और तेल मे कजलीकरके मर्दनकरना फीहाकीपीड़ाके वास्ते गुणकारी है कहतेहैं जो थोड़ा शराबमें पियें तुरन्त वीर्य्यपात होगा और एकदांग अर्थात् छः रत्ती के अनुमान् से अधिकतर पीना हानिकारक है और इसकेविकारका शोधन-करनेवाला कपूरका सूंघना है इससफे और पिछलेसफेमें थोड़ीबातें मुख्यपुस्तकमें न थीं उल्थकने अपने निश्चयकरने और अभ्याससें अधिककी है अब स्थावर और जंगम का वर्णन किया जाता हैं॥

(नज़र दूसरी स्थावर पदार्थों के वर्णन में)

स्थावर पशु और खानोंमे मध्य पदवी पर हैं इसका वर्णन इस रीति पर है कि स्थावर जंगमसे वड़ा है क्योंकि स्थावरपदार्थ बढ़तेहैं और जंगम नहीं स्थावरोंका जीवधारियोंसे साझाहै परंतु थोड़ेकामों मेंऔर ईश्वरने हर एकवस्तुको आवश्यकताके अनुकूल उत्पन्नकियाहैं औरजब वह वस्तु आवश्यकतासे अधिक होती है तो वही अधिकता उसपर भार होती है निदान जंगम पदार्थों को हिलने जुलने की कुछ आवश्यकता नहीं परंतु उससे विपरीत जीवधारी हिलने जु-लनेकी आवश्यकता रखताहै ईश्वरकी अद्भुत मायाहै कि जो दाना किसी चीजका तरजमीनसे मिलताहै सूर्यकी गर्मीमे दोटूक होजाता है और यही उसी शक्तिकी क्रिया है जो ईश्वरने उसमें उत्पन्नकीहै मट्टीके भाग मट्टीसे और पानी के पानी से स्थित होते हैं सो वही भाग बाजे २ के ऊपर इकट्ठे होते हैं और वह दाना स्थावर का बीज होकरफल फूलसे भरपूरहोता है प्रकटहो कि स्थावर दोप्रकार केहैं एक वृक्ष दूसराबेल वृक्ष वह स्थावर है ज़िसकी साक अर्थात् पेड़हो और वेल वह है जिसके पेड़ न हो सो वृक्ष बड़े जीवधारियों के सदृश है और बेल छोटे जीवधारियो के सदृश और जो ईश्वरने इन स्थावरोंको शक्तिदी है वह दोप्रकार कीहै एक ख़ादिमा दूसरी मख़दूमा ख़ादिमाके चारप्रकार हैं(प्रथम)जाज़बा अर्थात् वहशक्ति है जो पानीको वृक्षके मूल में खींचती है और वहांसे वृक्ष के ऊपर पहुंचाती है (द्वितीय) मास का अर्थात् रक्षा करने की शक्ति

जो जलकी तरीकी रक्षा रखती है कि उस वृक्ष में गुण करे यह चाहे जीवधारियों में बहुत प्रकटहै जैसे जब मनुष्य जल पीताहै शक्ति वह शिर अपना नीचे को झुकाले परन्तु वह जल बाहर न निकलेगा क्यों कि वह रक्षा करने वाली शक्ति उसको रोके हुयेहै और इसके विपरीत कि जिस घड़ेमें जल भरकर औंधा कीजिये जोकि उसमें रक्षा करनेका बल नहींहै तुरन्त गिरजावेगा (तृतीय) पचनेकी शक्ति और यह तरीको शोधन करतीहै कि वहतरी वृक्षका भाग होजाय (चतुर्थ) दूर करनेकी शक्ति जो तरीको दूर करती है अर्थात् जो तरीशुद्ध नहीं है वा वृक्षके भाग होनेके योग्य नहीं है उसको दूरकरतीहै और यहशक्ति सबजीव धारियोंमें भी प्रकटहै कि मलमूत्र हुआ करताहै और मखदूमा शक्ति भी चार प्रकारकी है (प्रथम) ग़ाज़िया यह वह शक्तिहै जो गलेहुयेके स्थाना पन्नहोतीहै (द्वितीय) बढ़ानेकी शक्ति जो मुख्य शरीरमें वृद्धि लातीहै भोजनके पहुंचानेसे जैसा कि जीवधारियोंमें अधिक प्रकटहै कि बढ़ानेवाली शक्ति भोजन से दहने तरफ पहुंचाती है फिर बाईं ओर की अच्छी तरह बढ़े (तृतीय) मोल्दह अर्थात् शुद्ध मूलके पैदा करने वाली शक्ति और उससे फलके लानेकी शक्ति स्थावरोंको प्राप्त है और यह शक्ति तरीकीहै जिस प्रकार से पशुओं में मूल वीर्य है (चतुर्थ) मसव्विरह है यह वह शक्ति है जिसके द्वारा रूप व रङ्ग तय्यार होताहै और यह अद्भुत शक्तिहै जैसे कि वहपत्ते फूल बूट कलियां और रंगा रंगके फलहैं और भोजनकी शक्तिके भी अद्भुत गुणहैं कि बहुधा ऐसा होताहै कि सम्पूर्ण भोजनको गिरी में खर्च करतीहै और शरीर के लिये कुछ नहीं छोड़ती जिस तरहसे अखरोट बादाम फन्दक (विलायती पसिद्धफलबेरके बराबरहै) और पिस्ते में और उसफलके वास्ते मानो पुख्ता सन्दूक़देतीहै कि उसगिरीको एक समयतक रक्षितरखसके और इसमें कोईखराबी न आसके सो वह उसगिरीके जमाकरनेमें लगीरहतीहै और गिरीकोनहीछोड़ती हां कुछ बीज के मिलने को छोड़ती है जैसा कि सेव अमरूद और

और लक़वेको गुणदायक है और तेल मे कजलीकरके मर्दनकरना फीहाकीपीडाके वास्ते गुणकारी है कहतेहैं जो थोड़ा शरावमें पिये तुरन्त वीर्य्यपात होगा और एकदांग अर्थात् छः रत्ती के अनुमान से अधिकतर पीना हानिकारक है और इसकेविकारका शोधन-करनेवाला कपूरका सूंघना है इससफे और पिछलेसफेमें थोड़ीबातें मुख्यपुस्तकमें न थीं उल्थकने अपने निश्चयकरने और अभ्याससे अधिककी हैं अब स्थावर और जंगम का वर्णन किया जाता है ॥

(नजर दूसरी स्थावर पदार्थों के वर्णन में)

स्थावर पशु और खानोमें मध्य पदवी पर हैं इसका वर्णन इस रीति पर है कि स्थावर जंगमसे बड़ा है क्योंकि स्थावरपदार्थ बढ़तेहैं और जंगम नहीं स्थावरोंका जीवधारियोंसे साझाहै परंतु थोडेकामों में और ईश्वरने हर एकवस्तुको आवश्यकताके अनुकूल उत्पन्नकियाहै औरजब वह वस्तु आवश्यकतासे अधिक होती है तो वही अधिकता उसपर भार होती है निदान जंगम पदार्थों को हिलने जुलने की कुछ आवश्यकता नहीं परंतु उससे विपरीत जीवधारी हिलने जु-लनेकी आवश्यकता रखताहै ईश्वरकी अद्भुत मायाहै कि जो दाना किसी चीज़का तरजमीनसे मिलताहै सूर्यकी गर्मीसे दोटूक होजाता है और यही उसी शक्तिकी क्रिया है जो ईश्वरने उसमें उत्पन्नकी हैं मट्टीके भाग मट्टीसे और पानी के पानी से स्थित होते हैं सो वही भाग बाज़े २ के ऊपर इकट्ठे होते हैं और वह दाना स्थावर का बीज होकरफल फूलसे भरपूरहोता है प्रकटहो कि स्थावर दोप्रकार केहैं एक वृक्ष दूसरावेल वृक्ष वह स्थावर है जिसकी साक अर्थात् पेड़हो और वेल वह है जिसके पेड़न हो सो वृक्ष बड़े जीवधारियों के सदृश हैं और वेल छोटे जीवधारियों के सदृश और जो ईश्वरने इन स्थावरोंको शक्तिदी है वह दोप्रकार कीहै एक ख़ादिमा दूसरी मख़दूमा ख़ादिमाके चारप्रकार हैं(प्रथम)जाज़वा अर्थात् वहशक्ति है जो पानीको वृक्षके मूल में खींचती है और वहांसे वृक्ष के ऊपर पहुचाती है (द्वितीय) मास का अर्थात् रक्षा करने की शक्ति

वालेघाव और अर्द्धाङ्गको गुणदायक है और जब इसतेलको पकाते हैं तो मोम रोगन की तरह गाढ़ा होजाता है उस वलसां नामी वृक्षकी सूरत यहहै ॥ तसवीर नम्बर १९६

(वलूत) कहतेहैं कि इस पहाड़ी वृक्ष का फल एक वर्ष वलूत और दूसरे वर्ष माजू हुआ करताहै जो यहसचहै तो वहीबात हुई कि जैसे चारपायों में खरगोश और उड़नेवालों में कफ़तार अर्थात् हुथड़ार और ज़ग़न अर्थात् चील जो एकवर्ष नर और दूसरेवर्ष मादा रहतेहैं लिखाहै कि इसके पत्तोंको सांप पर निचोड़ें तो सांप हिल न सके शेखरईसके विचारमें इसके पत्तोंको पीसकर घावमें लगाना भरताहै इसकाफल कीड़े मकोड़ोंकेविष और लहूकेनिकलनेको बन्द करताहै वहुधालोगकहतेहैं कि जो इसकीराख जंगलीचूहोंके समूह में डालदें तो वह आपसमें युद्ध करने लगेंगे सूरत उसकीयहहै ॥

तसवीर नम्बर १९७

(तफ़ाह) अर्थात् सेवसाहबुलफलाहा लिखताहै कि इस वृक्ष के पहलू में जंगली प्याज़ का बोना गुणकरे फिर कीड़े इसके फल और दरख़्तको न पहुंचेंगे जो इसके थाल्हों में मनुष्य या सुअर की विष्ठाछोड़ें तो फल अति दृढ़ और सुर्ख़ रंगका होगा और सुर्ख़ रंग करने के वास्ते इसके गिर्दागिर्द लालफूलों का लगाना भी अच्छा है और जो शराबकी तलछट और बकरीकी मेंगनियां इसकी जड़ में भरदें तो उसका फल कभी न गिरेगा शेखरईस का वचनहै कि इसका रसपीना पट्ठोंकीपीड़ाको गुणकरे और पांवकी रगकीपीड़ा वाले के पांव पर मलना और सम्पूर्ण प्रकार के विषों को लाभ दे मुख्य इसके कच्चों फलों का रस विषको बहुत ही गुणकरे यदि सेव को मुद्दततक अंजीरके पत्तोंमें रखछोड़ें न सड़ेगा इसकी सुगन्धका सूंघना ब्रह्माण्ड को बल दे और आंखों में तरावट देनेवाला और मुंह मीठा करता है ॥

तसवीर नम्बर १९८

(वनूब) यहबड़ा वृक्ष रूमके पहाड़ोंकी जड़ोंमें होताहै इसीसे

बिहीमें देखा जाताहै कि खानेवाला छुरीसे सपेदी निकाल कर खा सक्ताहै तो यह सबबल जो ईश्वरने उत्पन्न किये जिसतरह से ईश्वर की आज्ञाहै जिसके अर्थ नीचेलिखे हैं कि ईश्वर निकालने वालाहै दाने और गुठलीका पैदाकरनेवालाहै जीतेको मुरदेसे और मुरदेको जीतेसे इसस्थान मुरदेके अर्थ अण्डा और जीतेसे मुर्ग प्रयोजन है कि एक दूसरे से निकलते हैं निदान स्थावर दो प्रकार के हैं एक वृक्ष दूसरे बेल ईश्वर चाहे तो दोनों प्रकारोंका वर्णन निकटही किया जाताहै ॥

(पहला प्रकार वृक्षोंका वर्णन,)

शजर उस वृक्षको कहतेहैं जो खड़ा रहे और यह बड़े वृक्ष मानों बड़े जीवधारी हैं और जो पृथ्वी पर फैलीहुई होतीहैं वह बेलें हैं और यह छोटे २ जीवधारियों की तरह परहैं और बड़े २ वृक्ष जैसे साल, चिनार, (विलायती वृक्ष) सरू आदिमें फल नहीं होता इस का कारण यहीहै कि उनका मूल केवल दरख्तों में खर्च होता है और फलदार दरख्त इनसे छोटे होतेहैं और इनका मूल केवल वृक्षमेंही नहीं किन्तु उनके फूलने फलनेमें भी खर्चहोताहै स्थावरों में भी जीवधारियों के सदृश नरमादा का हाल पाया जाता है कि जो वृक्षोंमें नरहैं उनका थाला मादासे बड़ा होताहै और इस बात का प्रमाण कि हमने वृक्षों और जीवधारियों एकसा बताया है भोजन के कारण सेहै जिस तरह कि जीवधारियों के शरीर में घुसनेवाली होतीहै और उनको बल पराक्रम और सन्तानके होने की शक्ति पहुंचातीहै इसी तरह वृक्षोंको पानीका पहुंचानाहै अर्थात् जब वृक्षोंकी जड़में पानी छोड़तेहैं उसका सारांश हरएक रग और रेशे और अन्दरके स्थानोंपर पहुंचताहै और हर पत्ते और फलमें अपने बढ़ने का प्रभाव दिखलाताहै ईश्वर की माया देखिये जिस तरह से जीवधारियों को बाल और पर और चमड़ा आदि कृपा किया वृक्षोंको हरे २ पत्तोंके पहिनाव कृपा किये और जिस तरह पर जीवधारी अपने सींग और हाथ पैरोंसे अपना बचाव करते हैं

के साथ गाड़ें तो इसकाफल कभी न गिरेगा और मीठाहोगाइसकी लकड़ी का रतीला नामी मकड़ी के काटेहुये पर लेपकरना गुणकरे और अंड वृद्धि के रोगमें धूनीलेना बहुत उत्तम है इसके कोंपलकी धूनी सम्पूर्णप्रकारके कीड़ों मकोड़ोंके विषमें लाभकरे और दांतोंकी पीड़ापर लेपउत्तम है और ताज़ेपत्ते कच्ची अंजीर मिलाकर दीवाने कुत्ते के घावपर लगाना गुणकरे जो रुई में रखकर नेवले के काटे हुये घावपर रक्खे गुणकरेगा इसकी छालका रस शरीरकी दुर्गंधि दूरकरता है और दसम (कई जातिकी स्त्रियां अपने हाथों आदिपर नीला गोदना गुदाती हैं) कि नवीन चिह्नोंको दूरकरताहै हरेपत्ते अंजीरके दूधमें निचोड़नेसे दूध जम जाता है इब्नअब्बास ने कहा कि यह वह मेवा है कि जिसके लिये ईश्वरने क़ुरानमें सौगन्ध याद कीहै इन शब्दोंसे कि यह मेवा स्वर्गके फलोंके सदृश है एकसमय कोई मनुष्य हज़रत मुहम्मद साहबके साम्हने अंजीरलाया आपने कहा कि जो इसका अंजीर के बदले स्वर्गी फल रक्खा जाता तो वहुतही उचितथा बवासीर और नकरस (वहरोग जो पावँको उंग-लियों में होता है) के वास्ते गुण करे शेख़ ने लिखा है कि कच्ची अंजीर का लेप मस्सों और झाईं आदि पर लगाना गुणकरे और हररोज़ अभ्यास करके अंजीर खाना बदनके रंगको बदरंग करता है और ऐसी स्थिर मोटाई लाता है जो जल्दी दूर होजावे और जूयेंभी पैदा होते हैं सूखी या तर जैसी अंजीर खाये मिर्गी दूर होजाय इसका दूधलगाना फोड़ेको पकादेताहै और उपद्रवकारक मांसको दूर करता है जो इसका दूध गायके दूधमें मिलावें तो वह सब दहीकी तरह जमजाता है जो इसका दूध शहद में मिलाकर आंखमें लगावें तो आंखकी अँधेरीको गुणकरे और इसका रसपीना भूख दूरकरता है और मूत्ररोध का रोग पैदा करता है और बिच्छू के डंक को भी लाभकरे ज़करिया के पुत्र मुहम्मद का वचन है कि अंजीरके धुयेंसे मच्छड़ भागते हैं चित्र उसका यह है ॥

क़तरान (एकप्रकार का तेल)मिलताहै शेख़रईस लिखता है कि इसको ताजा २ घाव पर लगाना उत्तम है घावको बिगड़ने नहीं देता इसकी लकड़ी सिरके में घिसकर दांतोंकी पीड़ाको गुण करे इसकाबीज छातीके नफ़्सको गुण करताहै नफ़्स कफ की तरहपर एक वस्तु है जो हृदयमें जमा होती है इसका गोंद खांसी गुण करे इसी वृक्षसे गोंद निकलताहै जो नाखूनकी सपेदीके गुणकरने का प्रभाव रखताहै और पैरो की बिवांई पर इसका मलना गुण करे और बालखोरे पर मरहम बनाकर लगाने से बाल निकलते हैं और इसका धुआं पलको को मजबूत और नेत्र की ज्योति को बलवान् करताहै सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८३

(तूत) इसे खरतूत भी कहतेहैं और इसे लोग प्यारा रखतेहैं कि रेशम के कीडे इसी में पलतेहैं मीठे तूतको अरबवाले फरसाद कहतेहैं और खट्टेको नबाती साहबुलफलाहा का वचनहै कि इसके पहलूमें जंगली प्याजबोना तूतके वृक्षको बलकरे और फल में रस बहुत होताहै खट्टेतूतका पत्ता बिवाँई और गलेकीपीड़ा और पीनस का गुणकरे और इसका रस रतोला के दुखको गुणकरे शेखरईस कहतेहैं कि खट्टेतूतकीकुल्लीकरना दांतोकीपीड़ाको दूरकरताहै और कालातूत बिच्छूके घावपर रखना पीडा ठहराता है इसकी छाल शहदमें मिलाकर उबटनाकरना मैल साफ करताहै और फफोलों को दूर करता है जो काले तूतसे हाथ काले होजायँ तो सपेद तूत के मलकर धोनेसे मुख्य रूप आजावेगा सूरत यहहै ॥

तसबीर नम्बर १८०

(तेन) अर्थात् अंजीर साहबुलफलाहा लिखता हैकि इसके वृक्ष लगाने के पहले उचित है कि पहले इसके पौधे को नमक में रक्खें और फिर गोबर थाल्हे में डालकर दरख़्त जमादें तो इसका फल बहुत स्वादिष्ट होगा इसके दरख़्त के नीचे अंडेको गाड़ देना उत्तमहै फल बहुत होते हैं जो इसकी जड़ में कंकड़ेको नीले नमक

और फालिज (अर्द्धांग) को गुण करै और मुखकी दुर्गंधि को दूर करता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६४

(खरदा) अर्थात् वेद अंजीर इसका दाना सूखकर कलीमें ही चिटक जाता है इसका दाना फालिज और पहलूकी पीड़ा को गुण करै और इसके तेलमें मुर्गकी गर्दन डुबोना मुर्गको चुप करदेता है और फिर कभीवह बांग नहीं देता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६५

(खिलाफ) इसको फ़ारसीमें वेद कहतेहैं इसकी लकड़ी बहुत हलकी और इसके पत्ते जीम (फ़ारसी हरफ़ जो गोल होताहै) के सदृश होते हैं सेवन करनेपर मनका बलकारक़है और जिसमनुष्य को लू लगी हो उसके बिछोनेपर इसके पत्ते बिछाके उसमनुष्यको लिटावें आराम होजावेगा इसके पत्ते में यहगुणहै कि लहूकाबहना बन्दकरताहै कली इसकी सुगन्धित और ब्रह्मांडको बलकरती है और इसका अरक़ शिर पीड़ा मे गुण दायकहै और अंजीरकी राख सिरके में मिलाकर फोड़े फुंसीपर लगाना लाभकरै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर १६६

(खोख) फ़ारसी मे इसको शफ़तालू कहते हैं कहते है कि जो चाहैं कि इसकेरंग बहुत सुर्खहो तो यह तदबीरकरै कि जो शफ़तालू वृक्षमें अपनेआप फटगयाहो उसको लेकर शिंगरफ में लपेटैं और थोड़ी चरबी उसपर लगाकर बो दें तो उसका फल बहुतसुर्खहोगा जो उसकी गुठली पर कोई चीज खींच दें या कोई इबारत लिखदें और उसको बोदें तो उसके सब फलों में वह इबारत लिखी होगी जो उसके पौधेको उखाड़कर उसकी जड़ बहुत काटडालें और फिर बोदें तो उसके फलों में गुठली न होगी इसके पत्तोंका लेप नरकी दुर्गन्धि को दूर करताहै और नाभि पर लेप करने से पेट के कीड़े मरजाते है उसका फल वीर्य अधिक करता है जिस कपड़े में ज़र्द बहतहो उसकोइसके रसमें डु[illegible] यंगे सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर १६१

(जमनेर) यह भी अजीर के सदृश होता है और पत्ता तूत के सदृश वर्षमें तीन वेर फलता है इसका फल और फलदार दरख़्तों की तरह डालियोंपर नहीं होता किन्तु जड़ में फलता है जो इसका रस लेकर कईवार दसम और कंठमाला पर लगावें गुण करे और पीताभी डंक मारनेवाले जानवरोंके लिये गुणदायकहै सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर १६२

(जौज़) अर्थात् अखरोट यह वृक्ष ठढे देशोंमें होताहै साहबुल-फलाहाने लिखा है कि जो यह चाहे कि इसके फल की छाल हाथ से बेपरिश्रम दूरहोजाय तो पहले अख़रोटको पांचदिनतक लड़के के मूत्रमें भिगोकर फिर बो दे और उसपर राख छिड़कदे जब उस बीजसे वृक्ष उगेगा और अखरोट लगेगा छिलका हाथसे जल्दी अलग होजाया करेगा और जो अखरोट का छिलका दूर करके उसकी गिरीको बो दे तो उसके वृक्षके फलकीछाल काग़ज़की तरह पर महीन होगी जो बोनेके समय थोड़ा सा गुलाव उसकी जड़ में छोडदें तो बहुत फल लावेगा इसका पैवंद किसी वृक्ष से नहींहोता परन्तु पिस्ते के वृक्ष से देते हैं और उस पैवंद से अद्भुत स्वभाव का फल निकलता है कि जो उसका छिलका दूरकरके ऐसी देग में जोश दें जिसमें ज़ंग लगाहो तुरन्त साफ होजावे जो अखरोटको वर्षभर तक रक्खें तो न सड़ेगा और जिसको बावले कुत्तेनेकाटाहो उसको खिलाना गुणदायक है मार पीट की चोट में हरे अखरोट का लेप पीड़ाको थमाता है इसकी जडके सेवनसे शिर पीडा पैदा होती है जो मनुष्य इसको सदा खाता है उसको दस्त कीड़ोंके साथ आतेहैं और उसको जलाकर ख़िज़ाब करना सपेद बालोंको काला करदेता है और जो उसकी राख घावपर छिड़कें सूखजावे और तत्कालके फफोलेको भी गुणकरे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर १६३

(ख़ुसरोदार) शेख़रईस के विचार मे वीर्यके अधिक करनेवाला

कीड़े मकोड़ों के डंकपर लगावें तो बहुत गुण करे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २००

(दहमस्त) यह बहुत बड़ा वृक्ष है इसका मेवा सुर्ख़ रंग और पत्ता आसवृक्षके सदृश होता है यह वृक्ष पहाड़ों में पाया जाता है इसका बीज बंदकसा होता और उसपर काली छाल होती है साहबुलफ़लाहा का वचन है कि जो इस वृक्षकी किसी शाखा किसी धरती पर गिरावें वहां का राजा किसी न किसी दुःख में ज़रूर फँसेगा और वहांकी प्रजामें कोई दोष न आवे इसका पत्ता फालिज लक़वे और क़ूलंजको गुणकारी है जो इसके पत्तेको जौमें कुछ दिनों रक्खें तो फिर उस जौ को पीसकर झाईपर लगावें तो गुणदायक होगा उसकेबीजोंका उबटनालगाना मक्खियोंसे बचाताहै इसको शराबमें पीना बिच्छू के डंकको दूरकरता है इसके हरे दानों का मरहम विषैले जानवरोंके घावके दूरकरने में उत्तम है और इसका तेल भी शिर पीड़ा और कान की सनसनाहट में प्रभाव रखता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०१

(रुमां) अर्थात् अनार गरम धरतीके सिवाय और जगह नहीं होता साहबुलफ़लाहा लिखता है कि इस वृक्षके पास बोनेके समय आसका दरख़्त ज़रूर चाहिये इसके सबब से अनार उत्तम होता है जो दरख़्तके लगाने के समय थोड़ा सा शहद भी थाल्हेमें छोड़ें तो फल बहुत मीठा हो और सिरका छोड़ने से खट्टा जो यह चाहे कि विना इच्छा इसका फल डालसे अलग न हो तो अनारकी डालपर (मुतरकशासहरी) नामी पत्थरलटकाना चाहिये या कि शीशेकी कील उसकी जड़मेंठोंकदें जोयह [illegible] है [illegible] हो तो उसकीछोटी२ [illegible] और फिर उनशाखाओंको अ[illegible] दे फिर बोदें तो उसके अनारमें [illegible] जो [illegible] हो तो [illegible] खट्टे

तसवीर नम्बर १६७

(दारशीशाश्रां) यह कांटेदार दरख़्तहै जिस दरिया में घड़ियाल बहुतहो जो वहां इसवृक्षकी लकड़ी को छोड़दें तो घड़ियाल आदि उसके इर्द गिर्द इकट्ठे हों शेख़रईस ने लिखा है कि इसकी बत्ती नाकके अन्दर करना दुर्गन्धि दूरकरताहै इसकी कुल्लीकरना दांतो की पीड़ा को गुणदायक है और मूत्ररोध को उपयोगी जो इसकी धूनी स्त्रीको देवें तो बच्चेको बाहर निकाले सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर१६८

(दूरदार) अरब इसको शजरतुल अलबक़ अर्थात् मच्छड़ों का वृक्ष और हिन्दीमें गूलर कहतेहैं यह बड़ा वृक्षहै इसका मेवा अनार की तरह होताहै जिसमें एक ऐसे प्रकार की तरी बँधीहुई है कि जब उसको तोड़ते है तो उसमें मच्छड और भुनगा उड़ते हुये दिखाई देते हैं अजायबुल्मख़लूक़ात के निर्मापक ने लिखा है कि मैंने ख़ुद इस वृक्षका फल अपने हाथ से तोड़ा उसके अन्दर दाने रेहांकी तरह सपेद से थे और यह सपेदी वही कीड़े थे जिनकी गिनती न होसकी कई उन में से जीते हिलते और कई ऐसे थे कि अभी उनके पर न जमें थे इसकी कोपल बहुधा सागकी तरह पर पकाते हैं और इस पत्तेको सिरके में मिलाकर बरस (कोढ़) पर लगाना गुणकारी है और उपद्रव कारक घाव और टूटी हड्डीपर लगाना बहुत लाभदे सूरत यह है॥

तसवीरनम्बर१६६

(दलब) अर्थात् चिनार यह वृक्ष हर एक स्थावरसे लंबा और बड़ा होता है और पुराना होकर बीच से ख़ाली होजाता है इसके पत्तोंकी शकल मनुष्यके पंजेकी सी होती है शेख़रईस लिखताहै कि इसके पत्तोंको उबालकर मरहम की तरह आंख में लगाना नजले को गुणकरे और सिरकेमें कुल्लीकरना दांतोंकी पीड़ा को गुणकारी और जलेहुये जोड़पर भी लगाना लाभकरे इसके फलको जोज़ुलसर्द कहते हैं जो इसकी चरबीसे मिलाकर मरहम बनायें और

कीड़े मकोड़ों के डंकपर लगावें तो बहुत गुण करे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २००

(दहमरत) यह बहुत बड़ा वृक्ष है इसका मेवा सुर्ख़ रंग और पत्ता आसवृक्षके सदृश होता है यह वृक्ष पहाड़ों में पाया जाता है इसका बीज बंदकसा होता और उसपर काली छाल होती है साहबुलफलाहा का वचन है कि जो इस वृक्षकी किसी शाखा किसी धरती पर गिरावें वहां का राजा किसी न किसी दुःख में ज़रूर फँसेगा और वहांकी प्रजामें कोई दोष न आवे इसका पत्ता फालिज लक़वे और क़ूलंजको गुणकारी है जो इसके पत्तेको जौमें कुछ दिनों रक्खें तो फिर उस जौ को पीसकर झांईपर लगावें तो गुणदायक होगा उसकेबीजोंका उबटनालगाना मक्खियोंसे बचाताहै इसको शराबमें पीना बिच्छू के डंकको दूरकरता है इसके हरे दानों को मरहम विषैले जानवरोंके घावके दूरकरने में उत्तम है और इसका तेल भी शिर पीड़ा और कान की सनसनाहट में प्रभाव रखता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २०१

(रमां) अर्थात् अनार गरम धरतीके सिवाय और जगह नहीं होता साहबुलफलाहा लिखता है कि इस वृक्षके पास बोनेके समय आसका दरख़्त ज़रूर चाहिये इसके सबब से अनार उत्तम होता है जो दरख़्तके लगाने के समय थोड़ा सा शहद भी थालहेमें छोड़ें तो फल बहुत मीठा हो और सिरका छोड़ने से खट्टा जो यह चाहे कि विना इच्छा इसका फल डालसे अलग न हो तो अनारकी डालेपर (मुतरक्कशासहरी) नामी पत्थर लटकाना चाहिये या कि शीशेकी कील उसकी जड़में ठोंकदें जोयह चाहै कि इसकेदानेमें गुठली न हो तो उसकीछोटीरे डालियोंकोछीलकर उसका गूदा साफकरदें और फिर उनशाखाओंको आपसमेंमिलाके घाससेबांधदें और फिर बोदें तो उसके अनारमें गुठली न होगी जो यह चाहें कि सुर्ख़ अनार हो तो हस्मामकी राख पानी में घोलकर जड़में छोड़ना चाहिये खट्टे

अनारको मीठा करना इसउपाय से सम्भवित है कि उसके जड़की इधर उधरकी मट्टी अलग करके सुअरके नाखून और मनुष्यके मूत्र से भरदें फिर मिट्टी बराबर करदें ईश्वर चाहे तो खटाई दूर होगी और अनारकी फुनगियों की संख्यामे यह अद्भुत बातहै जो उसकी फुनगियां ताक़ अर्थात् विषमहों तो अनारके दाने भी विषम होंगे और जुफ़्त अर्थात् समहोने पर सम शेखरईसने लिखाहै कि इसके फल और डालियां दुःखदाई जानवरों के भगाने में तुरन्त प्रभाव दिखावें अनार के फूल सुर्ख या सपेद जो हों दांतों के हिलने को मजबूत करते हैं और रुधिर के निकलने को बन्द इब्नअब्बास ने अपने मुखसे कहाहै कि अनार बहिश्त के पानीके बूंदोंसे पैदाहुआ है और हजरत इब्नअब्बास ने कहा कि अनार का हरएक दाना मन को प्रकाशवान् करता है और शैतान के दुर्विचारों से निर्भय करताहै जिसदिन खाये उसदिन से चालीस दिन तक यह प्रभाव स्थिर रहता है साहबुलफलाहा अनार के हरा रखने के उपाय में लिखतेहैं कि अनारको हाथ से तोड़कर दोनो किनारों को गरम २ काली गोंद मे डुबोदे फिर ठण्ढे मकान मे लटकादें ईश्वर चाहे तो मुद्दततक अच्छा बनारहेगा और जो वृक्षपर लगा रहना चाहे तो घाससे मजबूत बांधकर उसके ऊपर चूना लगावे उसकी छालको अन्नकेढेरमे रखना कीडोंसे बचाताहै उसकी सूरत नीचेहै ॥

तसवीर नम्बर २०२

(जैतून) ज़ैतून इस गुणकारी वृक्ष के लिये इब्नअब्बास का वचनहै कि इस वृक्षका प्रकार उसके फल समेत ईश्वर ने क़ुरानमें यादकियाहै कि बलाभ दायकहै और यमांकेपुत्र हज़ीफ़ैने पैग़म्बर साहब से कहावत कहीहै कि हजरत कहतेथे कि जब आदम बीमार हुये और ईश्वर से शिकायत की तब जबरईल उसी वृक्ष को लेकर उतरे और हजरत आदम से कहा कि इसको लगाइये और इसका मेवाहो उसको धोकर उसका अरक पीजिये यह रोगनाशक वारि है और हर रोगकी औषधि है परन्तु मौतसे लाचारीहै इसके अद्भुत

गुण यहहैं कि मुद्दततक पानीकी आवश्यकता न रहे इसकीलकड़ी में धुआं बिलकुल नहींहोता इसकातेल भी अति गुणकारीहै यहवृक्ष अपनी गुठलीसे नहीं उगताहै और जो उगताहै तो गुण नहींकरता साहबुलफ़लाहा का लेखहै कि इसवृक्ष के नीचे बहुधा कंकड़ पत्थर इकट्ठे होते हैं और जब गर्द इनपर पहुंचती है तो इसका फल और जियादह अच्छा होताहै और फल भी स्वादिष्ट होताहै जो यहचाहै कि इसका फल हवा से न गिरे तो बाकले को इसकी जड़ में बोदें बलैनास ने लिखाहै कि जिसको बिच्छूकाटे इसकी जड़ों का गाढा बनावे पीड़ादूरहो शेख़ इसकीपत्ती के स्वभावमें लिखताहै कि इसके हरे पत्तोंको पानीमें उबालकर घरमें छिड़कदे तो मक्खियां उसघर से भागजायँगी और इसका मलना बदनकी खुश्कीको दूरकरताहै और इसके पत्तेका गुण तूतिया की भांतिहै और सिरके में पकाकर कुल्ली करना दांतोंकी पीड़ा को गुणदायकहै जो शहद में पकाकर लगावें तो कीड़ेखाये दांतों को लाभकरे और इसका गोंद बवासीर और हरघावको भी गुणदायक है इसके रसमें रोटी पकाकर चूहों को देना संखिये का स्वभाव रखता है शेख़रईस का वचन है कि इसकागोंद रतौंधी और आंखकी सपेदी दाद खाज और कीड़ेखाये दांतोंको गुणदायक है और जो कोई उसकोपीले तो विषको खींचले ज़ैतूनका मेवा उत्तम होताहै हज़रत पैग़म्बर साहबका वचनहै कि उत्तमोत्तम खानेकी रोटी सिरका और ज़ैतहै इसकेतेलमें रोटीखाना अच्छाहै पित्तेको साफ़ करताहै और कफको दूरकरताहै और रगों का बल दायक और सुस्तीको दूरकरने वालाहै और बदन के पट्ठों को मजबूत करता है इसका खानेवाला शीलवान् शुद्ध रूप और चिन्ता रहित रहताहै शेख़रईस के विचारमें जंगली ज़ैतून से कुल्ली करना शिर और दांतोंकी पीड़ा और लहू टपकने को गुणदायकहै इसको पीसकर सुरमा लगाना आंख की अन्धेरी को दूर करताहै और २ लोगोंका वचनहै कि इसकालेप पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा कोगुणकरे और आंखोंमें लगानेसे प्रकाश होताहै और यहजंगली

छेतून खाज दाद और शिरकीपीड़ा और दांतोंकीपीड़ा और फेफड़े के रोगको जो ईश्वर चाहेतो गुणकरे सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर २०३

(सरू) यह तुलाहुआ एकसा वृक्षहै जिसकी सिधाईसे प्यारों के डीलका दृष्टान्त देतेहैं गरमी और सरदी में हरा होताहै इसमें चमत्कार सरदीमे होताहै इसकी धूनीसे मच्छड़भागतेहैं जो इसके बुरादे को मैदे में छोड देवे तो समय तक मैदा ख़राब न होगा जो इसकी पत्तीको शरावमेंछोड़ें तो जिसका मूत्रवन्द होगयाहो उसके वास्ते लाभकरे और इसके पत्तोंको गुलावकी डालीके साथ सिरकें में उबालकर कुल्ली करना मुंहसाफ़ करताहै इसके हरे पत्तेको कूट कर घावपर लगाना गुणदायक है इसकी राख जलेहुये जोड़ पर छिड़कना लाभ करे शेख़रईस का वचन है कि इसकी कुल्ली करना दांतोकी पीड़ाको गुण दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०४

(सफरजल) बिहीका दरख़्त प्रसिद्धहै आवीके पुत्र यहयाका वचनहै कि उसके पिता ने हज़रत पैग़म्बर साहब के हाथ मे बिही देखी और उसकी ओर हजरत ने बिहीको दिखाकर कहा कि लो इसको यंहमनको शुद्ध करतीहै और यह भी कहावतहै कि हजरत ने बिहीतोड़कर अवोतालिब के पुत्र जाफरकोदेकर कहा कि इसके खाने से आदमीका रंगसाफ और सन्तान वाला होताहै शेख़रईस ने लिखाहै कि प्यास का दूर करने वाला और पक्काशय का वल कारकहै जो शरावके साथ गजककरें खुमार नहो और दूसरेलोगों का वचनहै यदि स्त्री बिही और अनार सर्वदाखावे उसकी सन्तान समझदार साहसी नेकहो और यह भी सदा के सेवन मे स्वभावहै कि दूधछातीमें बँधजाताहै जहां अंगूरहो जो वहा उसको रक्खें तो ख़राव होजावे साहबुलफलाहा उसके मुद्दत तक दुरुस्त रहने का उपाय यों लिखतेहैं कि इसको ऐसे घर में रक्खें कि जहां सिवाय इसके दूसरे प्रकारका मेवा न हो सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०५

(सुमाक़) यह पहाड़ी दरख़्त फैलाहुआ होताहै शेख़रईस का वचनहै कि इसका मेवा पक्वाशय का बलदायक और पित्त के नाश करने वालाहै और घाव और सूजनको दूर करताहै जो इसके मेवे का हुकना करें तो बवासीर के वास्ते गुणकरे और गोंद दांतों की पीड़ाको नष्टकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०६

(समरा) यह जंगली दरख़्तहै जिसका वर्णन बहुधा अरबकी काव्य में पायाजाता है इसके वृक्षसे लहू टपकताहै लोग कहतेहैं कि इसवृक्ष के फलको मासिक धर्म हुआहै बाकी कोईगुण मालूम नहीं है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०७

(सन्दरूस) यहप्रसिद्ध वृक्ष रूममेंहै इसका गोंद कुहरवाकी तरह पर होता है घास भी खींचता है परन्तु वैसी शकल नहीं है उसकी लकड़ीमें तेल होताहै उसका गुणयहहै कि लहूको बन्दकरे कुश्ती करनेवाले लोग बहुधा इसके तेलका सेवनकरतेहैं कि शरीर हलकाहो शेख़रईस का वचनहै कि बवासीरको सुखाताहै कि जब उसकी धूनी लेवें और दांतों की पीड़ा और उन्माद रोगको अच्छा करताहै और बीर्य बढ़ाने वाला भी है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०८

(शबाब) इस दरख़्तका पत्ता छोटी२ मछलियोंकीतरह उंगली के बराबर होता है और फल बन्दक़ की भांति काले रंग का और उसमें तीन२ दाने होतेहैं उसको माहूदाना और हब्बुलसलातीन अर्थात् जमालगोटा कहतेहैं शेख़रईस का वचनहै कि पांवकेउंग-लियोंकी पीड़ा और जोड़ोंकी पीड़ा रांघन और जलन्धरमें इसका मुसिल (विरेचन) देना गुणकारीहै इसके पत्तोंको मुर्ग के मांस में पकाकर खाना कुलंजको गुणदायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०९

(शाहबलूत) यह वृक्ष शाम की धरतीमें है इसका मेवा मीठा

सूरत में आधे जो के बराबर होता है और स्वाद में फन्दक की तरह होता है शेख़ रईस के विचार में इसका फल विष दूरकरने वालाहै और जिसकेशरीरसे लहूजारीहो उसेगुणकरे सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २१०

(संदल) यह प्रसिद्ध वृक्ष हिन्दुस्तान में सपेद और सुर्ख़दोरंग काहोताहै सपेद चंदन का बहुत कुछ गुणहै मुख्य करके गुलाब में पीसकर शिरकी पीड़ामें लगाना और उन्माद रोगको जो ज्वरसे हो जो सुर्ख़को भी शिरपीड़ामे लगावे लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २११

(मनोवर) यह वृक्ष पहले पहल रूम की धरती पर था इसकी लकड़ी से तेल निकलता है और चिराग़ की तरह पर जलती है और इसीसे क़तरान (वह तेल बदबूदार जो गधों की खाजपर मलते हैं परन्तु कोई चीड़का तेलभी कहते हैं) मिलता है इसतरह से कि इसका छिलका आगपर रक्खे उससे रस निकलेगा वही क़तरान है शेख़ रईस ने लिखा है कि इसकी लकडी की धूनी देना या उसकी राखछिड़कना डंक मारनेवाले जानवरों को दूर करता है मुख्य करके शराब के साथ और उसका यहभी वचन है यदि किसीसभाके आसपास इसकी राखछिडकदें वहां डंक मारने वाले जानवर न पहुचेंगे यदि कलकीद और कलकदीस (गन्धकके प्रकारमें वर्णनहै) को उसमेंबढ़ावे उत्तमतरहोगा इसकीछाल गरम पानीसे जलेहुये पर गुण दायकहै शेख़रईस लिखताहै कि इसकी छालको सिरकेमे उबालकर कुल्लीकरना दांतोंकी पीडाकोदूरकरता है और उसकेपत्ते घावको भरतेहैं जो नाभिके नीचे या अंडकोषमें पीड़ाहोतो उसकी कलियोंका मलहम बनाकर लगाना लाभदायकहै इसका मीठादाना पट्ठोंको उपयोगीहै और बिच्छूके विषकेदूर करने को उत्तमहै जो अजीर या अखरोटके साथखावेंतो वीर्य अधिक करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर२०४

(सुमाक़) यह पहाड़ी दरख़्त फैलाहुआ होताहै शेख़रईस का वचनहै कि इसका मेवा पक्काशय का बलदायक और पित्त के नाश करने वालाहै और घाव और सूजनको दूर करताहै जो इसके मेवे का हुकना करें तो बवासीर के वास्ते गुणकरे और गोंद दांतों की पीड़ाको नष्टकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०६

(समरा) यह जंगली दरख़्तहै जिसका वर्णन बहुधा अरबकी काव्य में पायाजाता है इसके वृक्षसे लहू टपकताहै लोग कहतेहैं कि इसवृक्ष के फलको मासिक धर्म हुआहै बाकी कोईगुण मालूम नहीं है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०७

(सन्दरूस) यहप्रसिद्ध वृक्ष रूममेंहै इसका गोंद कुहरवाकी तरह पर होता है घास भी खींचता है परन्तु वैसी शकल नहीं है उसकी लकड़ीमें तेल होताहै उसका गुणयहहै कि लहूको बन्दकरे कुश्ती करनेवाले लोग बहुधा इसके तेलका सेवनकरतेहैं कि शरीर हलकाहो शेख़रईस का वचनहै कि बवासीरको सुखाताहै कि जब उसकी धूनी लेवें और दांतों की पीड़ा और उन्माद रोगको अच्छा करताहै और बीर्य बढ़ाने वाला भी है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०८

(शबाब) इस दरख़्तका पत्ता छोटी२ मछलियोंकीतरह उंगली के बराबर होता है और फल बन्दक़ की भांति काले रंग का और उसमें तीन२ दाने होतेहैं उसको माहूदाना और हब्बुलसलातीन अर्थात् जमालगोटा कहतेहैं शेख़रईस का वचनहै कि पांवकेउंगलियोंकी पीड़ा और जोड़ोंकी पीड़ा रांघन और जलन्धरमें इसका मुसिल (विरेचन) देना गुणकारीहै इसके पत्तोंको मुर्ग़ के मांस में पकाकर खाना कुलंजको गुणदायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०६

(शाहबलूत) यह वृक्ष शाम की धरतीमें है इसका [illegible]

सूरत में आधे जौ के बराबर होता है और स्वाद में फन्दक की तरह होता है शेख़ रईस के विचार में इसका फल बिष दूरकरने वालाहै और जिसकेशरीरसे लहूजारीहो उसेगुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५१०

(संदल) यह प्रसिद्ध वृक्ष हिन्दुस्तान में सपेद और सुर्ख़दोरंग काहोताहै सपेद चदन का बहुत कुछ गुणहै मुख्य करके गुलाब में पीसकर शिरकी पीड़ामें लगाना और उन्माद रोगको जो ज्वरसे हो जो सुर्खको भी शिरपीड़ामे लगावे लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५११

(मनौबर) यह वृक्ष पहले पहल रूम की धरती पर था इसकी लकड़ी से तेल निकलता है और चिराग़ की तरह पर जलती है और इसी से क़तरान (वह तेल बदबूदार जो गधों की खाजपर मलते हैं परन्तु कोई चीड़का तेलभी कहते हैं) मिलता है इसतरह से कि इसका छिलका आगपर रक्खें उससे रस निकलेगा वही कतरान है शेख रईस ने लिखा है कि इसकी लकड़ी की धूनी देना या उसकी राखछिड़कना डंक मारनेवाले जानवरों को दूर करता है मुख्य करके शराब के साथ और उसका यहभी वचन है यदि किसीसभाके आसपास इसकी राखछिडकदें वहां डक मारने वाले जानवर न पहुचेंगे यदि कलकीद और कलक़दीस (गन्धकके प्रकारमें वर्णनहै) को उसमेंबढ़ावे उत्तमतरहोगा इसकीछाल गरम पानीसे जलेहुये पर गुण दायकहै शेखरईस लिखताहै कि इसकी छालको सिरकेमें उबालकर कुल्लीकरना दांतोंकी पीडाकोदूरकरता है और उसकेपत्ते घावको भरतेहैं जो नाभिके नीचे या अंडकोषमें पीड़ाहोतो उसकी कलियोंका मलहम बनाकर लगाना लाभदायकहै इसका मीठादाना पट्ठोंको उपयोगी है और बिच्छूके विषकेदूर करने को उत्तमहै जो अंजीर या अखरोटके साथखावेंतो वीर्य अधिक करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१२

(हरू) यह फलदार वृक्ष बलूतकी सदृश बड़ा हिन्दके पहाड़ों में बढ़ताहै इसके पत्ते सुर्खी लिये हैं जो उसको पकावें और साफ करके पियें तो खांसी दूरहोजायेगी और मुखकी पीड़ाकोभी लाभ दायक है इसका गोंदमक्केको लेजाते हैं यह लादन (सुगन्धदार औषधि) के अनुसार होताहै बहुधा स्त्रियां इसकी सुगन्धको पसन्द करतीहैं॥

तसवीर नम्बर २१३

(तरफा) अर्थात् गजका दरख़्त शेख़रईस का वचन है कि इसकी डाली सिरके में पीसकर लगाना तिल्लीकी पीड़ा को गुणकरे इसके पत्तों का काढ़ा दांतों की पीड़ामें कुल्ली करना बहुत लाभ करे जो शिरके बालोंमें मलें जूं दूरहोजायँ बाजे आजमाने वालोंका वचनहै कि इसकी धूनी लेनेसे नयेघाव सूखजातेहैं इसका मेवानेत्रकेरोगों में गुणदायक है और रतीला के घावपर गुणकरता है शेख़रईस के विचारमें जो इसके फलको जलाकर उसकी राखकोघावपर लगावें घाव तुरन्त सूखजावे सूरत यह है—

तसवीर नम्बर २१४

(अरअर) यह भी सरूके सदृश होता है इसको पहाड़ी सरू कहतेहैं इसकी धूनीसे विषैले जानवर भागतेहैं इसका मेवा रारूर की तरहपर होताहै इसकी लकड़ीको अबहल कहतेहैं शेख़ रईसका लेखहै कि इसकी लकड़ीको तेल और सिरके में उबाल कर बहिरे आदमीके कानमें छोड़ना कानका भारीपन दूरकरदे यदिस्त्री इसको योनि में रक्खे तो तुरन्त उसका गर्भ गिरपड़े और इसका शाफा और धूनी भी गर्भपात को आज़माई हुई है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१५

(अशेर) यहवृक्ष यमनमें होताहै फ़ारसीमें इसको कशीर कहते हैं बहुधा मूर्खता के कारण अरब के लोग इसका शकुन इस तरह पर लिया करते हैं कि जब उनको सफरका इरादा होताहै और किसी मित्रसे चोरीका सन्देह होताहै तो इस वृक्षकी एकडाली को

सूरत में आधे जौ के बराबर होता है और स्वाद में फन्दक की तरह होता है शेख़ रईस के विचार में इसका फल विप दूरकरने वालाहै और जिसकेशरीरसे लहूजारीहो उसेगुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २१०

(संदल) यह प्रसिद्ध वृक्ष हिन्दुस्तान मे सपेद और सुर्खदोरंग काहोताहै सपेद चदन का वहुत कुछ गुणहै मुख्य करके गुलाब में पीसकर शिरकी पीड़ामें लगाना और उन्माद रोगको जो ज्वरसे हो जो सुर्खको भी शिरपीड़ामे लगावे लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २११

(मनीबर) यह वृक्ष पहले पहल रूम की धरती पर था इसकी लकड़ी से तेल निकलता है और चिराग़ की तरह पर जलती है और इसी से कतरान (वह तेल वदवूदार जो गधो की खाजपर मलते हैं परन्तु कोई चीड़का तेलभी कहते हैं) मिलता है इसतरह से कि इसका छिलका आगपर रक्खे उससे रस निकलेगा वही क़तरान है शेख़ रईस ने लिखा है कि इसकी लकड़ी की धूनी देना या उसकी राखछिड़कना डंक मारनेवाले जानवरों को दूर करता है मुख्य करके शराब के साथ और उसका यहभी वचन है यदि किसीसभाके आसपास इसकी राखछिडके वहां डक मारने वाले जानवर न पहुचेंगे यदि कलकीद और कलकद्रीस (गन्धकके प्रकारमें वर्णनहै) को उसमेंवढ़ावे उत्तमतरहोगा इसकीछाल गरम पानीसे जलेहुये पर गुण दायकहै शेखरईस लिखताहै कि इसकी छालको सिरकेमें उवालकर कुल्लीकरना दांतोंकी पीडाकोदूरकरता है और उसकेपत्ते घावको भरतेहैं जो नाभिके नीचे या अंडकोषमें पीडाहोतो उसकी कलियोका मलहम बनाकर लगाना लाभदायकहै इसका मीठादाना पट्ठोंको उपयोगी है और विच्छूके विषकेदूर करने को उत्तमहै जो अजीर या अखरोटके साथखावेंतो वीर्य अधिक करे सूरत यहहै॥

स्वभाव रुधिर को चूसना नहीं है किन्तु यह रुधिर को गाढ़ा कर देताहै जो उसकी लकड़ीसे मलें तो रंगकी सफाई होतीहै इसका उबटन लगाना रंग ज़ियादह करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१८

(ऊद) यह हिन्द के दरियाओं में प्रकट होताहै इसकी जड़ को उखाड़कर पृथ्वीकेनीचे गाड़तेहैं जबवह सड़जातीहै तो उसकीछाल उतरके ऊद साफ निकल आताहै शेख़रईसका परीक्षाकी हुईहै कि इसको दांतोंसे कुचलना और चबाना दुर्गन्धिको दूर करताहै और मुख सुगन्धित करताहै ब्रह्माण्ड को गुण कारक और इन्द्रियों का बल कारक और मनके प्रसन्न करने वालाहै इसको शक्कर मिलाकर आगपर छोड़नेसे सुगन्धित धुआं उठताहै इसका मद्यमें यहस्वभाव है कि रीहके दर्दको गुण करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१९

(ग़बीरा) प्रसिद्ध वृक्षहै जो इसकी लकड़ी को समयतक जलमें छोड़देवें तो भी न सड़ेगी बहुधा हम्माम के दरवाज़ों पर इसकी लकड़ी गाड़ते हैं इसकी शाखा जहां पर रक्खें मक्खियोंका समूह होजाताहै इसकी सुगन्धि से स्त्रियों को बहुतकाम उपजता है और इतनी अधीर होजातीहैं कि सन्तोष नहीं होता लज्जा जातीरहती है शेख़रईस का वचनहै जो शराब पीने में इसकी गजक खावे तो शरावका नशा जल्दी न चढ़ेगा और मूत्रकी अधिकता और अती-सारको भी गुण दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २२०

(गरब)इसको फ़ारसीमें सपेदार कहतेहैं शेख़रईस का निश्चय है कि इसकी लकड़ी जलाकर सिरके में मिलाकर उबटना लगाना फुन्सियों मे गुणकरे इसकी छाल ख़िज़ाबमे एक उत्तमखण्डहै इस-की हरी२पत्तियां पीसकर घावपर लगाना अच्छाहै इसके सिवाय और शख़्स भी लिखतेहैं जो किसीके कण्ठमें जोंक चिमट गई हो तो उसको चाहिये कि इसक [illegible] कर रसनिकाले और पिये तो [illegible] इसके [illegible] रोगको गुणकारक है॥

दूसरी डालीसे लपेटकर चले जातेहैं और लौटकर उस लिपटीहुई डालीको जो उस सूरतसे डालीदर डाली पाया तो समझे कि मित्र ने हमारे धनमें चोरी नहीं की नहीं तो विपरीत होने पर दृढ शङ्का करलेतेहैं कि अवश्य मालमें चोरी हुईहै कहतेहैं कि यहवृक्ष विषैला होताहै कई इसके प्रकार ऐसे भी होतेहैं कि जो कोई इसकी छाया में जा बैठे तो मृत्यु आजावे इसकी भस्म दाद और शिर गंज पर मलना गुण दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर२१६

(अफ़स) फ़ारसीमें इसको माजू कहतेहैं पहाड़पर होताहै कहते है कि इस वृक्षमें एकवर्ष माजू फलताहै और एकवर्ष बलूत जाख़ज का लेखहै कि मैंने माजू और बलूत को एक ही शाखा में लटका पाया सो जो यह बात ठीकहै तो इस वृक्षके लिये हमयह कहसक्ते हैं कि जिसतरह पशुओं में खरगोश होताहै कि यहभीएकवर्ष नर होताहै और एकवर्ष मादा इसी तरह उसका भी हालहै और जिस दरख़्तमें माजू और बलूत दोनों इकट्ठेहों तो उसका दृष्टान्त खो से अर्थात् वृहन्नल की तरह परहै शेख रईस के विचार में खाज और अधिक मांसको दूर करताहै इसका ख़िज़ाब भी लगाते हैं जो इस का गूदा सिरके में पीसकर लगावे लहू का बहना बन्द करता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २१७

(उन्नाब) यह प्रसिद्धवृक्षहै जरजाकीधरती परहोताहै इसकेपत्तों का मरहम लगाना नेत्र पीडा को गुण करे कहतेहैं कि यह वृक्ष लहू चूसता है,यहांतक कि जो कोई हाथ इसके दरख़्तपर रखदे तो कुछ देरमें उस हाथका लहू कुछ चूस लेता है इसका मेवा लहूका बहना बन्द करताहै जो यहचाहे कि दरख़्तको इसजगहसे उखाड़ कर दूसरे शहरमें ले जायँ तो हररोज वह पशु जिस पर लादके लेजायँ बदला करें क्योंकि जो एक ही चोपाया रहेगा तो उसकी तरी सूख जावेगी और वह मरजायेगा जालीनूसका लेखहै,इसका

इसका वृक्ष अनारकी तरहपर होताहै इसके पत्तोंके बीच दुशाख़ा होताहै जिसकी हरएकडाली उंगलियों के बराबर होतीहै उसपर मिरचका गुच्छा होताहै जाली नुसख़े लिखीहै कि जो पहले पहल दरख़्त से फल निकलता है वह मिरच है फिर उसका दाना एक होताहै जिसकानाम दारफिलफिल अर्थात् पीपल कहते हैं और यहदाना डंकमारनेवाले जानवरों के विषकेलिये बहुत गुणकारीहै और वीर्यके अधिक करनेवाला भीहै शेखरईस लिखताहै जो कच लोनके साथ मिरच का लेपकरे तो झांईकादाग दूरहोजावेगा और काली गोंदमें मिलाकर लगाना कंठमालाको गुणकरेबहुधायह भी कहतेहैं कि मूत्ररोध और आंखकी धुन्धको दूरकरनेवालाहै जो स्त्री भोगके उपरान्त मिरचके चूर्णको महीन कपड़े में पोटली बांधकर भगमें रक्खे तो फिर गर्भ न रहेगा सूरत यहहै ॥

(फन्दक़) जो इस प्रसिद्ध लकड़ी से बिच्छूके चारोंतरफ एक घेराखींचदें तो बिच्छू उस घेरेसे बाहर न जासकेगा बुकरा तह-कीमका लेखहै कि यह मेवा ब्रह्माण्डका बलकर्त्ताहै और शेखरईस के निकट जो इसकातेल सलाईमें लेकर आंखमें लगायें तो आंखकी सब्ज़ी दूरहोगी और इसको तितलीकी पत्ती और अजीरकी लकड़ी के साथ पीसकर लगायें तो डंकमारनेवाले जानवरोंके लिये अति गुणकारीहै जो कोई इसकी लकड़ी को पासरक्खे वह बिच्छू के दुःखसे बचारहेगा इसके रसको बालखोरे पर लगाना गुणका-रीहै बालनिकल आते हैं जो कूटछानकर शहद के साथपिये तो खांसीको नाशकरे इसकी गंज़क करनेसे मस्तीजाती रहतीहै और समझ और बुद्धिबढ़तीहै जो इसको जलाकर राखबनावें और तेल में मिलाकर [illegible] तरहपर लगावें तो तुरंत लाभहो [illegible] है [illegible]

(८) ९ यहदरख़्त

इसकीगोंदसे कुचलोनबनताहै और आंखोंके धुंधकोगुणकारक है

तसवीर नम्बर ३३१

(फादानिया) अर्थात् ऊद सलीवका वृक्ष यहदरख्त रूमऔर हिन्दमें होताहै शेखरईसने लिखाहै कि जो इसकी लकड़ीकोबदन के काले दागोंपर लेपकरें तो अवश्य गुण करेगाइसको यन्त्रबना कर गले में लटकावें तो पांवकीरग और मिरगीकी बीमारियोंको गुणकरे जो इसका मेवा पन्द्रह दाने शराबकेसाथ गजककरें तो दीवाना पन और मिरगी को गुण करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३२

(फिस्तुक) अर्थात् पिस्ता इसका वृक्ष बादाम औरअंगर की मिट्टी से पैदा होताहै इसकी लकड़ी में चिकनाईभी होतीहै शेख-रईसका लेखहै कि इसका डंक मारनेवाले जानवरों के विष पर लेपकरना गुणदायक है और इनके सिवायऔर आजमानेवालों ने लिखाहै कि बलकारक और२ कामदेवके अधिक करनेवालाहै और पित्तकी खांसी को भी लाभकरे इसके तेल के सेवन से आंख की जर्दी दूर होजातीहै और इसकी धूनीसे कपड़े की जूंयेंमरजाती हैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३३

(फिलफिल) अर्थात् कालीमिरचयह वृक्ष मलेबादकी धरती पर होताहै बड़ा भारीहै इसके थालेके गिर्दा गिर्द पानी भरा रह-ताहै जब हवा चलतीहै उसके वेगसे मिरचें झड़ती हैं और पानी पर तैरती फिरतीहैं इसीसे मिरचका छिलका उखड़ा और चिटका हुआ होताहै यह वृक्ष किसीकी थातीमें नहींहै अपने आप गरमी सरदी में फलदार फला रहताहै मिरचें बाली की तरह गुच्छे २ होतीहैं जब सूर्यकी तेजीकावक्त आताहै पत्तियां चारोंतरफसे गुच्छों पर छाया करतीहैं और कुछ इसरीति से झुकीहुई होतीहैं कि सूर्य की गरमी उनपर असर नहींकरती और जबसूर्यकीगरमी कम हो-जातीहै तो पत्तियां उन गुच्छों से हटजातीहैं कि उनकी हवालगे

यताहै यहनिहरबिंदके देशमें होता है और जोनरकुलनिहरबंदना-मी पहाड़के पीछे नहीं होता उसमें चिरायते की तरह गुण नहीं होताहै बरनसब नरकुलकी तरह है शेखरईस का बचनहै कि वृथा रुधिरको नष्टकर्त्ता और खांसीको गुणदायक है जो इसका धुआं कंठमें पहुंचावें खांसी को गुणकरे और किरक्सके बीज अर्थात् विलायती अजमोद और शहदके साथ जलंधर को गुणदायक हैं कोई नरकुलनेजा हिन्दुस्तानमें होताहैइसीकानेजाबनातेहैंकहते हैं वेह अपनेआप जल उठताहै अर्थात् जब पवन प्रचंडहुई और एक दूसरेसे भिड़गये तो तुरन्त आग लगउठती है उसकी राखसे तब्र शीर हाथआताहै यह वंशलोचन उन्माद आंखकी सूजन को गुण दायक और मनका बलकारक और ज्वर को लाभदायक है कोई इनमेंसे प्रसिद्ध नरकुलहै जिससे एकबेर सांपको मारें तो फिर वह नहीं हिलसक्ता और जो दुबारा मारें तो फिर सांपअच्छा होजावे जो इसके जड़ और पत्ते जहां कांटा गड़कर रहगया हो वहां पर लगावें तो वह कांटा तुरन्त निकल आवे और ऋतुके रुधिर औ मूत्रको जारीकरता है जो भोजनमें नमक जियादह होगया हो तो नरकुल को पीसकर देग में डालदें नमक उसका कम होजायेगा इसकी जड़में खींचनेकी शक्तिहै जो इसको कूटें और जिस जोड़ में लोहा घुसगया हो वहां पर लगावें निकल आवेगा सूरत यह है॥

तसवीर-नम्बर २९८

(काफ़ूर) यहबडा वृक्षहै एकबड़े समूहको इसकी छायामें आ-राम मिलताहै शेरबबर इसवृक्षसे प्रीतिरखताहै इसलिये मनुष्य वहां पहुंच नहीं सक्ता इसकी लकड़ी सपेद हलकी और नरमहो-तीहै उसके अंदर कपूर जमाहोताहै और इसका गोंदभी कपूरहो-ताहै और वृक्षकी जड़से निकलता है मुहम्मद ज़करियाने लिखाहै कि कपूर इसवृक्षका गूदाहोताहै तो उस वृक्षमें छिद्रकरके कपूर निकालतेहैं शेखरईस कहताहै कि कपूर का सर्वदासेवनवालों को बहुत जल्दी सपेद कर्त्ताहै और गर्मीकी शिरपीड़ाको गुणदायक है

बिलकुल मिरचके वृक्षके सदृश होताहै शेखरईसका बचन है कि इसकी लकड़ीका खिजाब बनाना और बालमें सेवन करना बालों को मजबूत करताहै जो इसकी जड़ सिरकेमें उबालकर पियें तिल्ली की पीड़ाको दूरकरतीहै इसके जिस फलसे रसौत बनाते हैं जो उसको पीसकर झाईंपर उबटनाकरें अत्यन्त गुणकारीहै और बालोंको सुर्ख रंगकरताहै जिसके दांतोंकी जड़ों से लहू निकलता हो जो इसका सेवनकरे तुरन्त बन्द होजावे और आंखोंकी पीड़ा और सपेदीको दूरकरदेताहै और आंखकी खाज और बवासीर केलिये गुणदायकहै जिसको बावला कुत्ता काटे जो इसका लेपकरे वो लाभ करे सूरत यह है॥

(करनफल लौंग) यह दरख्त हिन्दुस्तान के कईदीपोंमें होता है इसका फल चमेली के रंगका होताहै हां इतनाअंतर होताहै कि इसका स्वादतेज होताहै यहांके जज़ीरे वाले लोगको यूं नहींतोड़तेहैं परजब पकजावे और यह बात इसलिये करतेहैं कि उसदीप के सिवाय दूसरीजगहवाले उसको नलेसकें और यह दरख्तजम नसके शेखरईसका निश्चयहै कि इसका सेवन मुखको सुगंधित करता और नेत्रों की ज्योति बढ़ाताहै और बहुतों ने लिखा है कि मूर्च्छाको दूरकरताहै और मनका बल कारक है सूरत यहहै॥

तसवीरनम्बर २००

(क़सब) अर्थात् नरकुल इस प्रसिद्ध वृक्ष के कई प्रकार होते हैं बाजा नरकुल शकरी होताहै परजो मिसरकी धरतीमें उत्पन्न होताहै वह सबसे उत्तम है खांसी और हृदय पीडाको गुणकरे शेखरईस कहता है कि इसका गोंद नेत्र की ज्योति को अधिक कर्त्ताहै और इसकी छाल और जडका लगाना बिल्लोरेकी बीमारीमें गुणदायक है जो इसकाछिल्का कानमें पडजाय तो मनुष्य बहरा होजावे और फिरवह कानसे बाहर नहीं निकलसकाहै और नरकुलका लेपबिच्छूके घावपर गुणकारीहै इसका कोई प्रकारचिर

प्रकार कुवारीलड़की के मेंहदी लगीहुई उंगलियों की तरह बहुत लाल और लम्बेदाना का अंगूरहोता है बहुधा उसके गुच्छे एक२ गज़तक के होते हैं, और एकप्रकार डुबाली अर्थात् खरबूके सदृश होताहै कालेरंग का इसके गुच्छे मनुष्य के शिर की तरह गोल२ लटके होते हैं शेखरईस लिखताहै कि जो इसकोपानीके धोनेंबिना तुरन्त तोड़कर खाये तो उदर में गुड़गुड़ाहट और अफरा होता है और शेख के सिवाय और लोगों ने लिखा है कि यह वीर्य अधिक करताहै और इसका सेवन शरीर को पुष्ट करताहै अंगूर को जला कर राख उसकी सर्पके विषमें गुणदायीहै और इसकीराख सिर के में बवासीर पर लगाना उत्तम औषधि है इसकी मद्य की उत्पत्ति ज़मशेद बादशाह के समय में बताते हैं वर्णन है कि वह बादशाह शिकार खेलताहुआ किसी पर्वत के नीचे पहुंचा वहां अंगूरकेवृक्ष में गुच्छेलटके हुये पाये आश्चर्य पूर्वक कहा कि हमने इसपर्वतमें बिपका वृक्षसुनाथा प्रायः वही वृक्षहै सो इनगुच्छोंको रक्षापूर्वक रखना चाहिये और किसी मारडालने के योग्य मनुष्य को खिला कर इसकी परीक्षा लेनी चाहिये सो उनकी आज्ञानुकूल लोगों ने अंगूर के गुच्छों को धोकर उसका रस बर्त्तन में इकट्ठा करलिया यहांतक कि अपने देश में पहुंचा और वहां पहुंचकर एक अपराधी को वह रस पिलाया अपराधी कि उसमें विषके गुण का हाल सुनचुका था देख कर अति शोकवान् हुआ और बड़ी कठोरता से निराश होकर उसे पिया सब ने निश्चय किया कि यह विषही है थोड़ीदेर के पीछेनशे से गरमी की मूर्च्छा आगई प्रसन्नता जो हुई तो नाचनेलगा लोगों ने समझा कि यहमौत का सामा- न है थोड़ासा और रसपिया दिया यहुतपीने से उसबेचारे को नींद आगई उसे सोता देखकर लोगोंने बिचार किया कि तु निश्चय होगया कि विषने असर किया और यह मरगया जब वह जागा तो उसने और भी मांगकर पिया और जो प्रसन्नता उसे प्राप्त हुई थी वह लोगों से वर्णन की जब यह वृत्तान्त बादशाह ने सुना और

इसका खाना ब्रह्मचर्यका बलकारक और वीर्यके नष्टकरनेवालाहै॥

तसवीर नम्बर १२६

(करम) अर्थात् अंगूर इसको फ़ारसी भाषा में रज़ कहते हैं साहबुलफ़लाहा कहताहै कि जब इसके वृक्षको लगावें पहले वर्ष बहुत गुच्छे निकलैंगे जो यहचाहे कि यह दरख़्त बहुत गुणदायक और उसकी जड़ मज़बूत और जल्दी बड़ी होजावे तो उसकेदरख़्त को ख़ना न लेनाचाहिये और दे (अर्थात् जो माघके निकट है) कि पहली तारीखमें जमाना चाहिये और उसके थालमें गोबरडालना चाहिये और बलूत और अरगवां भीछोड़देवें और कुछ बाकलाभी जोयहसबशर्तेंकीजावेंतोमनकी कामना पूर्णहोजोउसकेपोधेको बीचमें चीरें और उसमेंसक़मूनियाएकघासकादूधयनानी प्रसिद्धऔषधि रखदें तो उसकाफल मुसिलहोगा अर्थात् जो उसकाफलखावेगा उसको दस्त अतीसार होगा यह भी लिखाहै कि सपेद सुर्ख़ काले अंगूर के पोधोंकोचीरकर एकदूसरे में चिपकाकर लगावें तो तीनों पोधे एकदरख़्त होजावेंगे और मेवा उनका सुर्ख़ सपेद कालातीन रंग का प्रकट होगा जो सपेद अंगूर के नीचे की धरती खोदकर उसमें नमकछोड़ें तो उस अंगूर का रंग कालाहोगा जो यह चाहे कि अंगूर के दरख़्त में कीड़े न लगें तो एकलोहे के हथियार से जिसमें मुर्ग़ या पालू मुर्ग़ का लहूलगाहो उसमें चीरकर गोबरकी धूनी उसवृक्ष को दे सरदी से रक्षित रहेगा जो पानी कि अंगूरके वृक्षसे टपकता है उसको दम्मुलअकरम कहते हैं अर्थात् अंगूरके आंसू जो उसको इकट्ठा करके मद्यपीनेवाले को पिलावें तो उसकी आदत नशा पीने की छूटजायेगी शेखरईस ने लिखा है कि इसके सेवन से खाज और दाद दूरहोती है और जिसमनुष्य को गरमी से शिरपीड़ाहो इसकेपत्ते को पीसकर लेपकरें तुरन्त दूरहोजावेगा और उसकेपत्ते चबाने से गलीहुई दांतो की जड़ें अच्छी होजातीहैं इसकाफल कईप्रकार का होताहै सब से उत्तम बेलकी आंखसा है जिसकादाना अखरोटकी तरह काला और बड़ा होताहै और एक

में छोड़कर अमरूदों पर बांध, जबतक वह थैली बँधीरहेगी वह फल न गिरेगा इसका फल ब्रह्माण्ड का बल करताहै और पकाशय के बल करने में अति गुण रखता है शेखरईस का वचन है कि प्यास बुझाता है और पित्त दूर करता है परन्तु कूलंज (पहलूकीपीड़ा) पैदा करता है साहबुलफलाहा कहता है कि अमरूद को जफ़्त (सनोबरकीकालीगोंद) में भिगोकर रखना मुद्दतों तक उत्तम रखताहै परन्तु अमरूद के मुख पर गोंद लगाकर मट्टीके वर्त्तन में रक्खे और उस वर्त्तन के मुखपर भी गोंद लगादें तो मुद्दतों तक अमरूद न बिगड़ेगा सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २५

(लाइया) यहदरख़्त ज़हरदार समझा जाताहै पहाड़ों के किनारे में होताहै इसके पत्तों को कूट छानकर पीना अतीसार को करता है इसकी कली में बड़ी सुगन्ध होतीहै शहदकी मक्खी इसको बड़ी रुचि से खाती है परन्तु इसका शहद हानि कर होताहै जो उसकी लकड़ी किसी होज़ या तालाब आदि में छोड़ दे तो उस तालाबकी सारी मछलियां मुरदे की तरह पर पानीमें तैरनेलगेंगी उससमय सुगमता पूर्वक शिकार होसक्ती है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६

(लुबान) यह दरख़्त कांटेदार होता है दोगज़ के सिवाय ऊंचा नहीं होताहै बहुधा पहाड़ों में उगता है और उमा के दरख़्त की तरह होताहै इसका पत्ता आसके पत्तेकी तरह होता है इसकीगोंद को कुन्दर कहते हैं इसके लेने की यहरीति है कि इसके नीचे कई गढ़े शराब के वर्त्तन की तरह खोदते हैं उसी में यह बहकर कुन्दर इकट्ठा होजाता है जो मनुष्य इसको सर्वदा दांतोंसे कुचलकर चूसा करे समझ बढ़ती है स्मरण अधिक होता है भूलीहुईबात यादआजाती है इसके सिवाय घावके भरने को गुणदायक है यदि किसी को दाद की बीमारी हो तो कुन्दर को बत्तखकी चरबीमें मिलाकर

उसको खेलकूद भी देखा तो आप भी थोड़ासा रसपिया और उस के स्वादसे आनन्दवान हुआ निदान आज्ञा दी कि बादशाही बाग़ में इसके दरख़्त लगाये जावें कई बुद्धिमानों ने कहाहै कि मद्य का पीना औषधिकी रीतिपर उचितहै सो इसी आज्ञापर कहते हैं कि मद्य कामदेवके जगानेवाली और रतौंधी और नानाप्रकारके विषों के दूर करने वाली बल कारक और वीर्य्यके बढ़ाने वालीहै और इसका पीना मनको उपद्रव कारक दोषों से साफ करता है मुख्य करके जोड़ोंकी पीड़ाको अतिगुण दायकहै परन्तु औषधिकी रीति पर सेवनकी जावे नहीं तो अधिकता में बहुत हानिहै भूलकापनी और बुद्धिकी न्यूनता होतीहै मुहगंदा होजाताहै कामदेव का वेग कम होजाताहै आंखों से ज्योति जाती रहतीहै बहुधा सक्ता और मिर्गी और फ़ालिज से पड़कर मर जाता है इसका सिरका हदीस अर्थात् पैग़म्बर साहबके वचनानुकूल उत्तमोत्तम वस्तुहै जिसजोड़ से लहू बहे उसपर इसके सिरके का लगाना लहू बन्द करता है और दाद खाज और आगसे जले हुयेको भी गुण दायकहै इसकी कुल्ली करना दांतोंके हिलनेको मज़बूत करताहै जो किसीके कण्ठमें जोंक रहगई हो सिरका पीनेसे तुरन्त अलग होजायेगी और बल करनेवाला और कामदेव के बढ़ाने वाला भी है जलन्धर को नष्ट करताहै और कुटेहुये जेड़को लाभ करे और सूखे अंगूरों के लिये उन्नीके पुत्र हजरत मुहम्मद मुरतफाने कहावत कहीहै कि सिरका सब प्रकारके खानेसे उत्तमहै कि पट्ठोंका दृढ़करने वाला और क्रोध का दूर करने वालाहै और ईश्वर को प्रसन्न करताहै और मुखकी दुर्गन्धिको दूरकरताहै कफका नाशकरे रंगरूप साफहो बुद्धिमानों का वचनहै कि अंगूर पकाशयका बलकारक है बीजों समेत दस्तों को रोकता और बिना बीजोंके दस्त लाताहै॥

तसवीर नम्बर २३०

(कमसरी) अर्थात अमरूद साहबुल फ़लाहा कहताहै कि जो इसकेमेवेको चाहै कि दरख़्तसे पृथ्वी पर न गिरे तो नमककी थैली

थोड़ा संकट हुआ यद्यपि उसके दूरकरने में बहुत से उपाय किये और बहुत से इस फन के जानने वाले चतुर और मंत्र जानने वाले बुलवाये परन्तु कोई उस अज़दहे पर प्रबल न हुआ एकदिन एक हथवालोंके मंत्रजानने वाला आया उससे विनय की और सर्प्प दिखाया देखतेही उसके वह मनुष्य कांपउठा अज़दहेने लपककर उसको मारडाला जो यह ख़बर मशहूर हुई तो सबने हिम्मतहारी जब कोई उपाय दिखाई न दिया तो अबूज़ाफ़र ने बाग़ का रहना छोड़दिया एकदिन एक मनुष्य उनके पासआया और अज़दहे की रहने की जगह पूछी उन्होंने सब पिछला हाल कहसुनाया योगी ने कहा कि वह तो हमारा भाई था हम उसीका बदला लेने को आये हैं कुछ श्रमकरके बतादीजिये फिर हम समझ लेंगे निदान उसके कहने के अनुसार अबूज़ाफ़र उसके साथ होलिया बाग़ में लेजाकर दिखलाया और आप छतपरजाबैठा उस जादूगरने कोई तेल निकालकर पहले अपने शरीरमें लगाया फिर अज़दहेकीओर झपटा और दूसरे प्रकारका तेल निकालकर धुवांकरनाशुरूकिया सो वह बिषैला सांप प्रकटहुआ और इस मनुष्यको देखकरभागा इसने बढ़कर पकड़ही लिया तो उस सर्प्पने उलटकर उसके हाथ पर फन मारा और उस बेचारे को मारडाला यह हाल देख कर अबूज़ाफ़र की आशा और भी टूटगई और हरओरसे निराश होकर घरबैठा एकदिन दूसरा मनुष्य आया और जिसतरह पहलेमनुष्य ने आकर पूछाथा उसने भी वही वचनकहे अबूजाफ़रने उत्तरदिया कि अब मेरा यहसाहस नहीं कि तेरे भी लहू का दाग दामन पर लगाऊं उसने उत्तरदिया कि वह दोनों बेचारे मेरेभाई थे भाइयों की प्रीतिसे लाचारहूं जब उसने बहुत हुज्जतकी तो अबूज़ाफ़र ने उसको भी बाग़में पहुंचादिया इसनेभी वहां पहुंच कर उसी पूर्व रीतिसे तेल लगाकर धुवांकरना शुरूकिया और उधरसे सर्प्पप्र-कटहुआ और साथही पिछले पांव भागनेलगा जादूगरने दौड़कर उसका शिर पकड़लिया और तुरन्त अपने पिटारे में रखलिया

लेपकरे अवश्य नाशहोगी और नकसीर केलहूके बहनेको बन्दकरदेती है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २३३

(लौज़) यह वृक्ष प्रसिद्ध है बादाम को कहते हैं इसके बोने की रीति साहबुलफलाहा बया उत्तम लिखता है कि पहले बादाम को शहद में भिगोना चाहिये कि उसकाफलमीठा हो जो यह चाहे कि बादाम का छिलका ऐसा मुलायम रहे कि हाथ से बे परिश्रम दूर होजावे तो वही उपाय जो अखरोटके वास्ते बतादियागयाहै करना चाहिये इसके सिवाय यह भी एक उपाय है कि बादाम को लड़के या कुंवारी लड़की के मूत्र मे बराबर पांचदिन तक भिगोकर बो दे इसका भी स्वभाव वही है अर्थात् बादाम को कागज़ी छिलकेका बनादेता है मीठा बादाम खांसी को गुण करे और इसका खाना पुष्टता भी लाताहै परन्तु मुख्य अजीर के साथ हमेशा खायाजावे और बावले कुत्ते के ज़हर को भी लाभ करे शेख़रईश के विचार में भी मीठा बादाम पुष्टता लाता है और आंखों को बलदायक और कूलंज को नाश करता है और कड़ये बादामकी जड पकाकर दाद और कूलंज पर मलना गुणदायक है जो शहद से मिलाकर उबटना करें तो छोटी २ फुन्सियां जो बहुधा शरीर में प्रकट होती हैं दूर होजायें गी जो मनुष्य निहार मुंह बादाम के सातदाने खाया करे और शराब पीनेके पहले भी पांचदाने खालिया करे तो बहुत बेहोशी न होगी और खाजको लाभ दायक है आगे ईश्वर जाने स्वरूप यह है॥

तसवीर नम्बर २३४

(लीमूं) (नीबू) यह वृक्ष गर्म्म देशोमे पैदाहोताहै इसका गुण और खटाई तुरंज की तरह पर होती है सांपके दूर करने मे अति उत्तम है अब्दुल्ला के पुत्र अबूज़फर को कहावतहै कि वह जहांरहते थे उसी मकान की दीवार के नीचे एक बाग भी हराभरा तय्यार था संयोग से उसबाग में एक अजदहा कालीमुश्क के सदृश लंबा

रक्खी उसके फलका स्वाद कडुवा निकला उसकागुण बुद्धिमानों के विचारमें कि पत्ता उसका दांतों की पीड़ा को नष्टकरताहै और जिसके दांत खट्टे होगये हों इसके सेवन से तेजहोसक्ते हैं शेखुल-रईशका वचनहै किसूखी खुबानीसे ज्वर दूर होताहै औरहरेकेखाने से ज्वर उत्पन्न होताहै क्यों कि उसमें दुर्गन्ध होतीहै एक दिन एक बुद्धिमानकाश्तकार की ओर गया कि वह खुबानीका वृक्षबोताथा हकीमने उससे कहा कि क्या करताहै उसनेकहा कि मैं वह काम करताहूंकि जिससे हम और तुम दोनों लाभ उठावें अर्थात् हम इसकामेवा खायेंगे और स्वाद उठायेंगे और जब इसको खाकेमा-देपड़ेंगे तो तुम हमारी चिकित्सा से लाभ उठाओगे इसके बीजों का तेलबवासीर को बहुत गुणकरै और इसका कडुआबीज बातके दूरकरनेमेंबहुत गुण रखताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २३२

(मौज़) अर्थात् केल यहवृक्ष गरम जमीन पर बहुतसे द्वीपों में हुआ करताहै इसके पत्ते चोखुंटे खजूर के पत्तों केसदृश होते हैं इस वृक्षकी लम्बाई मनुष्यके डोल के बराबर होतीहै इसकी जड़ों से फूटकर और भी नन्ही २ शाखा सदा निकलतीहैं यहवृक्ष एक बेर फलताहै और फिर जड़वाली छोटी २ शाखाओं को पालते हैं और वह भी एकबेर फललाया करतीहैं इसके मेवेका स्वाद अंगूर की तरह होताहै शेखरईस के विचारमें इसके सेवनसे मूत्ररोधदूर होजाताहै औवीर्यका बलकारकभी है परन्तुजो अधिकतासे सेवन कियाजावे तो सुद्दे पड़जातेहैं इसके सिवाय और लोगोंका लेखहै कि इसका फल नरमी लाताहै और कंठ और हृदयकी दाहको दूर करताहै सूरत यह

तसवीर

(नारंज) ... है। ... लिखताहै कि जो इस दरख्त ... तो उसके स्वाद ... सुगन्धित

परन्तु उस पकड़ धकड़ में सांपने भी उसकी उँगली में दांत मारा उसने तुरन्त उँगलीको काटडाला और कोईतेल निकालकर आग पर गरमकिया और घावपर लगादिया अबूजाफ़र उसको अपने साथले अपने घर को चला मार्ग में कोई मनुष्य नींबू लिये हुये चलाआता था जादूगरने नींबू देखकर उनसे पूछा कि यह फल क्या तुम्हारे शहर में मिलसक्ता है जो मिलसके तो मँगवादो उन्होंने नींबू मँगवादिये उसने कुछ तो टुकड़े करके योहींखाये कुछ निचोड़कर उनका रसपिया और कहा कि ईश्वरने मुझको नींबुओं के कारण आरोग्य करदिया जो हमारे भाई भी इसमेवेको पाते तो कभी जानसे न जाते यह नींबू हमारे अमांदेश में उत्तम ज़हरमोहरा है फिर अज़दहे का शिर और दुम काटी और उबालकर उस का तेल निकाला और साथलेकर अपनी राह चलागया उसवृक्ष की सूरत यहहै ॥

तसवीरनम्बर२८७

(मुशम्मिश) अर्थात् जरद आलू (खुबानी) यह एक वृक्षहै कि इसका मेवा और मेवों के विपरीत छाल और गूदे समेत खाते हैं हज़रत मुरतज़ा के मुख से यह कहावत सुनीगई है कि हज़रतपैग़म्बर साहब ने बर्णनकिया कि जब ईश्वरने एकपैगम्बरको उतारा उसकी जाति उनके नवीन होनेका निश्चय न करनेलगी और न कोई चेला हुआ निदान वर्षभर के उपरान्त उसजाति के बड़े ईदका दिनआया वहलोग पीले कपड़े पहन २ के वहां इकट्ठे हुये और उन पैगम्बर ने भी सिरेसे उपदेश करना आरम्भ किया उस समय उन्होंने उत्तर दिया कि जो तुम वास्तव में ईश्वरके भेजेहुये हो तो हमारे कपड़ों के सदृश कोई फल इसी समय इस सूखी लकड़ी में उत्पन्न करो निदान पैगम्बर ने ईश्वरसे विनयकी और उसीसमय उस सूखीलकड़ी में हरेपत्ते प्रकट हुये और उसमें ज़र्द आलूका फललगा सो जिस मनुष्यने उसफल को सच्चेमनसेखाया उस फलका बीजतक मीठा निकला और जिसने मनमें बुरीइच्छा

रक्खी उसके फलका स्वाद कडुवा निकला उसकागुण बुद्धिमानों के विचारमें कि पत्ता उसका दांतों की पीड़ा को नष्टकरताहै और जिसके दांत खट्टे होगये हों इसके सेवन से तेजहोसक्ते हैं शेखुल-रईशका वचनहै किसूखी खुबानीसे ज्वर दूर होताहै औरहरेकेखाने से ज्वर उत्पन्न होताहै क्यों कि उसमें दुर्गन्ध होतीहै एक दिन एक बुद्धिमानकाश्तकार की ओर गया कि वह खुबानीका वृक्षबोताथा हकीमने उससे कहा कि क्या करताहै उसनेकहा कि मैं वह काम करताहूंकि जिससे हम और तुम दोनों लाभ उठावें अर्थात् हम इसकामेवा खायेंगे और स्वाद उठायेंगे और जब इसको खाकेमाँ-देपड़ेंगे तो तुम हमारी चिकित्सा से लाभ उठाओगे इसके बीजों का तेलबवासीर को बहुत गुणकरे और इसका कडुआबीज बातके दूरकरनेमेंबहुत गुण रखताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २३९

(मौज़) अर्थात् केल यहवृक्ष गरम ज़मीन पर बहुतसे द्वीपों में हुआ करताहै इसके पत्ते चोखूंटे खजूर के पत्तों केसदृश होते हैं इस वृक्षकी लम्बाई मनुष्यके डौल के बराबर होतीहै इसकी जड़ों से फूटकर और भी नन्ही २ शाखा सदा निकलतीहैं यहवृक्ष एक वेर फलताहै और फिर जड़वाली छोटी २ शाखाओं को पालते हैं और वह भी एकबेर फललाया करतीहैं इसके मेवेका स्वाद अंगूर की तरह होताहै शेखरईस के विचारमें इसके सेवनसे मूत्ररोधदूर होजाताहै औवीर्यका बलकारकभी है परन्तुजो अधिकता से सेवन कियाजावे तो सुद्दे पड़जातेहैं इसके सिवाय और लोगोंका लेखहै कि इसका फल नरमी लाताहै और कंठ और हृदयकी दाहको दूर करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २४०

(नारज) साहबुलफलाहा इसवृक्ष के लिये यों लिखताहै कि जो इस दरख़्त के पास नरगिस के दरख़्त लगायेजांय तो उसके फलों का स्वाद बहुत मीठा होगा इसके चूसने से मुख सुगन्धित

होताहै और मनका बलकारकहै इसका और तुरंजका गुण एकसा है जो इसके बीजको सुखने पर जलादेवें तो उसके धुयेंसे चीटियां भागजातीहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३८

(नारजील नारियल) हज्जाज के रहनेवालों का वचनहै कि यहवृक्ष छुहारे के वृक्ष के सदृश होताहै हां फल इसका नारियल होताहै इसके फलपर जटायें होतीहैं जिसकी रस्सियां बनाई जातीहैं उससे जहाजोंको लंगर करतेहैं उसरस्सीमें यहगुण देखा कि मुद्दतोंतक पानीमें पडारहेपर सडता नहीहै इसकी गिरी बहुत मीठी होतीहै इसके सेवन से वीर्य अधिक होताहै बलीनास का निश्चय है कि जो इसकी जटाको बत्तीकी जगह चिरागमें जलावे और उस चिराग को लोगों में रक्खे उन लोगों को जल्दी नींद आजायेगी शेखरईस का लेखहै कि नारियलकी गिरी वीर्य अधिक करनेवाली है और विशेष करके इसका तेल पुराने बवासीर के रोग में अति लाभ दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३९

(वनक) इसको फ़ारसी मे कुनार और हिन्दी में बेर कहतेहैं साहबुलफलाहा के विचार में इसका बीज गुलाब में भिगोकर बोना बहुतउत्तमहै क्योंकि इसकेफल और पत्तोंसे गुलाबकी सुगंध उत्पन्न होआतीहै जो इसका मेवा शहद और दूधमें भिगोवे और फिरसुखाकर बोवे तो इसका फल अति स्वादिष्ट और मीठाहोगा जो इसके पत्तोंको पीसकर बालोंमें लगावें तो बाल बहुत मज़बूत होजावेंगे और इसमें बालोंका बढ़ाना भी गुणहै जो इसके गोंद से बालोंको धोवें तो लालहो जावेंगे इसके फलका स्वाद खट मीठा होता है इसका सूखा फल रुधिर के बहने और जो मन्दाग्नि के कारण अतीसार हो उसको बन्द करताहै परन्तु ऐसी दशामें फल मै गुठली कूटकर खाय ॥

रक्खी उसके फलका स्वाद कडुवा निकला उसकागुण बुद्धिमानों के विचारमें कि पत्ता उसका दांतों की पीड़ा को नष्टकरताहै और जिसके दांत खट्टे होगये हों इसके सेवन से तेजहोसक्ते हैं शेखुल-रईशका वचनहै किसूखी खुबानीसे ज्वर दूर होताहै औ रहरकेखाने से ज्वर उत्पन्न होताहै क्यों कि उसमें दुर्गन्ध होतीहै एक दिन एक बुद्धिमानकाश्तकार की ओर गया कि वह खुबानीका वृक्षबोताथा हकीमने उससे कहा कि क्या करताहै उसनेकहा कि मैं वह काम करताहूंकि जिससे हम और तुम दोनों लाभ उठावें अर्थात् हम इसकामेवा खायेंगे और स्वाद उठायेंगे और जब इसको खाकेमां-देपड़ेंगे तो तुम हमारी चिकित्सा से लाभ उठाओगे इसके बीजों का तेलबवासीर को बहुत गुणकरे और इसका कडुआबीज बातके दूरकरनेमेंबहुत गुण रखताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २२६

(मौज़) अर्थात् केल यहवृक्ष गरम जमीन पर बहुतसे द्वीपों में हुआ करताहै इसके पत्ते चौखुंटे खजूर के पत्तों केसदृश होते हैं इस वृक्षकी लम्बाई मनुष्यके डौल के बराबर होतीहै इसकी जड़ों से फूटकर और भी नन्ही २ शाखा सदा निकलतीहै यहवृक्ष एक वेर फलताहै और फिर जड़वाली छोटी २ शाखाओं को पालते हैं और वह भी एकवेर फललाया करतीहैं इसके मेवेका स्वाद अंगूर की तरह होताहै शेखरईस के विचारमे इसके सेवनसे मूत्ररोधदूर होजाताहै औवीर्यका बलकारकभी है परन्तुजो अधिकता से सेवन कियाजावे तो सुद्दे पड़जातेहैं इसके सिवाय और लोगोंका लेखहै कि इसका फल नरमी लाताहै और कंठ और हृदयकी दाहको दूर करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २३०

(नारंज) साहबुलफलाहा इसवृक्ष के लिये यों लिखताहै कि जो इस दरख्त के पास नरगिस के दरख्त लगायेजांय तो उसके फलों का स्वाद बहुत मीठा होगा इसके चूसने से मुख सुगन्धित

होताहै और मनका बलकारकहै इसका और तुरंजका गुण एकसा है जो इसके बीजको सूखने पर जलादेवे तो उसके धुयेंसे चीटियां भागजातीहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २३८

(नारजील नारियल) हज्जाज के रहनेवालों का वचनहै कि यहवृक्ष छुहारे के वृक्ष के सदृश होताहै हां फल इसका नारियल होताहै इसके फलपर जटायें होतीहैं जिसकी रस्सियां बनाई जातीहैं उससे जहाज़ोंको लंगर करतेहैं उसरस्सीमें यहगुण देखा कि मुद्दतोतक पानीमें पड़ारहेपर सड़ता नहीहै इसकी गिरी बहुत मीठी होतीहै इसके सेवन से वीर्य अधिक होताहै वलीनास का निश्चय है कि जो इसकी जटाको बत्तीकी जगह चिरागमें जलावे और उस चिराग को लोगों में रक्खे उन लोगों को जल्दी नींद आजायेगी शेखरईस का लेखहै कि नारियलकी गिरी वीर्य अधिक करनेवाली है और विशेष करके इसका तेल पुराने बवासीर के रोग में अति लाभ दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २३६

(बनक) इसको फ़ारसी में कुनार और हिन्दी में बेर कहतेहैं साहबुलफ़्लाहा के विचार में इसका बीज गुलाब में भिगोकर बोना बहुतउत्तमहै क्योंकि इसकेफल और पत्तोंमें गुलाबकी सुगन्ध उत्पन्न होजातीहै जो इसका मेवा शहद और दूधमें भिगोवें और फिरसुखाकर बोवे तो इसका फल अति स्वादिष्ट और मीठाहोगा जो इसके पत्तोको पीसकर बालोंमें लगावें तो बाल बहुत मजबूत होजावेंगे और इसमें बालोंका बढ़ाना भी गुणहै जो इसके गोंद से बालोंको धोवें तो लालहो जावेंगे इसके फलका स्वाद खट मीठा होता है इसका सूखा फल रुधिर के बहने और जो मन्दाग्नि के कारण अतीसार हो उसको बन्द करताहै परन्तु ऐसी दशामें फल में गुठली कूटकर खाँय॥

तसबीर नम्बर २४०

(नखल) अर्थात् छुहारेका दरख्त इस वृक्षको शुभ लिखाहै और यह भी लेखहै कि मुसलमानोंके शहरोंके सिवाय और जगह नहीं होता यद्यपि हिन्दुस्तान हब्श और गरम शहरहैं परन्तु यहां नहीं होता है हज़रत पैगम्बर साहब कीआज्ञाहै कि बड़ा समझो अपने चाचाको जो छोहाराहै निदान हज़रतने इस वृक्ष को चाचा कहाहै इसका कारण कि ईश्वरने इस शुभ वृक्षको हज़रत आदम की बचीहुई मिट्टी से पैदा कियाहै और कई कारणों से यह वृक्ष मनुष्यकी सूरतका होताहै पहिले यह कि कहीं सेटेढ़ा और गांठ-दार नहींहै दूसरे यह कि यह नर मादा भीहै तीसरे यह कि जो इसके शिरको काटडालें तो सूखजावे और यह वृक्ष और दरख्तोंके विपरीत गर्भ धारण करता है कि इसके पहिलेफल में मनुष्य के वीर्य्य कीसी गंध पैदा होतीहै और छाल वीर्य्यरूप होती है इसके सिरपर फुनगी होती हैजोवह किसी उपद्रव से नष्ट होजाय तो वह वृक्ष सूख जावेगा यहभी वही सूरतहै जैसेमनुष्यका शिर और यह भी है किजो कोई उसको काटे तो फिर मनुष्य के जोड़केशदृश फिर दूसरी बार वह डाली न होगी और जिस तरह मनुष्य के बाल होतेहैं उस दरख्तमें भीरोंगटेहैं साहबुलफलाहा का बचन है कि जो छुहारेका दरख्त न फलताहो तो उचित है कि यह टोटका किया जाय कि एक मनुष्य बसूला लेकर और एक और दूसरे मनुष्यको साथ लेकर उस वृक्षके पास जावे और उसके नीचे खड़े होकर कहे कि जो कि यह वृक्ष फलता नहीं है इसको काटना चाहताहूं यह सुनकर दूसरा मनुष्य उत्तरदे कि अभी ऐसा काम न करो यह दरख्त बहुत अच्छाहै इस वर्ष अवश्य फलेगा उस समय वह मनुष्य उत्तरदे कि यह वृक्ष अब कभी न फलेगा और यह कहकर दो तीन बसूले लगावे तब दूसरा हाथ पकड़के कहे कि अब जाने दीजिये इस समय क्षमा कीजिये जो आगे न फले तो फिरमुख्तारहो जो ईश्वर चाहे इस उपायसे तो वह वृक्ष

होताहै और मनका बलकारकहै इसका और तुरजका गुण एकसा है जो इसके बीजको सूखने पर जलादेवें तो उसके धुयेंसे चोटियां भागजातीहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २२८

(नारजील नारियल) हज्जाज के रहनेवालों का वचनहै कि यहवृक्ष छुहारे के वृक्ष के सदृश होताहै हां फल इसका नारियल होताहै इसके फलपर जटायें होतीहैं जिसकी रस्सियां बनाई जा-तीहैं उससे जहाज़ोंको लंगर करतेहैं उसरस्सीमें यहगुण देखा कि मुद्दतोंतक पानीमें पड़ारहेपर सड़ता नहींहै इसकी गिरी बहुत मीठी होतीहै इसके सेवन से वीर्य अधिक होताहै बलीनास का निश्चय है कि जो इसकी जटाको वत्तीकी जगह चिराग़में जलावे और उस चिराग़ को लोगों मे रक्खें उन लोगो को जल्दी नींद आजायेगी शेखरईस का लेखहै कि नारियलकी गिरी वीर्य अधिक करनेवाली है और विशेष करके इसका तेल पुराने ववासीर के रोग में अति लाभ दायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २२६

(बनक) इसको फ़ारसी में कुनार और हिन्दी में बेर कहतेहैं साहबुलफलाहा के विचार मे इसका बीज गुलाब में भिगोकर बोना बहुतउत्तमहै क्योंकि इसकेफल और पत्तोंसे गुलाबकी सुगंध उत्पन्न होआतीहै जो इसका मेवा शहद और दूधमें भिगोवे और फिरसुखाकर बोवे तो इसका फल अति स्वादिष्ट और मीठाहोगा जो इसके पत्तोको पीसकर बालोमे लगावें तो बाल बहुत मजबूत होजावेगे और इसमें बालोंका बढ़ाना भी गुणहै जो इसके गोंद से बालोंको धोवें तो लालहो जावेगे इसके फलका स्वाद खट मीठा होता है इसका सूखा फल रुधिर के बहने और जो मन्दाग्नि के कारण अतीसार हो उसको बन्द करताहै परन्तु ऐसी दशामें फल मै गुठली कूटकर खाँय ॥

परन्तु जैसे मनुष्यकी हड्डियोंका कोयला नहीं होता उसका भी कोयला नहीं होसक्ता जो इसकीशाखा कोकड़ीकीतौरपरमकान में लगावें तो वह शाखा टुकडे २ होजावेगी कदाचित् शाखाकी बीच मेंसे चीरके उलटा मिलाके अर्थात् एक शिगाफ की पीठको दूसरे शिगाफकी पीठ मिलाके छत आदिमें डालें तो फिर बहुत मज़बूत रहेगी और कभी न टूटेगी जो इसके पत्तोंको लहसुनखानेके पीछे चबालेवे तो मुखकी दुर्गन्ध दूर होजावेगी इसका मेवा बहुत मीठा और स्वादिष्ट होताहै अबूहरीरे की बचनहै कि हज़रत पैग़म्बर साहबने कहा कि अज़ वह स्वर्गसे उतरा है यह हर विषकी औषधिहै अजवह एक छुहारेका प्रकार है जो सदा नहीं फलता परंतु चालीस वर्षके उपरान्त फलताहै और यही कारणहै कि शहर के रहने वालोंने इसका बागोंमें बोना बन्द कर दियाहै शेखरईशका निश्चयहै कि कच्चे छुहारे का अधिक सेवन करना जूड़ी बुखार और शिर पीड़ा उत्पन्न करताहै परन्तु कच्चा छुहारा जला हुआ नमक से मिलाके मज्जन करना दांतोंकी जड़ोंको दृढ़करताहै और पके छुहारे के लिये खसीमके पुत्र रबीका बचनहै कि जिस स्त्रीके प्रसूतिका रुधिर बहुत आता हो तो इसके खाने से तुरन्त बन्दहो जावेगा और मरदों को खानेसे वीर्य अधिक होताहै और प्रकृति को नरम करताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३४१

(वरद) अर्थात् गुलाब यह प्रसिद्ध वृक्षहै साहबुल फलाहा का बचनहै कि जो यह चाहे कि इसका फल जल्दी छिलके से निकले तो गरम पानीसे सींचना चाहिये जो यह चाहे कि गुलाबकी सुगन्ध अधिक हो तो वृक्षके लगाने के समय इसकी डालियों के बीच में लहसुन रखदे इसकी लकड़ीसेसर्प भागतेहैं जोसर्प किसी को काटे और वह इस दरख्त के पास जाय तो गुण करे इसका फूल सारे फूलोंमें खुश रंग और खुशबूदार होताहै इसका ज़ीरा सोनेकी तरह होताहै इसकी ओसको आंखमें लगाना नेत्र पीड़ाको

अवश्य फुले फलेगा और इसी ढबसे और भी दरख़्तों पर यह टोटका किया जावै तो क्या आश्चर्य कि धमकी से फलने लगें साहबुलफ़लाहा का लेखहै कि जो इस दरख़्तके नर व मादाको परस्पर पाससे जमावें तो वह बहुतही फलतेहैं और यह बात उनकी परस्पर प्रीतिको सिद्ध करतीहै बहुधा जो नर व मादा को अलग करके लगायाहै तो वह फिर फल नहीं लाये हां जब तक आपसमें नहीं मिले इसमईने कई यमानें के रहनेवालोंसे कहावत सुनीहै कि उन लोगोने वर्णन किया कि हमारे बासके स्थान के निकट एक छुहारे का बागथा और वह अच्छी तरहसे फलाकरता था अकस्मात् एक वर्षमें बिल्कुल न फला बागके मालिकोंने इस पेशेके जाननेवालोंको बुलाकर बाग़ दिखाया उनमेंसेएक उस्ताद ने इस वृक्षपर चढ़कर इधर उधर दृष्टि की परन्तु कोई कारण न पाया घबराया कि फिर क्या कारणहै परन्तु फिर जो ध्यानकरके देखा तो एक नर दरख़्तको देखा कि वहइससे बहुत दूरथा उसने पुकारकर कहा कि यह दरख़्त जो मादाहै उसनर दरख़्तसे प्रीति रखताहै जो यह दोनो आपस मे इकट्ठे होजांय तो अवश्य फल लायेनिदानकहने सुनने से जो कुछध्यान आया तो दोनोको आपुस में मिला दिया और उस बुद्धिमान का कहना सच पाया फलने रंग दिखाया कहतेहैं कि इस वृक्षसे और सरू से वैर है यहां तक कि जो कोई मनुष्य सरू के बागो से सैर करके छुहारे के बागकी ओर जाताहै और कोई सरू दरख़्तकी लकड़ीआदि हाथ में लेकर वहां जानेकी इच्छा करताहै तो छुहारे के बाग़बान कभी उसको जाने नही देते इस वृक्ष के अद्भुत वृत्तान्तो से यह भी एक वर्णनहै कि जो इस दरख़्त के बराबर दीवार बनाये तो उस का रुख़ दीवारही की तरफ़ रहेगा कहतेहैं कि जिस वृक्षपर केकड़ा लटकावें मेवा बहुत फूले फलेगा अथवा सीसे वा बलूतके वृक्ष की कील बनाकर भी जड़में गाड़ें तो उसकाफलकभी न गिरेगा और वृक्षपर स्थिर रहेगा इसकी लकड़ी को लाखों मन जलावें

ज्ञानवान समझेकि इसी तरहईश्वर, मुरदों कोभी जिलायेगा और उनकी गलीहुई हड्डियोंको सिरेसे, जीवरूपीवस्त्रपहनायेगा इसीको और कुरानमें सैनरहैइस आयत से कि तुमईश्वर की कृपा के चिन्ह कि जिसतरह ईश्वर मुरदी ज़मीनको जिलाताहै उसी तरह मुरदों को भी जीवा करेगा क्योंकि वह हरवस्तु पर अधिकारीहै और एक ईश्वरकी यहमायाहै कि उसने हरदानेमें एकशक्तिदीहै, कि जबवह दाना पृथ्वी में बोयाजाता है तो अपने बलसे पृथ्वीकी शुद्धतरीको अपनीओर खींचताहै और उसीसे बढ़ताहै जैसेकि अग्निकीज्योति की बत्ती के वास्ते चिराग़ में तेलको अपनी ओर खींचतीहै सो वह ईश्वरकी आज्ञानुसार इसीतरह पलकर फलदार होताहै और यह छोटेवृक्ष इसतरह परहैं जैसे कीड़े मकोड़े बड़े जीवधारियोंमें होतेहैं तो जिस तरह से सरदी की अधिकता में कीड़े मकोड़े मरजाते हैं उसीतरह सरदीमें यह भी नाश होजातेहैं इन वृक्षोंके इतनेप्रकार हैं कि मनुष्यकी बुद्धि दीनहै और क्योंकर कुण्ठित नहो। कि ईश्वर ने इनको नाना प्रकार के रंग कृपा कियेहैं किसी का रंग लाल है जैसे सौसन का फूल और कोई शक़ाय कुलनेमां (एकप्रकारलाल फूलकी जो बहुत सुर्ख होतीहै)के सदृश और उसकापेट उसके दाने सेभराहै और किसीकारंग अग्निबर्णहै जैसेआज़रयोनपहाड़ी और इसको फ़ारसीमें खुज़स्ता कहतेहैं, और यह गुलाबसे बहुतहलका होताहै कहतेहैं कि कच्छू और नेवले आदिको जब सांप या अज़दहा काटता है तो जंगली सातरखाना उनका इलाज है और जो इसको पकाकर खायें तो अतीसार होजाय जो शहद में मिलाकर चाटें तो सूजन को गुण दायकहै जो इसको पकाकर इसका गरम पानी पियें कीड़ेपेटके मरजायेंगे और बड़ीभूखलानेवालाभीहै और वातघ्न है और आंखोंकी अन्धेरी और रतौंधी, जो तरीसे उत्पन्न हो उसको नष्टकरे सो अब जो इनबेलोंसे प्रसिद्धहैं वह लिखी जातीहैं॥

(तरखून) इसको शीराजी भाषा में तरखूनी कहतेहैं जो इस कोचबाले तो जिह्वा का स्वाद जाता रहताहै इसी लिये बहुत से

दूर करता और ज्योति बढ़ाता है शेखरईश का वचन है कि जिस मनुष्यके पसीने में बास आतीहो जो वह इसको हम्माममें लगावे तो खुशबूदार हो बहुधा स्त्रियां इसका सेवन करतीहैं एक समूहका निश्चय है कि गुलाबके फूलकेलगानेसे मस्से दूरहोतेहैं यदि किसी जोड़में कांटा गड़गया हो इसका लेपकरें कांटा बाहर निकलआवेगा जाल नामी एक जानवर विष्ठा में उत्पन्न होता है वह इसकी सुगन्धसे मर जाताहै इसी तरह जो जीव दुर्गन्ध से उत्पन्नहोता है इसकी सुगन्धसे मर जाताहै तर फूल शिर पीड़ाको गुणकरे परंतु जुकाममें हानि कारक है जो इसके फूलोंपर शयन करें तो वीर्य्य नाश करे इसका अरक़ नेत्रोंकी पीड़ाको गुणकारीहै और मोतिया बिन्दको भी और जो मूर्च्छित मनुष्य के मुख पर इसका आसव (अरक़) छोड़ें या पिलादें तो जागउठेइसकीकलियां लहूके चलने कोगुणकरें जो बिल्लीकी नाकमेंमलें तो वह बीमारहो और क्या आश्चर्य है कि मरजाय सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २४२

(यासमी) अर्थात् चमेली प्रसिद्ध है इसका फूल सफ़ेद ज़र्द और सुर्ख होताहै इसकी सुगन्धसे शिर पीडा उत्पन्न होतीहै परन्तु कफकी शिर पीड़ाको नाश करता है इसके लेपसे छीप दूर होती है शेखके सिवाय और लोगोंका निश्चयहै कि इसके बहुत सूंघने से कमल वायु उत्पन्न होतीहै पर लकवा और फालिजऔर राघनको गुणदायकहै यदि इसकातेल पित्तकी प्रकृतिवाले सूंघें तो नकसीर पैदाहो इसका मर्दन लिंगपर करना मूत्रजारीकरताहैसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २४३

दूसराप्रकार बेलोंके वर्णनमें

बेल उसेकहतेहैं जो लंबादरख्तनहो और साग और घासकीतरह हो यह ईश्वरकी मायाहै कि हरवर्षमुरदेको जीता करतीहै और वह उसपर पानी बरसाताहै और गलेहुये स्थावर सिरेसे हरेभरेहोते हैं औरउसमेंलालपीलेआदि नानाप्रकारके फूललगतेहैंकिहरबुद्धिमान

महाविषहै कोई मलहममें काम आतीहै और बाज़ी नींदलानेवाली अफ़ीमकी तरह होतीहै इसका पत्ता सब्ज़ और मेवा पीलाहोताहै जो नींद वाले प्रकार में से बारह दानेखाये उन्माद और हिचकी कारोगहो और शरीरका रंग बदरंग होजाय और कशिन्दाको भी चारदिरम अर्थात् एक तोलादो मासे खाना दीवाना करतीहै जो इसकी जड़की छालको साढ़ेचारमासे शराबमेंपियें बहुत नींदआवे और उसके हर प्रकारका रस नेत्र पीड़ा में लगाना गुण दायकहै सूरत यहहै ॥ तसवीर नम्बर २४८

(फजल) इसको फ़ारसी में तुरब और हिन्दीमें मूली कहतेहैं साहबुलफलाहा का वचनहै जितनी मूली लम्बी और भारी चाहे उसीके मुवाफ़िक़ एक लकड़ी पृथ्वी में बिल्कुल गाड़ के निकालले मानोवहखाली जमीन सांचे की तरह होगई सोउसगढ़े में मूलीके बीज को सूखी घास समेत डालदे और उसके नीचे कुछ गोबर भी डालना चाहिये तो उसी लकड़ी के बराबर मूलीहोगी और यह भी कहाहै कि जो मूलीके बीजको शहदमें मिलाकर बोवें तो मीठी हो इसके खानेसे बुरी डकार आतीहै इसका यहकारणहै कि जब मूली मेदेमें गई मेदे के फोगको खींचकर उभारतीहै यह दुर्गंध उनफोगों की होतीहै न कि मूलीकी परन्तु यह वचन इब्नुलफ़रह का है जो लहसुन के खाने के पीछे इसको खावें तो दुर्गन्धि दूर होजावे जिन स्त्रियोंके बच्चेहुयेहों जो वह मूलीका सेवनकरें दूध बहुत पैदा होगा जो मर्द इसकोखाये तो वीर्यमें बल अधिकहो परन्तु आवाज बैठ जातीहै और इसके सदा खानेसे मेदा बहुत साफ़ रहताहै जो मूलीको पीसकर बिच्छूपर रखदें तुरन्तमरजाय जिसने मूलीखाईहो और उसको बिच्छू काटे तो विष अपना स्वभाव न करेगा और जो इसको शेलम अर्थात् मनमने के साथ पीसकर बालखोरे पर लेपकरें बाल जमआवें परन्तु जूयें शिर में पड़जायेंगे और बदन में सुस्ती पैदा होगी और शिर और आंख और दांत को अवगुण करे शहदमें पीसकर मर्दनकरना छीके निशान दूरकरतीहै जो इसका

लोग इसे पहिले चवाके कड़ुई और बेस्वाद औषधियां पीतेहैं और उसकी करुवाहट नहीं मालूमहोती शेख़रईसका वचनहै कि इसके खानेसे कण्ठकी पीड़ा उत्पन्नहो वीर्यघटजाय प्यासपैदाहो इसकी जड़को आकरकरहा कहतेहैं जो इसकोसिरकेमें पकाकर कुल्ली करें तो दांतोंके हिलनेको गुणकरे जो जूड़ीबुख़ारके आनेके पहिलेइसको शरीरपर मलें ईश्वरचाहे तो गुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर, २४४

(अवरान) इसको फारसीमें काफ़ूर शवरम कहतेहैं शेख़रईस का निश्चय है कि जोज़ुक़ाम सरदी सेहुआ हो उसको गुण करे इसका रस नेत्रकी ज्योतिको तेज़ करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २४५

(अदस मसूर)इसको यूनानी भाषामें माक़ूस कहतेहैं साहबुलफलाहा कहताहै कि जो मसूरको जल्दी उगानाचाहें तो गोबर मिलाकर बोवें शेख़रईसका वचनहै कि इसको जो के आटेकेसाथ पीसकर पांवकीनसकी पीड़ापर लगाना गुणकरे इसके बहुतखाने से कोढ़ और आंखमें अन्धेरी पैदा होतीहै इसकेसिवाय और लोग कहतेहैं कि सिरकेमें पकाकर पावँकी बिवाई परलगाना गुणकारकहै इसको कुल्ली करना ख़ुनाक अर्थात् पीनसको गुणदायकहै परन्तु इसकेखानेवाला रात्रिकोभयानक स्वप्नदेखताहै सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २४६

(उज़लम) यह एक प्रकारकी घासहै जिसके निचोड़े हुये रस का तेल बनातेहैं जो झाईं और छीप को दूर करताहै और इसकी घांस बालखोरे और सड़ेहुये घावको गुणदायकहै और कांटाबाहर निकालतीहै शक्कर के साथ लड़कोंकी खांसी दूरकरतीहै और इसी तरह इसका रस भी लाभ दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २४७

(उन्नबुरसालिब) अर्थात् मकोय यह कई प्रकार की होती है फ़ारसी में इसको रोबाहतरदक और सग अंगूर कहते हैं कोई

में उगतीहै इसकापत्ता जैतूनकीतरहहोता है और इसमें फूल और मेवा होताहै परन्तु मेवेका सेवन नहीं करते हैं शेखरईस का वचन है कि यहघास शरीरका रंग अच्छाकरतीहै इसका मरहम सुस्ती और शिरपीड़ाको लाभकरे और सुखनींद लाताहै और दूध बहुत पैदा करताहै परन्तु वीर्य कमहोजाताहै जो इसको बिछाकरसोयें स्वप्नमें वीर्यपात न हो और लिंग खड़ा न हो इसके धुयें से स्त्रीको काम अधिकहोताहै इसका पत्ता सर्पको दूरकरताहै मरहम बावले कुत्ते के घाव को गुणदायक है इसके पत्तोंका धुवां मच्छड़ आदि इसी प्रकार के डंक मारनेवाले कीड़ोंको दूरकरताहै सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३४१

(फोतनंज पोदीना) इस सुगन्धित घासका पत्ता छोटाहोता है और यह दोप्रकार की होतीहै नहरी और पहाड़ी नहरी वहहै जो दरिया किनारे जमे इसकी गंधसे मूर्च्छा दूरहोतीहै रात्रि को स्वप्नमें वीर्यपात को दूरकरे इसका मरहम दुखदाई कीड़े मकोड़ों को गुणकारक है और इसके पत्तोंका धुवांभी लाभकरे इसके पत्तों के दांतोंसे चबाना शराबकी बूको दूरकरताहै और वीर्य्य का नष्ट करनेवाला है क्योंकि गुरदेको अवगुणकारक है और पहाड़ी वह जो पहाड़ोंपर उगे उसका उबटन करना शरीरका रंग सुर्ख और सपेद करताहै मुख्य करके जो शराबमें पकाकर हम्मामयें मले खाजकोगुणकरे और कोढ़ हिचकी बदनके फटने और जलंधरवाले और कमलवायुरोग वाले को लाभकरे और बिच्छूकेविषकीउत्तम ओषधि है॥

तसवीर नम्बर ३४२

(क़ातिलुलज़ैब) जो इसको कूटकर कच्चे मांस पर छिड़ककर भेड़ियेको खिलावें तो वह तुरन्त मरजाय सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४३

(कातिलुल्काब) इसके खानेसे कुत्ता तुरन्त मरजाय कहते हैं कियहघास हिन्दुस्तानमेंहोतीहै जिसकोकुचलाकहतेहैं सूरतयहहै॥

रस शरावमेंडालें ख़राव होजाय और विच्छूके विपको गुणदायक है जो गरमीसे शिरपीड़ाहो तो इसके पानीसे शिरधोये तुरन्त दूर हो और बालखोरे पर मलना अति गुणदायकहै जो सांपवालों के पिटारे में मूली और नौसादर मल दें उसके सारे सांप मर जावें इसका रस कामला में पांचदिन पीना ज़र्दी खो देताहै इसकारस मलना गिरेहुये बालोंको जमाता है और आंख में लगाना ज्योति अधिककरता है और मूलीको सुखाकर भी आंखमेंलगाना निगाह तेज करताहै जिस घर में इसको राख छोड़ देवें विच्छू न आवेंगे इसको सूखा पीसकर छीप पर लगाना उसको दूरकरे इसकेबीज खाने से वीर्य अधिकहो और ऐंठनको गुण दायकहै इब्न मासूया का वचनहै कि मूलीके पत्ते नेत्रकी ज्योति अधिक करतेहै और यह सर्पके विपको लाभदायक और इससेदूधबहुतहोताहैसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २४८

(फरफ़ख़) इसको बक़लतुलहुमका अर्थात् खुलफा और लुनिया इसकारण कहतेहैं कि जहां कहीं तरीहोतीहै वहां यहउगता है जो इसके पत्तो को बिछाकर उसपर सोवें स्वप्नमे बीर्यपात न होगा और शरीर के घावपर लगाना गुणदायक है और वीर्य को अधिक भी करता है जो इसको शहद और कचलोन में पीसकर नाभिके गिर्द और लिंगकेछिद्र और पेडूपरमले लिंग तेज़हो शेख़रईसका वचनहै कि जो इससे मस्सोंको काटें तो फिर पैदा न हो और नेत्रपीड़ा और दांतोंकी पीड़ाको भीगुणदायकहै जो छुहारे के दरख़्तोंपर कोई आफतपहुंचे इसकेपत्तोको रससमेत उसपरमलना उस आफ़त को दूर करता है जो मनुष्य इसके बीज को सिरके में कूट पीसकरपिये देरतक प्यास न लगे बहुधा बिदेशी इसकासेवन पानी न मिलने के समय करतेहैं और गरम तप को भी लाभ करे परन्तु इसका बहुत खाना वीर्यको नष्टकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५०

(फंजंकश्त) यह ऐसीवड़ीघासहै कि दरख़्तकेबराबर है तराइयों

मे उगतीहै इसकापत्ता जैतूनकीतरहहोता है और इसमें फूल और मेवा होताहै परन्तु मेवेका सेवन नहीं करते हैं शेखरईस का वचन है कि यहघास शरीरका रंग अच्छाकरतीहै इसका मरहम सुस्ती और शिरपीड़ाको लाभकरे और सुखनींद लाताहै और दूध बहुत पैदा करताहै परन्तु वीर्य कमहोजाताहै जो इसको विछाकरसोवें स्वप्नमें वीर्यपात न हो और लिंग खड़ा न हो इसके धुयें से स्त्रीको काम अधिकहोताहै इसका पत्ता सर्पको दूरकरताहै मरहम बावले कुत्ते के घाव को गुणदायक है इसके पत्तोंका धुवां मच्छड़ आदि इसी प्रकार के डंक मारनेवाले कीड़ोंको दूरकरताहै सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २५१

(फोतनेज पोदीना) इस सुगन्धित घासका पत्ता छोटाहोताहै और यह दोप्रकार की होतीहै नहरी और पहाड़ी नहरी वहहै जो दरिया किनारे जमे इसकी गंधसे मूर्च्छा दूरहोतीहै रात्रि को स्वप्नमें वीर्यपात को दूरकरे इसका मरहम दुखदाई कीड़े मकोड़ों को गुणकारक है और इसके पत्तोंका धुवांभी लाभकरे इसके पत्तों के दांतोंसे चबाना शराबकी बूको दूरकरताहै और वीर्य्य का नष्ट करनेवाला है क्योंकि गुरदेको अवगुणकारक है और पहाड़ी वह जो पहाड़ोंपर उगे उसका उबटन करना शरीरका रंग सुर्ख और सपेद करताहै मुख्य करके जो शराबमे पकाकर हम्मामसें मले खाजकोगुणकरे और कोढ़ हिचकी बदनके फटने और जलंधरवाले और कमलवायुरोग वाले को लाभकरे और बिच्छूकेविषकीउत्तम ओषधि है॥

तसवीर नम्बर २५२

(क़ातिलुलज़ैब) जो इसको कूटकर कच्चे मांस पर छिड़ककर भेड़ियेको खिलावें तो वह तुरन्त मरजाय सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५३

(कातिलुल्काब) इसके खानेसे कुत्ता तुरन्त मरजाय कहते हैं कि यहघास हिन्दुस्तानमेंहोतीहै जिसकोकुचलाकहतेहैंसूरतयहहै॥

तसवीरनम्बर २७४

(कताद) यहएक प्रकारका कांटेदार दरख़्तहै जिसमें गोंदबहुत होताहै इसको शीराज़के निवासी एरकम कहतेहैं इसके कांटों को जलाकर इसकी लकड़ी गाव सुतरको खिलातेहैं इसके कांटे सख़्त और लंबेहोतेहैं यहांतकके कि अरबके रहनेवाले कठोर कार्यों पर दृष्टांत देतेहैं कि उस कामसे कामक़ताद नामी दरख़्तका कांटा है इसका गोंद खांसी और फेफड़के घावको गुणदायक है सूरत को साफ़ करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २७५

(क़सा) फ़ारसी में इसको खयारज़ह और ख़यारज़ार कहते हैं सकाहबुल फ़लाहा का वचन है कि जो यह चाहे कि इसका फल मनुष्य वा पशु वा मुर्ग़ की तरह का हो तो जिस रूप का चाहे उसका सांचा तय्यार करके उसमें कसाको डालदे और उसका मोहरा बंद करदें परन्तु दृढ़ताके साथ कि उसमें गर्दहवा या भाफ न जावे और यह भी विचार रहे कि क़सा अपने उगने की जगहसे अलग न होने पावे तो जब वह बढ़ेगा उसी सांचेके रूपका होजायेगा और यह भी लिखाहै कि जोस्त्री ऋतुवतीहो और इसकी बेलोंमें जावे तो उनके पत्ते सूख जावेंगे और दरख़्त बेजान होजावेगे और उनका मेवा कड़ुवा होजावेगा इसीतरह जो उसके बीजको तेलकी गंध पहुंचे यहांतक कि जिसबरतन में तेल हो या कपड़में लगाहो और उसपर उसके बीज़पड़जावें तो फलो का स्वाद कडुवा होजायेगा यदि ख़यारजह को लंबा करना चाहे तो एक बरतनमें पानीभरकर खुलाहुआ चारअंगुलके अन्तरसे उसकेपासरखदें जब ख़यारज़ह उसकेपास पहुचे थोड़ाहटावे इसी तरह वह बहुत लंबीहोजावेगीजो इसके दानेको उलटा बोयें पत्ता और मेवा बहुतहो जो इसके बीज को शहद और दूधमें भिगोकर बोदेंफलमीठा होगा शेख़रईस का वचनहै कि इसका मेवा खाना बावले कुत्ते के लिये गुणदायक है और प्यास दूर करताहै और

इसका सूंघना गरमीकीअधिकताको दूर करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५६

(क़ुरतुम) अर्थात् कड़ इसका फूल कुसुमहै शेख़रईसका बचन है कि इसका बीजहृदय और शरीरके रंगका शुद्ध करने वाला और कूलंजका गुणदायक है जो अंजीर या सिरके में सेवन करें कामदेवको अधिक करे और झाईं और दादको नष्ट करताहै और इब्न मासूयासे साहब अतियारात ने कहावत लिखीहै कि उनके विचारमें कड़कीगिरी दस्तलातीहै इस तरह पर कि इसका बीज पानी में उबालकर और ज़ैत में मिलाकर साफकरके दसदिरम (दिरम साढ़ेतीन माशेकाहोताहै) लाल शक्करअधिककरें और दस दिरमसे बीसदिरमतक पियें सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५७

(क़तन) अर्थात् रूईयह प्रसिद्धहै इसके पत्तोंका रसलड़कों को अतीसारमें पिलातेहैं इसकी राख दांतकी जड़ों और इसके गलने को गुणकारकहै और आजमाई हुईहै जो इसका फलसख़्तहोताहै तो उसका बनाहुआ कपड़ा बदनको सख़्त करताहै और जो नरम होताहै तो उसकी पोशाक बदन को नरम करती है रूईदारकपड़े बूढ़ों और ठंढी प्रकृतिवालों को गुणकारकहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५८

(क़नावरी) इसको फारसीमें बरग़त और शीराज़ीमें शोराकहतेहैं इसकालेप झाईंको नष्टकरताहै और मस्तीको अतिगुणकरेजो छातियोंके घावपर इसके पत्तोंका लेपकरें तो गुणदायक है और हृदय और वहस्थान जहां पेटमें दूसरी बेरभोजन पके इनके बँध जानेकोखोले बवासीरपर लगाना अतिगुणदायकहै राज़ीके बिचार में मेदे और कलेजेको गुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २५९

(कनब) (भंग) यह वृक्ष कोई जंगली और कोई बागका होताहै हुसेन का वचन है कि जगली एक गज़के बराबर जंगलमें

होताहै इसका पत्ता सपेदी लिये और फलमिरचकी तरहपर होताहै जिसका तेलनिकालतेहैं जो गरम सूजन को गुणकरे इसकी जड़का रस कानकी पीड़ाको गुणकरे और बागके भंग बीजकोशहदांज कहतेहैं और इसके पत्ते की भंग जो उपद्रवकारक आलस्य करनेवाली होतीहै इसको थोडासा पीना निर्बुद्धि और बिचार को भ्रष्ट करताहै इसकी गरमी बड़ीहै बहुधा पीनस और दीवानापन पैदा करतीहै और चोटकी पीड़ाको गुणदायकहै और लहूको बंद करतीहै और पांवके अंगुलियों की पीड़ाको लाभकरे शेखरईस के बिचारमें इसका रस नेत्रपीड़ाको गुणकरे परन्तु शिरपीड़ा और आंखोंकी अंधेरी उत्पन्न करताहै और इसका सेवनवीर्यको सुखाता है इनके सिवा औरोंका बचनहै कि इसकारस बात को गुणदायक और इसका तेल आंखोंकी पीड़ाको जो सरदीसे हो दूर करता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६०

(कबनैत) इसको फारसीमें करंबरूमी कहतेहैं साहबुलफलाहा का बचनहै कि जो इसको खारी जमीनपर लगावे बडाहो और इसका अच्छा स्वाद और कीड़े न लगें इसको बीचमें लगाने से अंगूरके दरख्तका बल कम होजाताहै और फिर उसअंगूरकी शराब में नशानहीं रहता है इसके पत्तोको शाखों समेत पीसकर दुखी लोगोंके मस्तकपर लगाना चिन्तादूर करताहै इसकाफल खाना या इसका बिस्तर बनाकर उसपर सोना बुरे और भयानक स्वप्न दिखलाताहै इसी कारण जिसने इसका फल खायाहो उसके स्वप्न का फल नहीं कहते जो इसको अफादिया (अर्थात् कई एक खुशबूदार औषधियोंकी मिलीहुई दवा साथ ऐसी स्त्रीपिये कि जिसका ऋतुका रुधिरबंदहोगयाहो तो रुधिर उसका जारी होजाय और पुरानी खांसी को गुणकरे जो लड़के इसके खाने की आदत करें जल्दी बड़ेहों औरबुरी आवाज अच्छी आवाज होजाय और कुरूप से सुन्दर रूपहो शेखरईसका बचनहै कि यह बहुधा पीडाको लाभ

करे और गरमी और कांपनी को गुणकरे और निद्रालातीहै परन्तु आंखोंको अंधाकरतीहै इसके बीजकी धूनीसेबागकेकीड़े मरजातेहैं जो स्त्री भोग के उपरान्त इसका शाफा भग में रक्खे तो गर्भरहजाय इसके बीजको पत्तों समेत सिरकेमें पीसकर बावलेकुत्तेके घाव पर लगाना गुणकरे इसका बीज प्यासकोगुणदायक और वीर्यको बढ़ाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६१

(क़ैसुम) इसकी सुगंध बहुत उत्तम होतीहै फ़ारसीमें इसकोबोय मारा कहतेहैं क्योंकि इसकी गंधसे सांप भागते हैं इसके बीज को जिस गांवके गिर्द बोदें वहां सांप नहोंगे और जो हों वह मरजायँ शेख़रईस का वचन है कि बाल निकलने के लिये गुणदायक है जो इसको किसी तेलमें पकाकर जिसकी दाढ़ी पर बाल न जमते हों लगावें तुरन्त बाल निकलआवें और मासिक रुधिर जारी करताहै और मुरदे बच्चे को पेटसे बाहर निकालता है और मत्रको खोलताहै इसका तेल मलना जूड़ी बुख़ारमें गुणकरे जो शराबमें मिलाकरपियें विष दूर करे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६२

(गावज़बां) अरबी में लसानुस्सौर कहते हैं कफ और घावको गुणकरे शेख़रईस का निश्चय है कि चिन्ता दूर करता है और मन का बल कारक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६३

(क़तां) अर्थात् अलसी इसके कपड़े बनातेहैं कहते हैं कि इसके कपड़ेसे बदन नरम रहता है मुख्यकरके गरमी में गरम प्रकृतिको इसका धुआं जुकाम को लाभ करे इसका बीज बहुत प्रकार की पीड़ाओं को गुण करे कचलोन और अंजीर के साथ कुत्ते के विष को फ़ायदा करे और मोम के साथ नाखून के रोग में अच्छा है और शहद औरकाली मिरचमें मिलाकर खाना वीर्य का बलदायक है सूरत यह है ॥

(करास) अर्थात् गन्दना जंगली और बोया हुआ होता है साहबुलफलाहा कहता है कि इसका बीज बोकर तीन दिनके पीछे पानी देते हैं और इसकी जड़ मज़बूत होने के वास्ते बकरियोंकी मेंगनियां डालते हैं जो गन्दनाको पीस कर बिच्छूके घाव पर लगावें तुरन्त पीड़ा दूरहो और भिड़के विष को भी गुण करे उसका सदा सेवन आंखकी अंधेरी पैदा करताहै शेखरईस का वचनहै कि शामीगंदना लगाना मस्सोंको दूर करता है और नकसीरके रुधिर को दूर करे परन्तु इसका खाना शिर पीड़ा पैदा करता है और दुस्स्वप्न दिखलाता है और दांतोंमें पीड़ा पैदा करता है और नेत्रको हानि कारक है और वन्तीगन्दना बवासीर को गुण करे पर जो इसके छालकी धूनी लेवें और पियें और यह कामदेव का बढ़ाने वालाभी है और मनुष्यों का बचन है कि गन्दनाको चबाकर जहां घावसे लहू जारी हो लगाना फ़ायदाकरे जिस स्त्री के ऋतु का रुधिर बन्द होगया हो जो वह इसका दस दिरम रस बीस दिरम शहद के साथ पिये मासिक रुधिर जारीहो कहते हैं कि आवाज़पड़ने को लाभ करताहै और इसीकारण गवइये लोग इसका सेवन कियाकरतेहैं क्योंकि आवाज़ का पड़ना ब्रह्माण्ड की तरी से होता है और यह तरी को सुखाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २६५

(करसना) अर्थात् मटर देसकोरिदस का वचन है कि यहघास महीन २ पत्ते होते हैं और इसका बीज छिलके मे होता है और इसका दाना मसूर के सदृश परन्तु यह चौड़ा नहीं होता वरन पहलूदार और स्याहीलिये हां छीलनेपर मसूर की तरह होता है यहदाना बैलों के मोटा करने में अद्वितीय है इसका स्वाद उड़द और मसूर के बीच में होता है रामजर्द और काशग़र की विलायत मे भी बहुत बोयाजाता है शेखरईसका वचनहै कि झांई और छीप पर लगाना गुणकरे रंग रोशन करता है और दुबलापना दूर

करता है जो शराब में पीसकर सांप या व्रत रखनेवाले मनुष्य या कुत्तेके घावपर लगावें गुणदे ॥

तसवीर नम्बर ९६६

(किरफ्सअजमोद) यहघासप्रसिद्धहै जंगली और बागकीहोती है इसकीगंध मुखकोसुगन्धितकरतीहै इसीलिये जोमनुष्य अमीरों और बादशाहों की आधीनताकरता है वह इसका सेवन करता है स्त्रीपुरुषके कामदेवको उभारतीहै और इसका कांपनेवाले जोड़पर लगाना फ़ायदा रखताहै शेख़रईस के विचार में जंगली अजमोद बालखोरे और मस्सोंको गुणकरे और बागकी मुखकी दुर्गंध और दाद खाज को लाभकरे जो अजमोद खायेहुये मनुष्यको बिच्छू काटखाय निश्चयहै कि वह मनुष्य मरजाय सो जहां कहीं बिच्छू बहुतहों उसको न खानाचाहिये इसकारस आंखमें लगाना अँधेरी को दूरकरताहै इसकोजड़ आंखमेंलगाना दांतोंकीपीड़ा दूरकरता है इसका बीजजलंधर और बद मूत्रको गुणकरे और बच्चेकी झिल्ली को पेटसेबाहर निकालताहै जिनमनुष्योंके समूहमें इसकाधुआंकरें वहनिद्रा में मग्न होजावें मन्दाग्निकी हिचकी को लाभकरे सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर९६७

(करदिया) शेख़रईस का वचन है कि यह घास उन्माद और बात को गुणदायक कीड़ों के खींचनेवाली और मूत्ररोध और पेचिश को गुणकारक है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ९६८

(करवजा) अर्थात् धनियां बलीनासका वचन है कि जो इसको जड़ समेत पृथ्वी से उखाड़कर प्रसूति की पीड़ा के समय स्त्री की रान में लटकावे तुरन्त बच्चा पैदाहोय शेख़रईस का वचन है कि हरे धनिये का खाना नींद बहुतलाता है और आंख में अँधेरीपैदा करता है इसका रस दूध में पीसकर लगाना कठोर पीड़ाओं को गुणकरे इसका बहुत खाना समझ और स्मरणको खराबकरताहै इसका बीज भिड़ के डंकपर लगाना गुणदायकहै और तीनहथली

भर इसका चूर्ण खाना भी लाभकरे बलीनासका वचन है कि इसके दानेके धुयेसे बिच्छू और सर्प भागतेहैं इसका खाना लहसुन और प्याज की दुर्गंध को नष्ट करता है सूरत यहहै ॥

तसवीरनम्बर १९९

(कलंबासा) यह प्रसिद्ध घास है जो इसको बिछौने पर रखदें तो खटमल हिलनहीं सक्ते और कुछ देनेका बल उनमें नहीं रहता सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २००

(कमून) इसको फ़ारसी में जीरा कहते हैं कबूतर इसकी इच्छा करताहै जहां छिटकादे कबूतर जमाहोगे और जिसख़ानेमें डालदें कबूतर उसको न छोड़ेंगे इसकी सुगन्ध से चीटियां भागती हैं शेख़रईस का वचनहै कि इसके अरक से मुहँधोनासफाई लाता है इसका बहुत खाना मुखका रंग पीला करताहै और ज़ीरेकोसिरके में पीसकर सूंघना नकसीर दूर करता है और जो बत्ती बनाकर नाक में रक्खें तोभी नकसीर को गुण करे इसका रस आंख की ज्योति बढ़ाताहै जो ज़ीरा और नमक बराबरलेकर पानीमेंपीसकर टिकिया की तरहपर बनाकर सुखाकर मैदे के ढेरमें रखदें तो वह मैदा मुद्दत तक ख़राब न होगा सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर२०१

(कौज़गंदुम) इसको फ़ारसी में जोज गन्दुम कहते हैं इसका गुण यह है कि जो इसका एक दाना लेकर दसरतिल शहद और तीसरतिल पानी में मिलाकर पकावें और देगका मुंह कपरमिट्टी करदें उत्तमोत्तम मद्य एक घड़ी में तय्यार होजावे और वीर्य के बढ़नेके वास्ते गुण करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०२

(कुमात) यह वह घासहै जो जमीन के नीचे चादके प्रभाव से पैदा होतीहै यह बीजसे नहीं जमती और न इसकी जड़ होती है किन्तु रत्नोके सदृश शक्तियों के समूह से उत्पन्न होती है कि जिस

तरह कि रत्न पृथ्वी से उत्पन्न होते हैं नबीकी हदीसमें लिखाहै कि कुमात तुरंजबीन गोंद के सदृश है इसलिये कि पृथ्वी इसको बे परिश्रम उगाती अरब कहतेहैं कि जो जमीन के नीचे कुमात का जीरा हो और गरमीकी बर्षाका जल उसको पहुंचे वह सबजी सांप होजातेहैं इसका एक प्रकार ज़ैतूनकी छायामें होताहै जिसको कुतरक कहतेहैं वह महा बिषहै इसी तरह जो कुमात दरख़्तकी छाया में जमे वह भी विषहै शेख़रईसने कहाहै कि इसकेखानेसे फालिज और लक़वा पैदा होताहै और कुमात आंखों को प्रकाशवान् करता है जैसा कि हज़रत मुहम्मद साहब की कहावत है कि बुद्धिमान हकीम इसके गुणको खूब जानताहै और शेख़के सिवाय औरों का यह निश्चयहै कि इसका सेवन मूत्ररोध और फ़ालिज पैदा करता है बाज़े कुमात ऐसेहैं कि जिनके खातेही मनुष्य तुरन्त मरजाता है और यह विषैले जीवधारियोंके निकट पैदाहोताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २७३

(लबलाब) इसको जबलुल मसाकीं और इश्का और तमूसभी कहते हैं और शीराज़ी भाषा में हरशा और हिन्दी में चांदरपल बोलते हैं इसका वृत्तांत यहहै कि जो वृक्ष इसके पास होता है उस पर यह लिपट जातीहै और महीन सूतकी तरह लम्बी होती जाती इसकी पत्ती लम्बी होतीहै पुरानी शिर पीड़ाको गुणदायक है और सिरके में पीस कर इसका लेप सिपर्ज़की पीड़ा (सिपर्ज़ उदर में एक जोड़ होता है)परकरना गुणकरे इसका अरक़ पित्तका निकालने वाला है शेख़रईस के बिचारमें इसका रस बालोंको नूरेकी तरह पर गिरा देता है और जूं के दूरकरने में अति गुणदायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २७४

(लसानुलहमल) यह घास बकरीकी ज़बानकी भांति होती है शीराज़ी में इसको वारतंग कहते हैं और यह दोप्रकारकी होतीहै बड़ी और छोटी शेख़रईसने कहा है कि कंठमालावालेकी गरदन

में लटकाना गुणकरे जो इसको जड़को उबालकर कुल्ली करें दांतों की पीड़ा को गुणकरे जो इसको मसूर की तरह पर पकाकर खावें मिरगीको गुणकरे और चौथियाके तपभी दूरहों सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ८०५

(लसानुलअसाफीर) यह इस वृक्षका फल है जिसको फ़ारसी में सरू कहते हैं और शीराज़ी भाषा में इसका नाम तुख़्मगवाहर है और फ़ारसी भाषामें कुन्जश्क इसके पत्तेघाव को भरते हैं शेखर-ईस के विचारमें उन्माद रोगको लाभदायक और वीर्य का पौष्टिक और लिंगका बलदाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ८०६

(लसफ) इसे फ़ारसी में कबर कहते हैं यह ख़राब ज़मीन पर उगती है साहबुलफलाहा का वचन है कि जब किसान इसकी ज़मीनको दुरुस्त करताहै तो यह घास नाश होजाती है इसके मेवे को नमकसे पालते हैं तो खूब पक्का होता है इसकी जड़में खीरेकी तरह दूसरा मेवा होता है और वह बहुत तेज़ होता है इसकोशीरे के क़बावमें डालते हैं कि उसमें उबाल न आवे इसके जड़की छाल रोघनफालिजऔर फफोलेको गुणकारक है कभी ऐसाभी होता है कि इसकी जड़का हरा छिलका दांतोंकी पीड़ामें गुणकारक होता है इसके पत्ते बवासीरको लाभदायक हैं और वीर्यके पौष्टिक भी हैं और यह एक प्रकार का ज़हरमोहरा है मुख्यकर जिसके कान में कोई दुखदाई जीव घुसगया हो जो उस समय इसका रसकान में टपकावें वह जानवर मरजायेगा और झाईं परभीलगाना लाभ-दायक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ८०७

(लफाख़) फ़ारसीमें शाह बरज कहतेहैं इसकी एकप्रकार सपेद पत्तीकी होती है कहते हैं कि वह नरहै इसका बहुत सूंघना सकते की बीमारी पैदा करता है जो एक सप्ताह पर्यंत इसका मर्दन उस कुष्टपर कि सपेद काले दाग शरीर पर पैदा होते हैं करें गुण करे

इसका सूंघना शिर पीड़ा पैदा करता है और नींद लाता है परन्तु इंद्रियां मट्टी होजाती हैं और जो इसका बीज करम्बके साथ मिला कर आग में रक्खें न ज़लेगा जो स्त्री इसका बत्ती बनाकर शहद में मिलाकर योनिमें रक्खे लहूका बहना बन्दहोगा और पीड़ा कोभी उपयोगी है जंगली लफाख़ जिसको यबरूज कहते हैं और उसकी मनुष्यकी सूरत होती है और उसका नर वृक्ष मनुष्यके सदृश होता है और मादा की सूरत स्त्री सी होती है जो उसकी जड़ मनुष्य की कठोर सूजनपर लगावें गुणकरे और कंठमालाके रोगऔर रतौला और जोड़ों की पीड़ापर इसका मरहम लगाना बहुत गुणकरे इसकी जड़शराबमें पीना मूर्च्छा करता है इसके खानेसे नींद बहुत आती है शेख़रईस का बचन है कि जो इसको शराब में पीसे कर तीन गिलास पियें ऐसी मूर्च्छा आवे कि चाहै जिस जोड़को काटैं उसको ख़बर न होगी और जो छः घड़ी तक हाथीदांत को उसके साथ पकावें नरम होजाता है ऐसा कि जो चीज़ चाहैं हाथसे बनालें सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ७०८

(लोबिया) शेख़रईस का बचन है कि इसको खाने वाला बुरे स्वप्न देखता है औरों का वाक्य है कि बदन का रंग पैदा करता है और मुरदे बच्चे को उसकी आंवल समेत बाहर निकालता है और ऋतु और जच्चाके लहूको जारी करता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ७०९

(लौक़) फ़ारसी मे इसको फीलगोश कहते हैं इसका पत्ता बुरे घावको गुणकारकहै और पुराने स्वरभंगको लाभदायक है इसकी जड़ शहदमें पीस कर झाईं छीप और निमिश (वह रोग है जिस से शरीरकी खालपर छीप और नुक़ते पड़जाते हैं) को नाशकरता है और शराबमें पीस कर फटे बदन पर लगाना कि सरदी में हो जाता है गुणदायक है और कामदेवका अधिककर्त्ताभी है जो इसकी जड़ पीसकर बदनपरमलें तो सांप उसमनुष्यसेभागेंगे सूरतयह है॥

में लटकाना गुणकरे जो इसको जड़को उबालकर कुल्ली करें दांतों की पीड़ा को गुणकरे जो इसको मसूर की तरह पर पकाकर खावें मिरगीको गुणकरे और चौथियाके तपभी दूरहों सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २०५

(लसानुलअसाफीर) यह उस वृक्षका फल है जिसको फ़ारसी में सरू कहते हैं और शीराज़ी भाषा में इसका नाम तुख़मगवाहर है और फ़ारसी भाषामें कुनश्क इसके पत्तेघाव को भरते हैं शेख़र-ईस के विचारमें उन्माद रोगको लाभदायक और वीर्य का पौष्टिक और लिंगका बलदाता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २०६

(लसफ) इसे फ़ारसी में कबर कहते हैं यह ख़राब ज़मीन पर उगती है साहबुलफ़लाहा का बचन है कि जब किसान इसकी ज़मीनको दुरुस्त करता है तो यह घास नाश होजाती है इसके मेवे को नमकसे पालते हैं तो खूब पका होता है इसकी जड़में खीरेकी तरह दूसरा मेवा होता है और वह बहुत तेज़ होता है इसकोशोरे के क़बाबमें डालते हैं कि उसमें उबाल न आवे इसके जड़की छाल रांघनफालिजऔर फफोलेको गुण कारक है कभी ऐसाभी होता है कि इसकी जड़का हरा छिलका दांतोंकी पीडामें गुणकारक होता है इसके पत्ते बवासीरको लाभदायक हैं और वीर्यके पौष्टिक भी हैं और यह एक प्रकार का जहरमोहरा है मुख्यकर जिसके कान में कोई दुखदाई जीव घुसगया हो जो उस समय इसका रसकान में टपकावें वह जानवर मरजायेगा और झाई परभीलगाना लाभ-दायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २०७

(लफाख) फ़ारसीमें शाह तरज कहतेहैं इसकी एकप्रकार सपेद पत्तीकी होती है कहते हैं कि वह नरहै इसका बहुत सूंघना सकते की बीमारी पैदा करता है जो एक सप्ताह पर्यंत इसका मर्दन उस कुष्टपर कि सपेद काले दाग शरीर पर पैदा होते हैं करें गुण करे

क़ाज़ी अबूअली अलसपोखी ने कहा है कि एक मनुष्य जलंधर की बीमारमें पड़ा सम्पूर्ण हकीम उसके इलाजसे दीनहुये तो जबरोगी ने जीने से हाथ धोये तो बेपरवाई करने लगा और जो उसके मन में आता वह खाता और जो बस्तु उत्तम देखता उसको मोल लेकर खालेता एक दिन उसने भूनीहुई टिड्डियां लेकर खाई जिसके खातेही थोड़ी देरके पीछे दस्त आनेलगे यहां तक कि तीन दिन के अंदर तीन सौ से अधिक दस्त आये अन्त को आराम होगया उस समय कई हकीमों ने इस हालको मालूम करके उस टिड्डियों वाले को ढूंढ़ा और उसके साथ उसके स्थान को गये और उस मौज़े के चारोतरफ माज़रयून दिखाईदी सो हकीमसमझगये तो जबटिड्डियों ने माजरयून खाया तो माज़रयून का मुख्यबल और वह गरमी उसकी पेटमें निर्बल होगई और समभाव पर आकर रोगी को आरोग्य किया ईश्वर का धन्यबाद है कि जब हकीम दीनहुये तो ईश्वर ने उस रोगीको चिकित्सा ऐसी टिड्डीसे पैदा करदी सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २८३

(माहूदाना) इसे हबुलमलूक भी कहतेहैं इसका पत्ता छोटी एक अंगुलीके बराबर छोटी मछलीके सदृश होताहै इसका फल तीन २ दानेकी बाली होतीहै और हरफलमें तीनदाने काले होतेहैं जलंधर गठिया और रांघन और कूलंज और नकरसको गुण करे जो इस के पत्तोंको मुरगके मांसकेसाथ छःसात दानो समेत शोरवा पकावें कफ निकालेगा परन्तु उस पर ठंढा पानी पीना जरूर चाहिये सूरत यहहै—

तसवीर नम्बर २८४

(माहीज़ज) इसका अर्थ मछलीका बिपहै एकप्रकार की घास होती है जिसके पत्ते तरखून के सदृश होतेहैं और इसकादरख्त शबरमके वृक्षकी भांति होताहै और उसकी शाखा पतली और सीधी होतीहै और रंग ज़र्दीलिये होताहै जो इसको मछलियों के तालाब में छोड़दें तो उसकी मछलियां मस्त होकर ऊपर निकलआवें और

तसवीर नम्बर ३८०

(नीलोफर) यह बहुधा जंगलोंके तालाबों में उगता है इसकी कलि जल पर प्रकट रहती हैं और रात्रि को गुप्त और दिन को प्रतीत रहती हैं बलेनास का वचन है कि जो इसको छायामें सुखा कर आगपर डालें तौ न जलेगा शेखरईसका वचन है कि नीलोफरके सेवन से नींद बहुत आती है और गरमी की शिर पीडाको फ़ायदा करे वीर्य कमकरे और वीर्यको गाढ़ा करता है स्वप्नमें वीर्यपात को बंद करदेता है इसका बीज पानीमें पीस कर लगाना छीपको नष्ट करता है और गोंदके साथ बालखोरे पर लगाना बाल निकालता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३८१

(माश) (उड़द) शीराज़ी में इसको सूमार्स कहते हैं शेखरईस के निश्चयमें इसका खाना वीर्यका हानि कारकहै और लोगोंने लिखा है कि जोड़ोंके दर्द में इसका लेप करना फ़ायदा करे परन्तु इसका सेवन दांतों पर करना दांतोंको निर्बल करता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३८२

(माज़रयून) यह घास प्रसिद्ध है बाज़ी बड़ी और बाजी छोटी होती है बडीके पत्ते जैतूनके सदृश होतेहै और बाजी जो काली रंगत की है वह हलाहल विष है परन्तु झाईं छीप और निमिशके वास्ते हरएकप्रकारका माज़रयून गुणदायक है जो करस्व को मिलाकर सेवन करे बहुतही गुणकरे शराब के साथ पीना दुखदाई जीवों के दुःखसे निर्भय करता है जो आटेमें पकाकर कुत्ते या मेंढकको खिलावें तुरंत मरजाय मुख्य करके मनुष्यको तो दो दिरम मारडालने वाला विष है शेखरईस का वचन है कि पानी में मछली को मार डालता है और उसका लेप बदन के दांतों को गुण दायक है और घावके कीड़ों को बाहर निकालता है और इसको दो दिरम पीना जलंधरको गुण करे क्योंकि खानेके साथही दस्त आते हैं और इसी से रोग दूर होता है परंतु इससे इलाज करना भयमान होता है

इसको उबालकर इसकारस बिच्छूकेघावपरलगावें पीड़ा दूरहोजावे सूरत यह है॥
तसवीर, नम्बर ३८८

(नरजिस) अर्थात् नरगिस हजरत मुहम्मद साहबने कहा कि हर मनुष्यके मनमें बरस या कोढ़ या उन्मादकी एक शाखा होतीहै सो उस शाखाको सिवाय संघने नरगिसके और कोई चीज़ दूरनहीं करती चाहे वह वर्षभरमें एक बेर भी नरगिस सूंघे जालीनूस का बचनहै कि जिसके पास केवल दोरोटियांहों उसको चाहिये कि एक खाय और एकके बदले नरगिसमोललेक्योंकि रोटीकेवलशरीकाभो-जनहै और नरगिसप्राणका भोजनहै साहबुलफलाहाका बचनहै कि जो इसके कच्चे फलको तोड़ें और दो कांटे उसमें चुभो दें और फिर उसको सुखा कर बोदें तो उससे दुगने नरगिस होंगे कहतेहैं कि भोगके समय जिसकी दृष्टि नरगिसपर पड़जाय बीर्य बँध जाय जो फिर न खुले जो प्याज़ी नरगिस के दो टुकड़े में किसी कपड़े में मेढ़ककी आंख समेत बांधकर किसी सोतीहुई स्त्रीकी छातीपर रखदें तो वह स्त्री अपने मनकाभेद कहदेगी और इसका घावपर लगाना घावको भरता है जो शिरमें मले गंजका रोग अच्छाहोजाय शेख़-रईस का बचनहै कि जो कांटा किसी किसी चीजका जोड़में गड़जाय प्याज़ी नरगिसके लेपकरनेसे कांटा बाहर निकालदेतीहै और शहद और भी जल्दी गुणदायकहै इसका फूल शिर पीड़ा और छींप और झाईको गुणकारक है जो चार दिरम शहदमें मिलाकर पियें मुरदे बच्चेको पेटसे बाहर निकालता है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८८

(नसरीं) फ़ारसीमें इसको नस्तरन और हिन्दीमें सेवती बोलतेहैं यह दो प्रकार एक जंगली और दूसरी बाग़की होतीहै शेखरईसने लिखाहै कि [illegible] त कीड़ों [illegible] है और कानकी झंझ-नाहट को दूर [illegible] जंग [illegible] का लेप माथेपर करना शिरकी [illegible] ड़ा [illegible] औ [illegible] का [illegible] रहोती [illegible] ाहब [illegible] च न [illegible] ड़ि [illegible] लाभ

जोड़ों की पीड़ा रांघन और पीठ की और नकरस (अर्थात् पांवके अँगुलियोंकी पीड़ा को फ़ायदा करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ९८९

(मरज़ंजोश) एक सुगंधित घास होतीहै शेख़ रईसका बचनहै कि शिरपीड़ा को गुण करे जो इसको पकाकर रस पिये जलंधर दूरहो और बन्द पेशाब को जारी करताहै और सिरकेमें पीसकर बिच्छूके विषको गुण करे इसका बीज एक दिरम पानीमें पीस कर पीना भिड़की पीड़ा को ठहराता है इसका तेल फालिज के लिये उत्तम है सूखा मरज़ जो शहदमें मिलाकर चोटकी निलाहट पर लगाना गुण करे मुख्य करके कि आंख के नीचेहो सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ९८८

(नारदैन) रूमी सुम्बुल (बालछड़) है इसके पत्ते कुसुमके पत्तोंके सदृश होतेहैं और डाल बराबर और पीली होतीहै इसमे फूल और मेवा नहीं होता आंखों की पलकें उगाताहै इसका पीना मूत्र और मासिक रुधिर को जारी करताहै और असहक़ के वास्ते फेफड़ेको हानि करताहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ९९०

(नानख्वाह) अर्थात् अजवायन इसको शीराज़ी भाषामें ज़ैतान कहते हैं साहबुलफ़लाहा कहताहै कि आठ महीने हरी और चार महीने सूखी रहती है जो इसको सदा सेवन करे लहू बहुत पैदा हो जो जाड़के मौसममें नर बकरे इसको खावे वीर्य अधिक हो और बकरियां बहुत बच्चे गाभिनहों और दूध और पशम बहुत हो और जो अजवायन को छुहारे के वृक्षके नीचे बोदें तो छुहारेके दरख़्त को फलदार करे और हर दुखदाई जीवोंके घावको गुण दायकहै बलीनासका बचनहै कि जो कोई सदा अजवायन खाया करे उसके मुखका रंग पीलाहो बहुधा कोप और सपेदकाले दागोंकी औषधियोंमें संयुक्तकी जाती है जहांसे लहू टपकताहो शहद मिलाकर लगावे बन्दहोजावे जो

इसको उबालकर इसका रस बिच्छूके घावपर लगावे पीड़ा दूर होजावे सूरत यह है॥ तसवीर नम्बर २८८

(नरजिस) अर्थात् नरगिस हजरत मुहम्मद साहबने कहा कि हर मनुष्यके मनमें बरस या कोढ़ या उन्मादकी एक शाखा होतीहै सो उस शाखाको सिवाय सूंघने नरगिसके और कोई चीज़ दूर नहीं करती चाहे वह वर्षभरमें एक बेर भी नरगिस सूंघे जालीनूस का बचनहै कि जिसके पास केवल दोरोटियांहों उसको चाहिये कि एक खाय और एकके बदले नरगिस मोललले क्योंकि रोटी केवल शरीरका भोजनहै और नरगिस प्राणका भोजन है साहबुलफलाहाका बचनहै कि जो इसके कच्चे फलको तोड़ें और दो कांटे उसमें चुभो दें और फिर उसको सुखा कर बोदें तो उससे दुगने नरगिस होंगे कहतेहैं कि भोगके समय जिसकी दृष्टि नरगिसपर पड़जाय वीर्य्य बँध जाय जो फिर न खुले जो प्याज़ी नरगिस को दो टुकड़े में किसी कपड़े में मेढ़ककी आंख समेत बांधकर किसी सोतीहुई स्त्रीकी छातीपर रखदें तो वह स्त्री अपने मनका भेद कहदेगी और इसका घावपर लगाना घावको भरता है जो शिरमें मलें गंजका रोग अच्छाहोजाय शेखुरईस का बचनहै कि जो कांटा किसी किसी चीजका जोड़में गड़जाय प्याज़ी नरगिसके लेपकरनेसे कांटा बाहर निकालदेतीहै और शहद और भी जल्दी गुणदायकहै इसका फल शिर पीड़ा और छीप और झाईको गुणकारक है जो चार दिरम शहदमें मिलाकर पियें मुरदे बच्चेको पेटसे बाहर निकालता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८९

(नसरीं) फ़ारसीमें इसको नस्तरन और हिन्दीमें सेवती बोलतेहैं यह दो प्रकार एक जंगली और दूसरी बाग़की होतीहै शेखरईसने लिखाहै कि बाग़की सेवती कीड़ों को मारती है और कानकी झंझनाहट को दूर करतीहै और जंगली सेवती का लेप माथेपर करना शिरकी पीड़ाको दूर करताहै और पीनेसे हिचकी और कै दूर होती है साहब अख़्तियारात का बचनहै कि जो झाईंपर लेप करें लाभ

करे इसको सुखाकर आधा मिस्काल रोज़ खाना युवावस्था को बाकी रखताहै और बुढ़ापा नहीं आनेपाता॥

तसवीर नम्बर ३८०

(नाअनाअ) अर्थात् पोदीना शेखरईस कहतेहैं कि मेदेको बल कारक और हिचकी ठहराने-वाला और वीर्य्यका बलकारकहै और पेटकेकीड़े मारताहै जो भोगके पहिले स्त्री इसको खाले तो गर्भवती नहो माथेपर लगाना शिरपीडा दूर करताहै इसका रस सिरके के साथ लहूके चलने को बन्द करताहै और कामदेवको प्रेरणा करता मतलीको लाभदायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८१

(हलियून) इस घासमें बीज और गिलाफ नहीहोता और कई प्रकारकी होतीहै बाजी जगली पहाड़ोंपर कई नरम धरतीपर पैदा होतीहै शखरईसका बचनहै कि इसके पत्तोंको उबालकर पीनाकमर की पीड़ा रांघन और कूल जरीहीको गुणकरे इसकी जड़पकाकर खाना पेशाबको जारी और प्रसून करताहै और वीर्य्य के बढ़ाने में अति प्रभाव रखताहै कुत्तोंके लिये हलाहल बिपहै इसकीजड़ मद्य में पकाकर रतीलाके घावपर लगाना लाभ करे और इसकाबीज दांतोंकी पीड़ाके वास्ते गुणकारकहै जो स्त्री इसको शाफा बनाकर भगमेंरक्खे ऋतुकारुधिर जारीहो परन्तु मेदेकेलिये हानिकारकहै अजायबुलमखलूकातके निर्मापकने लिखाहै कि मेरे एकमित्र ने मुझ से यहहाल कहा कि कई अरबलके पहाड़ोंमें हलियून बहुत होताहै वहांका आमिल हर वर्ष उसको शराब बनाकर अरबल के शाहको सौगात भेजाकरता था एकबेर लोग इस शराब को लिये जाते थे अकस्मात् लूटहुई और बदमाशोंने वहसब बरतन अपने अधिकार में किये जबउनकामुहँ खोला शहद समझकर बहुत पीगये तुरन्त दस्त जारीहुये यहांतक कि निर्बल होकर उसीजगह गिरपड़े मुसाफिरों ने यहहाल देखकर शहर अरबलमें खबरकी तो वहां से बादशाह मुजफ्फरुद्दीन ने कई लोगों को भेजा उन्होंने चारपाइयोंपर

लादकर उनको राज्य सभामें विद्यमान किया मार्ग में लोग इन चोरोंपर हँसतेथे कि हलियूनकेबेहोश जातेहैं निदान चिकित्सालय भेजेगये कईलोग आरोग्य हुये बाक़ी मरगये बादशाह ने उनशेषों को छोड़दिया कि इतना दुःखउनको बहुत हुआ॥

तसवीर नम्बर २६२

(हिन्दबाफ़ारसी) इसको कासनी कहतेहैं कोई जंगली और कोई बाग़ की होती है बाग़की बहुत महीन और पत्ता चौड़ा और करुवा होताहै मुहम्मद साहबने श्रीमुखसे कहा कि इसके हरएक पत्ते में स्वर्ग के पानी की एकरबूंदहै शेख़रईस का बचनहैकि इसकामरहम नकरस को गुणकरे इसकी पत्ती और जड़का मरहम सांप बिच्छू भिड़ बिल्ली और कुत्ते के काटेहुये घावको गुणकारक है और चोथिया के ज्वरको भी लाभकरै कहतेहैं कि जिसके दांतपीड़ा करतेहों वह मनुष्य उस महीनेमें जिसकी पहिलीरात्रि इतवारकी हो और उसी रात्रिको चन्द्रदर्श हो तो एकपत्ता उसका लेकर वह मनुष्यचन्द्रमा के सामने खड़ेहोकरशपथकरे कि इसमहीने में कभी घोड़े का मांस हिन्दबाद के सामने न खाऊंगा सोदांतों को पीड़ा नष्टहोगी और इसटोटके के कारण फिरपीड़ा न होगीसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर२६३

(दरस) इसका बीज तिलकी सदृश होताहै और बोयाजाताहै जब इसकी बाली सूखकर फटती है दरस बाहर निकलआता है कहतेहैं कि एक वर्षका बोयाहुआ दसवर्ष तक फलताहै जो इसको मलैं झाईं और निमिस (वहरोग जिससे बदनपर छीप और बिन्दु पड़जातेहैं) को गुणकरे इसका एक दिरमपीना पथरी और हृदय पीड़ा और पथरीकी पीड़ाको जो सरदीसे हो दूरकरताहै इसहाक़ के बिचार में फेफड़े के लिये हानिकारकहै और इसको दुरुस्तकरने वाला शहदहै जालीनूस ने लिखाहै कि बावले कुत्तेके घावको गुण करे सूरत यहहै॥

करे इसको सुखाकर आधा मिसकाल रोज़ खाना युवावस्था को बाकी रखताहै और बुढ़ापा नहीं आनेपाता ॥

तसवीर नम्बर ३६०

(नाग्रनाग्र) अर्थात् पोदीना शेखरईस कहतेहैं कि मेदेका बल कारक और हिचकी ठहराने-वाला और वीर्य्यका बलकारकहै और पेटकेकीड़े मारताहैं जो भोगके पहिले स्त्री इसको खाले तो गर्भवती नहो माथेपर लगाना शिरपीड़ा दूर करताहै इसका रस सिरकेके साथ लहूके चलने को बन्द करताहै और कामदेवको प्रेरणा करता मतलीको लाभ दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६१

(हलियून) इस घासमें बीज और गिलाफ नहींहोता और कई प्रकारकी होतीहै बाजो जगली पहाड़ोपर कई नरमधरतीपर पैदा होतीहै शखरईसका वचनहै कि इसके पत्तों को उबालकर पीनाकमर की पीड़ा रांवन और कूलंजरीहीको गुणकरे इसकी जड़पकाकर खाना पेशाबको जारी और प्रसून करताहै और वीर्य्य के बढाने में अति प्रभाव रखताहै कुत्तो के लिये हलाहल बिपहै इसकीजड़ मद्य मे पकाकर रतीला के घावपर लगाना लाभ करे और इसकाबीज दांतोंकी पीड़ाके वास्ते गुणकारकहै जो स्त्री इसको शाफा बनाकर भगमेंरक्खे ऋतुकारुधिर जारीहो परन्तु मेदेकेलिये हानिकारकहै अजायबुल्मखलूकातके निर्मापकने लिखाहै कि मेरे एकमित्र ने मुझ से यहहाल कहा कि कई अरबलके पहाड़ोंमें हलियून बहुत होताहै वहांका आमिल हर वर्ष उसकी शराब बनाकर अरबल के शाहको सौगात भेजाकरता था एकबेर लोग इस शराब को लिये जाते थे अकस्मात् लूटहुई और बदमाशोंने वहसब बरतन अपने अधिकार में किये जबउनकामुँह खोला शहद समझकर बहुत पीगये तुरन्त दस्त जारीहुये यहांतक कि निर्बल होकर उसीजगह गिरपड़े मुसा-फिरों ने यहहाल देखकर शहर अरबलमें खबरकी तो वहां से बाद-शाह मुजफ्फरुद्दीन ने कई लोगों को भेजा उन्होंने चारपाइयोंपर

न करता तो भी नष्टहोजाता सो इसी आवश्यकता पर यह शक्ति कृपा कीगईहै, रही हिलनेकी शक्ति तो जब मनुष्य को भोजन की आवश्यकता होती और उसको चलनेका बल स्थावरों के सदृश न होता तो भोजनको ओर न पहुंचसक्ता इसलिये ईश्वर ने चलने की शक्तिदी कि जिधर चाहे चलाजावे जो यहशक्ति न हो तो खाने पीने से निकम्मा होकर उसवृक्ष के सदृश जो पानी न पाकर कुम्हिला जाता है यह भी मरजाता जब पशु एक दूसरेके शत्रुहुये तो उनको हथियार दिये गये कइयों को सींग और दांत कृपा हुये कि अपने शत्रु को दूरकरसकें जैसे कि हाथी शेर गाय आदि और कई ऐसेहैं कि भागकर अपना जीव बचासकें उनको भागनेकी शक्ति दी गई जैसे हिरन खरगोश और पक्षी आदिक और कई ऐसे हैं जो अपने हथियार से अपने शरीरको बचासकें जैसे सेई और कछुआ आदि और कईऐसेहैं जो अपनेको अच्छीतरहसे दृढ़ता पूर्वक किलेमेंरखते हैं जैसे चूहा और सर्प इत्यादि ईश्वर ने हर जीवधारी को उसकी आवश्यकता के अनुकूल अलग २ जोड़ोंसे प्रकटकिया इसीकारण हरएक अपनेरङ्ग और रूपसे प्रकाशमान हुआ खिताब के पुत्र हज़रत उमर मुहम्मद साहब से कहावत कहतेहैं कि ईश्वर ने पृथ्वीमें एकहज़ार जाति उत्पन्नकी जिसमें छःसौ दरियामें चारसौ पृथ्वीमें हैं और कई बुद्धिमानों का वचनहै कि मनुष्य तमाशा देखना चाहे तो उसे उचितहै कि रात्रिको किसी जङ्गलमें रोशनी करे और उस ओर दृष्टिकरे जिधर आग जले उधर देखे कितनी तरह के स्वरूप दिखाई देतेहैं जो कभी किसी के विचारमें न हो अबकुछ इसजगह पर कई जीवधारियों का उनके अद्भुत वृत्तान्त और स्वभाव समेत वर्णन करतेहैं ॥

प्रथम प्रकार [illegible] वर्णन में ॥

इससमूहकी [illegible] मां[illegible] करनीचाहिये पहिले बड़ाई
है प्रकटहो कि [illegible] र्या[illegible] ईश्वरने इसको
नानाभांति के [illegible] और इसके

तसवीर नम्बर २६४

(यक़्तैन) अर्थात् कद्दू साहबुलफल्लाहा कहताहै कि जो इस को बड़ा करनाचाहे तो इसके बीजको पृथ्वीमें उलटाबोना चाहिये जो इसको शहद और दूधमें भिगोकर बोवें इसकाफल मीठा होगा हज़रत पैग़म्बर साहबका वचनहै कि जिस वस्तुको पकाओ उसमें कद्दूबहुतछोड़ो क्योंकि मनकी चिन्ता और शोककोदूर करताहै इसका गुण यहहै कि इसके दरख़्त पर मक्खी नहीं बैठती इस कारण कि जब ईश्वरने हज़रत यूनस को मछलीके पेटसे निकाला कद्दू के वृक्षकी उनपर छायाकी कि हज़रत यूनसके शरीरपरमक्खी न बैठे और उनके शरीरकी खाल जल्दी मज़बूतहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६५

(ईश्वर की कृपा से स्थावर अर्थात् वृक्ष और बेलों का वर्णन पूर्ण हुआ) ॥

तीसरीनज़र जीवधारियोंके वर्णनमें और वह कईप्रकारपरहैं॥

प्रथम प्रकार मनुष्यके वर्णन से॥

यह सम्पूर्ण सृष्टि तीनप्रकारकी है परन्तु चौपाये तीसरेप्रकार परहै पहला दरजा कानका है दूसरा दरजा स्थावरका है क्योंकि वृक्ष कानें और चारपायों के दरजेमें समहै इनमें हिलने झुलनेका बल नहींहै परन्तु बढ़ना जीवधारियों की भांति परहै तीसरे दरजे पर पशुहैं जिनमें बढ़ने और चलने फिरनेका बल कृपाकियागया है और इस शक्तिको ईश्वर ने हरएक में इकट्ठा कियाहै यहां तक कि मक्खी औ मच्छड़ में भी है परन्तु ईश्वर की आज्ञानुकूल वह सर्व प्रकार के हिलनेकी शक्ति मरने के समय झूठी पड़जातीहै जो कि जीवोंके लिये ऐसे उपद्रवहै कि वह उनसे मरजावे इसलिये उनको एक ऐसा बल दियाहै कि जिसके ज़ोर से अपने दुःखदायी शत्रु को पहिचान सक्ते हैं और अपने शरीर को बचाते हैं यदि यह मालूम करनेका बल न होता और मनुष्य भूखको मालूम न करसक्ता तो भूखसे मरजाता या जब सोता अपनेअङ्गको आगकेजलनेसे मालूम

किसीमनुष्यको इच्छा न करनी चाहिये क्योंकि वहमनुष्यकी समझ सेवाहरहै और इसीवास्ते ईश्वरने कहाहै कि यहजीव अपनेगर्दनमें दुःख की रस्सी डाले हुयेहै और मरने के पीछे पुण्य और पाप की आशा रखताहै और यहभी ईश्वरका वर्णनहै कि जो मनुष्य ईश्वर की राह में मरे हैं उनको मुरदा न समझो वरन वह जीते हैं और ईश्वरसे भोजन पातेहैं और जो उनको परमेश्वर की कृपा से चीज़ें मिलीहैं उससे वह प्रसन्न हैं वा नरक और दुःखमें हैं जैसा ईश्वर ने कहाहै कि नरककी आग फरऊनकी नास्तिकजातिके सामने सुवह और शाम दिखाई जातीहै और प्रलयके दिन फरिश्तों को आज्ञा होगी उनको बड़ा दुःखदो मालूम हो कि यह जीव शरीरमें राजाके सदृश होताहै और उसकी राजधानी मनहै जोड़ नौकर बुद्धि उपदेश करनेवाली मंत्रिनी और सभ्यकी तरह परहै और भूख उसके नौकरोंके भोजनको ढूंढ़तीहै और नेत्र एक दुष्क्रिय नीच मनुष्य के सदृश हैं कि अगर कोई उसको लाख उपदेश करे परन्तु उसका उपदेश इसे मारडालने वाला बिष मालूम हो और सदा बुद्धिसे जो उपदेश करनेवाली मंत्रिनी है हर बातमें झगड़ा करताहै और ब्रह्माण्डमें मालूम करनेकी ताक़त ख़बर पहुचाने वालेकी तरह पर है जो हमेशा इन्द्रियों की खबर किया करती है और स्मरण की शक्ति जिसका निवासस्थान ब्रह्माण्ड के अन्त में है कोषाधिप है जिह्वा उल्थक और पांचों इन्द्रियां दूत जो हरओर नियत हैं जैसे नेत्ररूप रंगकी ओर और कान शब्दपर इसतरह हर एक अपने२ कामकाहाल विचारको सुनाता है और विचार उसको कोषाधिप के अधिकार में देताहै कि प्राण जिन ख़बरों की आवश्यकता देखे अपने देशके प्रबन्ध के लिये उसके उपायमें लगे और वह ईश्वर शुद्ध है जिसने प्रकट और गुप्तवस्तु मनुष्य को कृपा की यह जीव सदाकेलियेहै परन्तु एकदशासे दूसरीदशामेंजाताहै जैसा कि कभी बापकीपीठमें है और कभी माताके उदर में हजरतअली ने अपनी पुस्तकमें लिखाहै कि ऐ लोगो ईश्वरने तुमको सदाके वास्ते उत्पन्न

जौहर को जीव और शरीर से बांटा और इसकोगुप्त और प्रकटकी बुद्धि और समझ कृपाकी और बोलनेकी शक्ति भेजे में दी और विचार और वर्णन स्मरण आदि दिये और उस पर बुद्धिको नियत किया सो बोलने की शक्ति तो राजा बुद्धिमंत्री और उसकेसाथीसेना और इन्द्रियां इन सबको प्रकट करनेवाली शरीर राजधानी और जोड़ नौकर चाकर और प्राण मुसाफिर हैं यह मुसाफिर अपने सफ़रमें हरबातको मालूम करके उसकाहाल मालूमकरनेवाली शक्ति से कहताहै और मालूमकरनेकी शक्ति इन्द्रिय और प्राणोंके बीचमें है और वही सब ख़बरें बोलनेवाली शक्ति के सामने कहता है उस समय बुद्धि उचितबातको विचारतीहै इसीकारण मनुष्यको विचारवान् कहतेहैं और जो कि भोजन के कारण बड़ा होताहै बनस्पति है और हिलनेजुलनेके कारण पशु और सबकामूल मालूम करनेसे देवताहै सो मनुष्य इनतीनो बातोंका समूहहै यदि मनुष्य पशुओं के काम करनेलगा तो वह पशुहै यदि मैथुनपर उतारूहुआ बकरा है यदि भोजन की अधिक चाहना करने लगा बैलहै जो लोभी है कुत्ता है जो मन मे कपट रखता है ऊंट है जो अहंकारी हुआ तो चीता कहेंगे जो मक्कारहै लोमड़ी के सदृश है जो इनसब अवगुणों से भरपूर है शैतान का चेला कहाजावेगा तो जो मनुष्य अपनी हिम्मत देवगुणों के प्राप्तकरने मे ख़र्चकरे तो बहुत अच्छी बात है फिर उसका मन नीचे की तरफ न झुकेगा और इसीतरह ईश्वर ने क़ुरान में सैनकी है कि जिस मनुष्य का मन चाहे अपने चित्त की शुद्धता से बड़ा होजावे ॥

मनुष्य के मूल का वर्णन ॥

जब मनुष्यको कोई बड़ा काम होताहै कहताहै कि मैंने किया या मैने कहा इसदशा में वह मनुष्य अपने शरीर को तो जानताहै परन्तु अपने प्रकट और गुप्त जोड़ों को भूला हुआहै और इसदशा में उसका जीव सब समझने के लायक़ चीज़ों को जानता है और हरप्रकार के कामोंको भूलाहै परन्तु प्राणोंके मूलके मालूम करनेमें

सदाउसओर ध्यान रखताहै प्राणजबतक शरीरकेसाथरहताहैसदा शोकयुक्तरहताहै और इस शरीरकेशोधन में सख़्तीउठाता है और बड़े २ कठिन कामों में संसार के माल और असवाव के पाने के वास्ते यत्न करताहै और जब शरीरसे अलगहोताहै आनन्दपाता है जैसा कि हमने ऊपर वर्णन कियाहै कि एक बुद्धिमान् पुंश्चली स्त्रीकी प्रीतिमेंफँसा था अब उसको उसकी प्रीतिके छोड़नेकेबिना आनन्द नहीं मिलसक्ता ॥

मनुष्य के स्वभाव के विषय में ॥

प्राणों के लिये स्वभाव एक दृढ़रूप है जिससे सुगमता पूर्वक विचार बिना कामहोते हैं और स्वभाव की प्रशंसा में इसलिये दृढ़ बन्धि लगाईगई कि जिसकिसी से किसीप्रकार का दातव्य किसी कारण से हुआहो तो कभी न कहेंगे कि उसकी स्वाभाविक उदारता है जबतक उसकीप्रकृति में दृढ़ता पूर्वक न हो और सुगमता पूर्वक कामों के होने का निबन्ध इस सबब से लगाया गयाहै कि जो कोई दुःख पहुंचने से द्रव्यदानकरे या क्रोध के समय किसी विचार से चुपहोरहेतो नहींकहसक्ते कि इसमेंस्वाभाविकउदारता है या प्राकृतिक शान्ति है तो जो उसका रूप ऐसाहो कि उससे श्रेष्ठकार्य धर्म्मशास्त्र वा बुद्धिके अनुसार हो उसको उत्तमस्वभाव कहेंगे हरतरहसे स्वभाव चाहे बुराहो या अच्छा कभी तो प्राकृतिक है अर्थात् जन्म का होताहै और कभी अभ्यास कियाहुआ कि वह अपने में अच्छीबातोकी आदत डाले जो कोई अच्छे स्वभाववाले न हों तो अपनेवास्ते परिश्रमउठाकर उसकोप्राप्तकरे अच्छेस्वभाव का गुण लोक पर्लोक में बड़ाहै हजरत पैग़म्बर साहबकी कहावत है कि हज़रत ने कहा कि सब वस्तुओंसे भारी जो हिसाव के जोड़ में रक्खेजायँगे उत्तम स्वभाववाले होंगे समरा के पुत्र अब्दुल्ला ने कहाहै कि एकबेर हम ख़ुदा के पैग़म्बर के पासगये हज़रत ने कहा कि मैंने कलरात्रिको यह स्वप्नदेखाहै कि एकपुरुप हमारेचेलों से अपने घुटनों के बल पड़ाहुआहै और उसके और ईश्वर के बीच

किया है अर्थात् सदा रहोगे परन्तु एक घर से दूसरे घर को बदलना अवश्यहै अर्थात् पिता की पीठ से माताके उदरमें और वहांसेसंसारमें और यहांसेअन्तरिक्षमें और अन्तरिक्षसे नरक या स्वर्गको फिर यहकहा कि पृथ्वीसे हमने तुमको उत्पन्नकिया और उसमें तुमको लेजायेंगे और उसीसे फिर तुमको निकालेंगे शेख़र-ईसने शरीर और प्राणोंके संयोग और इनकेवियोगमें अरबीभाषा में काव्यकही और वह इसजगहपर वैसेही लिखीजातीहै और जो कि उसका अक्षरार्थ वृथाहै इसकारण नही लिखा परन्तु उनसब कासंक्षेपयहहै कि जीव ऊँचोपदवीसे उतरकर नीचपदवीमें आया कि उसकी प्रतिठा होगी यहां आकर शरीर की क़ैद में फँसा अब चाहताहै कि मैं इस स्थानको छोड़ूं और शरीर नहीं चाहताहै कि उससे अलग हो और जबवहजीव जानेकी इच्छा करता है तो वह प्रीतिके कारण बियोगकी पीड़ासे रोता है परन्तु जब लाचारी का समय आवेगा तो किसीकावश न चलेगा और कोईरोक न सकेगा और सब संसारी स्वादवृथा रहजायेंगे और कोई सृष्टिका आनन्द साथ न जायेगा और किसीका परिश्रम काम न आयेगा कहते हैं कि इनप्राणोंका इस शरीर और उसके सम्बन्धियों में क़ैद होना ऐसाहै जैसे कोई बुद्धिमान् किसीशहरमें किसीपुंश्चलीस्त्रीकी प्रीति में फँसा हो और वह व्यभिचारिणी बहुधा उस विचारे बुद्धिमान् मनुष्य को खाने पीने और पहिरने के विषयमें दुःखपहुँचाये और बुद्धिमान् उसकी प्रीति के कारण उसकी सेवा का परिश्रम अपने ऊपर स्वीकार करे और अपने देशके मित्र बांधव और प्रीति को भूलजावे और उसकीप्रसन्नता के सिवाय और कोई कार्य न करे और उसकेबियोगके दुःख न सहसके वरन यहसमझे किजो इसकी सेवा न करूंगा और यह मुझसे अप्रसन्न होजावेगी तो मैं मर जाऊंगा सो इसीतरह संसारकी दशाहै कि हरमनुष्य इसकीप्रीति में फँसाहैछिपा न रहे कि प्राणजीव के जौहर हैं और कभी यह खानेपीनेपहिरने और मैथुन की इच्छानहीं रखते हैं परन्तु शरीर

करके बाक़ीलोगों को गर्दनमारने की आज्ञादी उस समय हज़रत अलीने कहाकि ईश्वर एक है और अपराध एकसा तो इसमनुष्य का छूटना किसरीतिपर उचितठहरा हज़रतने कहा कि जबरईल मेरेपास ईश्वरकी आज्ञालाये कि इसमनुष्य को इसकी उदारतासे ईश्वरने क्षमा किया है और यहभी प्रसिद्ध है कि ईश्वर ने हज़रत मूसाको आज्ञाभेजी कि सामरीको न मारियो क्योंकि वह उदारहै अबीतालिब के पुत्रजाफर और उसके पुत्र अब्दुल्लाकी कहानी है कि उनको इमामहसन और इमामहुसेन ने माल के ख़र्चकरने से मनाकिया अब्दुल्ला ने उत्तरदिया कि ईश्वर ने मुझपर कृपाकी है और मैंने अपना स्वभाव उसके लोगोंपर कृपाकरने का अंगीकारकिया है तो डरता हूं कि जो अपना स्वभाव छोड़ूं कहीं ईश्वर अपना अनुग्रह मुझसे छोड़दे इनकी उदारता कीयह कहावत है कि अबीअम्मार का पुत्र अब्दुलरहमान किसीलौंड़ीसे प्रीतिरखने लगा और उसकी प्रीति प्रसिद्ध हुई यहांतक कि ताऊसमजाहद और अताने उसकेपासजाकर बुराभलाकहा परन्तु उसने यहपद्य पढ़ा और प्रीतिसे हाथ न उठाया जिसका अर्थयह है कि तुमलोग मेरी निन्दा करते हो परन्तु मुझे प्रीति के आगे इन दुर्वचनों की परवाह नहींप्रकट हो कि अब्दुलरहमान निर्धनता के कारण उस लौंड़ी को न पासक्ता था तो जब अब्दुल्ला हज को जानेलगे उस समय उन्होंने यह ख़बर पाई और वह उस लौंड़ी को चालीस हज़ार दिरम (कोई सिक्का है साढ़ेतीन मासे वज़नका) को मोल लेकर हजको चले गये जब वहांसे लौट आये उस लौंड़ी को भूषणों से अलंकृत किया जब अब्दुलरहमान उनकी भेंटको आये प्रीतिका समाचार पूछने के उपरांत लौंड़ी को उनके सुपुर्द किया और कहा यह तेरीहै और मैंने केवल तुम्हारे लिये इस लौंड़ी को मोल लियाहै अब यह तुमको फले और तुम इसे लेजाओ और मुझे ईश्वर की सौगन्ध है कि मैंने इससे मैथुन नहीं किया फिर एक हज़ारदिरम नक़द भी उसके मकानपर भिजवा दिये अब्दुलरह-

में एक परदा है सो उसके श्रेष्ठस्वभाव ने आकर ईश्वर के पास उसको पहुंचादिया इससे प्रयोजन यहहै कि जो कोई मनुष्य अपने में बहुतसे अच्छे कामों को इकट्ठाकरे वह मनुष्य इसके योग्यहै कि राजा के साम्हने प्रतिष्ठित हो और सृष्टिकेलोग उसकोमाने कदाचित् जो इसके बिपरीत बुरे काम जमाकरे तो वह पतित होकर शैतानहो तो जैसा गुणवान् मनुष्य से संयोगकरना उचितहै उसी प्रकार मूर्खसे वियोगरखना उचित है सो इसीकारण मैंने स्वभाव का वर्णन किया कि हरमनुष्य इसका लाभ उठावें॥

मनुष्य के वीर्यसे उत्पन्न होने का वर्णन॥

सबसे उत्तमवस्तु मनुष्यमें पापोंकात्यागहै अर्थात् अपनेकोस्मृति शास्त्र के निषेध कर्मों अर्थात् आहार विहारकी विपरीतता से रक्षित रखना आचारवान् मनुष्योंके लिये क़ुरानमें दुबारा शाबाशी हुईहै उसमेंसे यह आयत प्रकाशितहै कि वहलोगस्वर्गमें जानेकेयोग्यहैं जो अपने लज्जा के स्थानों को दुष्कर्मों से बचाते हैं कहानी है कि शौरीं के पुत्र मुहम्मद बहुत सुन्दर मनुष्य बजाजी का पेशा करते थे एकदिन किसी बादशाहजादी की दृष्टि जो इनपरपड़ी प्यार करनेलगी कपड़े के मोललेने के बहाने से बुलाया जब महल में पहुंचे उसने भोगकीइच्छाप्रकटकी मुहम्मदने उत्तरदिया मैं हाज़िर हूं परन्तु मुझको दिशालगीहुई है तो दिशाजाकर वहां की विष्ठा को अपने मुंह और सबशरीर में मलकर शाहजादी के साम्हने आये वह इनको इसदशा में देखकर हटगई और कहा कि यह मनुष्य दुर्बुद्धि है इसको मेरेमहल से निकालदो सो उन्होंने इस उपाय से छुट्टीपाई और इसके बदले ईश्वरने उनको विद्याशौचऔर स्वप्न के फलकहनेकी रीति कृपाकी और उनकी दशाहजरत यूसुफ पैग़म्बर के सदृशहोगई (उनस्वभावों में उदारता है) अर्थात् जो अपनेपास है उसको अपने दीनसाथियोंमें खर्चकरना ऐसीदातव्य मुख्य उदारता है हज़रत पैग़म्बर साहबकी कहानीहै कि हजरत ने कई मनुष्यबनी उन्नज़ीर के क़ैदकिये थे एक मनुष्य को अलग

की सख़्ती उठालूंगा इसीकारण हसानके पुत्र हशामका बचन था कि महलबके बेटे यजीदकी उदारताकी नाव क़ैदमेंभीजारीरहती है (कहानी) जिन दिनोंमें कि जायदैकापुत्र मुइनएराक़का अधिपति था और बसरे में रहता था एक कवि आकर चाहता था कि दरबारमेंपहुंचेंपरन्तु लाचारहुआक्योंकि मुइनबागमें दरियाकिनारे सैरकरताथा सो उसकविने एक अरबी भाषाकापद्य उसकीप्रशंसा में लकड़ीपर लिखकर नहरमें डालदिया और वह लकड़ी बहते२ हाकिम को दिखाईदी और उसको मंगाकर देखाकि इसका रचने वाला कौनहै वह इसयोग्यहै कि उसको दशतोड़े पारितोषिकदिये जायँ और उसदिन उसतख़्तेको सिरहाने पररखकर सोगयासुबह को जागकर उसपद्यको देखा और कबिको बुलाकर एक हजार दिरम और दिलवाये तीसरे रोज़ फिर बुलवाया लोगोंने कहाकि वह चलागया मुइन ने कहाकिवह इसयोग्य मालूम होताहै कि अपना सब असबाब उसकोदूं और वह काव्ययहथी जिसका यह अर्थहै कि तूऐसादाताहै कि तेरेसिवायऔर कोईहमारी ख़बरलेने वाला नहीहै और न कोई हमारी इच्छा पूर्ण करनेवालाहै मुइनने वर्णन किया कि एकबेर मन्सूर बिल्लाने क्रोधितहोकर मुझे चिंतामें डाला यहांतक कि मैं लाचार होकर एक गुदड़ी पहिन के उंटपर सवार होकर जंगलको निकल भागा और रखवालोंकी दृष्टिसे छिपगया उससमय एक हब्शीने जो तलवार लियेहुयेथा मेरेऊंट के पास आकर महार पकडली और ऊंटको बिठाया मैंने उससे कहाकि तुझे इसझगड़ेसे क्यालाभहै उसने कहा कि तुझेमन्सूर बिल्लाने बुलायाहै मैंने उत्तरदिया कि मैं क्याहूं कि मुझे मन्सूर बिल्ला यादकरें उसने उत्तरदिया कि तू ज़ायदा का पुत्र मुइनहै मैंने कहा कि ईश्वर से डर मैं कहां और मुइन कहां किसी ईश्वरके जनपर वृथा झूठमत लगा उसने कहा यह वहाना छोड़ हम तुझे अच्छी तरहसे जानतेहैं उस समय मैंनेकहा जो वास्तवमें ऐसा है तो यह मोतीमुझसेलेजिसकामोल ख़लीफ़ाकेपारितोषिकसे जो मेरे पकड़ने

मान अति हर्षसे रोकर कहने लगा कि ईश्वरने आप लोगों को ऐसी बड़ाई से प्रतिष्ठित कियाहै कि कोई दूसरा मनुष्य नहीं हो सक्ता (कहानी) इब्न दारानामें कोई मनुष्य हातिम के पुत्रकेपास जाकर कहने लगा कि मैं तेरी स्तुति करताहूं यह सुनकर अदीने कहा कि ज़रा ठहरजा हम अपना माल तुमको देंगे उस समय उसके अनुसार मेरी प्रशंसा कीजियो क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी प्रशंसा का बदला न दिया जावे सो हजार बकरियां और हजार दिरम तीन गुलाम तीन लौंड़ियांदीं और दाराने प्रशंसामें यह पद्य पढ़ा जिसका सक्षेप यहहै कि तेरा पिता उदार था और तू उससेभीअधिकउदारहै सो तुम्हारेसदृशउदार कोईमनुष्य नहीं है यह सुनकर अदीने कहा अब अधिक क्षमाकीजिये क्योंकि मेरा माल इससे अधिक प्रशंसा के योग्य नहींहै (कहानी) हातिम एक बन्धुओं में जिसमें एक क़ैदी उसको पहिचानता था गया उसने हातिमसे रक्षाचाही हातिमने उस समूह से विनय किया कि इस क़ैदीको क़रजपर बेचनेहो उन्होंने कहाकिनहीं परन्तु नक़द कीमत पर बेंचेंगे हातिम उस समय उसको छुड़ाकर उसकी जगह आप क़ैद होकर बैठा और जब अपने मकानसे रुपया मगाकर देदिया तब अपने घर आया घरमें जो आया तो लड़कों को एक कुतिया को मारते और दुखदेते पाया उनको मना किया और कहाऐबेटो यह कुतिया ऐसा स्वभाव रखतीहै कि जिसकी हम प्रशंसा करते हैं कि अँधेरी रात में जब हमारा रखवाला सोताहोताहै अतिथि के आनेको बतातीहै (कहानी) किसी समय महलबकापुत्र यज़ीद हजाज़के बन्दीग्रहमें था हजाज़ उस क़ैदीसे रोज दशहजारदिरम जुर्माना लिया करताथा एकदिनफरजदक नामीकविने उसबेचारे क़ैदीकी प्रशंसामें पद्य आकर सुनाये यजीदने कहा कि तुम मेरी प्रशंसाकिरतेहो हम इस दशा मे क़ैदहैफरजदक़ने उत्तर दियामुझे आपके सिवाय कोई उदार दिखाई नहीं देता सो यजीद ने अपने गुलामसे कहा कि दशहज़ार दिरमआज इसकोदेदे आजमैंहजाज

ऐमुआविया कबतक ईश्वरको मनुष्योंका नाहक खूनकरेगातू आप मेरे साम्हने आकर लड़ कि जो प्रबलहो उसका अधिकार रहे परन्तु मुआविये भयके कारण साम्हने न आताथा (कहानी) दोनों पंक्तियों के युद्ध में इब्नुलअशंबी वर्तमान था उसने कहा कि जब रबीये के पुत्र हज़रत अब्बास सबतरह से हथियार बन्द होकर तलवार हाथ में लिये मैदान में युद्ध निमित्त आये अकस्मात् शाम के रहने वालों की ओर से अदहम के पुत्र अरार ने पुकारा कि ऐ अब्बास मुझसे साम्हना कर अब्बास ने कहा कि ऐ अरार नीचे उतर मालूमहुआ कि जीनेसे निराश हुआहै सो दोनों साम्हनेहुये घोड़ेकी बागे छोड़कर खड्ग युद्ध करनेलगे परन्तु किसीका वार काम न करताथा क्योंकि दोनों के शरीरों में ज़िरह थी यहांतक कि अब्बास ने अरार की ज़िरह में हाथ डालकर ज़िरहको फाड़डाला फिर जो तलवारमारी लगगई और पहलूसे छाती घायलहुई अरार शिर नीचाकरके गिरा लोगोंने प्रशंसा का शोर मचाया तो अब्बास उन लोगोंपर झपटे और यथाशक्ति युद्धक्रिया हज़रत अलीने लोगो से पूछा कि हमारी ओर से कौन हमारे शत्रुसे लड़ता है लोगों ने विनयकी कि अब्बास रबीये का पुत्र हज़रत ने अब्बास से कहा कि हमने तुम्हें नहीं मना किया था क्यों लड़तेहो अब्बासने उत्तर दिया कि क्योंकर होसक्ताहै कि शत्रु लड़ाई मांगे और हम जवाब न दें हज़रतअलीने कहा कि शत्रुके जवाबदेनेसे अपने गुरूकी आज्ञामाननी उत्तम है उधर मुआविये को बड़ा रंजहुआ कि अरार सा वीर कब पैदा होसक्ता है इसलिये अब्बास के मारने वाले के वास्ते एक सौ औकिये (अरबी सिक्केका प्रकार) सोने और चांदी के देनेकी प्रतिज्ञाकी उससमय दो मनुष्योंने मैदानमें आनकर हज़रत अब्बासको पुकारा हज़रत ने हज़रत अलीसे वृत्तांतकहा जनाब अमीर अब्बासके घोड़े पर सवार हुये और उन्हीं के हथियार हाथमें लेकरसाम्हना किया शत्रुओंने कुछ भी न जाना और मारेगये फिर हज़रतने अब्बासको आज्ञा की कि जब कोई तुम्हें बुलावे हमको खबरकीजिये जब यह

के बदले तुझेदेगा दूनाहोगा और मुझे मारडालना छोड़ उसने कहाकि मैंनेतेरी उदारता की बड़ी प्रशंसा सुनीहै सोयह बताओ कि कभी आपने अपना सारामाल किसीकोदियाहै मैंने उत्तरदिया नहीं उसने कहा आधामाल दियाहै मैंनेकहा नहीं उसने कहाकि चौथाई मालदियाहै मैंने कहा नहीं उसनेकहा पांचवां हिस्सादि-याहै मैंनेकहानहीं उसने कहा दसवांभाग कभीदान किया है उस समय मैंनेकहा शायद ऐसा होगयाहोगा तब उसने कहा कि मैंने सदा ऐसा कामकियाहै और मैं वह मनुष्य हूं जिसे ईश्वर ने बीस दीनार (अर्थात् सिक्का अढ़ाईरुपयेका) रोज़ीकियेहैं और इसमोतीका मोल एक हजार दीनारहै इसे तुझको देताहूं कि तुझेमालूमहो कि संसारमें मुझसे अधिकदान करनेवालेहैं सो उसने वह मोती मुझे लौटाकर महारछोड़दी मैंनेकहा कि यह अपनामोती लेले क्योंकि मुझे इसकीपरवाहनहींहै उसनेकहा कि तू यहचाहताहैकि मुझे इस स्थानपर झूठ बोलनेवाला ठहरावे अब कभी इसको न लूंगा यह कहकर चलागया जब मैंने डरसेछुट्टीपाई और चैनसे आकर रहने लगा उसको लोगोंसे लोभदेकरबहुत ढुंढ़वाया परन्तु पता न लगा (उसमेंसे सन्तोपहै) अर्थात् जो कुछ मिले उसी को बहुत समझ कर अधिक लोभ न करना नबीकी हदीस में लिखाहै कि सन्तोप का कोपकभी नाश न होगा दाऊदताई की कहानीहै कि उन्होंने अपने पिताकी थाती में बीस दीनार पाये और उनको दशवरपके रोटी कपड़े में थोड़ा २ खर्चकिया (उनमें से बीरताहै) अर्थात् उचित रीति की बहादुरी जिससे छलनेवाली वासनाको दूरकरते हैं और यहवीरतानामहीं और बेफायदाजानदेनेके बीचमेंहै (कहानी) आस के पुत्र उमरूने मुवाविये से कहा कि कभी मैं तुझको वीर पाताहूं और कभी कायर सो तू वीरता और कायरताको मुझेबता उन्होंने उत्तर दिया कि समय पर वीरहूं और उसके विरुद्ध कायर और भयमानहूं (कहानी) हज़रतअली ईश्वर उनपर कृपारक्खे हरदिन सुबह निकलकर युद्धकी दोनों पंक्तियों में खडे होकर कहते थे कि

को देखा जो आपको बुराई से यादकर रहाथा तो उसके गुलामों ने चाहा कि उसको दुःखदें आपने मनाकिया और आप उसकी तरफ़ ध्यानकरके कहा कि मेरीबुराइयां इससे अधिकहैं जितनी तू वर्णन करताहै जो तुझे निश्चयकरना स्वीकारहो तो वर्णनकरूं वह मनुष्य इन उत्तमवचनोंसे लज्जित होकर चुप हुआ हज़रत ने अपनी क़बा (पोशाक) उसेउढ़ाकर गुलामको आज्ञादी कि एकहजारदिरमइसको दे सो वह मनुष्य यह कहताहुआचला कि बेशक यहशख्स पैग़म्बर की सन्तानमें से है और यह भी लोग कहावत कहतेहैं कि किसीने हज़रत जैनुलआबदीनको बुराकहा आपनेकहा कि ऐभाई मेरी इस से ज़ियादाबुराइयां हैं सो मुझे कुछ डरनहीं प्रायः तेरे उपदेशही से उन्हेंछोड़ूं(कहानी) एकमनुष्यने शोबेको गालीदी शोबेने उत्तरदिया जैसाकि तूनेकहा जोमैं वैसा नहींहूं तो ईश्वरतुझे क्षमाकरे(कहानी) एक मनुष्य ने उक़लैदस सेकहा कि जबतक तेराशिर धड़ से अलगनहो मुझे आरामनहीं है उक़लैदस ने उत्तरदिया कि जबतकतेरा यहक्रोध तेरे मनसे बाहर न हो तबतक मुझेभी चैननहीं (कहानी) अखनफ़ने जिसकी आज्ञा को लोग मानते हैं कहा कि मैंने धीर्य को आसिमुन्नफरी सेसीखा है कि एकदिनमैंने उनको देखा कि अपने घरमें तलवार लटकाये बैठाहुआ समूहमें हदीस वर्णन कररहा था अकस्मात् कुछलोग एक मनुष्य की मुश्कें बांधेहुये और एक मर्द की लाश को साम्हने लाकर विनय करनेलगे कि यहतेरा लड़काहै जो मारागया और यह तेरा भतीजा है जो हाथजोड़े खड़ाहैसो क़ैसने अपने भतीजे की ओर देखकर कहा कि ऐबेटे तू ईश्वरका पापी हुआ यह कहकर अपने दूसरे पुत्रसे कहा कि इसके हाथ खोलदे और अपने भाई की लाशको गाड़दे और अपनी माता के पास एकसौ ऊंट पहुंचादे कि यह उसके पुत्रके मरने का बदला है (उसमेंसे उपकार है) अर्थात् उस मनुष्य के साथ भलाई करना जिसने बुराई की हो (कहानी) हज़रतअली हरसुबह को युद्धस्थल की दोनों पंक्तियों में आते और खड़े रहते और यह शब्द कहते थे

खबर मावियाको पहुंची बहुत दुखीहोके कहनेलगा कि ईश्वर के, साम्हने लड़ाई एक बुरीचीज़है जो मनुष्य लड़नेजायेगा वह परास्त होगा (उनमें से सहन शीलहै,) अर्थात् अपने हर्ष विषाद न मानना अञ्ज़बेरके पुत्र अरवा के पांव में एक रोग हुआ लोगों ने अनुमतिदी कि इस पांवको कटवाडालो नहीं तो साराशरीर सड़ जायेगा सो सथियेने आकर पांवकाटा और यह ईश्वर स्मरण में प्रवृत्तथे कुछ भी न बोले और उसीसमय उनका एकपुत्र कोठे पर से गिरके मरगया उन्होंने कुछ परवाह नकी लोगों ने इन दोनों दुःखोंका उनसे गिला किया उन्होंने अति सहनशीलता से कहा कि ईश्वरकी आज्ञापर प्रसन्न रहना उचित है जो एक जोड़ काटागया दूसरा मोजूदहै जो एक लड़का मरगया दूसरा जीताहै(उनमेंसे धैर्य और शांतिहै) अर्थात् आवश्यकता में जल्दी न करना और क्रोध दूरकरना ईश्वरका वचनहै कि वह अच्छे लोगहैं जो क्रोधको खातेहै और लोगोका अपराध क्षमाकरते है हजरत पैगम्बर, साहबने कहाहै कि नबी कयामत (प्रलय) के दिन सम्पूर्ण सृष्टिइकट्ठी होगी ढिंढोराहोगा कि अच्छेलोग कहांहैं सो वे अलगहोकर बहिश्त (स्वर्ग) को जावेंगे उससमय फरिश्ते (देवता) उनसे पूछेंगे कि तुम लोगोंने कौनअच्छाकाम कियाहै वह उत्तरदेंगे कि हमपर जब कोई अन्यायकरता थातो हमने उसे सहलिया औजो हमसे बुराई करता था उसे हम क्षमा करते थे सो फ़रिश्ते उनको बहिश्त में पहुंचावेंगे (कहानी) हजरत ईसा यहूदियोके समूहकी ओरगये उन्होंने हजरत को कुछ बुराकहा हज़रतने उसके बदले अच्छा वचन कहा लोगों ने आपसे पूछा कि क्योंहजरत यहूदो नेआपको बुराकहा और आपने भलाकहा क्या कारणहै हज़रतने कहा जिसकेपास जो पूंजीहै वह उसीको खर्च करसक्राहै (कहानी) किसीने इब्नअब्बास को गालीदी आपनेकहा कि यहकोई आवश्यकता रखताहोगा उसका अर्थ पूर्णकरना चाहिये यह सुनकर उसने शिर झुकालिया और लज्जित हुआ (कहानी)हज़रत इमाम जैनुआबदीनने किसी मनुष्य

हाथ काटने चाहिये आपने उत्तर दिया कि हमक्षमा करते हैं शायद ईश्वर हमको भी क्षमाकरे (और उसमें से हाथ का खुलारहना) है अर्थात् वित्त शाठ्य न करना कि जब बड़ा काम सांम्हने आवे अपना साहस प्रकटकरे और घबराये नहीं किन्तु बुद्धिके अनुसार कार्य करे (कहानी) कहते हैं कि हज़रत इमामहसन मुआविये के पुत्र यज़ीद की खबर लेने कोगये जब उसके दरवाज़े पर पहुंचे यजीदने दुष्टतासे अपना साहस दिखाने को अबीज़वीब हज़ली कविकी काव्यपढ़ी जिसका यह अर्थ है कि संसारी छल के कारण जब मैं बुरे लोगों को देखताहूं तो मेरा पुरुषार्थ और साहस बढ़ जाता है हज़रत ने उसके उत्तर में उसी कवि की काव्य पढ़ी जिसका आशय यह है कि जब हम जानलेते हैं कि मृत्यु हमारी आ पहुंची उस समय हम आरोग्यता के यन्त्र खोल डालते हैं अर्थात् हम अपनी मृत्यु को अपने से अलग नहीं समझते और जब हम अपने जीवन से भर पूर हैं और शिर हथेली में है तो तेरे पुरुषार्थ और साहस का हमको कुछ डरनहीं (गंभीरता) अर्थात् उसबात को गुप्तरखना जिससे किसी को दुखपहुचे हज़रत पैगम्बरसाहब ने कहाहै कि जो कोई अपने भाइयोंकी बुराई जानले तो उसे गुप्त रक्खे कि स्वर्गपाये (कहानी) कहतेहैं कि जब याक़ूबके मरनेके थोड़े दिनरहे अपने लड़कोंको उपदेशकिया कि लोगोंकी बुराइयां छिपा रखना और यहभी कहा कि ऐबेटो हमने जन्मभरमें जिसबस्तु में बहुतभलाई देखी उसको वर्णनकिया और जो बुरीबात देखी उसको छिपारक्खा और किसीपर क्रोधनहीकिया ईश्वरकी प्रसन्नता के लिये (कहानी) किसीबादशाहने अपने शत्रुको युद्धस्थलमें क़ैद कर पाया उसका एक दूसरा भाई था बादशाहने चाहा कि वह भी आजावे तो उत्तम है तो उस क़ैदी को आज्ञादी कि अपनेभाई को इस विषय का पत्रलिखा कि बादशाह की सेवा में पहुंच कर मेरी बड़ीप्रतिष्ठाहुई है तुमभी चलेआओ लाचार उसबेचारे बँधुवेने इस विषयका खतलिखा परन्तु उस पत्रके अन्तमें इन्शाअल्लाताला

कि ऐ मुआविया ईश्वर के भक्तों को कबतक मारेगा तू आपही हमारे सामनेआ कि निर्बल और प्रबल का हाल खुलजाय और राज्य एक औरहोजाय सो आसके पुत्र उमरूने कहा कि हज़रतनें न्यायकिया है इस वचन से मुआविये ने उमरू से कहा कि ईश्वर जानता है जबतक तू सामने न होगा मैं राजी न हूंगा सो दूसरे प्रभात को उमरू हज़रत के सामने आया और धावा किया हज़रत ने उसकी वार रोककर तलवार का वार करना चाहा उमरू ने भय से अपने को घोड़े से गिरादिया और नंगाहोगया हज़रत ने अपने नेत्रोंको बंदकिया और घोड़े की बागफेर के उसके पास से हट आये एकदिन मुआविया बैठा था कि अकस्मात् उमरू को देखकर हँसा उमरू ने कारण पूछा मुआविये ने कहा कि मुझे उसदिन की बातयाद आई जो तू ने युद्ध के समय हज़रत के सामने नग्न होकर अपनी जानबचाई परन्तु यहतो तूबता कि तुझको क्योंकर निश्चयहुआ कि मैं इस उपाय से बचजाऊंगा उसने सौगन्दखाके कहा कि मैं पहलेसे जानताथा कि वह हजरत बड़े दयावानलज्जावानहैं इसउपायसे ज़रूर बचजाऊंगा और अन्त कोवही हुआ (उनमेंसेक्षमाहै) किसीको वहदण्ड जिसकेवहयोग्यहो न देना हज़रत नबीने कहाहै कि किसी को अपराधकोछोडना बड़ापुण्य है और क्षमा करनेवाला लोक पर्लोक में बड़ाई पाताहै सो क्षमाउत्तम है कि ईश्वर प्यारा समझता है और पैगम्बर साहब का वाक्यहै कि जब ईश्वरके जन कयामत के मैदान में खड़े होंगे ढिंढोरा पीटने वाला शोर करेगा किवह मनुष्य अलग हों जिनका बदला ईश्वर पर है कि वह बहिश्त में प्रवेश कियेजांय उस समय लोग पूछेंगे कि ऐसेलोग कौन हैं उत्तर मिलेगा कि जिन लोगोंने मनुष्यों के अपराधों को क्षमा कियाहै सो कईहजार मनुष्य इसी बड़ाई के कारण बेहिसाब और किताब बहिश्त में चले जावेंगे (कहानी) कहते है कि एक चोर यासर के पुत्र अम्मार के ख़ीमेमें घुसा और चोरी की लोगोंने अम्मार से कहा कि इस चोरी करने पर इसके

मैंने उस नास्तिकसे निमाज पढ़नेकी आज्ञा मांगी उस नास्तिक ने कहा मैंने आज्ञादी पढ़लो और वह आप जाकर दूर खड़ा हुआ तो जबमैं निमाज़ पढ़चुका नास्तिकने अपनी उपासना के वास्ते समय मांगा और मैंने भी उसे विदा दी उस समय वह सूर्य्य को दण्डवत्करनेलगा उस समय मैंने तलवार लेकरचाहा कि उसको मारडालूं अकस्मात् किसी का शब्द सुनाई दिया कि वह कहता है कि ऐसे समय मतमारो इसके सुनतेही मैंने इरादा अपना तोड़ दिया जब वह नास्तिक अपना उपासना करचुका मुझसे पूछने लगा कि तूने क्या इच्छा कीथी और क्यों हटरहा मैंने उत्तरदिया कि तेरे मारडालने की इच्छाथी परन्तु ईश्वरकी आज्ञासे हटा यह सुनकर उसने कहाकि उस ईश्वरने मुझे इस लाभके दीनमें आने की आज्ञादी है यह कहकर मुसल्मान होगया (उसमेंसेनम्रताहै) अर्थात् किसीका दुख देकर मनका नरम होना हज़रतरसूल का वाक्यहै कि जो मनुष्य किसीपर दया न करे उसपर ईश्वरभी कृपा न करेगा हदीसमें लिखा है कि हज़रत रसूल एक ऐसे लड़के के पासगये जिसकी कमर पर पानी की भरीहुई मशक थी और वह उसके बोझसे रोताथा सो हज़रतने रोनेका कारण पूछा लड़के ने उत्तर दिया कि इस मशक का बोझ बहुतभारी है सोहज़रत ने वह मशक अपने कांधेपर लेकर उसके साथ उसके घर पहुंचादी वह जातिका यहूदीथा उसके पिताने पुत्रसे पूछा कि यहदूसरा मनुष्य दरवाज़े पर कौनहै उसने सबहाल वर्णन किया यहूदी ने बाहर निकल कर आपको देखा और पहिचाना और कहा कि यह दया और कृपा मुख्य पैग़म्बरों की है यह कहकर मुसल्मान न हुआ (कहानी) अदहम के पुत्र इबराहीम ने काबे में किसी शेखके मुख सेसुनाकि बनीइसराईलमेंसे किसी मनुष्यने अपनीमाताकीप्रतिष्ठा केलिये एक बछड़ा बलिदान किया उसका हाथसूखगया तो किसी समय उसकी दृष्टिमें एक पंछीका बच्चादिखाईपड़ाजो अपनेघोंसले घोंसलेसे गिरपड़ाथा और तड़परहाथा उसमनुष्यने उसकोउठाकर

अर्थात् जो ईश्वर चाहे लिखदिया और इस शब्दके (न) वर्णपर हित् का चिन्ह लगा दिया जब पत्र उसके भाईके पास पहुंचा और इसकी दृष्टि उस हित् शब्दपर पडी तो बहुतही आश्चर्य में हुआ कि यह कुछ भेदहै निदान समझा कि इसके अर्थ यहहैं कि वास्तव में सरदार सलाहकरतेहैं तेरेलिये कि तुझे मारडालें (उसमेंसे सच्चाईहै) अर्थात् मनसे जिह्वाका अनुकूल होना कहतेहैं कि अबूबकर सदीक़ने कहाहै कि हज़रत रसूलने पहलेवर्ष कहा कि सत्यता को मित्र रक्खो क्योंकि सच्चाई और भलाई दोनों स्वर्गमें जावेंगी (कहानी) कहतेहैं कि हज़रत जनीद अपने उपासनाके मन्दिर में खड़ेथे अकस्मात् एक मनुष्य भागताहुआ आया और उसने इनसे कहा कि ऐ शेख मैं तेरी और ईश्वर की रक्षामें आयाहूं तो शेखने कहा अन्दर आ वह उस उपासना मन्दिर के अन्दर जा छिपा थोड़ी देरमें एक मनुष्य नंगी तलवार लिये शेखके पास आकर उस भागेहुये मनुष्यको पूछने लगा शेखने उत्तर दिया कि उपासना मन्दिरमें है उसने उत्तर दिया किन्तु यह चाहताहै कि मैं इसमंदिर में उसको ढूंढूं और वह इतनी देरमें दूर निकलजाय जब वह यह कहके चलागया इस समय वह बेचारा जनीदके पास आकर कहनेलगा कि अच्छा मेरा पता बतादिया था जो वह उपासना मन्दिरमें आजाता तो मुझे मारडालता जनीदने कहाकि मेरी सच्चाईसे ईश्वर प्रसन्न हुआ क्योंकर वह मनुष्य तुझको पाता किन्तु मेरी सच्चाई तेरी मुक्तिका कारण हुई (उसमेंसे प्रतिज्ञाका पालनहै) अर्थात् मुखसे कहेहुये वाक्यका पूरा करना ईश्वरका वचनहै कि प्रतिज्ञा का पालन करो क्योंकि प्रलयमें इसकी पूछहोगी और हजरतरसूल का वचनहै कि धर्म्म लानेवाले अपने वचनपर दृढ़रहतेहैं (कहानी) कहतेहैं कि मुबारकके पुत्र अब्दुल्ला एक वर्ष हजकरतेथे और दूसरे वर्ष धर्म्म युद्धमें संयुक्त होतेथे उनका वचनहै कि एकबेर हम धर्म्म युद्धको गयेथे वहांपर एक नास्तिक ने मुझसे लड़ाई मांगी मैं उस के साम्हने आया उसके साम्हने जातेही निमाजका समय आगया

बीचमें रोवे पीटे और निमाज़पढ़े तौभी जब तू मरेगा आगमिलेगी तू नहीं जानता है कि कृपणता नास्तिकपनहै और नास्तिक नरक-गामी होगा (कहानी) एक अरबदेशका रहनेवाला इब्न अल्ज़बेर के पास आया और कहा कि मेरा ऊंट बीमार होगया है आप कोई दूसराऊंट दीजिये इब्नअल्जबेर ने उत्तरदिया कि तू अपने ऊंट की नालबंदी कराले और उसकी गर्दन में रस्सी डालकर प्रभात और संध्या फिराया कर यह सुनकर अराबीने कहा कि हम ऊंट लेने के वास्ते आये थे न कि उपाय पूछने इसने अपने नौकरों से कहा कि इसे मेरे दरबारसे निकालदो(कहानी) किसीगँवारने इब्नअल्ज़बेर कपास आकर कहा कि मुझे कुछदे कि मैं तुम्हारे शत्रुसेजाकर लडूं उसने उत्तर दिया कि अच्छा पहले जाकर लड़ो जो अच्छी लड़ाई लड़ोगे कोई चीज़ दूंगा अराबी ने कहा मालूम हुआ कि आप मेरे प्राणोंके वैरी हुये हैं (कहानी) अबुलअसवददूली अपने लड़कों से कहाकरता था कि कभी निर्धनों को नदो क्योंकि कभी यह लोग प्रसन्न न होंगे जबतक कि तुम भी उनके सदृश निर्धन और दीन न होजावोगे इसलिये जो माल अपने पास मौजूदहै उसके वास्ते कृपणता उत्तमहै (कहानी) एकअराबी इनहीं वर्णन कियेहुये मनुष्य के पास गया उससमय उसके पास हरेछुहारों का पात्र रक्खाहुआ था और वह खारहा था सो अराबीने कहा सलाम सो अबुलअस-वदने कहा कि यहबात तो हर एक कहताहै तो अराबीने कहा हम डेरेमें आवे उन्होंने उत्तरदिया कि डेरेके बाहरकी ओर बहुत ज़मीन है अराबीने कहा धूपसे मेरेपावँजलेजाते हैं उसने कहा पानी छिड़-कलो अराबीने कहा हमको भी छुहारा दीजियेगा उसने उत्तरदिया कि जो तेरी भाग्य में है उसीपर सन्तोष कर अराबीने कहा तुझ से बढ़कर कोई कंजूस देखने में नहींआया इतनेमें एक छुहारा अबुल-असवदके हाथसे छूटकर धरती पर गिरपड़ा अराबी ने उठालिया और अपनी चादरसे उसको झाड़कर साफकिया सो अबुलअसवद ने कहा कि तू बड़ामलीनहै कि तूने मेरा छुहारा उठालिया अराबी

उसके घोंसले में रखदिया इसदया के कारण ईश्वरने उसका हाथ का सिरेसे मुख्य रूप करदिया—(उसमें से वाचालताहै) अर्थात् ऐसीरीतिसे वार्त्ता कीजावे जिसको लोग सुनकर प्रसन्न होजावें (कहानी) अमियाके पुत्र जयादने किसी मनुष्यको बुलाया और वह भागगया उससमय उसका भाई क़ैदहुआ उससेकहा कि जो अपने भाईको प्रकटकरे तो तुझेछुट्टीमिले नहींतो तेरीगरदन मारी जायेगी उसनेउसकाउत्तरदिया कि अमीरुलमोमनीनकी पुस्तक तेरे सामनेलाऊं तो छुट्टीपाऊंगा इसनेकहा हां इसनेविनयकी कि ईश्वर की पुस्तक लाताहूं और उसपरमूसा और इबराहीमकी दो गवाही भी देताहूं कि उस पुस्तकमें ईश्वरका वचनहै अर्थात् ईश्वर कहताहै कि क्या यह आज्ञावताई नहींगई कि जो मूसा और इबराहीम की पुस्तकोंमें है कि कोई मनुष्य बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ न उठायेगा कि अपराधके दण्डमें एक दूसरेका बदला नहीं पासक्ता सो इसीतरह मेरा क्या अपराधहै जयादने उसको छोड़ दिया— (कहानी) हजाजने किसीसेकहा कि तू जो कहताहै किअलीपैग़म्बर के पुत्रहसुनैन बेटे अली के पैग़म्बर की सन्तान मे से हैं तो इसका प्रमाण दे नहीं तो तेरी गर्दन मारीजायेगी उस मनुष्यने उत्तरदिया कि इसका प्रमाण कुरान से सिद्धकरूं तो छुट्टीमिलेगी उसने कहा हां उस मनुष्य ने इस आयत को पढ़ा तो ऐहजकरनेवाले जिस तरह से हज़रतईसा बिन बापके पैदा हुये और वह फिर इबराहीम की सन्तान मे समझे गये इसी तरह हसनैन भी अपनी माताके कारण रसूलख़ुदा की सन्तान समझेगये और रसूलख़ुदा का वचन है कि ईश्वर बड़े कामों को मित्र रखता है और छोटे कामको मित्रनही रखता सो यह कौनसा कठिन प्रश्न है जो तू मुझसे पूछता है हजाजने उसको छोड़दिया (कहानी) एक दिन हमजा की बेटी अमारतमन्सूर की सभा में वर्त्तमान थी तो किसी मनुष्य ने खड़े होकर कहा कि ऐ बादशाह मैं दुखी हूं हमज़ा की पुत्री अमारत ने मेरा द्रव्य ज़ोरसे छीनलिया है मन्सूरने अमारत

है और उनसे लाभउठाते हैं और कईप्राण काले होते हैं जो शरी
के आनन्द में फँसेरहते हैं इस जगहपर कई बुद्धिमानोंका वचन
कि प्राण एक ऐसीवस्तु है जिसके कई प्रकार हैं और हर प्रकार
कई और होते हैं जो एक दूसरे के विपरीत नहींहोते परन्तु गिन
पर और इसके हरप्रकार आकाशी प्राणकेसन्तानकी जगहहोते
और तिलिस्म अर्थात् मंत्र के जाननेवाले इनप्राणोंको तवाअता
कहते हैं लिखाहै कि वही प्राण उसप्राणकी उत्पत्ति कारकहोती
कभी कानसे लगकर बातकरने और कभी विचार और कभी स्व
और तपस्या के परिश्रम में अब हम इसस्थानपर बहुत बड़े प्राण
को वर्णन करते हैं (कईप्राणनबियोंकेहैं) जब ईश्वरने इस उत्तमत
समूह को सृष्टि का उपदेशक बनाना चाहा उनके प्राणोंमें नाना
प्रकार के उत्तम स्वभाव इकट्ठे किये और उनसे सर्वप्रकारकी बुरी
बातों को दूरकिया बहुत सी करामातें प्रकट कीं जिनको देख कर
संसारी लोग उनके आधीन हुये (और कई प्राणवलियों अर्थात्
ईश्वर निकटवर्त्ती लोगों के हैं) कि जब उनके प्राण नबियोंके प्राणो
के आधीन हुये इनसे बहुधा अद्भुत कार्य प्रकटहुये जिसतरहसे कि
आबिदो(पूजनकरनेवाले) और जाहिदों (ईश्वरसे प्रीतिकरनेवालों)
के वर्णनमें लिखागया कि उनके आशीर्वाद से रोगोंसे आरोग्यता
और काल आदिका दूरहोना प्रकट हुआ (कईप्राणोंमें बड़ाईहै) जो
प्रकट और वृत्तान्तों को बताते हैं हज़रत पैग़म्बरसाहबने कहा कि
ऐसे धर्म्मियों की बुद्धिमानी से डरो जो ईश्वर के प्रकाशमें विचार
पहुंचाताहै (कहावत) अबूसाईदखर्राजने कहा कि एकफ़कीरको काबेमें
देखा जो केवल एक लँगोटा बांधे था जिसको देखकर मुझे ग्लानि
हुई उस फ़कीर ने अपनी बुद्धिमानी से मेरी ग्लानिको मालूम कर-
लिया और कहा कि ईश्वर तुम्हारे मनके विचारोंको जानताहै सो
तुमको डरना चाहिये इस वचनसे मुझको लज्जा हुई ईश्वरसे क्षमा
मांगी इसका हाल भी उसको मालूम हुआ तो उसने कहा ईश्वर
ऐसाहै कि जो मनुष्यों के क्षमा मांगने को अंगीकार करता है और

ने कहा मुझे खेदहुआ कि तेरा छुहारा शैतानखावे क्योंकि गिरीहुई चीज शैतान खाता है उसने उत्तर दिया कि ईश्वरकी सौगन्द हम इसछुहारे को अपने हाथसे जबरईल और मैकाईल फरिश्तोंकोभी न देते (कहानी) कबीलाबनीमरदा से एक शेख अपनीसभामें बैठाथा कि एक अरबी उसके पास आया उससमय उनके पास लोगों का जमाव था उसने कहा कि कालसे लाचार होकर तेरेपास आयाहूं नहीं तो मेरामाल और असबाब गज़नीमें है शेखने उत्तरदिया कि मुझे यहकाल स्वीकार है किन्तु मैं बहुत प्रसन्नहूं जो आकाश और पृथ्वी के मध्यमें एक लोहेका तख्ता पड़जावे और एकपानीकी बूंद न बरपे और किन्तु तेरे हाथपावं भी कटजायँ कि तू अपने पावँ से चलकर जमीन की घासभी न खासके सो अरबी ने शेखकी ओर क्रोधकी दृष्टिसे कहा कि और तो क्याकहूं कि तुझसे कंजूसशेखपर ईश्वर कुपति हो—(कहानी) मवस्सल में एक अध्यापक था जो हर दिन अपने पुराने पात्र में बाज़ार से भोजन मँगवाया करताथा एकदिन गुलाम के हाथसे वहपात्र टूटगया मारेभयके वह गुलाम नयापात्र मोललेकर भोजन लाया जब अध्यापककी दृष्टिपड़ी कहा कि चाहे तूने हमारेबासन के बदले नयाबर्त्तन मोललिया परंतु वह हमारा बर्त्तन पुराना और चिकना होगयाथा इस नयेबर्त्तन में हमारे खाने का घी सूख जाया करेगा इसका इतना खेदहै जिसका वर्णन नहीं करसक्ताहूं—(कहानी) किसी हंसमुखने एककृपणसे कहा कि क्योंजी अपने भोजन मे मुझे क्यो संयुक्त नहीं करतेहो उसने उत्तर दिया इसकारण कि तुम बहुत खातेहो यहां तक कि ग्रास के ग्रास निगलजाते हो और चबातेतक नहींहो हंसमुखने कहा कि आपमुझे भोजन में शामिल कीजिये प्रतिज्ञा करता हूं कि अब हर ग्रास के पीछे दो पद्य निमाज की पढ़ाकरूंगा॥

सम्पूर्ण प्रकार के प्राणों के विषय में॥

बुद्धिमानो के विचार में प्राण नानाप्रकार केहैं कई तो प्रकाश युत जिनको उन प्राणोंसे को कि शरीर प्राप्तनहीं हुआ खबरहोती

सतीह काहिन को बुलाया और उससे कहा कि मैंने स्वप्न में ऐसा देखा कि अँधेरे से एक अँगुली प्रकट हुई और पृथ्वीपर गिरकर उस पृथ्वी के बादशाह के शिरको खागई—सतीह ने उत्तर दिया कि कोई बादशाह सेनासमेत तुम्हारी धरतीपर आयेगा औरउस धरती का जो हिरस और अमीन के मध्य में है बादशाह होगा बादशाह ने कहा कि जो सच है तो कबतक आयेगा मेरे सामने या मेरे पीछे और वह कौन है उसकी बादशाहत सदा रहेगी या जातीरहेगी और फिर कौन बादशाह होगा सतीह ने उत्तर दिया कि तेरे मरने के साठवर्ष पीछे यह बात होगी फिर उस बादशाह की सेनाभी थोड़ी मारीजावेगी और थोड़ी भागजावेगी बादशाहने कहाकि उसकी सेना को कौनमारडालेगा उसनेकहा वरनज़ीहरन अदन के देशसे आकर उन सबको मारडालेगा बादशाह ने पूछा कि उसकी बादशाही सदारहेगी या नहीं सतीह ने कहा कि एक शुद्ध पैगम्बर के हाथ से उसका राज्य नष्टहोगा बादशाहने कहा वह पैगम्बर कौनहोगा सतीह ने कहा वह पैगम्बर फ़हर के पुत्र गालिब तत्पुत्र मालिक तत्पुत्र नसर की सन्तान में होंगे और उनका राज्य समयके अंतपर्य्यंत रहेगा बादशाहने कहा कि भला समय का अन्त भी है सतीह ने कहा हां उस दिन कि जब पहले और अंत के लोग सब इकट्ठे होंगे और भलों को भलाई औरबुरों को बुराईका बदला मिले सो जोकुछ मैंनेकहा इसमें कुछ भी अतर न पड़ेगा (कईप्राग्य अनुमानसे भविष्यकी बात बताते हैं) और वह लोग एक वृत्तांत को दूसरे वृत्तांतपर प्रमाण देते हैं किसी सम्बन्ध वा रूप के कारण जो बहुत गुप्त हो (कहानी) कहते हैं कि जब सिकन्दर रूमी किसी शहर में पहुंचा वहां के देवालय में एक स्त्री को देखा जो कपड़ा बुनरही थी उस स्त्रीने कहा कि ऐ बादशाह तुझको एक और बहुतभारी देश मिलनेवाला है इतने में उसशहर का अधिपति उस देवमन्दिर में आया उसस्त्री ने उससे कहा कि तेरा देश सिकन्दर के क़ब्ज़े में आगया हाकिम ने स्त्रीसे इसका

पापों को दग्ध करताहै—(और कई प्राण शकुन देखनेवालों के हैं जिसको क़याफ़ा कहते हैं) क़याफ़ा दोप्रकारकाहै एक क़याफ़ाबशर दूसरा कयाफ़ा असर-क़याफ़ा-बशर, उसविद्याको कहतेहैं जोमनुष्यके शरीर के जोड़ोंकी सूरतसे वृत्तांत मालूमकरलें और यहमुख्य करके अरब की जातिमेंहै जिसको नबूमदलेज कहते हैं और उनके छोटे बच्चेतक का यहहाल है कि जो उसको बीस औरतों में छोड़ दें जिनमे उसकी मांहो तुरंत मालूम करलें (कहानी) एक सौदागर कहता है कि मैंने अपने पिता की थाती से एक बूढ़ा हब्शी पाया एकबेर सफरका संयोगहुआ मैं ऊंटपर सवार था और वह गुलाम उसकी मुहारलिये चला जाता था संयोग से एक मनुष्य नबीमदेलज जाति का हमसे मिला और एकबेर दृष्टिकरके अकस्मात् कहने-लगा कि गुलाम से नौकर कितना एक रूपका है यहबात मेरेमन में जमगई जब मैं अपने घर फिरकर आया मैंने अपनी माता से वह हाल वर्णन किया उसने उत्तर दिया कि सच्चाहाल यहहै कि द्रव्य और धन के होनेपर भी तेरेपितासे सन्तान न हुई तब मैं ने इस गुलाम से सम्भोग किया और उसके गर्भ से तू उत्पन्न हुआ और जो मैं जानती कि तुझको प्रलय में भी यह हाल मालूम न होगा तो मै कभी तुझसे वर्णन न करती (कयाफा असर) वह है जिससे मनुष्यके पांव और पशुओंके सुमों और जोड़ोंके चिह्नोंसे लोग मालूम करजावें उसके जानने वाले लोग बहुधा रेतीली ज़मीनपर होते हैं सो जब कोई इनमेसे भागजाता है या कोईचोर इनके माल की चोरी करके चलाजाता है तो यहलोग उसकेपांवके निशानों से उसका पता लगालेते हैं और सब से बड़ा आश्चर्य यहहै कि वह लोग स्त्री पुरुष युवा बालक बूढ़े और सहवासी विदेशीके चरण चिह्नभी पहिचान लेतेहैं (बाज़प्राण क़ाहनोंकेहैं) जिनके बलसे भूतोसे भेंटकर सक्ते हैं और उन्हीं से सृष्टि का हाल मालूम करसक्ते हैं (कहानी) मुत्सरुलहमी बलहमीरी के पुत्र रबी बादशाह ने एक भयानक स्वप्नदेखा उसका फल पूछने के वास्ते

और उसकी कारीगरी की मज़बूती और उसके थोड़े प्रमाण और परस्पर विरुद्ध वस्तुओं जैसे आग पानी और हवा मिट्टी के मिलने पर ध्यान करे तो वह मनुष्य मालूम करेगा कि इस समूह का उत्पन्न करने वाला कैसा अपूर्व बुद्धिमान् और अधिकारी है उस समय उसका धन्यवाद करना उसपर अवश्य होगा अब यहां बर्णन करना उचित है कि यह शरीर के जोड़ कई तरह के हैं जो दोषों के मिलने से पैदाहोते हैं और इनके दो प्रकार हैं एकाकी संयुक्त (पहला प्रकार हड्डियों के विषय में) यह एक कठोर शरीर है और शरीर के मन्दिर में मानों खम्भा है और इनसे कई रगें निकलती हैं जो एक जोड़ को दूसरे जोड़ से परस्पर मिलादेती हैं जब कि शरीर की दृढ़ता केवल मांस आदि नरम खंडों से न हो सकी तब ईश्वर ने यह हड्डियां उत्पन्नकीं इनमें कई, हड्डियां तो शरीर की नेवके वास्ते हैं जैसे पीठकीहड्डी क्योंकि शरीरकी स्थिरता इसीकी नेवपर है जिसतरह किश्तीकी नेव एक लकड़ीपर होती है फिर और छोटी २ लकड़ियां उस लकड़ी पर पेवन्द की तरह पर लगाते हैं और कईढाल की रूपपर हैं जिसतरह खोपड़ी की हड्डी जो भेजे को रक्षा करती है कई ऐसी हड्डियां हैं जिनसे आपस में हड्डियों की दूरी मिलीरहती है बाज़ी हड्डियां ऐसी हैं जिनसे उसके मिलेजोड़ आवश्यकता रखते हैं जैसे जिह्वा और गले का नल कई हड्डियां शरीर की रक्षाके लिये हैं वहसख़्त हैं कईहड्डियां खोखली इस कारण से हैं कि उनका भोजन उनके अन्दर रहता है अर्थात् उनका गूदा और उससे उनमें तरी रहती है और इसी कारण वह तरी अलग नहीं होजाती तो यहहड्डियां जो कइयों से जुड़ी हैं दो प्रकार पर हैं एक इत्तिसाली जिससे हिलसक्ते हैं दूसरी इन्फिसाली जिससे नहीं हिलसक्ते इनकेलहाम और मुफस्सिल दो प्रकार हैं मुफस्सिल उसको कहते हैं जिसमें प्रकटकी प्रेरणाहो जैसे हाथ पांव का हिलना और लहाम उसको कहते हैं जिसमें प्रकट की प्रेरणा न हो जैसे खोपड़ी तो जिसमें प्रकट की प्रेरणा

प्रमाण पूछा उसने उत्तर दिया कि जब सिकन्दर आयाथा मैं अपने कपड़ेको बहुतलम्बा चौड़ा कररही थी इसशकुनके समझने से मैंने वैसाकहा और अब आप जो आये तो उस कपड़े को मेरी टुकड़े २ करने की इच्छाथी इसलिये मालूम हुआ कि आपसे राज्य अलगहुआ चाहताहै (कहानी) जब अबीतालिब केपुत्र अली सिंहासनपर स्थानापन्नहुये तो पहले २ जो शिष्यहुआ अब्दुल्ला का पुत्र तिलहा था जब हज़रत ने उनके हाथ को पकड़ा तिलहा की एक अँगुली को देखा कि सूखीहुई थी हज़रत ने इसशकुन से मालूम किया कि यह स्थित हमको न फलेगी अन्त को यही दशा हुई कि मरने तक हज़रत को उसकी सफाई न हुई (कहानी) एक दिन सफाहख़लीफा शीशा देखकर कहने लगे कि ईश्वर मैं यह नहीं कहता कि जैसा अब्दुलमुल्क के पुत्र सुलेमां ने शीशा देखकरकहा था कि मैं जवान बादशाह हूं वरन मेरी यह इच्छा है कि मेरीआयु बढ़ा कि तेरी सेवाकरूं अभी यह वचन पूरा न हुआथा कि आपने सुना कि कोई मनुष्य दूसरे से कहरहा है कि मेरे और तेरे बीच में मौत को दो महीने पांचदिन की देरी है आपने यह सुनकर ईश्वर का स्मरण करके सत्यजाना सो थोड़ेदिनतक ज्वर की बाधा उठाकर दोमहीने पांचदिन के पीछे ईश्वर के पासपहुंचा (कहानी) हुसेनका पुत्र ताहिर हामाके पुत्र ईसासे बड़ाई करने को बाहर निकला और अपनी आसतीन में थोड़े रुपये निछावर करने को रखलिये परन्तु उनको निछावर करना भूलगया जब कपड़े बदन से अलग किये वह रुपये छिटक गये तो उस समय विद्यमान लोगोंमेंसे किसी कवि ने कहा जिसका अर्थ यहहै कि तू हामांके पुत्र ईसा को परास्त करेगा सो वैसाही हुआ कि ताहिर ने ईसा को मारडाला और वहां बग़दाद में आकर अमीन कोभी मारडाला (मनुष्य के जोड़ो के विस्तार में)मनुष्य के शरीर में इतनी अद्भुत चीज़ें हैं कि जिनके मालूम करने से बुद्धि क्षीण है इसका प्रमाण ईश्वर के वर्णन से प्रकट है कि जो अपनी अद्भुत जड़ को पहिचानें

क्योंकि यहखण्ड हिलनेवालेहैं और हिलने में रगड़न ज़रूर होती है तो जो वहचीज़ सूखी होती तो टूट जाती और जो तर होती तो बहजाती इसीलिये ऐसी वस्तुकी इच्छाहुई जिसमें यह दोनोगुण हों सोऐसी चीज़ सिवाय चबनी हड्डियोंके और कोईनहींहै (तीसरा प्रकारपट्ठाहै) यहजोड़ नरम और मोटा भेजे और हराम मगज़से पैदाहोताहै इसका गुणसब जोड़ों को हिलाना और मांस को दृढ़ करना और बल देनाहै और जब ब्रह्माण्ड सबपट्ठोंको उठा न सका तो ईश्वर ने पट्ठों को ब्रह्माण्ड से हराम मगज़की ओर जारीकिया और हराम मगज से सम्पूर्ण शरीर पर शाखा जारी कीं कि वह सम्पूर्ण शरीर के जोड़ोंपर पहुंचे तो जो पट्ठे भेजेसे निकलतेहैं वह शिरके सब जोड़ोंको हिलातेहैं और वहांसे चलकर अन्दरके जोड़ों पर पहुंचतेहैं और सब बाक़ीजोड़ हराम मगज़के पट्ठोंसे पुष्टहोते हैं यद्यपि हराम मगज़ भी अन्दर के जोड़ों के निकटहै परन्तु उससे नरम २ पट्ठे ऐसे उत्पन्न नहीं होते जो अन्दर के जोड़ों को हिलावें आगे ईश्वर जाने(चौथा प्रकार रुबात) यह खण्ड बिल्कुल पट्ठेके रंगकाहै परन्तु इससे सूखा अधिकहै और कई कइयों पर पूर्ण होते और सख्तहोता और परस्पर जोड़ोंको मिलाताहै और उससेबड़ा लाभ हिलनेमें पहुंचताहै और जबतक कि जोड़ोंका इच्छा किया हुआ हिलना पूरा नहींहोता तो पट्ठे में यह शक्ति नहीं होती कि हड्डियों से मिल जावें क्योंकि हड्डियां कठोर हैं और पट्ठे नरम सो ईश्वरने हड्डीसे एक ऐसीवस्तुउगाई जोपट्ठेके रूपसीहै परन्तु पट्ठेसे सख़्त और हड्डीसे नरमहै और वह रुबातहै और वहरुबातको पट्ठे केसाथ इकट्ठा कियाहै और एकखंडकी तरहपर दोनोंको मिलायाहै और इसीके कारण पट्ठेऔर हड्डियां परस्परइकट्ठी होतीहैं (पांचवां प्रकार मांस)यहखण्ड गरम और तरहै इसकेसम्पूर्णलाभोंमेंसे एक यहहै कि पट्ठे और कूदने और स्थिर रहनेवाली रगोंकी सहायता करताहै क्योंकि यहठण्डी और सूखी है तो जो मांस की गरमी न होती तो बाहरसे हवा पहुंचकर इनको बिगाड़ देती और जो कि

होती है उनके तीन प्रकार हैं (प्रथम प्रकार) वह हड्डियां हैं जिनमें एक हड्डी के शिरे में नोक होती है और दूसरे में उसके अनुसार गढ़ा होताहै कि वह दोनों चूलकीतरह जम बैठें और उसके द्वारा हिल ने जुलने में सुगमताहो (दूसराप्रकार)वह दो हड्डियां हैं जिनकी हर हड्डी के शिरेपर नोक होती है और उनका मिलना और मज़बूती पट्ठों के द्वाराहोती है (तीसराप्रकार) वह हड्डियां कि परस्पर एक दूसरेमें थोड़ी २ प्रवेशकी हुई और चिपकी बिना चूल केहो जैसे पीठकी हड्डी हैं और जो हड्डियां प्रकट में नहीं हिलतीं उनकेभी तीनप्रकारहैं (पहलाप्रकार) कोशाना अर्थात् कंघी कहते हैं और वह दांतों के अनुसार है और दोआरे की तरह एक दूसरे में मिलीहैं (दूसराप्रकार) वह है जिसकी स्थिरता सीधी रेखापर हो जैसे शिर और कानकी हड्डियां (तीसराप्रकार) वह है कि इन दोनों हड्डियोंमें से एकदूसरे में मिलीहों जिसतरह दांतोंकी दरजों की बनावटहैं और यह सबहड्डियां दोसौअड़तालीस हैं उनहड्डियों के सिवाय जो समसानियात हैं और समसानियात उन छोटी २ हड्डियोंको कहतेहैं जो जोड़ोंकी बीचकी जगहमें भरीहोती हैं और जो हड्डियां ( ) की रूपकी हैं वहकण्ठके नलकीहड्डीकी बनावट मे खर्चहुई है ईश्वर की बुद्धिने एक २ प्रकार की हड्डी अलग पैदा कीहै कि किसी उत्पात के पहुँचने पर एक दूसरे की स्थानापन्न होसके और जो ऐसा न होता तो आवश्यकतापर कठिनताहोती॥

दूसराप्रकार—चबनी हड्डियोंके वर्णन में॥

यह जोड़मांस और हड्डीकेबीचनरमी और सख्तीमें दरमियानी दर्जा रखता है और हड्डियो के किनारे पर पैदा होता है जहां कहीं मांसको नरम हड्डीकी आवश्यकता होती है वहां इसीकेसाथ मांस की बनावट होतीहे यहनरमहड्डियां हड्डियोमें इसलियेउत्पन्न हुईहै कि इसमें हिलने के कारण छिद्र न होजायँ और ऐसे जो दो जोड़ो के बीच में चबनी हड्डी होती है जो जोड़ों के बीच में बढ़े हों

और जीव इनमें रहताहै और जब यह फुदकने वाली रगें मन
निकलतीहैं दो टुकडे होजातीहैं एकटुकड़ा फेफड़े की ओर जात
और वहांपरहवाके खींचनेका कामकरताहै और यह फुदकनेवा
रगों का टुकड़ा केवल एक दरजा होताहै क्योंकि यह बहुत न
और बहुत आधीन और बहुत ठहरनेवाला है और हवाकी खिच
वट में बँधता और खुलना इसीके आधीनहै और दूसराटुकड़ा
तरफ़ बँटताहै एकऊपरको जाताहै और वह छोटाहै क्योंकि इस
लेने वाले मनके ऊपर के जोड़हैं और वह मनके नीचे के जोड़ों
छोटे हैं और दूसरा प्रकार मनके नीचेकीओर जाताहै और इस
बहुत सी नसें चारोंओर जारी होतीहैं॥

॥ आठवांप्रकार स्थिररगों का वर्णन ॥

यहकईरेखा फुदकनेवाली रगोंकीतरहहैं कुछअन्तरनहीं सिवा
इसके कि एकसमहहैं और इनके बीचमें गाढ़ा रुधिररहताहै पर
फुदकनेवाली रगोंमें उत्तम रुधिररहताहै और यह रगें कलेजे व
नीचेकीओरसे निकलतीहैं इनसेलाभयहहै कि कलेजेकीओर भोज
कोखींचतीहैं और कुछरगें कलेजेकेऊपरसे निकलती हैं इनकाका
भोजन पहुंचाना सम्पूर्णजोड़ोंकोहै इनकानामजोफ है और इनरगं
का शरीर बहुत पतला फुदकनेवाली रगोंसेहै और यह इसकारण
है कि नसोंमें लहू गाढ़ा है तो जो इनका चमड़ा हलका न होत
तो लहू इनसे सुगमता पूर्व्वक न टपकता (नवांप्रकार सरब है
अर्थात् एक चरबी की चादर जो पक्काशय को ढांकेहुये है अर्थात
पक्काशयका पहिनाव है और खोखले खगडोंके भी अर्थ हैं कि उन
खोखले शरीरकेभागोंको गरमीपहुंचाये जब मेदा भोजनसे भरा हो
(दशवांप्रकार गश्महै) यह एकभागहै इसकामूल झिल्ली की छाल
से है जैसे कपड़ेकीबुनावट और यह उन जोड़ोंपर फैली हुईहै जो
हिलते नहीं और यह इसतरह उनपर ढँकीहै जैसे छाल दरख़्तपर
होतीहै और उनजोड़ोंकी उनके उपद्रव और रूपकी रक्षा करतीहै
और उन जोड़ों को रोगोंसे बचातीहै (ग्यारहवां प्रकार त्वचाहै)

कूदने और स्थिर रहनेवालीरगें पट्ठे और भोजनको सहारेहैं और अपने में भोजन के पचने की आवश्यकता रखते हैं ईश्वर ने मांस से जो इनको घेरेहै इनकी सहायता पहुंचाई कि उत्तमरीतिसेशरीर का कार्यचले दूसरा लाभयहहै कि हड्डियों को जोड़ों के रूपका बनाता है जो मांसनहोता तो खाली हड्डियां वृथा थीं सो मांस का दृष्टान्त मट्टीकासाहै कि उससे भी चित्र बनताहै (छठांप्रकार चरबी) यह खण्ड गरम श्रेष्ठ और हवाईहै इसकोमांसकेटुकड़ों और पट्ठोंके चौगिर्द पैदाकियाहै कि यहदोनों हिलने जुलने के हथियार हैं सो यह दोनों काम काज करनेपर गरमीकी आवश्यकता रखने लगे और हालयहहै कि कामकाज पूरा नहीं होताहै परन्तु गरम और तरहैं और जो कि पट्ठे ठण्डे और खुश्कहैं तो चरबी मिलादी किउनको गरम करकेभोजनकेपचने नरमकरने और पकानेमेसहायताकरे और यहचरबी मांससे रगोंकी तरहपर नहींछिपी क्योंकि मांस से उस वस्तु के पचाने का प्रयोजन है जो रगो के अंदर है और चरबी से यह प्रयोजन है कि पट्ठों को केवल गरम करे और उस के अन्दर हिलने की तेजी से न जासके तो जो किसी गाढ़े खण्डसे मिलीहोती तो उसका हिलना जातारहता और जैसे कि हमने मांस और हड्डियों के दृष्टान्त में वर्णन किया है कि मांस मट्टी के सदृशहै तो इसी तरह चरबी का दृष्टान्तहै कि उस मूलकी अस्तरकारी करतीहै और सपेदकरतीहै और वहभोजन जो जोड़ों के लिये होताहै उसको जोड़ोसे अलग करतीहै और चरबी जोड़ों की रक्षा भी करती है जिसतरह कपड़ा शरीरकी रक्षा सरदी और गरमीसे करता है ॥

सातवांप्रकार—फुदकनेवाली रगोंके विषयमें ॥

यह कई रगें प्राणोंकी पात्रहैं और मनसे उगी है और जीव से उत्पन्न हुईहैं और इसजीवका मूलश्रेष्ठ रुधिरहै जो प्राणों के भोजन से होताहै जैसा कि जैतका तेल दीपकके प्रकाशका कारण है और इनरगों के पैदाहोने से यहबुद्धि है कि इनसे प्राणोंकीरक्षा होती है

उसके स्थानापन्न होसके और इसखोपड़ीमें आरेकेदांतों की तरह दन्दानेहैं कईउन दन्दानोंमेंसे कइयों में मिले हैं और बाजे माथेके पास स्थिर पायेजाते हैं और उसको अकलीली कहतेहैं इसदृष्टिसे कि वह जगह टोपीपहिननेकीहै और दूसरेतरफ़ के दन्दानोंसे पीठ कीहड्डीफंसीहुईहै और वह(२) केरूपपरहै और वहखंभाजोझिल्लीके दाहनीओरहै उसकानामयह मुस्तक़ीमहै सूरत उसकीयहहै-

(नेत्रकावर्णन)नेत्रऐसीवस्तुहै जिसकी आवश्यकता संसारभररखता है सोईश्वर ने बहुत सफाईवारीकी और नरमीसेनेत्रकोउत्पन्नकिया और इसकी रक्षा भी अवश्य समझी इसलिये उसकाघेरा हड्डी से बनाया कि जिसके चारोंओर सख़्त हड्डियां लगाईं और आंखको पलकों से छिपाया और उसकी ज्योति को बालों की सहायता से उपद्रवों से बचाया और दोपलकें इसवास्ते नियत कीं जो एक में कुछ उत्पातहो तो दूसरी उसकी जगह रहकर रक्षा का कामदेवे कि देखने वाला एकहीबेर अन्धा न होजावे और इसका स्थान शिरपर नियतकिया क्योंकि इसमें देखने की शक्ति है और भेजेहीं से आंखोंमें उतरतीहै और इसआंखको नरम और उत्तमपैदाकिया और बारीक इतना बनाया कि दूरकीचीज़ के देखनेमें कष्ट न पड़े और जोकि शरीर में ज्योति का स्थान दोछिद्रोंके बदले कि जिस से निशाना देखते हैं वर्त्तमान है तो जितना निशाना देखने का स्थान ऊंचा हो प्रकाश अधिक पहुंचेगा सो ईश्वर ने उसीढंग से उसको उपजाया कि सबजोडों को देखती रहे आंख के सातदरजे हैं और इसतरह से बने हैं कि एकखोखला पट्ठा खोपड़ी के नीचे ब्रह्मांड से उठकर आंखके घेरे में पहुंचकर पूर्णहोताहै और आंख में दो परदे हैं एकमोटा दूसरा पतला तो जिससमय वहखोखला पट्ठा आंख की हड्डीके पास पहुंचताहै उस समय झिल्ली का पट्ठा उससे अलग होजाता है और झिल्ली शरीर की हड्डियों के वास्ते फ़र्श के बदलेहै परन्तु सब आंख पर नहींहै उसको दरजा मशीमा (बच्चेदानी) का कहते हैं क्योंकि वह बहुत गर्भाशय से मिलता

यह झिल्ली और रुबातसे मिलीहै और इसमें शरीर की गरमी के पचाने और निकालनेकेलिये बाल उगेहुये हैं और त्वचामें सख्ती और नरमी दोनों मिलीहुई हैं कि अपनी हानि और लाभकी रक्षा तय्याररहै, और यह अपनेलाभको खींचती और अवगुणकोभगाती और फोगों को जैसे कि मैल पसीना आदि छिद्रों से दूर करती है (बारहवांप्रकार हड्डियोंकी मींगीहै) जो हड्डियोंके स्वभावकेअनुसार है और हड्डियोंके बीचमे पैदाकीगईहै कि हड्डियों को सहाराहो जो कि उसका भोजनलहूसे उचितथा इसलिये उसकाभोजन रुधिर से नियत हुआ परन्तु रूपान्तर होकर कि अस्थियों के योग्य उत्तम भोजन बनकर होजावे सो जब हड्डियोंकी मींगीकीतरी और लहू की गरमी मिलजातीहै तो उसमें सरदी और खुश्की पैदा होजाती है उससमय यहमींगी अस्थिभोजन होजातीहै आगे ईश्वरजाने॥

द्वितीय प्रकार मिलेहुये जोड़ोंके विषय में॥

इनकेदोप्रकारहैं एकअन्तरी दूसरावाह्यसो वाह्यकेबहुतसेप्रकार हैं उनमेंसे (प्रथम प्रकार) शिरहै जोकि शिरमें सुनने और देखने का प्यारहै और यह ऊंचेहोने के चाहने वालेहै क्योंकि देखना उंचाईसे सबंध रखताहै कि दूरकी चीज साफ दिखाई दें इसलिये ईश्वरकी मायाने इसतरह समझा कि शरीरमे सबसे ऊंचेशिरब-नायाजावे और शिरजोगोल पैदाहुआ है इसकारण से है कि गोल चीज बहुधा कई और घूम सक्ती है और दूसरा कारण यहहै कि गोल शकल सबरूपोंमे उत्तम होतीहै और गोलहोनेपर लंबीभी है इसकारण कि ब्रह्मांडकेपट्ठे के खड़ेहोनेकेवास्ते अलकृतहुई हैं और फिर गोल और कुछलंबा पैदाकियागया और खोपड़ीके अंदरभेजेको रखदिया कि उपद्रवोंसे भेजेकीरक्षाकरे कि जैसे अंडेकीरक्षा उसका छिलकाकरताहै नहींतोजल्दी कोई उपद्रव अवगुणकरता जो थोड़ा भी चोटपहुंचती और यही भेजा सम्पूर्ण शरीरके हिलने जुलनेका प्रारम्भ स्थलहै और शिरको बहुत हड्डियोंसे मिलाहुआ बनाया है इसलिये कि जो कोई हड्डीकिसी चोट से चूरहोतो दूसरी पूरीहड्डी

रती हुई धीरे २ पहुंचे सोउस पवनका वेग उनपेचों में जो श्रवण शक्तिके मार्गमे हैं ठहरजाताहै जब ठहर जाता है तो उस समय श्रवण शक्ति को ख़बर होती है—(नाक का वर्णन) ईश्वरने जो इस जोड़को बनाया तो लाभ यह है कि मुख की सुन्दरता का अलंकार और सजावट इसीपरहै और इसको हवा के सुड़कने का हथियार बनाया और खींचनेके स्थानोंको खुलाबनाया कि मनुष्य को हवा खींचने की आवश्यकता हरसमय रहती है और रक्षा की दृष्टि से दो छिद्र बनाये कि जो एकमें कोई उत्पात हो तो दूसरा अपने कामपर तय्याररहे और इसको अपनी परिपूर्णबुद्धिमानी से बांसुरी की तरह बनाया कि वेगों को सहे और उसको नरम पैदा किया कि खोलने और बन्द करने में हवा ले जैसा कि लुहारों की धौंकनी में देखाजाता है सो इनछिद्रों के दो प्रकार हैं एकउनमेसे मुंह के खुलनेकीओर पूर्णहोता है और दूसरा ऊंचाहोकर उसहड्डी कीओर जाताहै जो मुखके खुलनेपर स्पर्शस्थान है सो एकछिद्र से सूंघते हैं और दूसरेसे श्वासलेते हैं और इनछिद्रों की हड्डियां जो टेढ़ी बनाईगई है यह कारण है कि उनदोनों छिद्रो मे हरचीज़ की गन्ध पहुंचे और यह भी गुण है कि इनकी राहसे भेजेके मलदूरहों और जो इनछिद्रों को सीधा न किया किन्तु टेढ़ा बनाया तो यह कारण है कि जो यह सीधे होते तो हवासीधी शीघ्रहीभेजेमें पहुँच जाती तो भेजेमें उपद्रव करती इसीलिये टेढ़ाबनाया कि हवा बल खाती हुई ऊपर को जावे तो इसीमें इसकीथोड़ीठंढक कमहोजाती है फिर मध्यस्वभाव में प्राप्तहोकर ब्रह्मांडमें पहुंचती है और उनके दोनोंछिद्र कंठके अन्ततक पूरेहुये है इस कारण कि श्वास लेने में सुगमताहो जोऐसा न होता तो कभीघड़ीभरभीमुंहबन्द न रहसक्ता और जो श्वास लेना वहीं से अवश्यहोता तो जिह्वा भोजन को न मालूमकरती और जिह्वाहिलभी न सक्ती और भोजन न चवसक्ता न निगला जासक्ता बहुत खींचकेआया जायाकरता (ओठकावर्णन) मुहँ के सामने दो ओठ पैदा किये है कि उनसे दांतों का मांसछिपा

है और वह खोखला पट्टा अपने रूप को प्रकट करताहै कि गशा हो। और उन गशाओंकी सहायता करे और उसका नाम शबकीहै फिर उसके बीचमे एकखंड काच के रंगका रियर होताहै जिसका नामजजाजिया है और उसके अन्दर एक और खण्ड गोल लटका होताहै और यह अपनी सफ़ाईमें बरफ़से मिलताहै तो इसकानाम रतूबत जलीदियाहै और जजाजिया खडजलीदियाको घेरेहोता है और आधा ऊंचे मकड़ीके जालकी तरहहै जो बहुतसाफ औरचम-कताहुआहै उसकानाम अन्कबूतिया खडहै और उसके ऊपर एक और खड लचकदारहै सपेदरंगतका जिसका नाम बैजियाहै फिर उसके ऊपर एक नाना प्रकारके रंगकादरजा पुतलियोंमें होता है जो बहुत कालाहै और जलीदियाके सामने है और एक नकशहै और खुलामालूम होताहै और वह कभी मुख्यदशा अर्थात् अधेरे में खुला और प्रकाशमे तगहोताहै और बहुत अधेरेमेंभी खुलाही-जाताहै और यह छिद्रही आखकी स्याहीहै जिसकी झिल्लीआखके तीसरे खडपर होतीहै जो उसको घेरेहै -ईश्वरकी क्याबुद्धिमानीहै कि उसने ऐसे खडोंसे नेत्र उपजाये जो अपना काम अच्छी तरह देतेहैं– (कानका वर्णन) सुननेकी शक्तिको कुछ लाभ नहीं देता परन्तु वायुके परस्पर वेगसे कि जबवह भेजेमेपहुंचतीहै सो ईश्वर ने श्रवण स्थानको सख्त हड्डियोसे बनाया जो बहुत पेचदार हैं और दोपट्टोपर पूर्णहोती हैं और वह पट्टे भेजेसे उठतेहैं और जो यह हड्डी खुली हुई होती तो उसमे निस्सन्देह वायुसे सर्दी पैठकर सुननेकी शक्तिको बाहर करदेती और थोड़ी हवाभी सर्दकर देती क्योंकि उस आशय का स्वभावभी शीतलहै इसी कारण सुनने की शक्ति भेजेमें गुप्तहुई और ईश्वरनेकानको खुला पैदाकिया कि उसमे हवा पहुंचकर घूमे और श्रवण शक्तिको बाहरके शब्दोंकी खबरदे जो कानतगहोता तो श्रवण शक्तिको सर्दी और प्रचडवायु बिजली और कठोर शब्द बहुत हानि पहुंचाते सो इसीलिये ईश्वर ने इसकीशकल पेचदार बनाई कि एकहीबेरहवा न पहुंचे बरन ठह-

नरममांस से मिलीहै और अपनीओर दोनों ऊपर नीचेके तालुओं को खींचती और इनदोनों से एकप्रकार की लार लेतीहै और उस लार को उसभोजन में जो उसे बाहर से मिलता है खर्च करती है कि उससे तरह२ का स्वाद जैसे खटाई मिठाई नमकीनआदिपहिंचाने और इससे लाभ बातकरने के समय भी है और भोजन को मुखमें हिलाती है ईश्वर की बुद्धिने क्या अच्छीरीति रक्खी है कि जिह्वा हरओर घूमसक्ती है और इसके मूलको बड़ाबनाया कि साबितरहे और जिह्वाकी नोकको ऐसाबनाया कि वह हिलसके और हरओर जावे और मसूढ़ों से मैल आदि की सफाई करे और दांत अतिउत्तम हड्डियों के सार से बनाये हैं जो सब हड्डियों के विरुद्ध हैं और उस हड्डियों के सार को इस तरह समझना चाहिये जैसा कि लोहे के प्रकारों में तेज़ाब दियाहुआ लोहा आगे के दांत चौड़े और तेज़टुकड़े करनेवाले बनाये और दांतोंकेडकरो नोकें निकालीं कि चीज़ोंको तोड़ें और पीसनेवाले दांतों का सिरा चौड़ा बनाया और सख़्तकिया कि भोजनको पीसें जो इनकासिरा बराबर और चिकनाहोता तो खाईहुई चीज़ कभी न पिरती और जो इनकेसिरे चौड़े न होते तो मुखमें डाली चीज़ न ठहरती और ऊपर के दांत गिन्ती में बहुतबनाये नीचेवालों से क्योंकि ऊपर के दांत लटके हैं और इससबबसे अपनी स्थिरताके लिये ऐसीवस्तुकी आवश्यकता रखतेहैं जो उनसे अधिकहो और नीचे के दांत अपने स्थानपर हैं तो इनका थोड़ासा होना बहुतहै अर्थात् गिनती में इसकारण कम हैं कि यह लटके नहीं (मसूढ़ोंकावर्णन) अर्थात् वह स्थान जिस पर दांतस्थितहै और यहदोहैं एकऊपरदूसरानीचे जब ईश्वरनेचाहा कि मुख भोजनकरने,बातकहने,वायुकेलेनेमें हिलतारहे तो नीचले मसूढ़ोंका हिलनाभी अवश्यहुआ क्योंकि नीचेके मसूढ़ोंका हिलना ऊपरकेमसूढ़ोंसे बहुत लाभदायक और सुगम है और इस सुगमता का प्रमाण यहहै कि वहछोटेहोनेके कारण जल्दीहिलसक्ताहै और लाभदायक होने का यहप्रमाणहै कि ऊपरका मसूढ़ाशिर के पास

रहै और खानेवाले को खाने के समय सहायता करें किन्तु ग्रास लेने और चबाने और चूसने के हथियारहो और बातकरनाऔर जो कुछ मुखमें लेजानाहो इन्हीं के द्वारा होसक्ताहै और यह दोनोहोंठ उसमांस से उत्पन्न हैं जो त्वचाकी प्रकृति से मिला है और दोनों कपोलोंके पट्ठे ऊपरकीओर से दोनोंहोंठसेमिलेहैं और ठोढ़ीकेपट्ठे नीचेकी तरफसे मिलेहै और जबड़ोंकेपट्ठे दोनो तरफ़ दाहने और बायेंहाथसे मिलेहै और इसीलिये ईश्वरने दोनोहोंठों को मांससे उत्पन्नकिया कि उनकाहिलना और बन्दहोना मनुष्यको सुगमहो और इनका स्वभाव बहुतनरम और थोड़ा कठोर है इसीलिये कि जो पट्ठे इनके पास हो उनके आधीन रहै (मुख का वर्णन) मनुष्य भोजन करने की आवश्यकता रखता है इसलिये उस परमेश्वर ने भोजन के पैठने की जगहको मुखबनाया और ऐसी रीति रक्खीहै कि एकबेर खुले और एकबेर बन्दहोजाय नाक के छिद्रों के विरुद्ध कि यहदोनों खुलेपैदाकियेहैं कि हमेशा खुलेरहकर हवा खींचाकरें और परमेश्वर ने मुखको सीधाबीच से खाली फेफड़े के पट्ठे कीतरह ऐसीसूरत से उत्पन्नकिया कि बहुत सीधा न हो वरन इसरीति से रूप प्रकटकिया है कि उसको भोजन के इकट्ठा होने का घर बनाया है जो वह भोजन आटा होजाने की आवश्यकता रखताहो तो दांत उसको चबाकर आटाबनावें और दोनों ओठोंको खुलने और बँधने की शक्ति दी और इसी दृष्टि से दोनों ओठों के द्वारा मुँहके बन्दहोने को ज़रूरतहुई कि मुखकी तरी जो शब्द के कारण बाहर से मुखमें जातीहै जैसा कि सम्पूर्ण जोड़ा मे क्योंकि मुहँ की तरी ग्रास के निगलने और बात करने के समय जिह्वा के हिलने में सहायतादेती है और मुखकीतरी से यह भी गुण है कि हवाको फेफड़ेके पट्ठे में पहुंचातीहै जो कि मनुष्य का जीवन श्वास पर है इसलिये ईश्वर ने दोमार्गबनाये एक नाकका छिद्र दूसरा मुखका छिद्र कि जो एकमें कोई उपद्रव होकर बन्दहोजावे दूसरा कामदे और मनुष्य का जीवन कठिन न हो और जिह्वा सुरतऔर

हैं जो ओसपड़ेहुये स्थानोंपर उगतीहै और यहप्रकार फोगकेबदले है अन्य सम्पूर्ण जीवधारियों के विरुद्ध कि उनके सम्पूर्ण शरीर के केश सुन्दरता और वस्त्रके स्थानपरहैं ॥

दूसरा प्रकार---वाचकता की उत्पत्ति का वर्णन ॥

ईश्वरकीबुद्धिने शिरको इन्द्रियोंकास्थानबनाया और जोकि कई इन्द्रिया देखने और सुनने की आवश्यकता रखती हैं कि ऊंचेस्थान परहों इसलिये शिरको सम्पूर्ण शरीर से ऊंचा बनाया और ऊंचा स्थानगरदनहै और उसको जोड़ोंकेद्वारा हिलनेफिरनेवालाबनाया कि छओ तरफ़ घूमसके और एक गोल जोड़ को भी बनाया कि सब इन्द्रियोंको लाभ पहुंचावे और एक तरफ़ रहता है परन्तु सर्व ओर मालूमहोताहै औरफेफड़ेके नरखरेको उससेमिलाया और गरदन की सात हड्डियांहै जो हड्डियां गरदनको उठाती है तो यह उचित हुआ कि वह छोटीहों और जो कि नीचेकी हड्डियों के निकलने की जगह हराम मगज़ है इसलिये ईश्वरने इस नीचे की हड्डीको उन ऊपरकी हड्डियोंके पीछे पैदाकिया और उसहड्डीकेनीचेसे आधेछिद्र है और यह छिद्र कुछ मध्यमें नहीं है किन्तु चारोंतरफ़ हैं इसदृष्टि से कि हराम मगज़ और झिल्ली और हड्डीकोघेरेहैं और भोजनकी इच्छारखते हैं इसलिये हरहड्डीमें एकजोड़को उसछिद्रसेप्रवेशकिया और छिद्रके उत्पत्ति का स्थान पट्ठे और फुदकने वाली और स्थिर रगेहै कि हरछिद्रमें प्रवेशकरजांय जोछिद्रपट्ठो और रगोंमें हैं और ईश्वर ने उन छिद्रों की संख्या उतनीही रक्खी जितनी छेदवाले हड्डियोंकी संख्या हैं कि थोडे होनेपर वह रगे अपने काममें कोता-ही न करें क्योंकि उसकी [illegible] लगी और अधिक भी नहीं क्योंकि अधिकता [illegible] और [illegible] पूर्ण बुद्धि-मानीसे गर्दन को खाली [illegible] के जानेकेलिये और फेफड़े के [illegible]
और एक [illegible] श-
[illegible]

है और इन्द्रियोंके स्थानके पासहै तो जो ऊपरका मसूढ़ा हिलता तो ब्रह्माण्डओरइन्द्रियांभी बराबरहिलतीं और इसकारणसे सदा कुछ न कुछउपद्रवहुआकरता जैसा कि बुद्धिमानोंके निकट प्रकटहै सोईश्वरने ऊपरकेमसूढेको स्थिरपैदाकिया और नीचेवालेको हिलने वालाऔर एकहड्डी सदाकेपास पैदाकी सदा वहस्थानहै जो मोंह कान के बीचमेंहै और उसमे छिद्रबनाये और उसको नीचेके मसूढ़े के हरछिद्रसे आधीनकिया कि खोलने और मूंदनेमें सुगमताहो ॥

आठवांप्रकार—बालों का वर्णन ॥

बुद्धिमानों का बचन है कि जो फोगभोजन से बाकी रहजाता है जब उसमे गर्मी प्रभावकरतीहै उसको टुकड़े करके त्वचासे बाहर निकालतीहै तो कुछ उसमें से पतला है थोडासा हिलने जुलनेसे गलजाताहै और जो गाढ़ाहै वह बालो के छिद्रों के मार्गसे बाहर आताहै तो उसीसे बाल उगतेहैं सो उनमेसे बहुधा बाल सौंदर्य अलंकार और रक्षाकेलिये पैदाहोतेहै जैसे कि शिरकेबाल कि शिर की सरदी और गरमी के दूरहोने के वस्त्रआदि के बदले और सुंदरता और अलकार के लिये हैं और रक्षा के लिये मोंहके बाल हैं कि आंखमें गिरनेवाली चीजको रोककरें और आंखतक न पहुंचने दे मानो नेत्र के वास्ते एक किला है और सुन्दरता के वर्णन की कुछ आवश्यकतानहीं आपही प्रकटहै और भवोंके बाल कि आंखों को घेरेहुये हैं जालीकीतरह पर हैं कि मनुष्य गर्द और गुबार के वक्त उनके द्वारा बराबर दृष्टि दौडासक्ता है और उनके द्वारा कोई हानि या दुःख आंखों को नहीं पहुंचसक्ता मानो भवें मझीवट्टे की राह बन्दकियेहुये हैं बाजेबाल ऐसे हैं कि मुखकी सुन्दरताकेलिये उत्पन्नहुयेहैं जैसे दाढ़ी और मूंछ सो यह दोनो मनुष्य के सौंदर्य और रूपके कारणहै यहांतक कि जो दाढी और मूंछ पैदा न होती तो पुरुष के मुखमें सुन्दरता भी न होती और बाजे बाल ऐसे हैं जिनसे कोई सुन्दरता नहीं और गरमस्थानो में निकलते हैं जैसे बग़ल और स्त्री पुरुष का लिंगस्थल यहबाल उस घास के सदृश

हैं जो ओसपड़ेहुये स्थानोंपर उगतीहैं और यहप्रकार फोगकेबदले हैं अन्य सम्पूर्ण जीवधारियों के विरुद्ध कि उनके सम्पूर्ण शरीर के केश सुन्दरता और वस्त्रके स्थानपरहैं ॥

दूसरा प्रकार---वाचकता की उत्पत्ति का वर्णन ॥

ईश्वरकीबुद्धिने शिरको इन्द्रियोंकास्थानबनाया और जोकि कई इन्द्रियां देखने और सुनने की आवश्यकता रखती हैं कि ऊंचेस्थान परहों इसलिये शिरको सम्पूर्ण शरीर से ऊंचा बनाया और ऊंचा स्थानगरदनहै और उसको जोड़ोंकेद्वारा हिलनेफिरनेवालाबनाया कि छओ तरफ़ घूमसके और एक गोल जोड़ को भी बनाया कि सब इन्द्रियोंको लाभ पहुंचावे और एक तरफ़ रहता है परन्तु सर्व ओर मालूमहोताहै. औरफेफड़के नरखरेको उससेमिलाया और गरदन की सात हड्डियांहैं जो हड्डियां गरदनको उठाती हैं तो यह उचित हुआ कि वह छोटीहों और जो कि नीचेकी हड्डियों के निकलने की जगह हराम मगज़ है इसलिये ईश्वरने इस नीचे की हड्डीको उन ऊपरकी हड्डियोंके पीछे पैदाकिया और उसहड्डीकेनीचेसे आधेछिद्र हैं और यह छिद्र कुछ मध्यमें नहीं है किन्तु चारोंतरफ़ हैं इसदृष्टि से कि हराम मगज और झिल्ली और हड्डीकोघेरेहैं और भोजनकी इच्छारखते हैं इसलिये हरहड्डीमें एकजोड़को उसछिद्रसेप्रवेशकिया और छिद्रके उत्पत्ति का स्थान पट्ठे और फुदकने वाली और स्थिर रगेहैं कि हरछिद्रमें प्रवेशकरजांय जोछिद्रपट्ठों और रगोंमें हैं और ईश्वर ने उन छिद्रों की संख्या उतनीही रक्खी जितनी छेदवाले हड्डियोंकी सख्या हैं कि थोडे होनेपर वह रगे अपने काममें कोताही न करें क्योंकि उसकी कोताही विघ्नकारक होगी और अधिक भी नहो क्योंकि अधिकता व्यर्थ है और ईश्वरने अपनी पूर्ण बुद्धिमानीसे गर्दन को खाली जगह में नलको भोजन और शराब के जानेकेलिये और फेफड़े के नलको फेफड़े मे वायुके प्रवेश के वास्ते और एक परदा कंठका बनाया कि वह फेफड़े को भोजन और शराबके जानेके समयछिपावे कि श्वासआने जानेके स्थान में न पड़-

जावे और फिर श्वास लेनेके समय स्थिर होजावे और उस परदे को चवनी हड्डीकी तरह पर बनाया कि अपने पर स्थिर हो और सोधी खड़ीरहे और जब भोजन नलसे उतरने लगे उससमय वह गिरपड़े और इस परदेका गुण यह है कि हवाकी सरदी को काट डाले कि जब उसतक पहुचै और उसको गरम करे और उसपरदे को सीधा मनके लियेभी बनाया और एक गुण यहहै कि इसपरदे में एक गर्दसी रहती है जो भेजेसे नजलेको उतरने नहीं देती और फेफड़ेपर उस नजलेको गिरने नहीं देती नहीतो उसके उतरनेसे खांसी और सिलका रोग होजाया करता और इस परदेकी शकल नेज़े की तरह लम्बीहै औरनल जिसमें से होकर शब्द निकलता है उसमें तीन चवनी हड्डियां हैं और नाना प्रकार से हैं हर एक इन तीनों हड्डियोमे से अपने रूप और अनुमानके अनुसार है॥

तीसरा प्रकार छाती है जो कि छाती मनकी रक्षा करतीहै इस लिये ईश्वरने उसको कठोर बनाया और ग्यारह हड्डियों से बना-वटकी जो दन्दानेदार और परकी तरह पर हैं और उसकी पस-लियां उसके पास हैं जो श्वास लेने के जोड़ों को घेरे हैं और मन मनुष्यकी परिपूर्णतासे रक्षा करनेवाला है और उसके ऊपर सात हड्डियां दन्दाने और बड़े परोंकी तरह उत्पन्न की और वह सातों चौड़ी है कि मनकी रक्षाकरें अर्थात् मनको घेरलें और नरम और चिकनी है कि जो हवा उनतक पहुंचती है श्वासके जोडों के खुलने और बन्द होनेमे अच्छी तरह पहुचजाय और मुख्य सीने को इस बातकी आवश्यकताहुई कि उसका अन्दर का हिस्सा खाली नहीं और चिपटभी नजाय कि उसमे फेफड़ा और दिल स्थिर रहे और उसमे सिकुड़ना खुलना होसके क्योंकि यह सिकुडना और खुलना मरने तक अलग नही होता और यह छोटी हड्डियां हड्डियों से उ-त्पन्न कीगई हैं कि दिलकी ढाल बाहरके उपद्रवों के लिये हो और वहप्राण और मुख्यउष्णताके गलनेको रोकती हैं (स्तनोंकावर्णन) स्तन बहुतसी फुदकनेवाली और स्थिर नसोंसे मिले हैं और इसमें

बहुत प्रकारकी रगें हैं जो बहुत पतली हैं और उन पर बहुत रेशे लिपटेहुये हैं और स्तनों में सपेद मांस भरा है जैसा कि गदूद और इस सपेद मांसका यह स्वभाव है कि स्तनोंकी रगों में लहू पहुंचकर दूध बनजाता है और ईश्वरने गर्भाशय और स्तनों के मध्य परस्पर मिलीहुई नसें पैदाकीं कि उन्हीं नसों से ऊपर को वह लहू चढ़ता है जिसको बच्चा गर्भाशय में खाता है क्योंकि बच्चे को यह शक्ति नहीं कि गाढ़ा भोजन खासके और दूध हर भोजन से पतला है और स्त्री का गर्भाशय लहूके होनेके कारण मानों एक हौज़के सदृश है सो ईश्वर की ऐसी बुद्धि हुई जब बच्चा बजाता है तो वह रुधिर ऊपरको चढ़ता है और थोड़ा २ होकर दूध का स्वभाव पाता है सो इस रीतिपर स्तनों में दूधका भोजन बच्चेके वास्ते तय्यार होरहता है जैसा कि मेहमान (अतिथि) के आने के पहले घरवाला खानेको तय्यारी करता है सो यह वही रुधिर है जो स्त्री के ऋतुके समय बाहर निकलता था और ईश्वरकी अद्भुत बुद्धिमानी यह है कि जिसफोगको प्रकृति बाहर दूरकरती थी उसीको ईश्वर ने बच्चे का भोजन माता के उदर में ठहराया फिर उसी रुधिर को स्तनोमें दूध बनादिया (चौथाप्रकार)हाथमें जोकि ईश्वर की बुद्धि ने चाहा कि कर्मेन्द्रियों से वाह्य वस्तु मालूमकीजावें सोकोईउनमें से उपयोगी और कोई हानि देने वाली फिर उचित हुआ कि उन कर्मेंद्रियो में कोई ऐसा हथियार नियत किया जाय जिसके द्वारा मनुष्य लाभको ग्रहण और हानिको त्यागकरे इसलिये परमेश्वरने हाथ तीन बड़े भागोंसे उत्पन्नकिया प्रथम—बाजू—द्वितीय कोहनी तृतीय हथेली पहले बाजूको एक सख़्त हड्डी से बनाया जो कंधे के निकट है और उसका एकजोड़ है कि वह हर ओर हिल सके और वह ऐसा है कि ईश्वरने बाजूकी हड्डीके सिरेको गोल बनाया और कंधेके सिरेपर मिलाया और यह बराबर इस कारण है कि इसका कामभी बराबर रहे फिर इसको रग और पट्ठोंसे मजबूतकिया और एक हड्डीको दूसरी हड्डीके साथ मज़बूती से मिलाया क्योंकि हाथ

जावे और फिर श्वास लेनेके समय स्थिर होजावे और उस परदे को चवनी हड्डीकी तरह पर बनाया कि अपने पर स्थिर हो और सीधी खड़ीरहे और जब भोजन नलसे उतरने लगे उससमय वह गिरपड़े और इस परदेका गुण यह है कि हवाकी सरदी को काट डाले कि जब उसतक पहुचै और उसको गरम करे और उसपरदे को सीधा मनके लियेभी बनाया और एक गुण यहहै कि इसपरदे में एक गर्दसी रहती है जो भेजेसे नजलेको उतरने नही देती और फेफड़ेपर उस नजलेको गिरने नहीं देती नहीतो उसके उतरनेसे खांसी और सिलका रोग होजाया करता और इस परदेकी शकल नेज़े की तरह लम्बीहै औरनल जिसमे से होकर शब्द निकलता है उसमे तीन चवनी हड्डियां हैं और नाना प्रकार से हैं हर एक इन तीनो हड्डियोमे से अपने रूप और अनुमानके अनुसार है॥

तीसरा प्रकार छाती है जो कि छाती मनकी रक्षा करतीहै इस लिये ईश्वरने उसको कठोर बनाया और ग्यारह हड्डियो से बनावटकी जो दन्दानेदार और परकी तरह पर हैं और उसकी पसलियां उसके पास हैं जो श्वास लेने के जोड़ों को घेरे हैं और मन मनुष्यकी परिपूर्णतासे रक्षा करनेवाला है और उसके ऊपर सात हड्डियां दन्दाने और बड़े परोकी तरह उत्पन्न की और वह सातों चौड़ी हैं कि मनकी रक्षाकरें अर्थात् मनको घेरलें और नरम और चिकनी है कि जो हवा उनतक पहुचती है श्वासके जोड़ो के खुलने और बन्द होनेमे अच्छी तरह पहुचजाय और मुख्य सीने को इस बातकी आवश्यकताहुई कि उसका अन्दर का हिस्सा खाली नहीं और चिपटभी नजाय कि उसमे फेफड़ा और दिल स्थिर रहे और उसमें सिकुड़ना खुलना होसकै क्योकि यह सिकुड़ना और खुलना मरने तक अलग नहीं होता और यह छोटी हड्डियां हड्डियो से उत्पन्न कीगई हैं कि दिलकी ढाल बाहरके उपद्रवो के लिये हो और वहप्राण और मुख्यउष्णताके गलनेको रोकती हैं (स्तनोंकावर्णन) स्तन बहुतसी फुदकनेवाली और स्थिर नसोसे मिले हैं और इसमें

सन्दूक़ की तौर पर होजाती है और अगूठा सन्दूक़ के तालेकी तरह प्रकटरहता है ईश्वरने उंगलियोंको थोड़ीहड्डियोंसे बनाया जिनका नाम सलामियात हैं और यहहड्डियां अंदरसे खालीहैं और किसी प्रकारका मांस नहीं है इसलिये कि काम करने के समय आपुस में जमाहोकर एक दूसरेकी सहायकहों और उनके काम भी धीरेनहों और एक हड्डीसे भी उनको नहीं बनाया कि मुट्ठी बंदकरने के समय दुःखहो और हर उंगलीमें तीन हड्डियोंसे अधिक उत्पन्न नहींकिया क्योंकि वहुत जोड़ होते तौभी मुट्ठी न बँधसक्ती जो दो हड्डियां हर उंगलीमेंहोतीं चाहोवह बहुतदृढ़होतीं परंतुउनसेकाम अच्छे न होते और ईश्वरने हथेली को चौड़ी २ हड्डियों से उत्पन्न किया और उँगलियां महीन रक्खीं कि उठानेवाले से उठाई हुई चीज के साथ अच्छीरहे और इनहड्डियों को गोल इस कारण बनाया कि कोई उपद्रव इनपरनहो और खाली और सख़्तइसलियेबनाया कि काम पर मज़बूत रहें और ईश्वरने हथेलीको गहरा और उसकीपीठको चपटा बनाया कि जिसवस्तुके पकड़ने की इच्छा करे तुरन्त पकड़ सके और हथेली के अन्दर मांस उत्पन्न किया गया है कि किसी चीज के पकड़ने के समय खूब मिलजाय (कंधेकावर्णन) ईश्वरने इसके शिरको दो लाभों से उत्पन्न किया एक यह कि उस से बाज़ू लटकारहै जो छातीसे चिपकाहोता तो उसके चारोंओर खुलेनहोते और इस तरह से हिलझुल न सक्ते और दूसरागुण यह है किजो जोड़ छाती को घेरेहैं उनको यह घेरे और कन्धेमें भी छोटीहड्डियां हैं मानों यह बाज़ हृदय के लिये पंखोंकी तरह पर हैं और बहुतसे लाभ इसमें हैं जैसे चोटों को दूरकरना आदि और कन्धे की हड्डी बाहर की ओर से महीन होतीहै और भीतर की ओर मोटी और कंधे का मिलाप तरक़वा से है तरक़वा एक हड्डी का नामहै और उसका गुण यह है कि बाज़ूको ऊपर नीचे की तरफ़ निकलने से रोके और उसकी पीठपर एक बढ़ीहुई हड्डी तिकोनी है और बाहर को झुकीहै और कोना उसका अन्दर की ओर झुका है और यह

से नानाप्रकारके कार्य होते हैं, और ईश्वरने दोनों कन्धोंको अलगर बनाया इस तरह पर कि एक दूसरे से न चिपके और दोनों हाथ दहने और बायेंकी तरफ़ खुलेहों और यहदोनों हाथ आपुसमें आगे और पीछे से मिलजाते हैं इसलिये सर्व ओर सुगमता पूर्वक हाथों का पहुँचना सम्भवित है और ईश्वरने कोहनीसे नीचे कलाई तक दो हड्डियां उपजाईं जोलम्बाईमे मिली हैं और दो हड्डियांऊपर की तरफ़ जो अंगूठेमे मिली हैं उनका नाम ओक़ है और जन्दआला भी कहते हैं और जो उंगलियां नीचे की अनामिका से मिली हैं उनको अगलज़ कहतेहैं और वह असफलभीनामहै और ज़न्दआला का यह गुणहै कि उसके सबब से कुलबाज़ू हिलता है अर्थात्सीधा टेढ़ाहो और ज़न्द असफलकी सहायतासे पौंचा खुलता और बन्द होता है इनका बीच बाज़ूसे इनके काम करनेके लिये महीन है और दोनो तरफ इनके मोटे बनाये क्योंकि बहुधा नसोंकी इनको आवश्यकता है बहुत जरूरत तो यह है कि जोड़ो के हिलने के वेग के समय उन दोनोंओर को झुकते हैं ज़न्दआला पेचदार है और गुण उसका यहहै गिरह गिरह से टेढ़ी होजावे और जन्दअसफल सीधा है कि खुलनें और मूंदने की बहुत दुरुस्ती रक्खे ईश्वरने हथेलीको उन चार हड्डियोंसे बनाया जो एक दूसरी से दूर है क्योंकि उसमें चार उंगलिया मिली हैं, और उसकी हड्डियां कठोर और बहुत प्रबल बनाईं क्योंकि कन्धों और पट्ठोंकी बनावट इसी से है सो यह सीधी रेखाकी रीतिपर है मानो सब हाथका काम इसी पर है और ईश्वरने उंगलियोंको बनाया कि उंगलिया एक ओर, और अंगूठा दूसरीओर कि परस्पर पट्ठोंकोमिलादे औरअंगूठेको प्रबल औरमोटा बनाया और बलमें एकसा और सब उंगलियो को उनके बल और सुन्दरताके अनुसार कोई छोटी कोई लम्बी कोई मोटी कोई पतली कि जब मुट्ठी बांधोतो हरएक उङ्गलीका सिरा बराबर आजाय इसलिये कि मुट्ठी बँधसके इस दशा पर कि बीच से खाली और बाहर से बन्द रहे इसी लिये उंगलियो की जड़ मोटीबनाई और वह मुट्ठी

और पीठकी हड्डियों को मजबूत बनाया इसका दृष्टान्त इसतरह परहै कि जबकिश्ती को बनाना चाहते हैं तो पहले एकलकड़ीका तख़्ता बांधते हैं फिर छोटे२तख़्तेउसमेंजमाते हैं इसीप्रकार इसर रीतिसेपसलियों और शिर और दोनोंहाथ और दोनोपैर हड्डियां जमी हैं और उसी पीठिकी नीचली हड्डीसे शरीर अपने खड़ेरहने और स्थिरतापर बलवान्होता है और इसमें मोहरेदार हड्डियां हैं कि अच्छीतरह सीधी और टेढ़ी होसकें कदाचित् एकहीअस्थि-खण्डहोता तो झुकना कठिनहोता जो कि पीठ मुख्यशरीर को स्थिरता के कारण है तो ईश्वरकी बुद्धि ने विचारा कि इसकीरक्षा कीजावे इसलियेहरहड्डीबाहर से कांटेदार और दोनों ओर पैरकी तरह दहने और बायें हाथ से कृपाकी और उनकांटों को चबनी हड्डियों के जोहर से छिपाया और इनपर रबात और पट्ठे चौड़े२ भीमढ़ेहुये हैं और इनकांटोंको सनासनभी कहते हैं क्योंकियहउन उपद्रवों की ढालहै जो बाहर से पीठकी हड्डियोंपर चोटपड़ती है और पीठउस दुःखसे छुट्टीपाती है और उनचबनी हड्डियों के छिपाने से यहप्रयोजन है कि कड़ियोंको कड़ियों से मिलावे इसतरह परकि मानो एकटुकड़ा है और उसपर दोपरदेहोने से यहलाभ है कि नीचेकी हड्डियो को चारों ओर से दृढ़तापूर्वक जमाकिये रहे और जो पीठकी हड्डियां बहुतपैदाहुई हैं उससे यहप्रयोजन है कि जो किसी हड्डीपर कोई दुःखपहुंचे तो और हड्डियां पीठकी रक्षा करें और जोकि मनुष्य को आगेझुकने की आवश्यकता अधिक है तो इसीकारण परमेश्वर ने पट्ठों और झिल्लियों को बाहरकी ओर से मढ़ा और बगलोंकी ओर खालीरक्खा कि हिलने झुकने में सुगमता और रक्षारहे सो पीठएकगोल खण्डहै कि वह सब दुःखों को उठावे और ऊपरवाले हड्डियों के मोहरे नीचे की ओर झुके हैं और नीचे वाले ऊपरको गयेहैं और यह सब मोहरे आशरे (दश हड्डियोंका जोड़) के बीचमें इकट्ठेहुयेहैं और वास्ता (पीठलंबीहड्डी) सब मोहरोंके बीचमेहै और जोकि पीठको टेढ़ाहोनेकी आवश्यकता

कोना हड्डीका जो कन्धे में है पिंजरेकी तरह पर है और यह उस कंधेकी बढ़ीहुईहड्डीके सिवायहै और यह चोड़ीहै और इसमें चबनी हड्डियां भी चौडी मिलींहैं इसीकारण यह नरम भी है—(नाख़ून का वर्णन) ईश्वरने मनुष्यके नख इसतरह बनायेहैं जैसे उड़नेवाले पक्षियो के चंगुल और चोपायो के सुम होते हैं और उनसे उँगलियों की मजबूती भी है क्योंकि जो नख न होते तो किसी वस्तु के पकड़ने के समय दुःख उठाती और छोटे २ और रेजे २ चीज़ों का उठाना भी बहुत कठिन होताहै इसलिये यह नख अपने तौर पर एक हथियार खुजाने घायल करने वाल उखेडने और २ ऐसे कामों के लियेहैं और ईश्वरने इन्हें सख़्त नरमी मिले हुये बनाया सख़्तीसे यहलाभ है कि कठोर उपद्रवों से बचारहै और नरमी में यहगुणहै कि टूटनजाय और जोइनकों उँगलियोंकी पीठपर फैला हुआबनाया और मांसकी चारोतरफ़जगहदी तो इससेप्रयोजनयह हैकि ज़ल्दी किसीकष्टमे न फँसे और ईश्वरने इसकोसदा उगने की शक्ति दीहै कि काम काजके मुवाफ़िक़ घिसाकरे (उदर का वर्णन) अर्थात् पेट एक झिल्लीहै गोल हृदयसे अंडकोष पर्यंत कि यहअंदर के खंडों को छिपावे मानो यह एक गढ़ाहै ईश्वरने इसको उत्पत्तिमे दोविचारकिये एक यहकिउसके साम्हने इन्द्रियां हैं सोउनकीदृष्टि और ब्रह्माण्ड के विरुद्ध रक्षाकरता है और दूसरायह है कि जब पेटभोजन आदिसे भराहो फैलने के सबब तनजाता है और जब खालीहो मुख्यरूपपर आजाता है और यह आंतो और पक्काशयकी भी रक्षाकरता है ईश्वरनेपेटकोनरमओरनाज़ुक औरतगपैदाकिया परन्तु तौभी उसको कुछकठोरता से बलवान् बनाया है इसीवास्ते कि खुला न हो और आंतोकोभीनरम और तग नहींबनाया किन्तु सुगमता से बराबरकिया है सो भोजनके पहुंचने के समय पचाने वाली शक्तिकी सहायता करता है (पृष्ठ) ईश्वरने पीठको कई ऐसी हड्डियों से जो दन्दानेदार हैं दृढ़ बनाया कि बडे २ खंडों की रक्षा करे और उनकी ढालरहै जैसे श्वासलेने मन और भोजन के खंड

और पीठकी हड्डियों को मज़बूत बनाया इसका दृष्टान्त इसतरह परहै कि जबकिश्ती को बनाना चाहते हैं तो पहले एकलकड़ीका तख़्ता बांधते हैं फिर छोटे२तख़्तेउससेंजमाते हैं इसीप्रकार इस२ रीतिसेपसलियों और शिर और दोनोंहाथ और दोनोंपैर हड्डियां जमी हैं और उसी पीठकी नीचली हड्डी से शरीर अपने खड़ेरहने और स्थिरतापर बलवान्होता है और इसमें मोहरेदार हड्डियां हैं कि अच्छीतरह सीधी और टेढ़ी होसकें कदाचित् एकहीअस्थि-खण्डहोता तो झुकना कठिनहोता जो कि पीठ मुख्यशरीर को स्थिरता के कारण है तो ईश्वरकी बुद्धि ने विचारा कि इसकीरक्षा कीजावे इसलियेहर२हड्डीबाहर से कांटेदार और दोनों ओर पैरकी तरह दहने और बायें हाथ से कृपाकी और उनकांटों को चबनी हड्डियों के जोहर से छिपाया और इनपर रबात और पट्ठे चौड़े२ भीमढ़ेहुये हैं और इनकांटोंको सनासनभी कहते हैं क्योंकियहउन उपद्रवों की ढालहै जो बाहर से पीठकी हड्डियोंपर चोटपड़ती है और पीठउस दुःखसे छुट्टीपाती है और उनचबनी हड्डियों के छि-पाने से यहप्रयोजन है कि कइयोंको कइयों से मिलावे इसतरह परकि मानो एकटुकड़ा है और उसपर दोपरदेहोने से यहलाभ है कि नीचेकी हड्डियों को चारों ओर से दृढ़तापूर्वक जमाकिये रहे और जो पीठकी हड्डियां बहुतपैदाहुई हैं उससे यहप्रयोजन है कि जो किसी हड्डीपर कोई दुःखपहुंचे तो और हड्डियां पीठकी रक्षा करें और जोकि मनुष्य को आगेझुकने की आवश्यकता अधिक है तो इसीकारण परमेश्वर ने पट्ठों और झिल्लियों को बाहरकी ओर से मढ़ा और बगलोंकी ओर खालीरक्खा कि हिलने झुकने में सु-गमता और रक्षारहे सो पीठएकगोल खण्डहै कि वह सब दुःखों को उठावे और ऊपरवाले हड्डियों के मोहरे नीचे की ओर झुके हैं और नीचे वाले ऊपरको गयेहैं और यह सब मोहरे आशरे (दश हड्डियोंका जोड़) के बीचमें इकट्ठेहुयेहैं और वास्ता (पीठलंबीहड्डी) सब मोहरोंके बीचमेंहै और जोकि पीठको टेढ़ाहोनेकी आवश्यकता

है तो जिस ओर वास्ते झुकताहै उसी ओर सबमोहरे झुकतेहैं जैसे कमठेके पकड़ की जगहहै और ईश्वर ने पीठकी हड्डी को ठोसन उत्पन्न किया किन्तु उसमें दन्दानेकी हड्डियां बनाईं कि जिस तरफ़ चाहे कामकाज करनेके लिये पीठ भी झुके और किसी प्रकार की हानि किसी अंगपर न पहुंचे (पहलूकावर्णन) यह पहलू पसलियों से मिलाहै और उन पसलियों के अंदर मांस कठोर और पतला उनकीरक्षाके लियेहै और उनकोश्वास और भोजनकेआशयोंसेघेरे है और इसीकारण एक हड्डीसे नहीं उत्पन्न किया कि संगीन नहो और इसलिये भी कि जब आशय भोजनसे भरजावें खुलें और हर एक पसलीकी हड्डी झुकी हुई कमानकी तरहपरहै और उनके पास चबनी हड्डियांहैं कि टूटनेसे बचें॥

(आठवांप्रकार—पांवकावर्णन) जोकि पांवसे चलना फिरना बैठना उठना सोना झुकना चिपकना आदि प्रयोजन है इसलिये परमेश्वर ने चरणको इस रूपका उत्पन्न किया कि इनसबके अनुकूल होसके और पांवमें हाथोंकी तरह उंगलियां निर्माण कीं और हथेली भी कि चरणों के काम भी कुछ २ हाथोंके सदृश हों और परमेश्वर ने हड्डियों को हड्डियों और रगोंपर स्थिर किया और पिंडली की हड्डियोंकी बनावट रान परहै कि पांव मज़बूत रहे हर दशामें चाहे चले या खड़ाहो या बैठे या तकियाकरे हिले ठहरे और बहुत से गुण पांवकेहैं और पांवमें कलाई और तली पैदाकी और यह पांव इस कारण लम्बाहै कि ठहरने और मज़बूत होनेका गुण प्रकटहो कि जब ठहरे तो ठहरनेका हथियार जमरहै और ईश्वरने पांवकी उंगलियों को हाथ के विरुद्ध दूसरे रूपपर उत्पन्न किया कि सब उंगलियां एक सतर में हैं क्योंकि उन सब उंगलियों में जो नाना प्रकारके स्थानों और वस्तुओंपर पड़तीहैं जैसे कुबकी हुई जगह या टेढ़ी आदि और गहराव या पांव की तली पृथ्वी पर रखना और कच्चे सीढ़ीपर चढ़ना और एड़ी को तिकोनी सख़्त चिपकी हुई हड्डीसे रचा तो उसकी सख़्तीइस कारणहै कि वह शरीरकोसहारे है

परन्तु उसमें खींचने की शक्ति और उसका पांवके पीछे होना इस कारण है कि शरीर पीछे न गिर पड़े और ईश्वर ने एड़ीको बहुत कठोर चर्मसे छिपाया जो सब जगह के चमड़ोंसे सख़्त होताहै कि सख़्ती सहारले क्योंकि इसपर बड़ी रगड़रहतीहै, और एड़ीकेआगे एक हड्डी क़िश्तीकी सूरतपर है कि पांवके कुबमें ठहराव हो और पृथ्वीसे चारों ओर मिले क्योंकि तलीका पेटा पृथ्वीसे मिला नहीं है और टखनेको पिंडली और एडीके मध्यमें रचा कि पांवके खुलने और बन्दरहने में सहायता दे (अन्दरकेजोड़ोंकावर्णन) ब्रह्माण्ड अर्थात् भेजा यह सख़्ती, नरमी और चरबीमें मध्यहै और दोझिल्लियोंके बीचमें है और यह मानो मनुष्यके प्राणका सरोवरहै प्राण ब्रह्माण्डसे दरियाके पानीकीतरह निकलता और पट्ठोंमें जारीहोता है यहां तक कि शरीर को घेरलेता है और जो कि भेजे का जौहर बहुत नरम यहां तक कि बहनेपर झुकताहै इसलिये ईश्वरने बुद्धि की कि झिल्लीके परदेमें रहे सो इस परदेको बहुततंगीसे बनाया कि भेजा उसमेंसमाजावे और वह भेजेको बन्दकरले और उसकीरक्षा क़िलेकी तरहपर करे फिर खोपड़ी और भेजेसे एक मोटी झिल्ली जो खोपड़ीसे मिलीहुईहै रची और वह झिल्ली भेजेकेलिये अस्तर की तरहपर है कि जब ब्रह्माण्ड फैलनेकेवक्तखुले और इसखोपड़ी से भेजेका बीच जामिले उससमय झिल्लीसे चोटखाय और वहचोट खोपड़ी तक न पहुंचे इसलिये वह झिल्ली ब्रह्माण्डकी सर्व वस्तुओं की रक्षकहै और जो ब्रह्माण्डमें नरमी और चुस्तीका काम बहुतहै इसलिये परमेश्वरने ब्रह्माण्डकेवास्ते हड्डियोंसेसख़्तक़िला निर्माण किया जिसकानामखोपड़ीहै और उसगढ़ीकोभेजेसेदृढ़ किया कि दूर हीसे उद्नलोंको ब्रह्माण्डसे हटावे और अपनी कठोरतासे भेजेको हानि न पहुंचावे क्योंकि खोपड़ी एकसख़्तहड्डीहै और भेजाहलका है जो वह झिल्ली मोटी भेजेऔर खोपड़ीमें न होती तोदोनों मिल जाते और खोपड़ी की अवश्य भेजे को चोट पहुंचती और सदैव काल भेजेको एक न एक दुःख पहुंचा करता जो उस विश्वम्भरने

है तो जिस ओर वास्त झुकताहै उसी ओर सबमोहरे झुकतेहैं जैसे कमठेके पकड़ की जगहहै और ईश्वर ने पीठकी हड्डी को ठोसन उत्पन्नकिया किन्तु उसमे दन्दानेकी हड्डियां बनाईं कि जिस तरफ़ चाहे कामकाज करनेके लिये पीठ भी झुके और किसी प्रकार की हानि किसी अंगपर न पहुंचे (पहलूकावर्णन) यह पहलू पसलियों से मिलाहै और उन पसलियों के अंदर मांस कठोर और पतला उनकीरक्षाके लियेहै और उनकोश्वास और भोजनकेआशयोंसेघेरे है और इसीकारण एक हड्डीसे नहीं उत्पन्न किया कि संगीन नहो और इसलिये भी कि जब आशय भोजनसे भरजावे खुलें और हर एक पसलीकी हड्डी झुकी हुई कमानकी तरहपरहै और उनके पास घनी हड्डियाहैं कि टूटनेसे बचें ॥

(आठवांप्रकार—पावकावर्णन) जोकि पांवसे चलना फिरना बैठना उठना सोना झुकना चिपकना आदि प्रयोजन है इसलिये परमेश्वर ने चरणको इस रूपका उत्पन्न किया कि इनसबके अनुकूल होसके और पांवमें हाथोंकी तरह उंगलियां निर्माण की और हथेली भी कि चरणों के काम भी कुछ २ हाथों के सदृश हो और परमेश्वर ने हड्डियों को हड्डियों और रगोंपर स्थिर किया और पिण्डली की हड्डियोंकी बनावट रान परहै कि पांव मज़बूत रहे हर दशामें चाहे चले या खड़ाहो या बैठे या तकियाकरे हिले ठहरे और बहुत से गुण पावकेहैं और पांवमे कलाई और तली पैदाकी और यह पांव इस कारण लम्बाहै कि ठहरने और मजबूत होनेका गुण प्रकटहो कि जब ठहरे तो ठहरनेका हथियार जमरहे और ईश्वरने पांवकी उंगलियों को हाथ के विरुद्ध दूसरे रूपपर उत्पन्न किया कि सब उंगलियां एक सतर मे हैं क्योंकि उन सब उंगलियो मे जो नाना प्रकारके स्थानो और वस्तुओंपर पड़तीहैं जैसे कुबकी हुई जगह या टेढ़ी आदि और गहराव या पांव की तली पृथ्वी पर रखना और ऊंचे सीढ़ीपर चढना और एड़ी को तिकोनी सख़्त चिपकी हुई हड्डीसे रचा तो उसकी सख़्तीइस कारणहै कि वह शरीरकोसहारेहै

में लहू और जीवहै इसका मांस बलवान् है कि किसी में न मिले और दिलकेऊपर के भाग मोटेहैं क्योंकि फुदकनेवाली नाड़ियों के उत्पत्तिके स्थानहैं औरदिलकानीचेकाहिस्सागोल हैतुरंजके शिरकी तरह किवह हृदयकी अस्थियोंको अपने तरफ़ोंसे दूरकरे और उस पर एक हलकासा गिलाफहै जो उसकी रक्षाकरताहै उसकानाम शिग़ाफहै और यही प्राणोंका सोताहै इसीलिये यह खण्ड शरीर के बीचमें शोभायमान हुआहै और इसकाघर गढ़ीकी तरह जो दो आशयोंके बीच कि आसपास हैं वर्त्तमानहै इसकी रक्षाका स्थान फेफड़े के ऊपरहै और वह छाती पहलू और पीठकी हड्डियों से बनाया गयाहै और उसकेबीच एक खुलीहुई जगहहै जिससे दिल फेफड़े आदिको बहुत लाभहै कि दिल और फेफड़े के खुलने मुंदने में सुगमता होतीहै और उस क़िलेसे दिल और फेफड़ेकी रक्षा भी होतीहै क्योंकि यहगढ़ी सबको गर्मी और सर्दीके उपद्रवोंसे बचातीहै और मुख्य उष्णता भी इसीके कारण रक्षित और बाक़ी रहती है और जोकि लहू दिलकेबल और आनन्दका कारण है इसलिये ईश्वरने उसको पतला और गरम बनाया कि मन और मुख्य उष्णताको उपयोगी हो और दिलमें एक खाली जगहहै कि कलेजे से लहू आताहै और उसमें ठहरजाताहै कि वह उस रुधिरको रस बनादेऔरकलेजेके साम्हनेरहै कि उससेलहू उनरंगोंमें जो उसकी ओर मुखकियेहैं सुगमता से पहुंचे जोकि शरीर आवश्यकता रखताहै कि उसकेपास दिलसे जीव और मुख्यउष्णता पहुंचे इसलिये दिलमें बाईंओर एकपेट पैदाकिया कि उससे सर्वदा प्राणउठते हैं और यहपेटदाहनेसेबहुत ठंढा और बड़ाहै और इससेप्राणोंकोबहुत लाभ पहुंचताहै और दोनोंपेटकेबीचमें एकआशयहै वहां लहूदाहने से बाईं ओर जारी रहताहै और प्राण बायें से दाहने जाते हैं और फुदकनेवाली नाड़ियोंको बायेंतरफ़ पैदाकिया कि प्राण को सम्पूर्ण शरीर पर जारीकरे और हर एक मुन्फ़ज़ (जारीरहनेकेआशय) से लाभ यहहै कि दो बातें उससे हों एक तो यहहै कि चाहे जितने

कई रुवात ऐसे प्रकट किये जो भेजेके पेटसे खोपड़ी के ऊपर तक प्रवेशित हैं कि वह उन खण्डों को उठावें जो भेजे के पेटोंकोउठाते हैं और उन खण्डों को न गिरनेदें जो नरमीके कारण उसके नीचे हैं इसलिये इस रीति से भेजा सर्व्वदा हर उपद्रव से रक्षितरहा भेजेकी लम्बाईमें तीन पेटहैं और यह तीनों अपनी२हद्दमे चौड़ान रखते हैं और वह भेजे के पेट का चौड़ान दो खण्ड रखता है तो इनखण्डों मेंसे पहला खण्ड दो बड़ेखण्डों से छोटाहै और यहखण्ड नाक से हवा यानी बाफके खींचने और छींकलेने में सहायता करताहै और दूसरा पेटभी बड़ाहै कि यह बडेजोड़ोंको खालीस्थानों को भरताहै और हराममग़ज़ की यहीं से उत्पत्ति है और इसी से प्राणउगते और स्मरण शक्तिका भी यही स्थानहै तीसरा पेट एक छिद्रकी तरहपरहै जो पहले पेटसे लगाहुआहै और लम्बाहै इससे विचारकी शक्तिको बहुत सहायता मिलतीहै (फेफड़ेका वर्णन)इसे फारसी में शश कहतेहैं यह पहलूसे हृदय पर्यन्तहै और नरमखाली मानो एक फेनसा जमगयाहै और इसकारण ईश्वर ने इस जोड़को इसगुणसे रचा कि दिलको आरामदे क्योंकि दिलको बहुत खुलने मुंदनेको आवश्यकता रहतीहै और इसको सुस्तमांस बनाया कि यह सुस्ती ऊपर लिखीहुई बातोंको सहायता देतीहै इसका यह कामहै कि जो वायु मुखमें जावे उसको खींचे और दिलतक पहुंचाये और फिर गरमहवाको दिलसे खींचकर अपनी ओर शोषे और गरमहवाको दिलसे खींचकर अपनीओर शोपे और बाहर को दूरकरे और फेफड़ा आवाज़ कभी हथियारहै और एक नल खुला जोबनी हड्डियों से बनाहै उत्पन्नहै इससे सर्वदा श्वास आते जातेहैं कि एकदशामें खुलता और दूसरी दशामें तंगहोताहै और इसके तीनकोने चबनी हड्डियों से बनाये और बाकी झिल्ली लगाई कि शब्द में सहायता करे और उसमें बाहर की ओर एक हड्डी है कि बाहर के उपद्रवोंको सहे (दिलकावर्णन) यह जोड़ सनोवर वृक्षकी तरह परहै जो सारपदार्थोंकी रक्षाकरताहै और इसके पेट

हैं यहां तक कि सीधी आंतों तक पहुंचते हैं और इन शक्तियों में भोजन कलेजेमें आता इसतरह पर कि कई शक्तियां सुखाती परंतु तंगीसे खुलेकी तरफ़ निकल जातीहैं यहां तक कि नसोंमें इकट्ठी होतीं और यह नसे कलेजे में बहुत महीन हिस्सों में बटी हैं जब भोजन उनमें पहुंच जाताहै तो उनमें रुधिर हो जाताहै सो और नसोंके द्वारा सम्पूर्ण शरीरमें फैलजाताहै और ईश्वरने कलेजे का धड़ बँधे लहूकी तरह पैदाकिया कि जब भोजन अधपका हो लहू बँध जावे (पित्तेकावर्णन) इसका आशय कलेजेकी गहराईके ऊपर की ओरहै और इसमें दोछिद्रहैं एक बड़ी आंतों और मेदके मलके पास है सो पित्ताकलेजे की गहराई से पित्त को अपने छिद्र से खींचता और दूसरे छिद्र से आंतोंपर गिराताहै इसकाआकर्पण बुरे दोपों से रुधिर के शुद्धकरने के लियेहै और आंतोंपरगिराना मुख्य फोगों की सफ़ाई के वास्ते है और आवश्यकता के अनुकूल रक्षा भी करता है और जोकि पक्वाशय और आंतेंउस फोगसे जो उनमें बाक़ी रहजाता सफ़ाई की आवश्यकता रखती हैं और तंगीके सबब निकल नहींसक्ता इसलिये उसमें आवश्यकता पर पित्तगिरताहै तो उसको कफ़के दोपसे जो उसमें सदारहजाता है खालीकरता और धोताहै और जब मेदा भोजनसे खालीहोताहै और बहुत भूखहोतीहै उससमय पक्वाशयमें गिरताहै और भोजन का कामदेताहै कि मेदेकीउष्णताकी अधिकहानि न होजावे और मेदेकेबहुत भरने के समय नहीं गिरता क्योंकि उससमय गिरे तो भोजन में मिलकर उसको उपद्रव कारक करदे और परमेश्वर ने उसके दूसरीओर आंतोंमें एकछिद्र पैदाकिया कि उसमेंगिरे और उसको फोगोंसे खालीकरे और उसको चिपकनेवाली चीजों और मैलआदिसे शुद्धकरे (तिल्ली) यह लम्बा मांस है और सौदावीलहू को उठाये है और बाईओर है और उसपर एक झिल्ली लिपटी है और उससे दोपरदे निकले हैं एकपरदा तो कलेजे के पासहै और दूसरा मेदेकेमुखपर और यहपरदा उसके दोनोंछिद्रोंमेंसे सौदावी

हथियार कम हों उनको सहायता करे और दूसरे यह कि प्राण और लहू इसीसे इकट्ठे हों और दोनोंके मिलाप से प्रबल हों और प्राण श्वास होजाते हैं और लहू प्राणमें बढ़जाताहै और हर एक इनमेंसे दूसरेमें इनकी गरमी और प्राण के मिलने के वास्ते बाकी रहताहै और जोकि दिल मालूम करनेकी इच्छा रखताहै इसलिये परमेश्वरने एक महीन टुकड़ा पैदाकिया जो दिलकी झिल्लीके पास है और यह टुकड़ा भेजेसे उगाहै और इसमें दोगुणहैं एक यह कि इन्द्रियों के कामोंको मालूम करताहै और पट्ठेको उसके तरफ़ पैदा किया कि दिलसे सबबातें प्रकटकरे सो दूर करने वालेशक्ति उसके दूरकरनेके लिये जोशमें आती है और दूसरागुणयहहै कि दिलतो प्राणोंको भोजन देनेवालाहै और यहवहशक्तिहै जो श्वासके कार्य के साथ चलती है जैसे क्रोध भय प्रसन्नता आदि और यह काम शरीरके बाहरसे होतेहैं ईश्वरने जो दिलको बीचमें बाईं तरफझुका हुआ पैदाकिया यह कारणहै कि कलेजे का घर खुलाहो और एक तरफ़में दो गरमचीजे जमा न हों वरन मध्य स्वभाव पर रहैं और इसीवास्ते कलेजेको दाहिनीतरफ और दिलबाईंतरफ़ अलंकृतकिया और यद्यपि और तिल्लीमें बहुतसी दरारें हैं परन्तु वह अपने आप गरम नहीं हैं (कलेजेकावर्णन) यह जोड़ दिलसे नरम जोड़ मांस से बनाहै और तरीबहुत रखताहै और प्राणोंके ठहरनेकी जगह है और भोजनदेनेवाले लहूको जो रगोंकीराह सम्पूर्ण जोड़ोंमें जारी रहताहै घेरेहैऔर यह ऊपरकी पसलियोंके दाहनी नीचेकी ओरहै और इसकारूप गहराईकीओरझुकाहै और एककोनाउसकापक्का-शयसे मिलाहै और उसपर परदाहै और वह उनरुबातोंसे घिराहै जोउसके ऊपरकीझिल्लीके पासहैं और उसकीतहसे एकचीज़उगती है जिसकी सूरत रगोंकी तरह परहै परन्तु वह वस्तु लहूको घेरेहुये नहींहै और कई तरह पर बटतीहै और फिर उसका हरप्रकार बट-ताहै तो उसके कईभाग पक्काशय की गहराई और कईबार उंगल की आंतों और सायम नामी आंतों और फिर सब आंतोंमें पहुंचते

रखा कि कभी खुले और बंद होजावे क्योंकि वह नीचे है और वह भोजनकी इच्छा रखताहै सो वह चाहताहै कि भोजन इतने समय तक रहे कि पचजावे तो जो खुलाहोता तो निस्सन्देह नष्ट होजाता तो इसीवास्ते उसछिद्रको उसस्वरूपसे पैदाकिया कि जब भोजन मेदेमें पहुँचे उसको बांधे रहे कि जबतक पच न जावे और अपने कामसे मासिका (अर्थात् वह शक्ति जो भोजनको पक्वाशयमें रक्षा करती है) की रक्षा करताहै और आंतों के छिद्रको खोलताहै और उसके मुखसे दूरकरनेवाली शक्ति उसके फोगको दूरकरनेकेवास्ते आंतोंमें लेतीहै और सरब (अर्थात् चरबी की चादर जो मेदे और आंतों में लिपटी है) अपने जौहर से मेदे के गरम करने के लिये है क्योंकि यह जोहर अपने आप गरम नहीं है और ईश्वर ने मेदे के मुखपर सरब को इसवास्ते अधिक किया कि विशेषकरके इसी ओर शीतहै और मेदे के मुखपर पट्ठा बहुत है और मेदे की गहराई में मांस बहुतहै कि उसकी गरमीसे भोजनपकजावे (आंतोंकावर्णन) यह आंतें मेदे के जौहर से बनीहैं और अन्दर खोलमें खुलीहैं और इसके लम्बान चौड़ान में रेशेहैं और रेशोंने भोजन पचने के उपरान्त जाता है और यह आंतें मुड़नेवाली और लिपटी हैं और मरूर नामी आंतोंमें कईपेचहैं और उसमें कलेजेमें कई नसें बहुत महीन हैं और इसकारण ईश्वर ने आंतोंको मेदेके जौहर से पैदा किया कि जो कुछ मेदेसे बाक़ीरहा हो पचजाय अर्थात् जो भोजन पक्वाशय से न पचसके वह इसमें आकर पचे और इसी दृष्टि से ईश्वर ने उसके खोल को खुलानहीं किया कि जोकुछ उसमें जावे एकसमय तक जमरहे और जो रस उसमें से प्राप्तहो उसकीनसों को कुछ चूसने के लिये मिले परन्तु लम्बाई इनकी इसलिये है कि हर नसमें शुरू से आख़िर तक रस पहुंचजाय कि फोगमें कुछभी भारीपन न रहे परन्तु उसके रेशे इसलिये हैं कि रस को खींचें और चौड़े रेशे रसके दूरकरने के लिये हैं और ववारबनामी रेशे उसके बंदकरने के लियेहैं यह आंतें गिन्ती में छः हैं इनमें से तीन

दोषको कलेजे के द्वारा सुखाती है कि कलेजा कालेरक्त को न खींचे किन्तु शुद्धरुधिर खींचे जो जलेहुयेदोषोंसे साफ़हो और दूसरेछिद्र से पक्वाशय के मुखपर क्षुधाकी इच्छा के पैदाकरने के लिये आकर्षणको और जबतक कि भोजन न पहुंचे जलेहुये दोषको दूरकरता है और मेदे का मुहँ जलेदोष को उसकी खटाई के कारण मालूम करताहै और जोकि तिल्ली पित्तके सामने है इसलिये उसकेस्वभाव और काम भी सामने हैं और पित्ता दाहने हैं और तिल्लीबायें और पित्ते का एक छिद्र कलेजे की गहराई में ऊपर की ओर है और एकछिद्र नीचे है इसलिये कि जलाहुआ दोष पित्त और सम्पूर्ण दोषोंसे गाढ़ाहै तो वह नीचे की ओर झुकताहै और जिसतरह कि पित्त आंतोंको फोगसे साफ़करता है इसीतरह जलाहुआदोष वहां पक्वाशयपर गिरताहै और उसको भोजनकी इच्छादिलाताहै क्या ईश्वर की बुद्धिहै कि रुधिर की शुद्धिका उपाय पित्त और जलेदोष से ठहराया सो इनदोनो से दोलाभ हैं एकसे क्षुधाकीइच्छा और दूसरेसे फोगो का दूरकरना (पक्वाशयका वर्णन) यहआशय गर्दन की लम्बाई की तरह पर है और इसमे तीन दरजे हैं और इसमे महीनलेफ अर्थात् रेशे जिनकारूप पट्ठकी तरह से है मिले हैं एक लेफ तो लम्बाहै और दूसरा चोड़ा सो लम्बेलेफसे भोजनखींचता है और चोड़े से दूरकरताहै परन्तु पहले भोजन की रक्षाकरता है कि उसमे उष्णता प्रभाव करे और पकावे और कलेजे को प्राण के आधीन बनाया कि उसदर पेट बहुत भरने से हानि न हो और उसकी शकल गोलबनाई कि उसमे भोजन बहुत समावे और उपद्रवो से दूररहे और उसकी गहराईको लम्बाई से बहुत खुला बनाया और जो कि मनुष्य का खड़ा डीलहै और जो कुछ भोजन करता है मेदेमें जाता है इसलिये परमेश्वर की बुद्धि ने चाहा कि मेदेमें गहराई बहुतहो और वहां मेदा हमेशा खुला न रहे क्योंकि उसकी सूरत लम्बी हुई इसलिये जो कुछ उसकी गहराई मे है बाहर न आसकेगा और उसके छिद्रको आंतसे पैदाकिया इसका॰

रखा कि कभी खुले और बंद होजावे क्योंकि वह नीचे है और वह भोजनकी इच्छा रखताहै सो वह चाहताहै कि भोजन इतने समय तक रहे कि पचजावे तो जो खुलाहोता तो निरसन्देह नष्ट होजाती तो इसीवास्ते उसछिद्रको उसस्वरूपसे पैदाकिया कि जब भोजन मेदेमें पहुँचे उसको बांधे रहे कि जबतक पच न जावे और अपने कामसे मासिका (अर्थात् वह शक्ति जो भोजनको पक्वाशयमें रक्षा करती है) की रक्षा करताहै और आंतो के छिद्रको खोलताहै और उसके मुखसे दूरकरनेवाली शक्ति उसके फोगको दूरकरनेकेवास्ते आंतोंमे लेतीहै और सरव (अर्थात् चरबी की चादर जो मेदे और आंतों में लिपटी है) अपने जौहर से मेदे के गरम करने के लिये है क्योंकि यह जौहर अपने आप गरम नहीं है और ईश्वर ने मेदे के मुखपर सरव को इसवास्ते अधिक किया कि विशेषकरके इसीओर शीतहै और मेदे के मुखपर पट्ठा बहुत है और मेदे की गहराई में मांस बहुतहै कि उसकी गरमीसे भोजनपकजावे (आंतोंकावर्णन) यह आंतें मेदे के जौहर से बनीहैं और अन्दर खोलमे खुलीहैं और इसके लम्बान चौड़ान में रेशेहैं और रेशोंमे भोजन पचने के उपरान्त जाता है और यह आंतें मुड़नेवाली और लिपटी हैं और मरूर नामी आंतोंमें कईपेंचहैं और उसमें कलेजेसे कई नसें बहुत महीन हैं और इसकारण ईश्वर ने आंतोंको मेदेके जौहर से पैदा किया कि जो कुछ मेदेसे बाक़ीरहा हो पचजाय अर्थात् जो भोजन पक्वाशय से न पचसके वह इसमें आकर पचे और इसी दृष्टि से ईश्वर ने उसके खोल को खुलानहीं किया कि जोकुछ उसमें जावे एकसमय तक जमरहे और जो रस उसमें से प्राप्तहो उसकीनसों को कुछ चूसने के लिये मिले परन्तु लम्बाई इनकी इसलिये है कि हर नसमें शुरू से आख़िर तक रस पहुंचजाय कि फोगमें कुछभी भारीपन न रहे परन्तु उसके रेशे इसलिये हैं कि रस को खींचें और चौड़े रेशे रसके, दूरकरने के लिये है और ववारवनामी रेशे उसके बंदकरने के लियेहैं यह आंतें गिन्ती में छः हैं इनमें से तीन

आंतेंबहुतमहीनऊपरकी ओरहैं और बाकीतीनजोमोटीहैं वहनीचेको झुकीहैं सो पहली तीन पतली आंते पक्वाशय के मुख के निकट हैं उन्हींका नाम बारहउंगल की आंतहै क्योंकि नापनेमें बारहउंगल की है फिर दूसरीआंतहै जिसको सायम नामी आंत कहते अर्थात् व्रतीक्योंकि यहबहुधा खालीरहतीहै कि रत्तीसारी आंतहै जिसका नाम वक़ीक़है अर्थात् यहआंत उन दोनोंसे महीनहै और यहआंत बहुत बल खाये है और दो नीचे की आंते रहीं उसके प्रारम्भ को आवर कहतेहैं यह सबसे अधिक खुलीहै और इसमें किसीकीजारी होनेकी जगह नहींहै किन्तुयह आपही थैलीकी तरहहै कभी अंदर और कभी बाहर हुआ करतीहै उसी जारीहोने की जगह से फिर दूसरी आंत जालून नामी है उसका प्रारम्भ दाहनी ओरसे है और यह उदरकी चौडाईमें कूलोंकी बाईं ओर तक पहुचतीहै और तीसरी वह आंतहै जिसे मुस्तक़ीम आत कहते हैं अर्थात् सीधीहै कोई पेंचनहीं और इस आंतका खोल खुला हुआहै कि मूत्राशयमे मूत्र इकट्ठा होताहै और इसके किनारे पर एक पट्ठाहै जो फोग को जबतक कि मनुष्यइच्छा न करे निकलने नहींदेता (गुरदेकावर्णन) यह खण्ड कठोर माससे बनाहै और अपने खींचनेकी शक्तिसे रुधिर को पानी से साफ़ करता है और उसका जल इसतरह मूत्राशय में भेजता है कि वह फिर लौट नहीं सक्ता गुरदे दो हैं और दोनो पीठके मोहरेके पहलूमे कलेजे के पास दाहनी ओरहै दाहनी तरफ़ का गुरदा कुछ ऊंचाहै और इन दोनो गुरदोंकी दो गरदनें है एक बड़ी रगोंके पासहै जो कलेजेसे निकलीहै और दूसरी मजबूत तौर से मूत्राशय के निकट हुई है और भोजन सिवाय पानी के सारके नहीं पचता और उसका रस भी सिवाय पानीके नहींजाता तो जो कुछ पानी खर्च होता है उससे बचकर निकल जानेकी इच्छा रखताहै सो इन गुरदो के द्वारा वह पानी खींचकर मूत्राशय की ओर दूर होताहै क्योंकि जब बहुत पानी होताहै तो मूत्राशयमें खिचावट पैदा करताहै और दूसरे बहुत मूत्र सख़्तबन्द होजाते हैं और

जो कि पानीका फोग बहुतहै इसवास्ते ईश्वरने दो गुरदों को पैदा किया क्योंकि जो एक होता अवश्यही बड़ाहोता और एकही ओर होतो पीठकी हड्डियों में कोई हानि करता सो ईश्वर की बुद्धिने अवश्य समझा कि दोबनाये जांग और हरएक दोनों ओरको झुका रहे कि संगीनी सम भावसे रहे (मूत्राशय अर्थात् फुकनेकावर्णन) यहआशय पट्ठोंसेबनाहै इसके दो दरजे हैं जिसमें मूत्रआवाहै और उसमें जमारहता है और बाहर निकलने को जबतक इच्छा न करे रोकताहैमूत्राशयपट्ठे से बनाहै कि अच्छीतरहमत्रको जबतकमालूम करसके और जबउसमे पेशाब बहुतभर जाताहै फटनेलगताहै इस के मुंहपर तीनरेशेहैं एक लम्बा कि मूत्रइकट्ठाकरे और एकही बेर उसको दूरकरे क्योंकि पानीकाफोगबहुतहै औरमूत्राशयके स्वभाव मे अपनेआप निकलने की हाजत नहींहोती क्योंकि जो ऐसा होता तो अपने आप उसमें से मूत्रनिकल पड़ता बरन अपने अधिकार की शक्ति से उसके निकलने का समय नियत करदिया गया है और मूत्राशय में एकपट्ठा है जो मूत्राशय को आवश्यकताके समय खोलता और बन्दकरता है (उत्पन्नकरने के आशयोंका वर्णन)यह हथियार स्त्री पुरुषदोनों में बराबर है इसकेसिवायकि घूमनेवाली शक्तिने पुरुषो का लिंगउष्णता की अधिकता से बाहर को प्रकट करदिया और स्त्रियोंकालिंग अन्दरकी ओर उष्णता कम होने के कारण है तो जो ज़मीन के जानवरों की तरह पेट फाड़कर देखो तो मालूमहोजाय तो सूचितहोजाय कि स्त्रियोंके स्वभावनेउसअंग को अन्दरकी ओर खीचलिया है सो वह अंदर बाहर नहींनिकल सक्ता परजो उसपर छिलकाहोता है वहपुरुष के लिंगकी चोट से फटजाता है परन्तु बाहरनहीं निकलसक्ता तो जबलिंगको स्त्री की भगमें प्रवेशकरते हैं तो वह सफननामी स्थान मे जाता है और यह एकप्रकारकी थैलीहै जिसमें गर्भाशय के पास दोनों अंडकोष होतेहैं और गर्भाशय की गर्दन लिंगकीतरहपरहै जिसतरह से कि मरदोंके अंडकोष बाहर हैं इसके विरुद्धस्त्रियोंकेअन्दर हैं औरइसी

आंतेंबहुतमहीनऊपरकी ओरहैं और बाकीतीनजोमोटीहैं वहनीचेको झुकीहैं सो पहली तीन पतली आंते पक्वाशय के मुख के निकट हैं उन्हींका नाम बारहउंगल की आंतहै क्योंकि नापनेमें बारहउंगल की है फिर दूसरीआंतहै जिसको सायम नामी आंत कहते अर्थात् व्रतीक्योंकि यहबहुधा खालीरहतीहै कि रत्तीसारी आंतहै जिसका नाम वक़ीक़है अर्थात् यहआंत उन दोनोंसे महीनहै और यहआंत बहुत बल खाये है और दो नीचे की आंत रही उसके प्रारम्भ को आवर कहतेहैं यह सबसे अधिक खुलीहै और इसमें किसीकीजारी होनेकी जगह नहींहै किन्तुयह आपही थैलीकी तरहहै कभी अंदर और कभी बाहर हुआ करतीहै उसी जारीहोने की जगह से फिर दूसरी आंत जालून नामी है उसका प्रारम्भ दाहनी ओरसे है और यह उदरकी चौडाईमें कूलोंकी बाईं ओर तक पहुचतीहै और तीसरी वह आंतहै जिसे मुस्तक़ीम आंत कहते हैं अर्थात् सीधीहै कोई पेंचनहीं और इस आंतका खोल खुला हुआहै कि मूत्राशयमें मूत्र इकट्ठा होताहै और इसके किनारे पर एक पट्टाहै जो फोग को जबतक कि मनुष्यइच्छा न करे निकलने नहींदेता (गुरदेकावर्णन) यह खण्ड कठोर मांससे बनाहै और अपने खींचनेकी शक्तिसे रुधिर को पानी से साफ़ करता है और उसका जल इसतरह मूत्राशय में भेजता है कि वह फिर लौट नही सक्ता गुरदे दो हैं और दोनों पीठके मोहरेके पहलूमें कलेजे के पास दाहनी ओरहैं दाहनी तरफ़ का गुरदा कुछ ऊंचाहै और इन दोनो गुरदोंकी दो गरदनें हैं एक बड़ी रगोंके पासहै जो कलेजेसे निकलीहै और दूसरी मजबूत तौर से मूत्राशय के निकट हुई है और भोजन सिवाय पानी के सारके नहीं पचता और उसका रस भी सिवाय पानीके नहींजाता तो जो कुछ पानी ख़र्च होता है उससे बचकर निकल जानेकी इच्छा रखताहै सो इन गुरदों के द्वारा वह पानी खींचकर मूत्राशय की ओर दूर होताहै क्योंकि जब बहुत पानी होताहै तो मूत्राशयमें खिचावट पैदा करताहै और दूसरे बहुत मूत्र सख़्तबन्द होजाते हैं और

हड्डीहै और बहुत कठोरहै कि अपने कामको अच्छीतरहकरे और जब लिंग खड़ाहो तो लिंग को उसके हद से आगे न जानेदे और सिवाय सीधेहोने के और किसीओर न झुकनेदे और ईश्वरनेउसको गुदासे ऊंचेबनाया कि उससे दूररहे और लिथड़ न जावे और न नाभिसेऊपर बनाया क्योंकि उस स्थानसे ऊपर हड्डी नहींहै और हड्डीउसकी सख़्तीकेवास्ते अवश्यथी और लिंगको शरीर के दूसरे स्थनोंपर न बनाया क्योकि जोड़ जिसजोड़की आवश्यकतारखता है वहउसीके साम्हने अच्छाहोताहै अर्थात् स्त्रीकी योनिकेसाम्हने यह भी हुआ और विषम जोड़ोंको ईश्वरने बीचमें पैदाकिया जैसा कि नाक और मुंह और दिल और मेदा वग़ैरह उत्पत्ति करनेवाले जोड़ोंमेंसे गर्भाशय भीहै और यहपट्ठोंके जौहरसेबनाहै कि आनंद देने के योग्यहो और वह खिँच और खुलसके और जब पेटसेबच्चा बाहर निकले तंगहोकर बँधजावे और मूत्राशय और सीधी आंतों के साम्हने गर्भाशय बनाया गयाहै क्योंकि यहस्थान नरम जोड़ों मेंहै कि इससे बच्चा मिले औरबढ़े पैदाहो और बच्चे शरीरके वास्ते अवश्यहै कि इसके रहनेकी जगह बहुतनरमहो और उसमेंगरमी भी हो और अन्दर और बाहर के जोड़ोंमें सदातरीरहे और ईश्वर ने गर्भाशयके वास्ते दाहने बांये दोपेट पैदा किये तो दाहने पेटमें गरमी और तरीकोअधिककिया और उसकेबलको अधिकबलवान् बनाया और यहशक्ति रुधिर और प्राणके कारणहै जो दोनों दिल से उसमें जातेहैं सो इस पेटकी ताकतसे लड़का पैदा होता है और दूसरे पेटसे लड़की उत्पन्न होतीहै और गर्भाशय में दो जो ज़ायदे (बढ़ाहुआमांस) निकलेहैं और उनगर्भाशय के अंडकोषकेपास हैं और दोनोंके नामक़रनरहमहैं अर्थात् यहदोनों मानो गर्भाशयकी शाखाहैं कि गर्भाशय उसशाखाओंसे वीर्यकोखींचे जो स्त्रियोंकेअन्दर के अण्डकोषसे निकलतीहैं गर्भाशयकी एकगर्दनहै जो योनिकेबाहर तकलंबीहै और वहपुरुषोंके लिंगकेछिद्रके बदलेहै औरकुंवारीलड़की के बच्चे दानीका मुहँ सिमटा रहताहै फिर वीर्यकेलेनेको खुलजाता है

कारण स्त्री के अंडकोष अन्दर गर्भाशय के पहलूमें हैं कि अन्दरका मुंहखुलाहो निदान पैदाहोने के हथियार बहुत हैं उनमें से रगे हैं जिनपर मांसगद्दूद के प्रकारसेमिला है जिसकी ओर पीठकेरसके फोगगिरते हैं सो उनफोगों को खाताहै कि वहवीर्य होजावें इसी वास्तेइसका वीर्य आशयनाम रखते हैं और इनमेंसे एकऐसीशक्ति है जो इसकामदेव के इकट्ठाहोनेकी शक्तिदेती है और इनकीउत्पत्ति भीगद्दूदी मांससे है मरदों के अंडकोषसफाकीनमेंबनाते हैं जिनकी सूरतभी थैलीकी तरहपर है और उसकोसफन कहते हैं और स्त्रियों के गर्भाशयकेपहलूमेंहैं और स्त्रियोंकेअंडकोष पुरुषोंगछोटे हैं परन्तु पुरुषोंके अंडकोषोंसेचौड़ेअधिकहैंऔर इन्हींदोनोंअंडकोषोंमें वीर्य्य निकलताहै स्त्रियोंका वीर्य्य इनसे निकल कर गर्भाशयके खोल में गिरताहै और पुरुषोंका क्रान इन्ही अंडकोषोंसे निकलकर लिंगके छिद्रसे होकर गिरताहै इनमें से एकहथियार पैदाकरनेका लिंगहै यह पट्ठेका अंग और अन्दर से खालीहै और इसमें फुदकने वाली नसें बहुतहैं और बहुतरगेंहैऔर इसमें अंडकोषकी ओर दो छिद्रहैं जिनसे वीर्य्य लिंगेन्द्री के मुखमें आताहै और वह लिंग का मुख पुरुषोंके लिये स्त्रीके गर्भाशयके बदलेहै और जब ईश्वरने चाहाकि लिंगमें किसी समय खड़ाहोना और तन्नाहो और कभी वह सुस्त होकर सो जायाकरे और उसका खड़ाहोना और तन्ना उत्पत्ति के समय में हुआ करे कि गर्भाशय के मुख तक पहुंच कर वीर्य्य को गिराया करे और दूसरे समयमें सोजावे तो इसी वास्ते परमेश्वर ने कठोर मांस से बनाया जिसका अन्दर खाली है कि जब वायु उसके अन्दर भरी हो तो उसके पट्ठे सख़्त और मजबूत हों और जब वायु से खाली होजांय तो सुस्त होजावे और ईश्वर ने लिंगको हड्डीसे नहीं उत्पन्नकिया नहीं तो सर्वदाकाल खड़ारहता और सुस्तो न आती किन्तु समभाव पर उसकी उत्पत्तिहुई पट्ठे तो इसलियेहैं कि खिचावट करें और रुबात इसवास्ते हैं कि भोग के समय लम्बा होजाय और इसीवास्ते दोनों स्त्री पुरुषोंके लिंगों पर

हड्डीहै और बहुत कठोरहै कि अपने कामको अच्छीतरहकरे और जब लिंग खड़ाहो तो लिंग को उसके हद से आगे न जानेदे और सिवाय सीधेहोने के और किसीओर न झुकनेदे और ईश्वरनेउसको गुदासे ऊंचेबनाया कि उससे दूररहे और लिथड़ न जावे और न नाभिसेऊपर बनाया क्योंकि उस स्थानसे ऊपर हड्डी नहींहै और हड्डीउसकी सख़्तीकेवास्ते अवश्यथी और लिंगको शरीर के दूसरे स्थनोंपर न बनाया क्योंकि जोड़ जिसजोड़की आवश्यकतारखता है वहउसीके साम्हने अच्छाहोताहै अर्थात् स्त्रीकी योनिकेसाम्हने यह भी हुआ और विषम जोड़ोंको ईश्वरने बीचमें पैदाकिया जैसा कि नाक और मुंह और दिल और मेदा वग़ैरह उत्पत्ति करनेवाले जोड़ोंमेंसे गर्भाशय भीहै और यहपट्ठोंके जौहरसेबनाहै कि आनंद देने के योग्यहो और वह खिंच और खुलसके और जब पेटसेबच्चा बाहर निकले तंगहोकर बँधजावे और मूत्राशय और सीधी आंतों के साम्हने गर्भाशय बनाया गयाहै क्योंकि यहस्थान नरम जोड़ों मेंहै कि इससे बच्चा मिले औरबढ़े पैदाहो और बच्चे शरीरके वास्ते अवश्यहै कि इसके रहनेकी जगह बहुतनरमहो और उसमेंगरमी भी हो और अन्दर और बाहर के जोड़ोंमें सदातरीरहे और ईश्वर ने गर्भाशयके वास्ते दाहने बांये दोपेट पैदा किये तो दाहने पेटमें गरमी और तरीकोअधिककिया और उसकेबलको अधिकबलवान बनाया और यहशक्ति रुधिर और प्रणके कारणहै जो दोनों दिल से उसमें जातेहैं सो इस पेटकी ताकतसे लड़का पैदा होता है और दूसरे पेटसे लड़की उत्पन्न होतीहैं और गर्भाशय में दो जो ज़ायदे (बढ़ाहुआमांस) निकलेहैं और उनगर्भाशय के अंडकोषकेपास हैं और दोनोंके नामक़रनरहमहैं-अर्थात् यहदोनों मानो गर्भाशयकी शाखाहैं कि गर्भाशय उसशाखाओंसे वीर्यकोखींचे जो स्त्रियोंकेअन्दर के अण्डकोषसे निकलतीहैं गर्भाशयकी एकगर्दनहै जो योनिकेबाहर तकलंबीहै और वहपुरुषोंके लिंगकेछिद्रके बदलेहै औरकुंवारीलड़के बच्चे दानीका मुहँ सिमटा रहताहै फिर वीर्यकेलेनेको खुलजाता है

और बहुतसे इसमें पट्ठे और बहुतचरबीहै और मानोमहीन रगोंसे उन पट्ठोंके बीच बुना गयाहै जो मौ संगम के समय टुकड़े होते हैं और स्त्री के गर्भ धारण के समय गर्भाशय का मुख सूज जाता है और जब प्रसूत के दिन आते हैं या पेटमें बच्चेपर कोई दुःख पहुंचता है तो वहां गर्भाशय इतना चोड़ा होजाता है कि बच्चा निकल जावे और गर्भाशय अपनी ओर को पुरुष का वीर्य अपनी गर्दन द्वारा खींचता है और अपने वीर्य को उन्हीं दो शाखाओं से अपनी ओर खींचता है ईश्वर ने गर्भाशय मे रुबात एकसां बनाये हे जो पीठकी हड्डियोंसे घिरेहुये जोड़ोंसे पैवन्द दिये हैं इनका बांधना इस लाभ से है कि गर्भाशय अपने स्थानपर स्थिर रहे और उसका मूत्र और तरफसे जारी किया कि गर्भाशय का खिंचना संभवित हो जब तक कि बच्चा पेटके अन्दररहे और जो इसी मार्गसे मूत्र आता तो बच्चे का ठहरना कठिन होजाता और गर्भाशय उस समय मिलता है कि जब बच्चा पेटसे खाली होताहै इतना जानने वाले लोगोंने विस्तार किया है आगे ईश्वर जाने ॥

कुवा मैन अर्थात् सम्पूर्ण प्रकार की शक्तियों का वर्णन ॥

कुवा एक फरिश्ते का प्रकार है ईश्वर ने इन फरिश्तों को शरीर के बनावट और जोड़ों की शक्तियों की स्थिरता और २ लाभ के लिये उत्पन्न कियाहै इसका दृष्टान्त इस तरह परहै कि मानो एक शहर बसाहुआहै और उसमेंलोग रहते हैं और उसके बाजार खुलेहैं और लोग इधर उधर आते जातेहैं और हर पेशेवाले अपने काममें लगेहुये पाये जाते हैं शरीर का हाल सोने या बेहोशी के समय मालूम होताहै जैसा कि रात्रिके समय शहरकी दुकानें बंद होजाती हैं पेशेवाले सोजातेहैं कहतेहैंकि बदन नवद्वार मकानात की तरहपर है सो शक्तियां शरीरमें चित्रकारी की तरहपरहैं और जीव दीपककी तरह जो घरके हरकोनेमें उसकाप्रकाश फैलारहता है और उसके प्रकाश से सब घरकी चीज़ें दिखलाई देती हैं और

अन्दर और बाहरकी शक्तियां और सुन्दरता और अलंकार आदि तो जब प्राण अलगहुये यह सबबातें झूठी पड़जाती हैं मानोदिया ठंढा होगया और मकान में अंधेरा होगया सो कुछ दिखाई नहीं देता और यह शक्तियां चारहैं पहली शक्तियां प्रकट हैं और उसका नाम इन्द्रियांहैं और यह पांचहैं पहली स्पर्शइन्द्री यह शक्ति मनुष्य और पशुमेंहै कि किसी दुःखदाई वस्तुकेछूनेसे भागताहै ऐसा नहीं कि कोई ऐसा जीवधारी हो जिसमें स्पर्श इन्द्री न हो तो जो एक सूई शरीरमें चुभ जातीहै तो तुरन्त मालूमहोजाता है परन्तुइसके विरुद्ध बनस्पतिहैं कि चाहो जितने टुकड़े २ करो बेखबर हैं सोजो जीवधारी में यह शक्ति न होती तो अपने दुःख सेनबच सक्ता फिर वह आवश्यकता रखता कि जब भोजनदूरहो क्योंकर मालूम करे सो ईश्वर ने दूसरीघ्राण शक्ति उत्पन्न की जिसके द्वारा गन्धपाई जाती है परन्तु फिर नहीं जानता कि किधरसे गन्ध आती है तो उसको भोजन की प्राप्तिमें कोई लाभ नहींदेती इसलिये ईश्वर ने अवलोकन शक्ति उत्पन्नकी कि यहदूर और पासकी चीजोंको देखे और उसकी तरकों को मालूमकरे परन्तु फिरभी कुछ कसर रही क्योंकि नेत्रसे मालूम नहीं होताहैकि जो कुछ परदेमें है इसलिये ईश्वरने श्रवण शक्ति कृपाकी और जब तक कि स्वाद की इन्द्रीन होती तो यह लाभदायक न होते क्योंकि जब जीवधारीको भोजन मिलता तो वह स्वाद न होनेसे न पहिचान सक्ता कि मेरे अनुकूलहै या प्रतिकूल (इन सबका विस्तार प्रथम स्पर्श) यहशक्ति सम्पूर्ण देहमेंहै तो जोवस्तु शरीरमें मिले उसको तुरन्त मालूम कर जातीहै जैसे उष्ण शीतल शुष्क कठोर हलकी संगीन आदि वस्तु द्वितीय घ्राणेन्द्रियकीशक्ति इसशक्तिकास्थान ब्रह्माण्डमेंहै और यह शक्ति सुगन्धको जो हवासे ऊपर पहुंचतीहै मालूम करतेहैं तृतीय देखनेकी शक्ति यह शक्ति आंखके पट्ठे के खोलमें बनीहै और यह वस्तुओंका रूप सूर्यकेप्रकाश और रंगोंसे मालूम करतीहै कि जब सूर्य का प्रकाश शुद्ध अंगोंमें पैठता और रंग पैदा करताहै सो वह

सूर्यकाप्रकाश जीवधारी नेत्रकी के पास होताहै और उसमें पैठता है चतुर्थ श्रवण शक्ति यह शक्ति कानमें है और यह शक्ति जो पवन का शब्द हो उसको मालूम करतीहै और उस वायुका हाल ऐसा है जैसा कि पानीमें लहर होतीहै वास्तवमें वायु पानीसे सख़्त है और हलकी और जल्दी पैठतीहै तो जिस समय कोईचीज किसी पर गिरी तो उससे वायुदूरकरने और लहर मारनेको उत्पन्नहोती है जैसे कोई चीज पानीमें गिरती है तो उसमें ज़ोर होताहै और वहदूरतक पहुंचतीहै जितनी जगह पातीहै और उससेलहर कम पड़जातीहै यहांतक कि जाती रहतीहै निदान जो कुछ मनुष्य को वात करने से अर्थहो उसका मालूम करना सुनने के आधीन है (स्वादकीशक्ति) यह शक्ति जिह्वा के चर्म में है सो यह उस मीठी तरी के द्वारा जो जिह्वा के नीचे है स्वाद आदि का हाल मालूम करतीहै यहतरी उस अंगसे मिली होतीहै जिसमें स्वादकी शक्तिहै और उसके हाल को मालूम करतीहै जो उस अंगके खण्डोंसे मिले होतेहैं और स्वादकी शक्तिको उत्पन्न करती है कि जिससे स्वाद का मालूमकरना विदित होताहै ॥

अन्दर के कुवा का वर्णन ॥

इनके कईप्रकारहैं आकर्षण शक्ति इसके चारप्रकारहैं खींचनेकी शक्ति १ मासका अर्थात् वह शक्ति जो पक्वाशयमें पहुंचेहुये भोजन की रक्षाकरतीहै २ पचने शक्ति ३ दूरकरनेकी शक्ति खींचनेकी वह शक्तिहै कि उपयोगी भोजनको खींचतीहै और वह सम्पूर्ण शरीरमें वर्तमानहै परन्तु जो आकर्षण शक्ति मेदेमें है वह बहुत बलवान् है यहांतक कि जो मनुष्यउलटाहो कि उसकाशिर पृथ्वीपरपहुचे और दोनोपांव हवापर लटकेहो उससमयभी होसक्ताहै कि भोजन पक्वाशयमेपचे और बाहर न गिरे और हरजोड़की अपनी२ आवश्यकता के अनुकूल आकर्षणशक्तिहै क्योंकि बहुधा एकजोड़का भोजनदूसरे के विपरीत है (दूसरीमासका) यह वह शक्ति है जो आकर्षित वस्तु की रक्षा करती है कि उसमें पचने की शक्ति अपना अधिकार

करे (तीसरी पचने की शक्ति) और यह इस तरहपर है कि भोजन पर जोड़को लिपटाती है कि भोजन हरओर फिरे और उसमें रस नहीं छोड़ती और स्वभाव की रक्षा करती है और फिर वहभोजन शरीरके खण्डका अंश होजातीहै और फिर फोगबनजाताहै (चौथी दूरकरने की शक्ति) यह शक्ति भोजन के फोग को जो पचचुकता है दूर करती है (गाज़िया) इसके चारप्रकारहैं गाज़िया १ नामि- या २ मूलिदा ३ मुसविरह ४ (गाज़िया) यह वह शक्ति है कि भोजन को खाने वालेकी सूरत वनातीहै कि जो कुछ पचगया हो उसका बदला मौजूदहो (क़ुव्वतनामिया) वहहै कि शरीर के अंगों को हर जोड़पर आवश्यकताके अनुकूल बराबर बांटती है और इस में और गाज़िया शक्तिमें केवल इतना अंतर है कि क़ुव्वत गाज़िया भोजन को हर जोड़पर बिना विचार और अवकाश के उतारती है नामिया नहींउतारती परन्तु जहांपचनेके कारण आवश्यकता होती है आवश्यकताके अनुकूल पहुंचतीहै (कुव्वतमूलिदा) वह है जिससे पैदाकरनेकीवस्तु उत्पन्नहोतीहै जैसे जीवधारियोंमेंवीर्य औरअनाज में दाना और छुहारेमें गुठली (क़ुव्वतमुसव्विरा) वहहै कि जिससे सख़्ती नरमी रंगरूप सूरत सकल हरचीज़ की दुरुस्त होजातीहै ॥

कई अद्भुत शक्तियों का वर्णन ॥

यहवल भोजनकेसमय भोजनको अद्भुतरंगसेप्रकटकरतीहैं जैसे पक्काशयमें आशजौकी तरहभोजन होजाताहै फिर उसको वहशक्ति उसको कलेजेमेंखींचती है फिर वह रुधिर होती और फिर कलेजा उसको शरीरभरपर आंतोंसे बांटताहै उस समय हर जोड़में उसका भाग पहुंचता है फिरवह लहू और मांस वहुत पकनेके पीछेहोताहै जैसेकिगेहूं आटा और कैसीरकारीगरी से रोटी पकती है इसीतरह अन्दर के कारीगरयहीवलहै कि प्रकटके कारीगरोंकी तरह अन्दर कामकरतेहैं अबहम लिखतेहैं कि जबआकर्षणशक्ति केवलखींचतीहै तो यहअवश्यहुआ कि कोईशक्ति सिवाय इसके और भीहो कि वह भोजन कोहड्डियों और मांसमेंपकनेके वास्ते ठहरावे रक्खे क्योंकि

सूर्यकाप्रकाश जीवधारी नेत्रकी के पास होताहै और उसमें पैठता है चतुर्थ श्रवण शक्ति यह शक्ति कानमें है और यह शक्ति जो पवन का शब्द हो उसको मालूम करतीहै और उस वायुका हाल ऐसा है जैसा कि पानीमें लहर होतीहै वास्तवमें वायु पानीसे सख़्त है और हलकी और जल्दी पैठतीहै तो जिस समय कोईचीज किसी पर गिरी तो उससे वायुदूरकरने और लहर मारनेको उत्पन्नहोती है जैसे कोई चीज पानीमें गिरती है तो उसमें ज़ोर होताहै और वहदूरतक पहुंचतीहै जितनी जगह पातीहै और उससेलहर कम पड़जातीहै यहांतक कि जाती रहतीहै निदान जो कुछ मनुष्य को बात करने से अर्थहो उसका मालूम करना सुनने के आधीन है (स्वादकीशक्ति) यह शक्ति जिह्वा के चर्म में है सो यह उस मीठी तरी के द्वारा जो जिह्वा के नीचे है स्वाद आदि का हाल मालूम करतीहै यहतरी उस अंगसे मिली होतीहै जिसमें स्वादकी शक्तिहै और उसके हाल को मालूम करतीहै जो उस अंगके खण्डोंसे मिले होतेहैं और स्वादकी शक्तिको उत्पन्न करती है कि जिससे स्वाद का मालूमकरना विदित होताहै॥

अन्दर के कुवा का वर्णन॥

इनके कईप्रकारहैं आकर्षण शक्ति इसके चारप्रकारहैं खींचनेकी शक्ति १ मासका अर्थात् वह शक्ति जो पक्काशयमें पहुंचेहुये भोजन की रक्षाकरतीहै २ पचने शक्ति ३ दूरकरनेकी शक्ति खींचनेकी वह शक्तिहै कि उपयोगी भोजनको खींचतीहै और वह सम्पूर्ण शरीरमें वर्त्तमानहै परन्तु जो आकर्षण शक्ति मेदेमें है वह बहुत बलवान् है यहांतक कि जो मनुष्यउलटाहो कि उसकाशिर पृथ्वीपरपहुंचे और दोनोपांव हवापर लटकेहो उससमयभी होसक्ताहै कि भोजन पक्का- शयमेंपचे और बाहर न गिरे और हरजोड़को अपनी२ आवश्यकता के अनुकूल आकर्षणशक्तिहै क्योंकि बहुधा एकजोड़का भोजनदूसरे के विपरीत है (दूसरीमासका) यह वह शक्ति है जो आकर्षित वस्तु की रक्षा करती है कि उसमें पचने की शक्ति अपना अधिकार

तृतीयप्रकार ज्ञान की शक्तियों का वर्णन ॥

यहशक्तियां मनुष्यके अन्तरमें उपजीहुईहैं और यहपांचहैं (प्रथ
इन्द्रियों से मालूम करने की शक्ति—द्वितीयध्यान—तृतीय बिचार
(चतुर्थस्मरण—पंचमचिन्तना—इन्द्रियों से मालूमकरनेकी शक्ति व
स्थान भेजेमेंहै और यह शक्तिऐसीहै कि सूरतोंको देखनेपर मालू
करलेतीहै और यहशक्ति देखनेकी शक्तिकेसिवायहै क्योंकि हमब
की बूंदको सीधी रेखा की तरह देखते हैं और विन्दु जो मुख्यव
इससीधी रेखापर दायराहै परन्तु यहदेखना इसदेखनेकी शक्ति
सिवायहै इसकारण कि देखनेकी शक्ति नहीं देखती परन्तु जो उस
साम्हने हो और जो कि बिन्दु और बूंद के सिवाय दूसरा स्वरू
देखने की शक्ति में नहीं पाया जाता सो जो सीधी रेखा और घे
दिखाई देताहै तो उसदेखनेका बल देखनेकी शक्तिके सिवायहै स
कईसूरतें कि इसशक्ति पर उतरीहैं कभी बाहरसे इन्द्रियों के द्वार
आतीहैं और कभी बाहरसे इसलिये बहुधा ऐसाहोताहै कि विचा
करनेकी शक्ति घेरेके बीच बिन्दुबनातीहै (दूसरीध्यानकीशक्ति) व
मालूम करनेवालीके नीचे भेजेके पीछेहै तो जो सूरतें मालूमकर
वाली शक्तिने विदितकी हैं उसके ध्यान में यत्नकरती है (तीसरी
विचार है और यह चिन्तना शक्ति के पीछे भेजे में हैं जो मालू
करनेवाली शक्ति के विदितकी हुई वस्तुओंको मालूम करतीहै जैसे
देवदत्त की मित्रता और यज्ञदत्त की शत्रुता और यह वही शक्ति
है जो बकरियों में है कि सन्तान को प्रियरखतीहैं और भेड़िये स
भागतीहैं (चौथेस्मरणशक्ति) यह भेजे के अन्तमें है और जो बा
उसकी समझ में आवे उसकी रक्षा करती है सो विचार मानो
स्मरण काकोपाधिपहै (पांचवेंचिन्तना) यहशक्ति भेजेके बीचमेंहै
और यह शक्ति विद्यमान पदार्थोंके रूपमें अपनेको ख़र्च करती है
और जो स्मरण रखनेवाले को विस्तार और उपाय संयुक्त अर्थ
प्राप्त हुयेहैं ध्यान रखतीहैं तो जो वह बुद्धिके आधीनहै और उस
का नाम चिन्तनाहै (अन्यप्रकार) इच्छा शक्तियांहैं यह वहशक्तियां

भोजनअपनेआप इसयोग्यनहीं तो अवश्य हुआ कि क़ुव्वत याल्का भीहो कि भोजनकेअनुमानकीरक्षाकरे और पचनेकी शक्तिसे यहगुण है कि भोजनसे रक्तका स्वरूप उत्पन्नकरे और दूर करने वाले बल से यह लाभ है कि जो आवश्यकता से अधिकहै उसके फोगों को निकालदे सिवायइनके और चारशक्तियां इनकेआधीनहैं एक शक्ति वह है कि भोजनके रसको हड्डियों से जो उसकेवास्ते प्राप्त किया हो चिपकातीहै दूसरा बल वहहै कि अनुमान की रक्षा करता और गोलबनाता जो कदाचित् नाकपर इतनामांस आजावे जितना कि रानपरहै तो वहअंग उसका वडाहोकर बुरा मालूम होजाय और मनुष्यका स्वरूप वदलजाय इसलिये उचितहुआ कि आवश्यकता के अनुकूल हरएक जोड़पर रसबटे और तीसरी शक्तिवहहैकि कुछ उत्तमभोजनहो उसको लिंगकेलिये ख़र्चकरे कि उसकावीर्य मनुष्य के उत्पन्न होनेकेलिये बने क्योंकि हरमनुष्य एकदिन ज़रूरमरेगा तो उसके बीजका रहना और तरहसे समझा नहींजाता हां संतान से होसक्ताहै चौथीरूप पैदाकरनेवाली शक्तिहै जो नानाप्रकार के स्वभाओ से उतरती है जोड़ोंकी तरह यह इस वास्ते है कि जोड़ों के नानाप्रकार के रूप अर्थात् लम्बे चौड़े गोलहों या पेटअन्दरसे खालीहो और ठोसका अन्दर ठोसहो और महीन कठोर सख़्तहो इस क़ुव्वतकाम मसविरह है इसदृष्टि से कि झिल्लियों के अँधेरे में नाना प्रकार के स्वरूप बनाया करती है और इन सब से अद्भुत पलकें हैं जो आंखोके ऊपर और नीचेहैं और नेत्रकी श्यामता और माथा नाक होठ इननक्शों से एकदूसरे के पास प्रकटहोतीहैं और जो कि उनका बनानेवाला बिल्कुल उनचीजों में दिखाई नहींदेता न अन्दर न बाहर और न इस बनावटको माता जानती न पिता तो ईश्वर का धन्यवाद है कि उसने अपने मित्रोंकीआंखको ज्योतियुत बनायाकि उन्होने इन वस्तुओं से उस परमात्मा को देखा और अपने शत्रुओ के मनोंको अन्धा बनाया ॥

पशुओंसे प्रतिष्ठितहैं और यह वहशक्तिहै जिससे मनुष्य बिद्या की प्राप्तिकरताहै इसकानाम अजीज़ियाहै और बुद्धिमान इसको हयूलानीकहतेहैं यहशक्तिमनुष्यकेमूलसेमिलीहैइसलिये किमुख्यमनुष्यकेशरीरमें विद्यमानहै और पशुओंमें नहीं(दूसरी)वहशक्तिहै कि विवेकवान् लड़कोंको उपजातीहै जैसा कि विवेकी लड़केकोमालूम होताहै कि दो एकसेअधिक हैं और एकआदमी दो मकान में नहीं रहसक्ता और एक वस्तु एक समय में विद्यमान और अविद्यमान नहीं होती बुद्धिमानों ने इसका नाम अक़्विलमल्का रक्खा है (तीसरीवहशक्तिहै) कि उससे कई अर्थ प्राप्तहोते हैं जो अभ्यास द्वारा समझमें आयेहों और इसकानाम अक़्मुस्तफ़ाद है (चौथी) वहशक्तिहै जिसके कारण हरएक प्रभावकामूल पहिचाना जाताहै सो यह शक्ति जल्दी करनेवाली इच्छा कि जब वह अपना प्रभाव बुरीबातोंकी तरफ़ करतीहै दूरकरतीहै इसकानाम अक़्विलफ़ेल है, तो जब मनुष्यको यहधारणा बुद्धि प्राप्त हो उसे बुद्धिमान कहते हैं क्योंकि किसीकाममें दरकदेना या उससेदूररहना समयानुसार मालूम होजायेगा और अग्रशोची से हरविषयमें आगेबढ़ेगा और बुद्धिमान दोप्रकार के होतेहैं कि एककेस्वभाव में बुद्धिहोतीहै और दूसरा सीखनेसे पाताहै हज़रतअली पैग़म्बर ने श्रीमुख से कहाहै कि हमनेबुद्धिको दोरीतिपरदेखा एकस्वाभाविक दूसरीअभ्यासिक अभ्यासिक बुद्धि कुछ लाभदायक नहींहोती और जबतक स्वाभाविक नहो जैसा कि अन्धेकेआगे प्रकाश से कुछलाभ नहीं पहुंचता तो पूर्वोक्त इमाम साहब के वचन का उल्था है और मुख्य हदीस जिसका उल्था यहहै वास्तवमें क्या अच्छादृष्टान्त उन्होंनेदिया ॥

बुद्धिमान निर्बुद्धि के अन्तर का वर्णन ॥

बुद्धि एक ज्योतिहै जो मनुष्य पर प्रकाशमान है इस बुद्धिरूपी ज्योतिके प्रकाशकाप्रारम्भसातवेंवर्ष फिर जितना मनुष्यबढ़ताजावे बुद्धिभी बढ़तीहै चालीसवर्षतक जोकि मनुष्य २ के बीचमें बहुतकुछ प्रकटहै तो इस विषयमें इन्कारनहींकरसक्ते परन्तु बुद्धि और समझ

कि अपने लाभकी अभिलाषा में स्वभावको उठाती हैं उनमें से एक खानेकी इच्छाहै क्योंकि खाना सब शक्तियोंका मूलहै और खाने शक्तिसेसबको बलपहुंचताहै यदि मनुष्य में खानेकी इच्छा न होती तो सबशक्तियोंको बल न पहुंचता और जैसा कि मनुष्यमें अन्दर और बाहरकीशक्तियां प्राप्तहुईं जो ऐसाहीमनुष्यकी प्रकृति में इच्छान होती तो सब व्यर्थ थीं और हर एक शक्ति कुंठित हो जाती जैसाकि बहुधा रोगियोंको देखा जाताहै कि उत्तमरससंयुक्त भोजन उनके सामनेहै परन्तु इच्छाशक्ति उनमें नहींहै इसलिये इच्छाशक्ति उनकीरुचि नहींकरती सो इसीबिचारसे उनकीशक्तियां सब कुंठित और व्यर्थ रहती हैं सो ईश्वर ने भोजन की इच्छा प्रकटकी कि सम्पूर्ण शक्तियां विद्यमानरहैं उनमेंसे एककामदेवकी इच्छाहैकि मनुष्यको भोगकी प्रेरणा सन्तानके होनेके लिये करती है अन्य क्रोधकी शक्ति यह वह बलहै जो जीवधारियों को प्रबल करता जो यह न होता तो जीवधारी अपनेशत्रुओंको परास्तनकरते और सदा दीनरहते और अपनी जान और माल और भोजन को शत्रुओं से न बचासक्ते परन्तु मनुष्य को अन्य पशुओं से इसकी अधिकआवश्यकता रखताहै क्योंकि इनकेशत्रुद्रव्य जीवन अन्तःपुर आदिके लिये बहुतहैं सो मनुष्यको दूर करनेकीशक्ति अवश्यहोनी चाहिये (कर्म करनेकी शक्ति) इससे जोड़कोव्यसन आधीनी की और प्रेरणा करतेहैं जैसेकोई मनुष्य तारकोबुनताहै तो उसके अनुसारअपनेजोड़को प्रेरणाकरताहै जो यहशक्ति न होती तो सम्पूर्ण शरीर मनुष्यका शलहुये हाथकीतरह व्यर्थ रहता और कुछ खोल मूंदभी न सक्ता जो पशुकी मांगने और भागने का बल न होता तो व्यर्थथा न अपने प्रयोजन की बस्तुकी ओर जासक्ता और न भयके स्थानो से भागसक्ता सो इसी दृष्टि से ईश्वर ने अभिलाषा और भागना दो शक्तियां कृपाकीं॥

बुद्धि की शक्तियों का वर्णन॥

औरवहचारहैं उसमें (प्रथम)वहशक्तिहै कि उसीके कारण मनुष्य

मालूमकीं हकीम ने कहा ऐ बेटे यहबातें कुछ तिब्बके द्वारा मालूम नहींहोतीं किन्तु बुद्धिसे प्रकट होतीहैं जब मैं पहलेदिन उसके घर पहुंचा तो बहुत मेवों के छिलके पड़ेहुये मैंने देखे तो मुझे निश्चय हुआ कि इसरोगीने भी अवश्य खायेहोंगे और उसके मुखसे निर्बलता के चिह्न प्रकट थे और उसकीनाड़ीमें तरी थी इतनीबातों के देखनेपरभी मैंनेकहा था कि शायद तुमने मेवाखायाहै और दूसरे दिन मुरग़ के पंख और पर उसके दरवाज़े पर पड़े थे और उसकी नाड़ीमें भारीपन था तो बुद्धि ने साक्षीदी कि इसने मुरग़ का मांस अवश्य खायाहोगा इसदृष्टि से मैंने उससे यही कहा ईश्वरकी कृपा से दोनों बातें रोगीसे सच्चीपाईं सो लड़केने भी यह हाल सुन कर मनमें कहा इसी रीतिसे हमभी कहाकरेंगे सो एक बीमार के देखने को गया और उसकी नाड़ी और मुख देखकर बोला शायद तूने गधे का मांस खाया है रोगीने हंस के उत्तर दिया कि साहब कोई गधे का मांसखाता है हकीम बेवक़ूफ़ लज्जित होकर घरपर आये यह खबर उसके पिताको पहुंची उसनेभी पुत्र से कहा हे पुत्र तूने क्योंकर मालूम किया कि रोगीने गधे का मांसखाया है उसने उत्तरदिया कि उसके घरमें गधेके ऊपरकी काठी दिखाईदी मैंने जाना किगधा मारागयाहै और काठी खालीरक्खी है क्योंकि जो गधा जीता होता तो काठी उसकी पीठपर होती हकीम ने कहा कि जो तुम्हारी बुद्धिशुद्धहोती तो निस्संदेह जो कुछ तुमने कहाठीकहोता इसपर क्या उत्तम अली पैगम्बर का वचनहै कि जब मनुष्य को स्वाभाविक बुद्धि न होतो सुनीहुई बुद्धिकुछलाभ नहींदेती (कहानी) इमामअबूहनीफ़ा कोफ़ी शिष्यों को अपनी सभा में पढ़ाते थे अकस्मात् दूरसे एकमनुष्य प्रकटहुआ जो विद्वानोंकारूप बनाये और लंबीदाढ़ी कियेथा जबअबूहनीफ़ाकी दृष्टि उसपर पड़ीलोगोंसेकहा अपनीबातचीतमें चैतन्यरहोकि ऐसा न हो कि यहमनुष्य विद्वान् कोई भूल पकड़े सो वह मर्द आनकर बैठा उस समय अबूहनीफ़ा निमाज़ का वर्णन करतेथे यहांतक कि उन्होंने सुबह की निमाज़

में अन्तरहै कईबुद्धिमानहैं कि अपनी बुद्धि और समझके बलसे जो बात सैनसेकहीजाय तुरन्त समझजांय और बाज़ेबुद्धिहीन ऐसेहैं कि हजार सख़्तीसे कहाजाय नहींसमझतेहैं बाज़े बुद्धिमानधर्मिष्ठ कि जो उनकेमनमेंफुरताहै वह धर्मकीओर होताहै और बाजेऐसेहैंकि जो कुछभ्रष्टबुद्धि और नासमझी मन्सूबा करते हैं बहुधा अर्थ भ्रष्ट होता है यहसबबातें मनुष्य की बुद्धिसे मालूमहुई हैं हज़रत रसूल और इब्नइसलामके प्रश्नोत्तरमें जिनकावर्णन हदीसमेंबहुतविस्तार से है और इसी हदीस (अर्थात् रसूलपैग़म्बरकी रचना) के अन्तमें अरश अर्थात् आकाश के गुणों के वर्णन में यों लिखा है जिसका उत्थायहहै कि फरिश्तोंने ईश्वरसेकहा कि तूने कोईचीज अरश से बड़ीउत्पन्नकी ईश्वरनेवर्णनकिया कि हमनेअरशसेबड़ा बुद्धिको उपजायाफरिश्तोंने कहा हे परमेश्वर बुद्धिकी और अधिक प्रशंसाकर किहम उसेख़ूब समझें ईश्वर ने कहा कि बुद्धिकी प्रशंसा तुममालूम नकरसकोगे कि क्या तुम रेत के किनकों की संख्या करसक्ते हो फरिश्तोंने विनयकी कि नहीं फिर ईश्वरने कहा कि तुम जो संसार की रेतके कणभी जानते तो भी बुद्धिकी स्तुति अच्छीतरह तुम्हारे समझ में न आती सो मनुष्यों में से कई ऐसे हैं जिनको रेत के एककण के बराबर बुद्धि मैंने कृपाकी और किसी को दोकण और किसी को तीन कण और किसी को चार और बाज़ों को इससे अधिक कृपा की है इसके प्रमाण पर अद्भुत कहानियां लिखी हैं

(कहानी) एक हकीम किसी रोगी के देखने को गया और नाड़ी और मुख देखने के उपरान्त कहा कि तूने फल खायाहोगा उसने कहा हां उस समय हकीम ने कहा कि अब न खाना पथ्य करना चाहिये दूसरेदिन जब फिर रोगी के पासगया तो नाड़ी के देखने के उपरान्त कहा कि तूने आज मुरग़ का सालन खाया है उसने मानलिया उसके खानेकी भी मनाही की लोगों को आश्चर्यहुआ और हकीम की बुद्धिमानी का निश्चयहुआ हकीमसाहब का एक पुत्र था उसने अपनेपितासे कहा कि आपने क्योंकर यहदोनोंबातें

बढ़आया सो मामूंने नैमाकेपुत्र मन्सूरसेकहा कि इसका उपायकरो उसनेविनयकी कि सक्कोंको आज्ञादीजावे कि मश्कें उसमें से भरर केज़मीनपर छिड़कें खलीफा यह सुनकर हँसा (कहानी) अक्सम के पुत्र क़ाजी हज़रत यहय्याकेपास एकबापबेटे हाज़िरहुये बापने कहा कि अयक़ाजी मेरा लड़का शराब पीनेवाला है और निमाज़ नहीं पढ़ताहै और कुरानतक उसको यादनहीं इसको पत्थरोंसे मारडाला लड़केनेकहा कि मेरा बाप झूठकहता है बापने क़ाज़ीसे कहा किई-श्वर आपको जीतारक्खे कहीं होसक्ताहै कि निमाज़ वे पढ़े क़ुरानके हो क़ाज़ी ने कहा सच है सो पिताने काज़ी से कहा कि लड़के से किसी जगहपरसे क़ुरान पढ़वाइये सो क़ाजीने आज्ञादी लड़के ने एक अशुद्धआयत पढ़दी सो पिताने कहा यहआयत शायद इसने कलयादकीहै दूसरी आयत पढ़वाइये काज़ीने उत्तरदिया कि दूर हो कि ईश्वरने तुमऐसे दोनों बाप बेटोंकेलिये पत्थरोंसे मारडालने की आज्ञादीहै क्योंकि तू आप भी क़ुरान नहीं जानताहै नहीं तो अपने पुत्रकी पढ़ीहुई आयत को क़ुरानकी आयत न मानता॥

मनुष्य के स्वभाव का वर्णन॥

मनुष्य के स्वभाव बहुत से हैं उनमें से नुत्क है जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन की बात को जिह्वा पर लासक्ता है उसमें से हर्ष है जो हँसी दिलाता है और एक रोनेकी शक्तिहै जो शोक के समय रोना लातीहै एक शक्ति बालोंकी है सो शिर के बाल अलं-कार के कारणहैं जो शिरपर बालनहोते तो बुरीसूरत मालूमहोती और स्पर्श शक्तिका गुण व्यर्थजाता और पशुओं के बाल शरीर के वस्त्र और पहिनाव के बदले हैं और जो कि मनुष्य की पोशाक बाहरसेहै इसलिये उसके शिरपरबाल पैदाहोतेहैं कि भेजेकीरक्षा भी हो और मनुष्यकी सुन्दरता भी हो और जो बाल सपेद हो-जातेहैं यह बात सिवाय मनुष्यके और किसी जीवधारी में नहींहै और यह बात बुढ़ापे में होती है क्योंकि उस समय उष्णता कम होजातीहै और दोष शरीरमें पकजाते हैं और शरीरमें सड़ीहुईतरी

के विषयमें कहा कि इसकासमय दूसरी सुबहके आनेकेसमय आता हैऔर सुबहकी निमाज़कासमय सूर्योदयतक रहताहै सो उसपुरुष नेकहा कि जो सूर्य सुबहके पहले उदय तो उसकेलिये क्याआज्ञाहै तो अबूहनीफा ने लोगों से कहा कि अब कुछ तुम इस मनुष्य का विचार न करो क्योंकि मेरा विचार अशुद्ध निकला (कहानी) शाम के अधिपति के पास एक बाजथा अकस्मात् वह उड़ा शामके अधिपति ने आज्ञादी कि शहरके दरवाज़े बन्दकरो कि बाहर निकलने न पावे वही हाकिम एकदिन एकपनचक्कीके पाससे गया वहां परदेखा कि एक गधेको जोतेहुये घुमारहे हैं और एक घंटा उसके गलेमें लटकताहै सो शामके अधिपतिने चक्कीवालेसे कहा कि इस गधेकी गर्दन में घंटा किसलिये लटकायाहै चक्कीवाले ने उत्तर दिया कि जब मैं किसी और काम में होताहूं या मुझको ओंघाई आजातीहै तो जबतक घंटेका शब्द आताहै मैं जानताहूं कि गधा घूमरहाहै और जब इसका शब्द नहीं आताहै तो मैं मालूम करता हूं कि गधा खड़ाहोगयाहै मैं उसकेपास जाके लकड़ीसे हांक देताहूं हाकिम ने कहा कि जो यहगधा रुकरहै और अपना शिरहिलादे तो क्याकरोगे उसने उत्तरदिया कि जिसदिन मेरागधा ऐसा बुद्धिमान होजायेगा उसदिन मैं आप से कोई और उपाय पूंछ लूंगा (कहानी) लिखाहै कि वज़ीर जातुस्सादातका घोड़ाएकदिन सवारी करते में बिगरा आपने आज्ञादी कि इसका जोकादाना बन्दकरदो कि यहरीति सीखे जब वह कईउपवासो के उपरांत निर्बलहोगया लोगोंने उसकी क्षमामांगी आपने उत्तरदिया कि अच्छा उसको दानादियाजाय परन्तु उसको यह विदित न होनेपाये कि हाकिम ने मेरा अपराध क्षमाकिया (कहानी) जब अबुलहजील की स्त्री के प्रसूतिकादिन निकट पहुंचा अबुलहज़ील किसीदाईके पास जाकर बोला कि मेरे घरचलो मेरी स्त्रीके सन्तान होनेवालीहै परन्तु जो तू लड़का जनादेगी तो तुझे एक अशरफ़ी पारितोषिक दूंगा (कहानी) लिखा है किखलीफा मामूंके राज्यमें एकबेरबुगदाद के दजले में पान

अधिक होतीहै क्योंकि इधरका बल उधर चलाजाताहै लिखाहै कि क़ंतावहसेपूछा कि अंधोंकेलिये क्या कहते हो कि इनकी बुद्धि और स्मरण आंखोंवालेसे अधिक होतीहै कहा किइनकी देखनेकी शक्ति मनमें प्रकटहुई है इसीवास्ते अंधों के मनों में बहुत विचार उठा करते हैं इसपर इब्नअब्बासका वचनहै जिसका अर्थ यहहै किजो ईश्वर मेरी आंखोंकी ज्योति को दूरकरदेगा तोमेरे मन और बुद्धिमें उनकी ज्योति भी आजावेगी और उसके कारण मेरी जिह्वा उपदेशमें तलवारके बराबर होजावेगी जिस स्त्री को मासिक धर्म्म हो तो जो वह आगे पीछेसे नंगी होकर आकाश के साम्हने खड़ीहो तो बादल जाता रहेगा और बुद्धिमानों ने यह भी लिखा है कि जिस पृथ्वीपर ऋतुके रुधिर के कपड़े पड़े होंगे उस पृथ्वीपर आकाश से पाला न पड़ेगा जो ऐसी स्त्री नंगीहोकर जंगल में खड़ी होगी तो दुःखदायी जानवर उसके गिर्द इकट्ठे न होंगे और जो ऐसी स्त्री किसी नहर में नहावेगी तो उसका पानी कडुवा होजायेगा जो साफ़ शीशेपरदृष्टि करे तो उसको सफ़ाई कम होजावेगी जो पुरुष ऐसी स्त्री से भोग करे उसका आनन्द सुन्दरता सब कमहोजावेगे जिसको मिरगीने ज़ोर कियाहो ऐसी स्त्री उसके शरीरपर हाथ मलदे अच्छा होजावे यदि मासिक धर्म्मवाली स्त्री सर्पके शरीरपर हाथ लगावे तो वह सर्प मरजायेगा और जो ऐसी स्त्री बकरियां चराने जावे तो उसके गल्लेपर कभी भेड़िया हमला न करेगा कदाचित् भेड़िया आवे तो उसके पेटमें पीड़ा होगी यदिमासिक रुधिर के लत्तेको किश्ती पर लटकावें तो विपरीत पवनोंसे रक्षा रहेगी और जिसको चौथे दिन ज्वर आताहो वह स्त्री के प्रसूति के कपड़े पहने तुरन्त अच्छा होजावे

(मनुष्य के अंगों का । वर्णन) बुद्धिमान् कहते हैं कि जो स्त्रीका पूरा [illegible] खारी प [illegible] े और उस समय सूर्यग्रहणहो तोजब सू [illegible] चे [illegible] वह [illegible] ह जायेगा यदि म- नुष [illegible] नी [illegible] र [illegible] यदि इसको राख लेय [illegible] मनुष्य के कल्लेको

होती है और उससे एक प्रकारकी सड़ी भाफ निकलती है जिसके कारण केश श्वेतहोजाते हैं और जब मनुष्य किसी पीड़ित अंग को हथेलीसे मलताहै तो वहपीड़ा कमहोजातीहै हिकमत की किताबों से लिखाहै कि जो मनुष्य किसीके पीड़ित नेत्रको देखे उसकी आंख भी बीमार होजाती है इसीतरह जो किसी का जूठा पानी पिये उसकारोग उसपर प्रभाव करेगा जैसे कोढ़ खाज और सरसाम अर्थात् भेजेकी सरदी गरमी आदि कोढ़ी मनुष्य नंगेपांव जिधरसे निकलजावे उधर घास कभी न जमेगी न कम न बहुत और दूसरे जीवधारियों के विरुद्ध जो मनुष्यके अंडकोष काटडालें तो उसका शरीर क्षीणहोजाताहै और उसका पसीना दुर्गंधित होजाताहै और उसकी मति बुरी होजाती है भोजन की इच्छा अधिक रहती है हड्डियां लंबीहोजाती हैंउंगलियां टेढ़ीहोजातीहैं और मैथुनकीइच्छा प्रबल होजाती है और बहुधा स्वप्न में उसका वीर्य्यपात हुआ करताहै आयुबड़ी होतीहै और तरीकी अधिकता से बालकम होजातेहैं और पांवकी पिंडली बलकी कमी और बदनकी संगीनीके कारण टेढ़ी होजातीहै और तरीके बहुत होनेसे फेफड़ेका मुंह तंग होजाताहै और इसीकारण उसका शब्द महीन चीखताहुआ होजाताहै और जिस पशुमें दुर्गंधहो तो वह खस्सीकरनेसे सुगंधित होजाता है परन्तु जहां मनुष्य के अंडकोष काटडाले जायँ दुर्गंध अधिक होगी और अधिक आश्चर्य यहहै कि जब मनुष्य के अंडे निकाल डालेजायँ तो थोड़ीसी बात में प्रसन्न और थोड़ीसी में अप्रसन्न होजाताहै और वह किसी तरहका भेद नहीं छिपासक्ता आवाज़ बदल जातीहै यहां तक कि आवाज करने पर पहिचान लियाजाताहै और उसको शतरंज आदि खेलकी इच्छा होजातीहै और अंधे मनुष्यको भोगकी इच्छा अधिक होतीहै जिसतरह कि खस्सी आदमी को अंडदोष संयुक्त मनुष्यसे देखनेकी शक्ति अधिक होतीहै सो इसका कारण यहहै कि जब नेत्रकी ज्योति दूरहुई तो मैथुनकी शक्ति अधिकहुई और जब अंडनिकालेगये नेत्रकी ज्योति

कर खेतमें लटकावें वहां टिड्डी नआवेंगी जो लड़केके लिंग को कुत्ते या बिल्ली खावे दीवाने होजावें जो उसको सुखा कर सुरमा लगावें आंखोंके रोग दूरहों जो मनुष्यके नख काटकर उसकी राख जिसको खिलावें वह मित्र होजावे परन्तु शर्त्त यह है कि वह मनुष्य इस टोटके को नजाने मनुष्यके रुधिरको पानीमें मिलाकर पेट की पीड़ा पर मलना पीड़ा दूरकरता है जिस मनुष्य की नासिका से रक्त निकलताहो जो उसीरुधिरसे उसमनुष्यका नाम कपड़े परलिख कर उस कपडेको उसके नेत्रों के साम्हने रखदें रुधिर बन्द होजावेगा दीवाने कुत्ते के घाव पर ऋतु का रुधिर लगाना उपयोगी है और छीप और कोढ़ को भी गुणदायक है और जिस आंख में पीड़ाहो तो नेत्रके गिर्द ऋतु के रुधिर का लेपकरें पीड़ा दूर होजाय और जो कुंवारी लड़की के ऋतुका रुधिर लगावें सपेदी आंख की नष्टहोगी यदि स्त्री अपने ऋतुका रुधिर अपनी छातियों पर मलले तो छातियां छोटी और सख्तहोंगी जो बवासीर का रुधिर कुत्ते को पिलावे तो दीवाना होजाय और पुरुषके वीर्यको कोढ़ या छीप या दाद पर मलें दूर हो जो वीर्य को गवीराके तेलके साथ मिला कर किसी स्त्री को खिलावें तो वह प्रीति करनेलगे जो पसीना मनुष्य को हम्माममें निकलता है उसको लेकर फोड़े पै लगावे जल्दीपके यदि मिर्गीवाले का पसीना स्त्री अपनी छातियों पर मले दूध इकट्ठा हुआ जारी होगा जो मनुष्यके मूत्रको उबालकर पांव की उंगलियों की पीड़ापर लगावें गुणकरे असमर्थ लड़केका मूत्र तांबेके पात्र में शहद डालकर लगाना आंखकी सपेदीको उपयोगी है और कंमल वायुके रोगीको पीना गुणदायक है परन्तु शर्त्त यह है कि रोगीको मालूम न हो बीस बरसकी आयुवालेका मूत्र कुष्ठीको पिलाना लाभ करे यदि ऐसे मूत्र को खाज और दाद पर लगावें गुणदायक है लिखा है कि पूर्व समयमें एक मनुष्यको तिल्लीका रोगहुआ उसने स्वप्नमें देखा कि किसी बड़े ने उपदेश किया कि अपने मूत्र के तीन चुल्लू तीन दिन तक पिये सो उसने ऐसाही किया और उसे आराम

किसी धरतीमें गाड़े वहां पर कबूतर बहुत इकट्ठे होंगे जहां आदमी के कत्ल पड़ेहोंगे वहांसे चीते भाग जावेंगे जिसे सर्पने काटाहो वह मनुष्य का भेजा खावे या घाव पर रक्खे तो तुरन्त विष दूरहोगा आदमीके वह आंसू जो प्रसन्नता में निकलतेहैं कोई पिये तो उसका शोक दूरहोगा और इसीसे मिरगी भी दूरहोती है जो चिन्तित मनुष्य का आंसू पीवे वह बहुत रोवे और मनुष्यकी थूक मुख्य बिच्छू के लिये विषहै जालीनूसने लिखाहै कि एक मनुष्य बिच्छूका मंत्र जानता था तो पहले वह मनुष्य मंत्र पढ़ता था फिर उसपर अपनी मुंहकी थूक फेंकता था और पकड़ लेता था परन्तु वह निहार मुह बिच्छू पकड़ा करता था अन्तको जालीनूसने उस मनुष्य को बुला कर पहले भोजन खिलाया फिर बिच्छू मगाकर साम्हने किया उस समय उसने कितनाही मंत्र पढ़ २ कर थूक डाला परन्तु वह बिच्छू नमरा सो जालीनूस समझगया कि यह प्रभाव जादूकानहीं है किन्तु यह थूक का गुण है लिखा है कि जो मिक़नातीस अर्थात् चुंबक पत्थर पर लगावें उसका स्वभाव लोहे का खींचना जाता रहेगा जिस लड़के का दूधका दांत टूटे परन्तु उखड़कर ज़मीन पर नगिराहो और किसी स्त्री के यन्त्रकी तरह लटकावें वह सदैव काल बांझ रहेगी मुरदे आदमी के दांत दांतो की पीडा के समय पास रखना उपयोगी है इसीतरह मुरदेकी हड्डियां चौथिया तप वालेको गुणदायक हैं और मनुष्य की हड्डियो की राख खाना मिरगी दूर करती है जालीनूसने लिखा है कि एक मनुष्य मिर्गीकी चिकित्सा में बहुत प्रसिद्धथा निदान बहुत निश्चय करनेपर मालूम हुआ कि मुरदे के हड्डियो की राख खिलाता था जो मनुष्य की आंवल काटी जाती है उसका एक टुकड़ा जबरजद के नगीने के नीचे रखकर अंगूठीबनावें तो जोमनुष्य उसअंगूठीको पहनेगा कुलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ा उसको नहोगी लड़केके लिंगकीसुपारी सुखाकर थोड़ी कस्तूरी मिलाकर खिलावें तो कुष्ठके प्रारम्भ में बहुत उपयोगी है कभी बीमारी नबढ़ेगी जो लड़केके लिंगको किसी लकड़ी में लटका

स्तुतिकरताहूं जिसने हरचीजको वहवस्तुदी जो उसको दरकारथी अब यहांपर कई पशुओंका वर्णन होता है (फ़रस) अर्थात् घोड़ा यह सम्पूर्ण पशुओं से उत्तम होताहै यहांतक कि मनुष्यके रूपके पीछेयहीअच्छाहै और सम्पूर्ण पशुओंसे सख़ी और दौड़ने और २ गुणों में उत्तम विशेष करके इसपशुमें शोभा और अंगोंका शुभ होना और रंगकीसफ़ाई और चलनेकीतेज़ी और सवारका आज्ञा पालन गुणहै इन घोड़ोंके प्रकारों में एक चौगानीहोता है जिसकी पीठपर गेंदखेलतेहैं अर्थात् उसकेसवारको इसबातकीआवश्यकता नहींहोती कि उसकी वागमुड़ावे किन्तु आपही घोड़ेकीदृष्टि गेंदकी ओररहतीहै जिधर गेंददेखताहै मुखकरताहै बाज़ाघोड़ा ऐसाहोता है कि अपने मालिकको पहिचानताहै दूसरे की मजालनहीं कि उस पर सवारहो बाज़ाघोड़ा ऐसाहोताहै कि हिरण के शिरपर पहुंचता है कि उसका सवार हिरणपर तलवार का वारकरै साथिबकलबीका पुत्र मुहम्मद कहताहै कि अच्छे२ घोड़े सुलेमान को दिखाये गये यह सब हज़ार घोड़ेथे जो उनके पिताकी थातीसे मिलेथे सो जब यहघोड़े हज़रतको दिखायेगये इतनेमें आपकी निमाज़ का समय जातारहा और सूर्यअस्तहुआ उससमय हजरतने उन सबघोड़ोंको मरवाडाला केवल थोड़ेघोड़े जो दिखानेसे रहगये थे बचरहे मुद्दत केपीछे हजरतके ससुरोंका समूह सामने आया और विनय करने लगा कि अयहज़रत हमारा निवासस्थान बहुतदूरहै कुछ राह खर्च चाहिये कि पहुंचजावें हज़रत ने उनबचेहुये घोड़ों में से एक घोड़ा देकर कहा कि इस घोड़ेमें यह स्वभाव है कि जब तुम मंजिल पर पहुंचोगे और भोजन के पकाने का विचार करोगे तो जितनी देर मे कि तुम आग सुलगाओगे उतनी देर में यह घोड़ा तुमसबों के वास्ते भोजन कहीं से लादिया करेगा सो ऐसाही हुआ उस दिन से उस घोड़े का नाम तोशासवार रक्खागया कहते हैं कि अरब के घोड़े उसीकी नसल में से है (घोड़ेकेजोड़ो के गुणोंका वर्णन) जो घोड़ेकेदांत किसी लड़केके बांधे उसको दांत निकलने में दुःख

हुआ और यह हाल सुनकर औरोंने भी परीक्षा की तो यह क्रिया सिद्ध निकली बुद्धिमानों ने लिखा है कि लड़कों की विष्टा आंख में लगाना सपेदीको नष्टकरता है यदि सुखाकर और राख बनाकर नासूरपर लगावे तो उसका उपद्रव कारक मांस निकाल कर बराबर करदेता है जिसको रतीला नामीमकड़ी ने काटाहो उसे मनुष्य कीविष्टा खिलावें और गरम तन्दूरमें बिठलावें कि उसके पसीना निकलेगा और आरामपायेगा जो मनुष्यकीविष्टा और भिड़दोनों जलाकर तीन दिवस पर्यंत खाजपर मलें परन्तु हम्माम के अन्दर जो ईश्वर चाहे रोग शांत होगा जो नेत्र में लगावे आंख की लाली और खाज दूरहोगी जो कीड़े मनुष्यकी विष्टामें से निकलते हैं जो उनको इकट्ठा करके पीसे और सलाई से आंख में देवे तो आंख की सपेदी दूरहोगी (अन्य प्रकार पालू चारपायोंका वर्णन) यह प्रकार सम्पूर्ण पशुओं मे सुन्दरता और लाभमें उत्तम होती है जो कि मनुष्य क्षीण शरीर और क्षीण वर्ण और क्षीण गति है और बहुधा अपने शत्रु और अपनी जातिके विरुद्ध जीवधारियों को रखता है सो परमेश्वरने बुद्धिमानीसे पशुओंकाप्रकार मनुष्यकेलियेउपजाया कि मनुष्य उनसे अपनेमनकाकार्यले और इसप्रकारके पशु मनुष्य के लिये पंख और बाजुओंकी जगहपर हैं ईश्वर का बचनहै कि घोड़े खच्चर और गधेइसलिये हैं कि तुम उनपर सवार हो और तुम्हारी सुन्दरताहो जैसे घोड़ा कि उसकीबुद्धि मनुष्य से अधिकतर है और कानछोटे दुमलम्बी और समझकाशुद्धगधेसेहै और पूंछकेलम्बेहोने से कीड़ोंका दूरकरताहै जब पशुओंसे तीक्ष्णमतिकी अभिलाषहुई तो अवश्यहुआ कि उनके सुमज़बूतहो इनसे दौड़नेमे दुःखकमहो और अपने प्रबलशत्रु के दूरकरनेके लिये कठोर शस्त्रहों और यह बात ठहरीहुईहै कि जिस पशुकेसुमहो उसके सींग नहींहोते और जिसके सींग हो उसके सुम नहीं परन्तु नख होतेहैं जिनको खुर कहतेहैं और यह इसलिये होतेहैं कि वह उससे अपने शत्रुकोदूर करे क्योंकि इनदोनोंकीउत्पत्ति एकहीमूल वस्तुसे है उस ईश्वरकी

बैलकीमलें तो सब घरके मच्छड़ उस घड़ेमें जाकर इकट्ठे होजायँ यदि बैलके मुरदे को कंठमालावाले की गर्दनमें लटकावें रोग दूर होगा बैलकामांस अति हानिकरेहै और बुरी बीमारियां लाता है जैसे झाई और सरतान अर्थात् पीठकाफोड़ा और खाज दाद कोढ़ और वहम और पीलपांव आदि और जो बछडेकालिंग घिसकरपिये तो वीर्यको बल अधिक हो कदाचित् बछड़े के लिंगको सुखाकर महीन पीसकर आधेभुने अंडेपर छिड़ककरपियें वीर्य अधिक हो जो बैलके नख जलावें और उसकी राखको दांतोंपर मलें बहुत चमक आजावे यह निश्चय बलैनासका है और जो इसके सुमको शहद सिरके और तेलमें मिलाकर मर्दनकरें तो मुखकी झाईं नष्टहो और जो उसकीराख शैतरज अर्थात् चीतकेसाथपकावें और कंठमालाके रोगपर मरहमलगावें कंठमाला गलजावेगी और इसकीपूंछ को जिसजगहजलावें उसजगहके रहनेवालोंमेंविरुद्ध प्रकटहोगा यदि कालीगायकादूध जौके आटेमेंमिलावें और नासूर या बवासीर पर उसका लेपकरे तो पीड़ा ठहर जावेगी पैगम्बर साहब ने कहा है कि गाय का दूध बहुधा पियाकरो वह हरवृक्ष को चरती है और इसके दूधमें इसीसबब से अधिक गुण आजाता है गोदुग्ध जरदी और बवासीर मे गुणकारक है और लहू इसका सूजन के गलनेमें उपयोगी है और दुखदाई जानवर के घावपर मलना अति लाभ कारी है बलैनास कहताहै कि इसका मूत्र मनुष्य के मूत्र में मिला कर चौथिया तपवाले के चारों हाथ पावँ की उंगलियों में लगावें तुरन्त दूरहो शायद ऐसाहो कि तीनवेर यहक्रिया करनी पड़े और गायके गोवर में अंगूरी सिरका मिलावें और कठोर फफोलोंपरमलें नरमकरदें और पकावे जब मकान में गोवर और माजूकाधुंवाकरें तो सब दुःखदाई जानवर भागजावें गाय का गोवर और गेहूं का तेल और सिरकेको आगपर [illegible] आधारहजाय फिर सूखा गोवर मिलावें जि[illegible] ह घा[illegible] रहगई हो वहां लगावें तीनदिन मे लोहे[illegible] धुंवा योनिमें

न होगा और जो ऐसेमनुष्य के शिरकेनीचे रक्खे जो स्वप्नमें दांत पीसताहो तो यहआदत उसकी दूरहोजावे इसका मांस हरप्रकार की बातको दूर करताहै जो दारचीनी के साथ खाये बलकी वृद्धिहो जो पुरानेघोड़े के लिंगको नमक के साथ घिसकर गरम पानी में भिगावें और पांवकी उंगलियोंकी पीड़ापर मर्द्दनकरें गुणकरे और जो इसकी पूछका बाललेकर मकानके दरवाज़ेपर तानदें उसमकान में मच्छड़ न आवेगे जो सुमको जलावे, और उसका धुवां स्त्रीकी भगमें दें पेटसे मुरदा बच्चा और उसका मलआदि निकल जायेगा यदिदुष्ट घोड़ेके सुमको घरमें गाडें चूहे उस मकान मे न रहेगे जब पक्षियों के बच्चे अण्डेसे बाहरहो जो उनको घोड़ेके सुममें पानी पिलाया जाय तो शाहीन आदि शिकारी पक्षियोंसे उनको दु ख न पहुंचेगा जो घोड़े का पसीना लडके के बगल लिंगरथल में मलदें बाल न निकलेगे जो बवासीर में मलें गुणकरे इसमें गांसी भी भिगोनेसे बिषैलीहोजातीहै और उसकेघावकी चिकित्सा असंभवित है इसकी विष्टाका धुवां भगके नीचेदेना प्रसूतिसे सुगमता करताहै घावका जारी लहू भी इसके रखने से बन्द होताहै यदि विष्टाका रस नाकमें टपकावें नकसीरको लाभदायकहै और कानमें टपकानेसे कर्ण पीड़ा जाती रहतीहै यदि घोड़ेकी लीद और मनुष्य की विष्टा एकदिरमलेकर और मद्यएक दिरम लेकर फफोलोके कालेघावपर मरहम की तरह लगावें तुरन्त दूर होजाय जो इसमें शहद नमक और नौसादर भी बढ़ावें तो गुदने का निशान मिट जावे सूरत घोड़ेकी यहहै॥ तसवीर नम्बर २५६

(बगल) अर्थात् खच्चर यह जानवर घोडे और गधे के मैथुन से उत्पन्न होताहै फ़ारसी में इसको अस्तर कहते हैं जो गधानर हो तो उसकी सूरत घोड़ेसे बहुत मिलतीहै जो घोड़ा मादाहो तो गधे से बहुत मिलताहै अधिक आश्चर्य यहहै कि इस जानवरका हर एक जोड़ घोड़े और गधे दोनोंसे मिलताहै इसीतरह कुच और शब्द परन्तु न तो घोड़े कासा समझदार होता है और न गधे कासा

में एक हड्डी होती है जो इसके दिलका लहू शिर पीडा में लगावें गुणकरे और जो इसका दिल गाय के गले में लटकावें दूध बहुत हो इसका रुधिर विष के दूर करनेवाला और कुलंज को उपयोगी है मूत्ररोध पर इसका हुक़ना करना गुणकरे इसके चर्म को घरमें जलाना सांपों को दूर करता है जो इसके बालों को जलावें चूहे भागजावें और जो इसके नख भुजापर बांधे सम्पूर्ण दुःखदाई जानवरों से बचें इसका सुम जलाना सांपों को दूर करता है और यही गुण इसकी बिष्टा के धुयें में भी है॥

तसवीर नम्बर २६२

(जामूश) इसको फारसी में गांवमेश और हिन्दी में भैंसा कहते हैं यह बड़े शरीर का पशु होता है यह कभी नहीं सोता किसी समय पर आंख बन्द करलेता है कहते हैं कि उसके भेजे में ऊष्मा सदैव काल घूमती रहती है और इसी कारण नहीं सोता औरसब दुखदाई जानवरों को अपनी तरफ से दूर करता है और नाकाजो पानी का जानवर है उसका शत्रु है जो कि नाका इतने बड़े शरीर का जानवर है तो भी उसको मारता है इसीकारण इस जानवर को मिसरके रोदनीलके किनारोंपर छोड़देते हैं कि घड़ियालोंका शिकार करे शेरसे नहीं डरता बरन उसके सामने जाताहै इसके सींग बहुत नोकदार नहींहोते बरन बैलोंकेतेज़ और नोकदार होते हैं यह अद्भुत बातहै कि शेरको परास्त करताहै और जोकि शेर बड़ाई के हथियार रखताहै पराजय होजाताहै और क्या ईश्वरकी माया है कि मच्छड़से भागताहै और पानी में जाकर बचता है कहते हैं कि जो इसको अंजीर के वृक्षमें बांधे बहुतदीन और निर्बलहोजावेगुण यह जानवर अपनी मातासे जुफ़्ती नहींकरता और जो इसके भेजे के जीतेकीड़ोंको किसीपर लटकावें उसको नींद न आवे इसकेमांस खानेसे जूं पड़जातीहैं और जो इसकी चरबी छीप और कोढ़ और खाजपर मलें दूरहो सूरत यहहै॥

दें तो उसगर्भवती के तुरन्त बच्चा पैदाहोजावे जो इसके गोबर को बबूल की लकड़ी के साथ जलाकर उसकीराख को गायके लहू में मिलावे और जिसके शिरपर बाल न हों उसके शिरपर एकमहीने तक बराबर मले बाल निकलआवेंगे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६१

(बक़्रुलवहश) अर्थात् बारहसिंगा यहजानवर हरसाल पुराने सींगको गिराकर नये निकालता है जब पुराने सींग गिराने का समय आताहै एकान्तस्थल में जाताहै और जबतक नयेसींगनहीं निकलते छिपारहता है कि कोई उसको मुण्डा न देखे और दोवर्ष का होनेपर यह तौर शुरूहोता है इसकेसींग अन्दरसे ठोसहोतेहैं परन्तु और सम्पूर्ण पशुओं के नहीं होते यह पशु बहुधा बजाने के शब्दपर कानलगाता है और प्रसन्न होता है बीमारी में सांपों को खाकर आराम पाता है और सांप को पूंछ की तरफ़ से खाता है और उसके शिरको छोड़देता है और खाने के पीछे पानी पीता है किन्तु गेगटे को खाताहै कि विष शरीरभर में न पैठे जब सर्प उस को देखताहै अपनीबांबीमें छिपताहै तो यहजानवर बांबीके किनारे जाकरश्वासके जोरसे उसको निकालकर खाताहै कहतेहैं कि कई सवार कुत्तों समेत इसके पीछे दौड़े यह जानवर भागा अकस्मात् मार्ग में सर्पदेखा पहले उसको मार कर खाया फिर दौड़ने लगा अर्थात् सांप की खुशी में अपने प्राणोंकाभी भय न किया (गुण) इसकी हड्डियों की मींगी अर्द्धांग को गुणकरे जिसके पास इसका सींगहो उसकेपास दुःखदायी जानवर न आवें इसीतरह जिस घर में हो वहांपर दुःखदायी जानवर न जावें उसके धुयें से सर्प भाग जाते हैं और उसकी राख दांतों की पीड़ा को लाभकरे जो इसकी राखको तेल में मिलाकर चारपायों के फटेहुये हाथ पावों में लगा-वे लाभकरे जो उसके सींग को गर्भवती स्त्री के बांधे तुरन्त सुग-मता से बच्चा उपजे इसके आंसू विष के दूरहोने के लिये उपयोगी हैं इसका मांस उदर की पीड़ा को गुणकरे कहते हैं कि इसकेदिल

में एक हड्डी होती है जो इसके दिलका लहू शिर पीडा में लगावें गुणकरे और जो इसका दिल गाय के गले में लटकावें दूध बहुत हो इसका रुधिर विष के दूर करनेवाला और कुलंज को उपयोगी है मूत्ररोध पर इसका हुक़ना करना गुणकरे इसके चर्म को घरमें जलाना सांपों को दूर करता है जो इसके बालों को जलावें चूहे भागजावें और जो इसके नख भुजापर बांधे सम्पूर्ण दुःखदाई जानवरों से बचें इसका सुम जलाना सांपों को दूर करता है और यही गुण इसकी बिष्टा के धुयें में भी है॥

तसवीर नम्बर २६२

(जामूश) इसको फारसी में गावमेश और हिन्दी में भैंसा कहते हैं यह बड़े शरीर का पशु होता है यह कभी नहीं सोता किसी समय पर आंख बन्द करलेता है कहते हैं कि उसके भेजे में ऊष्मा सदैव काल घूमती रहती है और इसी कारण नहीं सोता औरसब दुखदाई जानवरों को अपनी तरफ से दूर करता है और नाकाजो पानी का जानवर है उसका शत्रु है जो कि नाका इतने बड़े शरीर का जानवरहै तो भी उसको मारता है इसीकारण इस जानवर को मिसरके रोदनीलके किनारेपर छोड़देते हैं कि घड़ियालोंका शिकार करे शेरसे नहीं डरता बरन उसके सामने जाताहै इसके सींग बहुत नोकदार नहींहोते बरन बैलोंकेतेज़ और नोकदार होते हैं यह अद्भुत बातहै कि शेरको परास्त करताहै और जोकि शेर बड़ाई के हथियार रखताहै पराजय होजाताहै और क्या ईश्वरकी माया है कि मच्छड़से भागताहै और पानी में जाकर बचता है कहते हैं कि जो इसको अंजीर के वृक्षमें बांधे बहुतदीन और निर्बलहोजावेगुण यह जानवर अपनी मातासे जुफ़्ती नहींकरता और जो इसके भेजे के जीतेकीड़ोंको किसीपर लटकावें उसको नींद न आवे इसकेमांस खानेसे जूं पड़जातीहैं और जो इसकी चरबी छीप और कोढ़ और खाजपर मलें दूरहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६३।

(जराफा) अर्थात् शुतरगावपलंग इसका शिर ऊंठसे मिलता है और बैलकी तरह सींग और चीतेकीसी त्वचा और बैलकी तरह सुम गरदन बहुतलम्बी होतीहै और दोनोंहाथ दोनों पैरोंसे लम्बे और दुम हिरणकी तरह होतीहै कहतेहैं कि इसकी नसल हब्शकी ऊंटनी और जंगली बैलसेहोतीहै कफ्तार जिसको हिन्दीमें हुंडार कहतेहैं वह ऊंटनी से जुफ़्ती करताहै तो उसका बच्चा जो ऊंट हो और जंगली गाय से जुफ़्ती खावे उससे जो बच्चा पैदा हो उसको जराफा कहतेहैं तैमासप हकीमकहताहै कि विषवत् रेखाके निकट उत्तर की ओर गरमी की मौसम में तरह २ के जानवर दरिया किनारे इकट्ठे होतेहैं कामदेव के अधिकवेगसे उनको अपनी जाति का विचार जाता रहताहै वहांपर जुफ़्तीखानेसे ज़राफ़ा पैदाहोता है और समा और गुवारभी वहीं उपजताहै समा वहहै जो भेड़िये का बच्चा हुंडार से हो और गुवार जो हुंडार का बच्चा भेड़ियेसेहो और २ जानवरों से नानाप्रकार की नसलें प्रकटहोती हैं यमन के अधिपतिने एकबेर खलीफ़ाकीभेंटको ज़राफाभेजाथा परन्तु जाड़ेमें उसकीरक्षा न हुई और वह मरगया यह जानवर अद्भुत था इसके गुण कुछमालूमनहीं इसकारण वर्णन न किये सूरत उसकीयहहै॥

तसवीर नम्बर २६४।

(जान) अर्थात् भेड़ इसमे बड़ीबरकतहै कि वर्षमें एक या दोबेर बच्चाजन्ती है और सदा काटीजाती और फिर भी इसकी अधिकता रहतीहै परन्तु दूसरेजानवर चार सात २ बच्चेजन्तेहैं और उनका निशान कहीं २ एक दो दिखाई देताहै यह जानवर बहुत होताहै यहांतक कि मनुष्य की प्रशंसा में कहतेहैं कि अमुकमनुष्य भेड़की तरह पर है भेड़ जब हाथी ऊंट और भैंसको देखतीहै उनके शरीर के बड़ेहोनेपर भयनहींखाती परन्तु भेड़ियेको देखतेही उसके अङ्ग कांपतेहैं यद्यपि इसजानवर से कुछही भेड़िये के जोड़ बड़े होतेहैं परन्तु यह भय उसका स्वाभाविक है जो ईश्वरकी ओरसे है

है कि जब बकरियों के गल्ले को भेड़िये बुग़दादके दरियाके किनारे पर देखते हैं पानी में गोता लगाते हैं जब इनको भेड़ियों का डर दूरहोताहै तो निकलतेहैं अद्भुत यहहै कि बहुधा रात्रिको कईबकरियोंके बच्चे होतेहैं और सुबहको जब उनको उनकी माता ओसमें चरनेकी जगहपरलेजाकर शामको लौटालाते हैं हरएकबच्चा अपनीमा को पहिंचानलेताहै परन्तु मनुष्यमें कईमहीनेकेपीछे यहशक्तिहोतीहै हिन्दुस्तान में एक प्रकार की भेड़ी होती है जिसके छः चकतियां चरबीकी होतीहैं छातीपर एकचकती दोनों कन्धोंपर दो और दोनो रानोंपर दो और दुमपर एकचकती होतीहै (गुण) जो इसके सींग वृक्षके नीचेरक्खें ऋतु के पहले फलदारहो और फल मीठाहो और जो इसके पत्तेको शहदमें मिलाकर आंखोंमें लगावें ढलका दूर हो और सपेदीको भी नष्टकरे बहरेके कानमें टपकाना भी लाभदायक है और इसका मांस सदाखाना फुंसी और फफोला पैदाकरनेवाला है और निद्राका भी वेगहोताहै मिर्गीवालेको बहुतही हानिकर है और जो इसकी हड्डियां ग़ज़की लकड़ी में जलाकर गुलाब तेल में मिलाकर टूटेहड्डीकेजोड़परमलें हड्डीजुड़जायगी और मांसभी भर आयेगा और जो इसकोऊनकोशख आसकेदरख्तकेपत्तेमेंमिलाकर उपद्रव कारक घावोंपरलगावें लाभकरे बलैनासनेलिखाहै कि जो इसकीऊनकी बत्ती स्त्रीभगमेंरक्खें कभी गर्भवती न हो जो शहदको इसकीऊनसे ढाकें चीटियां न आवेंगी सूरतउसकी यहहै॥

[illegible] तसवीर [illegible]

(मअज़) इसको फ़ारसी मे बुज़ और हिन्दी में बकरी कहतेहैं यह जानवर अहमक़ होताहै अर्थात् मनुष्य के निर्बुद्धि होने पर कहते हैं कि अमुकबकरीहै यहजानवर भेड़सेदूध और मोटाई और चमड़ेकी सख्तीमें उत्तमहै और इसके चकती नहींहोती और इसके बदलेइसके अन्दर चरबीहै ईश्वरने बुद्धिमानीदेखी कि भेड़काचमड़ा पतला उपजाया क्योंकि उसपर ऊनबहुतहै कि उसको गरमरक्खे और बकरीका चमड़ा बहुत मोटाहोताहै कहतेहैं कि जब बकरीका

तसवीर नम्बर २६३

(जराफा) अर्थात् शुतरगावपलंग इसका शिर ऊंठ से मिलता है और बैलकी तरह सींग और चीतेकी सी त्वचा और बैलकी तरह सुम गरदन बहुतलम्बी होतीहै और दोनोंहाथ दोनों पैरोंसे लम्बे और दुम हिरणकी तरह होतीहै कहतेहैं कि इसकी नसल हब्शकी ऊंटनी और जंगली बैलसेहोतीहै कफ्तार जिसको हिन्दीमे हुंडार कहतेहैं वह ऊंटनी से जुफ़्ती करताहै तो उसका बच्चा जो ऊंट हो और जंगली गाय से जुफ़्ती खावे उससे जो बच्चा पैदा हो उसको जराफा कहतेहैं तैमासप हकीमकहताहै कि बिषवत् रेखाके निकट उत्तर की ओर गरमी की मौसम मे तरह २ के जानवर दरिया किनारे इकट्ठे होतेहैं कामदेव के अधिकवेगसे उनको अपनी जाति का विचार जाता रहताहै वहांपर जुफ़्तीखानेसे ज़राफा पैदाहोता है और समा और गुबारभी वहीं उपजताहै समा वहहै जो भेड़िये का बच्चा हुंडार से हो और गुबार जो हुंडार का बच्चा भेड़ियेसेहो और २ जानवरों से नानाप्रकार की नसलें प्रकटहोती हैं यमन के अधिपतिने एकबेर खलीफ़ाकीभेंटको ज़राफाभेजाथा परन्तु जाड़ेमें उसकीरक्षा न हुई और वह मरगया यह जानवर अद्भुत था इसके गुण कुछमालूमनहीं इसकारण बयान न किये सूरत उसकीयहहै॥

तसवीर नम्बर २६४

(जान) अर्थात् भेड़ इसमे बड़ीबरकतहै कि वर्षमें एक या दोबेर बच्चाजन्ती है और सदा काटीजाती और फिर भी इसकी अधिकता रहतीहै परन्तु दूसरेजानवर चार सात २ बच्चेजन्तेहैं और उनका निशान कहीं २ एक दो दिखाई देताहै यह जानवर अद्भुतहोताहै यहांतक कि मनुष्य की प्रशंसा मे कहतेहैं कि अमुकमनुष्य भेड़की तरह पर है भेड़ जब हाथी ऊंट और भैंसको देखतीहै उनके शरीर के बड़े होनेपर भयनहींखाती परन्तु भेड़ियेको देखतेही उसकेप्राण कांपतेहैं यद्यपि इसजानवर से कुछही भेड़िये के जोड़ बड़े होतेहैं परन्तु यह भय उसका स्वाभाविक है जो ईश्वरकी ओरसे है सुना

रंग साफ करताहै और मुल्यकरके स्त्रियोंको शक्कर डालकर इसका दूध पीना लाभकरे चिंतादूर करे कामदेव बढ़ावे परन्तु आंखों में अँधेरी आतीहै और दांतोंकी भी हानि होतीहै इसकेपनीरका पानी गांसीको घावसेबाहर निकालताहै जो इसका मूत्रउबालकर बराबर शहद मिलाकर लगावें जलेहुये जोड़को लाभ करे यदि हम्माम में तीनबेर खाजमें लेपकरें उपयोगीहै जो लड़का बहुतरोताहो इसकी कई मेंगनियांलेकर उसके सिरहाने रक्खें चुप होजायेगा शेख़रईस का बचन है कि इसकी मेंगनियां कंठमाला को गुणदायक हैं जो स्त्री इसकी मेंगनियों को जलेहुये बालोंमें मिलाकर योनि में रक्खें ऋतुका रुधिरबंदहो और जलेहुयेजोड़को गुणकरताहै सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २६६

(जिब्बी) अर्थात् हिरण यहजानवरबुद्धिमान् और बड़ाभागने वाला होताहै अरब वाले सुबह को इसका देखना अच्छा शकुन जानतेहैं इसकीबुद्धिका यह वर्णनहै कि जब अपने रहनेके स्थानमें आना चाहताहै तो अपनेपीछे देखताहै और हरओर दृष्टि दौड़ाता है क्योंकि अपना और अपने बच्चोंका भयखाता है तो जो यहबातें जाने कि किसीने उसको देखलिया तो घरमें नहींजाता अद्भुतयह कि हराइन्दरायन का फल कि उसके पानीको अपने मुखके दोनों तरफ़ के किनारो से निकालकर खाताहै और उसके खानेसे स्वाद पाताहै इसीतरह खारी और कडुवे दरियाका पानी पीताहै उनकी कडुवाहट की परवाह नहीं करता जिन हिरणोंके मुश्क होताहै वह भी इसी तरह के होते हैं परन्तु उनके हाथी की तरह के दो दांत बालिश्त भरके बाहर निकलेहुये होतेहैं इनके चरनेकी जगह चीन तिब्बत और ज़रजीर के शहरों में होती है और वहां पर सुम्बुल अर्थात् बालछड़ और दोनों बहमन(खुशबोदारपहाड़ीघास)और २ सुगन्ध देनेवाली घासचरतेहैं उत्तममुश्क वहहै कि अपनेआप नाभि से बाहर गिरे कि जब रुधिर ऊष्मा से जोशखाकर नाभिकी ओर दूरकरे तो जब लहू नाभिमें पकताहै हिरणको बड़ी खुजली मालूम

बच्चा शेर के बच्चे को देखता है थोड़ा २ उसकी ओर चलता है और उसकी गन्धके पातेही मूर्च्छित होकर मुरदेकी तरह होजाता है और जब वह शेरका बच्चा वहांसे दूरहोजाता है यह होशमें आजाता है एक प्रकारकी मकड़ी जिसको रतीला कहते हैं जब मनुष्यके शरीर पर उसकी लस गिरती है तो बड़ी पीड़ा उत्पन्न होती है बहुधा लोग मरजाते हैं इस मकड़ीको बकरीका बच्चा बहुत खाता है और उसको हानिके बदले लाभ होता है अर्थात् मोटा होता है बलैनास कहता है कि जो सफ़ेद बकरी के सींग को घिसकर कपड़े में लपेटकर जिसके सिरहाने पर रक्खे जबतक उसको अलग न करें वह मनुष्य न जागेगा जो इसके पित्ते को गाय के पित्ते में मिलाकर बत्ती बनाकर कान में रक्खें बहरे को लाभ करे जो पलकों के बाल जिसको प्रवाल कहते हैं उनको निकालकर नरबकरेका पित्ता उस जगह पर लगावे फिर बाल न जमेंगे इसका पित्ता कान की पीड़ा में पानी में मिलाकर टपकाना गुणकारक है और नेत्र की ज्योति की न्यूनता रतौंधीको गुणकरे नरबकरेकी दाढ़ीका बाँधना चौथिया तप वाले को गुणकारक है इसका कलेजा खाना स्त्री के कामदेवको क्षीण करता है यहां तक कि मनुष्यकी इच्छा न रहे जो इसको तिल्लीकी बीमारीमें खावे गुणकरे जो तिल्लीका रोगी इसकी तिल्लीको अपने हाथ से अपने मकान में लटकावे तो जब वह तिल्ली सूख जावेगी इसके तिल्लीकी बीमारी जातीरहेगी यदि गजदरख़्त की डालीमें लटकावे तो उसका प्रभाव प्रबल होगा इसका सदा मांस खाना चिन्ता और विस्मरण लाता और जला हुआ दोष बढ़ाता है जो सूईको नरबकरे के लहूमें भिगोकर कानछेदे वहछेद बन्द न होगा जो लकड़ीकी चोट लगीहो बकरेकी ताजीखालवहां पर बांधदे तो पीड़ा जाती रहे इसके खुरको सिकंजबीनमें घिसकर खाना तिल्लीकोगुणदायक है और वीर्य बढ़ाता है जोइसकानखजला कर सिरकेमें मिलाकर बालखोरेपरलगावें तुरन्तबालनिकल आवें इसका दूध नजलेको गुणकरे और घावका निशान मिटाता है और

रंग साफ करताहै और मुख्यकरके स्त्रियोंको शक्कर डालकर इसका दूध पीना लाभकरे चिंतादूर करे कामदेव बढ़ावे परन्तु आंखों में अँधेरी आतीहै और दांतोंको भी हानि होतीहै इसकेपनीरका पानी गांसीको घावसेबाहर निकालताहै जो इसका मूत्रउबालकर बराबर शहद मिलाकर लगावें जलेहुये जोड़को लाभ करे यदि हम्माम में तीनबेर खाजमें लेपकरें उपयोगीहै जो लड़का बहुतरोताहो इसकी कई मेंगनियांलेकर उसके सिरहाने रक्खें चुप होजायेगा शेख़रईस का बचन है कि इसकी मेंगनियां कंठमाला को गुणदायक हैं जो स्त्री इसकी मेंगनियों को जलेहुये बालोंमें मिलाकर योनि में रक्खें ऋतुका रुधिरबंदहो और जलेहुयेजोड़को गुणकरताहै सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २६६

(जिब्बी) अर्थात् हिरण यहजानवरबुद्धिमान् और बड़ाभागने वाला होताहै अरब वाले सुबह को इसका देखना अच्छा शकुन जानतेहैं इसकीबुद्धिका यह वर्णनहै कि जब अपने रहनेके स्थानमें आना चाहताहै तो अपनेपीछे देखताहै और हरओर दृष्टि दौड़ाता है क्योंकि अपना और अपने बच्चोंका भयखाता है तो जो यहबात जाने कि किसीने उसको देखलिया तो घरमें नहींजाता अद्भुतयह कि हराइन्दरायन का फल कि उसके पानीको अपने मुखके दोनो तरफ़ के किनारों से निकालकर खाताहै और उसके खानेसे स्वाद पाताहै इसीतरह खारी और कडुवे दरियाका पानी पीताहै उनकी कडुवाहट की परवाह नहीं करता जिन हिरणोंके मुश्क होताहै वह भी इसी तरह के होते हैं परन्तु उनके हाथी की तरह के दो दांत बालिश्त भरके बाहर निकलेहुये होतेहैं इनके चरनेकी जगह चीन तिब्बत और ज़रजीर के शहरों में होती है और वहां पर सुम्बुल अर्थात् बालछड़ और दोनों बहमन(खुशबोदारपहाड़ीघास)और २ सुगन्ध देनेवाली घासचरतेहैं उत्तममुश्क वहहै कि अपनेआपनाभि से बाहर गिरे कि जब रुधिर ऊष्मा से जोशखाकर नाभिकी ओर दूरकरे तो जब लहू नाभिमें पकताहै हिरणको बड़ी खुजली मालूम

होतीहै सो तेजपत्थरों पर नाभिको रगड़ता है और मुश्क निकल कर पत्थरमें चिपकता है जैसे लोगोंकेघाव और फोड़ोंसे पीबजारी होतीहै लोग उनस्थानोंमें जातेहै और उसरुधिरको पत्थरोंसेपाते हे (गुण) जो उसके सींग का धूआं करें दुखदाई जानवर दूर हों जो उसकी जिह्वा सुखाकर स्त्री को खिलावें उसका बहुत बकबाद दूरहो और इसकीनाभि मे रुधिर पैदाहोताहै वह कस्तूरीहै तोजो उसे शिकारकरे और लहूपका न हो बुरीकस्तूरी है जो इसका पित्ता टपकावें कर्णपीड़ा दूरहो और इसकेबाल मूत्रके कठिनतासे उतरने को गुणदायकहै इसकाचर्म भेजेके लिये बलदायक है और उन्माद रोग का उपयोगी और बिष के लिये मानो ज़हर मोहरा है परन्तु मुखको पीला करताहै और इसका खाना ना समझीका पैदा करने वाला है सूरत यहहै॥

शमशेर नम्बर २६०

(ऐल) यह पहाड़ी बकरी है इसकी दशा बारासिंगेकी तरह होती है हरसाल सींग गिराती और जमाती और सांप खाती है और जब शिकारी पहाड़ पर इसकी ओर जाताहै और वह देखलेता है पहाड से नीचे कूद पड़ती है चाहे कितनाही ऊंचा हो हज़ार दो हज़ार गज़तक और सींगके बल गिरतीहै और चोटसे बचा रहता है कहते है कि इसके सींगोमें दो छिद्र होते हैं जिनसे दम लेती है जो वह छिद्र बन्द होजावे श्वास रुक कर मरजाय इसके आयु के वर्ष सींग की गिरहों के अनुसार होते है क्योंकि एक २ गिरह हर वर्ष अधिक होती है जो सांप इसको काटै तो गेगटा खाती है और चाहे कितनीही गरमीहो पानी से बचती है ठीक गरमीके दिनों में कि जब भेड़िया तीन रात दिन तक इसके पीछे दौड़ता है तो यह अपने बच्चेको छोड़कर दरियामें चलाजाता है मछलीसे बहुतप्रीति रखताहै हर समय दरिया किनारे जातीहै और मछलीको देखती है और मछली भी उसके देखनेको पानीपर आती है शिकारीलोग इसीकारण इसकी खाल पहिनकर दरियाकिनारे जातेहैं कि मछ-

लियां निकलआवें (गुण) जो इसके सींगका बुरादा एकमिस्क़ाल शक्कर समेत पानी में घोलकर मिर्गी वालेको पिलादें गुण करे जो घिसकर झाईं और कोढ़ पर लगावें लाभकरे जो गन्धक के साथ छिड़कें मकानसे सर्प भागजावे यदि गर्भवती स्त्रीके लटकायें सुगमतासे प्रसूतिहो शेख़रईसका वचनहै जो शहरी और पहाड़ी बकरी दोनोंके सींग जलाकर मञ्जनकी तरह मलें दांत मज़बूत हों और पीड़ा भी दूर हो पहाड़ी बकरी का पित्ता आंखों में लगावें रतौंधी दूरहो शेख़रईसका वचनहै कि सम्पूर्ण दुखदाई जानवरों के वास्ते पहाड़ी बकरीका पित्तापीना मानो ज़हरमोहरा है जो उसकाकलेजा भूनकर आंखमेंसुरमालगावें आंखकेपर्देको गुणकरता और अन्धेरी को उपयोगी हो इसका मांस खाना चौथिया तप पैदाकरताहै जो इसकीचरबी बिच्छू और भिड़केघावपरमलदें गुणकरे और बिच्छू इसकेपित्तेकी गन्धसे मरजाताहै जो सांपकाकाटाहुआ इसके लिङ्ग कोसुखाकरखाये लाभहो और वीर्यकोभीबढ़ाताहै और इसीकेसूखे लिंगको मूत्ररोध के वास्ते भी गुणदायक लिखाहै जो इसको पानी में धोकर पानीपीवें पहलूकी पीड़ा दूरहो और जो इसके लिंगको सुखावे और पानीमेंधोके पानीपीवे लिंगको बहुतकठोर और प्रबल करताहै और इसका चमड़ा दस्तरख़्वान अर्थात् जिस कपड़े पर मुसल्मान भोजनभरे पात्र रखकर भोजन करतेहैं उसके गिर्द मूस सांप और मच्छड़ आदि न आवेंगे इसकी पूंछ और सींग की राख तेलमिलाकर तलवेमेंमलें चलनेमें थकान नहो किन्तु अधिक प्रसन्नता हो इसके बाल जलाने से चूहे आदि भागते हैं इसकी पूंछका बाल हलाहल बिषहै जो कोई उसको पानीमें पिये तुरन्त मरजाय शेख़रईस कहता है कि जो पहाड़ी नर मादा बकरे की विष्ठा उस जगहपर जहांसे लहूजारीहो लगावें तुरन्तबन्दहो और जो इसकी मेंगनी पानीमेंगिरे और बकरी उसकोपीवे तो तुरन्त मरजाय परन्तु जो भेड़पीलेवे तो उसको हानि नहीं होती सूरत यहहै॥

होतीहै सो तेजपत्थरां पर नाभिको रगड़ता है और मुश्क निकल कर पत्थरमें चिपकता है जैसे लोगोंकेघाव और फोड़ोंसे पीवजारी होतीहै लोग उनस्थानों में जातेहैं और उसरुधिरको पत्थरोंसेपाते हैं (गुण) जो उसके सींग का धूआं करें दुखदाई जानवर दूर हों जो उसकी जिह्वा सुखाकर स्त्री को खिलावें उसका बहुत बकवाद दूरहो और इसकीनाभि में रुधिर पैदाहोताहै वह कस्तूरीहै तोजो उसे शिकारकरें और लहूपका न हो बुरीकस्तूरी है जो इसका पित्ता टपकावें कर्णपीड़ा दूरहो और इसकेबाल मूत्रके कठिनतासे उतरने को गुणदायकहै इसकाचर्म भेजेके लिये बलदायक है और उन्माद रोग का उपयोगी और बिप के लिये मानो ज़हर मोहरा है परन्तु मुखको पीला करताहै और इसका खाना ना समझीका पैदा करने वाला है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६०

(ऐल) यह पहाड़ी बकरी है इसकी दशा बारासिंगेकी तरह होती है हरसाल सींग गिराती और जमाती और सांप खाती है और जब शिकारी पहाड़ पर इसकी ओर जाताहै और वह देखलेता है पहाड से नीचे कूद पड़ती है चाहे कितनाही ऊंचा हो हज़ार दो हज़ार गज़तक और सींगके बल गिरतीहै और चोटसे बचा रहता है कहते हैं कि इसके सींगोमें दो छिद्र होते हैं जिनसे दम लेती है जो वह छिद्र बन्द होजावे श्वास रुक कर मरजाय इसके आयु के वर्ष सींग की गिरहों के अनुसार होते हैं क्योंकि एक २ गिरह हर वर्ष अधिक होती है जो साप इसको काटे तो गेगटा खाती है और चाहे कितनीही गरमीहो पानी से बचती है ठीक गरमीके दिनो में कि जब भेड़िया तीन रात दिन तक इसके पीछे दौड़ता है तो यह अपने बच्चेको छोड़कर दरियामें चलाजाता है मछलीसे बहुतप्रीति रखताहै हर समय दरिया किनारे जातीहै और मछलीको देखती है और मछली भी उसके देखनेको पानीपर आती है शिकारीलोग इसीकारण इसकी खाल पहिनकर दरियाकिनारे जातेहैं कि मछ-

सियार उनको मारडालता है जब सियार चाहता है कि पानी के मुर्ग़ को शिकारकरें मुट्ठाघासका पानी में छोड़ता है जब मुर्ग़ उस पर आ बैठते हैं उससमय पीछेसे पहुंचकर उनका शिकार करताहै (गुण) उसकीजिह्वा जिस घरमेंहो परस्पर विरुद्ध हो जो इसका पित्ता आधेदिरम गरमपानी के साथतीनदिन पियें तिल्लीकी पीड़ा दूरहो और इसका मांस एक मिस्क़ाल के अनुमान खाना उन्माद और मिरगी के प्रारम्भ को गुण करे और इसकी हड्डियों की मींगी पापड़ियालोन के साथ मलना कोढ़को नष्टकरताहै सूरत यह है ॥

तसबीर नम्बर ६७७

(इब्नअरस) अर्थात् नेवला यहजानवर लम्बा और दुबला होताहै चूहे का शत्रुहै चूहे के बिल में जाकर शिकार करताहै और भूषण और रत्नोंको बहुत प्यारकरताहै नाकेबकाशत्रुहै उसकापेट फाड़ डालता है कहते हैं कि नाका सदा मुंह खोले रहताहै नेवला उसके मुखके मार्गसे उदरमें जाकर उसकी अँतड़ियों को चबाकर खाताहै जब नाका मरजाताहै उसकेउदरसे बाहर निकलताहै और सर्पका भी शत्रुहै और जब सर्पसे लड़ने जाताहै तो पहले तितली जो एक प्रकारकी घासहै खा लेताहै इसकारण सर्पका विष उसे दुखदाई नहीहोता और जब भुजंग इसघासकी गन्धपाताहै निर्बल होजाताहै और नेवला उसपर प्रबल होताहै कहतेहैं कि एक चूहा नेवलेके सामनेसे भागा और वृक्षपर चढ़गया नेवलेने भी उसका पीछाकिया कि चूहा दरख़्तकी फुनँगपर पहुंचा और जब वेचारेको कोई जगह बचावकी न मिली एकपत्तेपर लटककर और दांतों में दबाकर रहगया अन्तको जब नेवला उसपत्ते पर न पहुंचसका और दीन हुआ तो चिल्लाया उस समय उसका नर आ पहुंचा तब उस नेवलेने उसपत्तेको जिसपर चूहाथा काट डाला और वह चूहा पत्ते समेत गिर पड़ा सो नीचे से दूसरे नेवले ने उसका शिकार किया (गुण) इसकाभेजा आंख में लगाना अन्धेरी दूर करताहै शेख़र-ईस कहताहै कि इसका मांसबांधना जोड़ोंकी पीड़ाको उपयोगी है

तसवीर नम्बर २६८

(अलसवाअ) अर्थात् जंगली दुःखदेनेवाले जानवर इसप्रकार का चोपाया शैतानका नमूना होताहै क्योंकि इसप्रकार के स्वभाव अहंकार क्रोध उपद्रव दिलेरी और मारनेपर साहस करतेहैं पालू चारपायों के प्रकार से इनके कर्म और शील विरुद्ध हैं मनुष्य का ध्यान इसप्रकार के पालनपर न हुआ जैसा कि और पालूजानवरों परहै इनके शरीरमें भोजनकी प्राप्तिकेलिये हथियार भी कृपाकिये जैसे दांत और चुंगल और भयानक स्वरूप और मुंहका खुलाहोना और गर्दनका मोटा होना हृदयकी चौड़ाई पतली कमर और बदन की फुरती सब इनको दियेगये जो ऐसा न होता तो अपने भोजन की प्राप्तिमें दीनहोते और यद्यपि यह समूह एक गर्भ में छः सात बच्चे देताहै और वर्ष में दो बेरतक जन्ते हैं परन्तु कमी के सिवाय कि वह भी पृथ्वीके ओरोंके किनारोंमें पायेजातेहैं अधिकता नहींहै यह भी ईश्वरकी बुद्धिहै जो ऐसा न होता तो सारासंसार इनसेभर जाता और यह बड़ा उपद्रव करते जैसे आयतसे प्रकटहै जिसकेयह अर्थ हैं कि क्या ईश्वर की बुद्धि है कि उसने लाभ देनेवाली बहुत वस्तुओंको बहुत उपजाया और हानिकर वस्तुओंको कम हरतरह से वह विश्वम्भर सर्वोपरि है अब हम उनको लिखते हैं कि जो जंगली दुखदाई पशुहैं ॥ तसवीर नम्बर २६६

(इब्नेआवे) अर्थात् सियार बड़ा उपद्रवी पालेरंग के मेवोंका शत्रुहै कइयोंकोखाता और कइयोंको ख़राब करताहै जब पालूमुर्ग़ की दृष्टिइसपरपड़तीहै चाहेऊंचेकोटेपरभी हो तुरंतइसकेपासआताहै और अपनेको सियारकी ख़ूराक बनाताहै जैसा कि हम ऊपरलिखे आयेहैं कि गधा शेरबब्बर के पास चलाजाताहै और बड़ा आश्चर्य यहहै कि जो पालू मुर्ग़ लोमड़ी या बिल्ली या कुत्ते की गन्ध पावे अपनेको उनके सामने से अलग करताहै और चुपका खड़ा रहता है और जब सियार को देखताहै तो उसके पास चलाजाताहै यहां तक कि जो सौ मुर्ग़ भीहों वहसब उसकेपास चलेजातेहैं और एक

के रसमें जिस मनुष्यको हड़फूटन और पहलू की पीड़ा और नकरस अर्थात् पांव की उंगलियों की पीड़ाहो बैठे गुणदायक होगा जो इसको सिरकेके साथ पियें कुल विषोंकेलिये ज़हरमोहरा है जो इसकी हड्डियां जलाकर मोममें मिलाकर गलेहुये मांसपर लगावें घावभरे और आरामहो जो इसका पनीरमा या पानी में मिलाकर कुलंज की पीड़ावाले को गुणदायक है बलैनास की मतिहै कि हर पशुका पनीरमा या कूलंजको गुणकरे परन्तु समे का पनीरमाथा बहुत प्रबलहै इसका पांव दाहिने बायेंके विवेकसे जोड़ोंकीपीड़ापर बांधना गुण दायकहै जो स्त्री इसकी योनि पकाकर खावे मैथुन करतेही गर्भ धारण करे अरबके लोगोंका वचनहै कि इसके शतालेग (अर्थात्एंडी) की हड्डीको बांधना जादूसे बचाता है इसका धुवां फेफड़ेकी पीड़ा को गुणदायक है जिस स्त्रीका मासिक रुधिर बन्द न होताहो वह कईबाल इसकी वत्ती बनाकर भग में रक्खे रुधिर तुरन्त बन्दहोजाय और इसकी विष्टा रखने से गर्भवती हो स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०७

(असद) अर्थात् शेर यह सम्पूर्णजंगलीजानवरोंमें बल साहस में बड़ा और सबको भय दिलानेवाला है इसे ईश्वरने शिर और गर्दनकी बड़ाई मुंह गोल मुखके कोनोंको कानेमें दांत और चुंगल की तेज़ी सीना चौड़ा हाथ पांव मोटे कमर पतली ऊंची आवाज़ कृपाकी कि किसीसे न डरे और कोई पशु इससे बराबरी न कर सके कहतेहैं कि दूसरेका माराहुआ शिकार नहीखाता हां अपना किया हुआ शिकार दिल और कलेजे खानेके पीछे दूसरोंके खाने को छोड़ताहै रात्रिके समय डफके शब्दसे प्रसन्न होता है अंधेरी रातों में आगकी रोशनी जिधर देखे उस ओर जावे उससमय बहुत नम्र होनेसे उसकी तुन्दी दूर हो जाती है कहते हैं कि जो

१ अर्थ कि किसी पशुके बच्चे को दूध पिलाकर तुरन्त मार डालतेहैं तो उसके मेदेमे जमकर निकलताहै उसका नाम पनीरमायाहै॥

और शराबके साथपीना मिर्गीके रोगोको गुणकरे जो इसकीचरवी दांतों में मली जाय सब दांत गिरजायँ और जो किसी लकड़ी में उसकोमले यहांतक कि वहचरवी उस लकड़ीमें चुसजाय फिरउस लकड़ी से धीरे२ दातून करे सव दांत सुगमता से गिरजायेंगे जो लड़कोंके मसूढ़ोंमें इसकी चरवीमलें तो दांत वहुतजल्दी बेपरिश्रम बराबर और खुले निकलेंगे और जो उसकी पीठकीहड्डी मैथुन के समय स्त्री अपनेपास रक्खे कभी गर्भवती न हो इसके अण्डो में भी यही गुणहै जो दोनोंचीज़ें रक्खें तो और उत्तमहै अधिकलाभ होगा इसका रुधिर कण्ठमालाको गलाने वालाहै और इसकीविष्टा घाव के लहूके जारीहोनेको बन्दकरतीहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर२७१

(अरम्ब) अर्थात् खरगोश इसके बच्चे बहुत होतेहैं कहते हैं कि खरगोश एकवर्ष नर और एकवर्ष मादा रहताहै और इसको स्त्रियों के सदृश मासिकधर्म भी होताहै इसके दोनोहाथ पैरसेछोटे होतेहैं और ऊपरसे नीचेआने मे बड़ा दुःख पाताहै परन्तु ऊपर जाने में नही सोनेपर इसकेनेत्र खुलेरहते हैं जब मांदाहोताहै हरा नरकुल खाकर आराम पाताहै वुद्धिमान् यहांतकहै कि नरम ज़मीनपर भी वहुत हलका होजाता है कि पांवके चिह्न दिखाई न दें और शत्रु पीछा करनेसे वचे (गुण) इसके शिरकीहड्डी जलीहुई का मञ्जन दांतों को चमकाता है इसका भेजा खाना स्त्री को बांझ करता है कदाचित् गर्भ रहेगा तो दूसरी वेर गर्भ न रहाकरेगा जो इसका मांस बच्चोकेमसूढ़ोमेलगावें बहुत सुगमतासे दांतनिकलें कहतेहैं कि जो ससेकेदांतपीड़ित दांतोपरबांधें आरामहो इसशर्त्तपर कि जिस ओरका जौनसादांतहो उसीओरका वहीदांत ससेकाभी हो इसका पित्ता पीना निद्राका वेग लाताहै यहां तक कि सिरका पीने विना नही जागता इसकी तिल्ली मिश्री के साथ खानी खांशी को दूर करतीहै वलैनासने लिखाहै कि इसका रुधिर पीना स्त्री को वांझ करताहै और इसके मर्द्दनसे झाईं छीप दूरहोतीहै और इसकेमांस

के रसमें जिस मनुष्यको हड़फूटन और पहलू की पीड़ा और नकं-रस अर्थात् पांव की उंगलियों की पीड़ाहो, बैठे गुणदायक होगा जो इसको सिरकेके साथ पियें कुल विषोंकेलिये जहरमोहरा है जो इसकी हड्डियां जलाकर मोममें मिलाकर गलेहुये मांसपर लगावें घावभरे और आरामहो जो इसकापनीरमाया पानी में मिलाकर कुलंज की पीड़ावाले को गुणदायक है बलैनास की मतिहै कि हर पशुका पनीरमाया कूलंजको गुणकरे परन्तु ससे का पनीरमाया बहुत प्रबलहै इसका पांव दाहिने बायेंके विवेकसे जोड़ोंकीपीड़ापर बांधना गुण दायकहै जो स्त्री इसकी योनि पकाकर खावे मैथुन करतेही गर्भ धारण करे अरबके लोगोंका वचनहै कि इसके शता-लेग (अर्थात्‌एडी) की हड्डीको बांधना जादूसे वचाता है इसका धुवां फेफड़ेकी पीड़ा को गुणदायक है जिस स्त्रीका मासिक रुधिर बन्द न होताहो वह कईबाल इसकी वत्ती बनाकर भग में रक्खे रुधिर तुरन्त बन्दहोजाय और इसकी विष्ठा रखने से गर्भवती हो स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३०६

(असद) अर्थात् शेर यह सम्पूर्णजंगलीजानवरोंमें बल साहस में बड़ा और सबको भय दिलानेवाला है इसे ईश्वरने शिर और गर्दनकी बड़ाई मुंह गोल मुखके कोनोंको कानेमें दांत और चुंगल की तेज़ी सीना चौड़ा हाथ पांव मोटे, कमर पतली ऊंची आवाज कृपाकी, कि किसीसे न डरे और कोई पशु इससे बराबरी न कर सके कहतेहैं कि दूसरेका माराहुआ शिकार नहींखाता हां अपना किया हुआ शिकार दिल और कलेजे खानेके पीछे दूसरोंके खाने को छोड़ताहै रात्रिके समय डफके शब्दसे प्रसन्न होता है अंधेरी रातों में आगकी रोशनी जिधर देखे उस ओर जावे उससमय बहुत नम्र होनेसे उसकी तुन्दी दूर हो जाती है कहते हैं कि जो

१ कहते कि किसी पशुके बच्चे को दूध पिलाकर तुरन्त मार डालतेहैं तो उसके मेदेमें जमकर निकलताहै उसका नाम पनीरमायाहै ॥

कोई उसके साथ बहुत नम्रता से साम्हने आये उसका शत्रु नहीं होता चाहे कितनाही भूखाहो और जब शिकार खाता है नमककी इच्छा करताहै और जब बीमार होताहै तो लगूरका मांस खाकर आराम पाता है परन्तु जब उसे ज्वर आताहै तो बहुत कम आराम पाताहै और जब इसके शरीरमें तीरकी गांसी रहजाती है तो साद जो एक प्रकार की घास होतीहै उसके खाने से निकल जातीहै और यह स्वभाव केवल शेरकाहै जो कोई घाव पहुंचे मक्खियां इतनी इकट्ठी होतीहैं कि इसके मरजानेतक दूरनहींहोतीं और मोर और सपेद घरके पालू मुर्ग से भागता है और शेरके शोरसे सम्पूर्ण पशु भागते हैं परन्तु गधेको कि चलने की शक्ति नहीं रहती नहीं जाता जब यह जानवर भूखा होताहैतो चुपरहता है जबतक कि शिकार न पावे कि शब्दसे कोई पशु भाग न जावे गर्भके समय बच्चा इसका माकी पेटमें नखसे गर्भाशय को घायल करता है तो जब मादा इससे मरने के निकट पहुचती है तो नर शेर उसके खानेके लिये सूस मार लाताहै कि मादा उसको खानेसे आराम पावे और बच्चाजनै इसकी मादा प्रसूतिके समय ज़मीन तर और खारी ढूंढ़तीहै कि चूंटीसे उसके बच्चेको दुःख न पहुंचे और जब बच्चेके पास जातीहै तो अपने पंजोंकेचिन्ह मिटाती है कि कोई उसका पता न पाये जब शेर शिकारके वास्ते निकलता है तो उसकाबच्चाभी साथदौडताहै और जबकोईशब्द सुनताहै तो भागताहै सो शेरउसकोअपने पेटकेनीचेकरक़ेउसकेकानोंमें बिजली की तरह गूंजताहै कि उसके मनसे हर एक शब्द का भय जाता रहै कहतेहैं कि पशुओंमेंशेरके बराबर और कोई मुख दुर्गंधिवाला नहीं होता इसकी आंख अंधेरेमें ज्योतिकी तरह प्रकाशमानहोती है जैसे चीते बिल्ली और सांपकी आंखें कहतेहैं कि शेर भरी हुई मशकसे भागताहै और ऋतुमती स्त्रीसेनहीं बोलता मल्लाहोसेसुना है कि एक शेरने एक लंगर मे आकर देखा कि किश्ती की रस्सी एक वृक्ष से बंधी है और वह रात्रि का समय था तो यह समझा

कि कोई न कोई मनुष्य इसरस्सीके खोलनेकेवास्ते अवश्य आवेगा सो शेर अपनी आंखें बन्दकिये चुपका उस वृक्ष के नीचे लेटरहा और आंखोंको इस लिये बन्दकिया कि रात्रिको ज्योति की तरह चमकेंगी तो लोग पहिंचान जायेंगे सो वही हुआ कि जो मनुष्य उस रस्सीके खोलने के वास्ते आताथा उसको मार डालताथा सो कई मनुष्योंके मरजानेके उपरान्त मालूम हुआ (गुण) जो इसका भेजा सज़ैतूनके तेलमेंमिलाकर कांपनेवाले या फड़कतेहुये जोड़पर मलेउपयोगीहै जो इसकेदांत लड़केकेगलेमेंलटकावें किसीदुःखऔर पीड़ा बिना दांत निकलें जो कोई इसके दांत अपने पास रक्खे दांतोंकी पीड़ासेनिर्भयहो और जो इसकापित्तापिये साहसहो और मिर्गी और पीलपांवकी बिमारीदूरहो इसका आंखमेंलगाना लहूके बहनेको बन्द करताहै जो कंठमालापर मलें गुणकारीहै औरचरबी इसकी बवासीर गरम सूजन और झाईं और फोड़ोंको लाभदायक है जो अपने मुखपर मले निर्भय होजायँ और कोई जंगली पशु उसके पास न आवे जो उसके दोनों आंखोंकेबीचकी चरबी गुलाब तेलके साथ मुखपर मलें जो कोई उसकोदेखे भयपाये इसकामांस अर्द्धांग और झोले वालेको गुण दायकहै और इसके मर्दनसे सरतान जो एक बीमारीहोतीहै दूरहोजातीहै जो हींगमें मिलाकरकोढ़ पर लगावें रोग नष्ट हो इसका अंडवीर्य्य कम करता है जो पुरुष उसको गुलाबमें घिसकर पिये तो उससे कोई स्त्री गर्भवती न हो इसका पंजा जिस मनुष्यके पासहो उसके पास कोईदुःखदाई पशु न आवे और इसका पंजा जिस पानीमें गिरे और उसका पानी जो चारपाया पीवे ऐसा क्षीण हो कि कभी उसमें पुष्टता न आवे इसकी खालपर बैठनेसे बवासीर वालेको गुणहै इसी तरह जो चौथिया तपवाला दिनमें दोबेर इसपर शयन करे आरामपावेऔर कूलंजको भी गुणकारीहै जो इसके चमड़े से ढोल या नक्कारा मढ़ें उसका शब्द जिस घोड़े के कानमें पहुंचे बीमारहो जो कोई इसके माथेका चमड़ा पगड़ीया टोपीके नीचे माथेकेपास छिपावे तोलोग

कोई उसके साथ बहुत नम्रता से साम्हने आये उसका शत्रु नहीं होता चाहे कितनाही भूखाहो और जब शिकार खाता है नमककी इच्छा करताहै और जब बीमार होताहै तो लंगूरका मांस खाकर आराम पाता है परन्तु जब उसे ज्वर आताहै तो बहुत कम आराम पाताहै और जब इसके शरीरमें तीरकी गांसी रहजाती है तो साद जो एक प्रकार की घास होतीहै उसके खाने से निकल जातीहै और यह स्वभाव केवल शेरकाहै जो कोई घाव पहुंचे मक्खियां इतनी इकट्ठी होतीहैं कि इसके मरजानेतक दूरनहींहोतीं और मोर और सपेद घरके पालू मुर्ग से भागता है और शेरके शोरसे सम्पूर्ण पशु भागते हैं परन्तु गधेको कि चलने की शक्ति नहीं रहती नहीं जाता जब यह जानवर भूखा होताहैतो चुपरहता है जबतक कि शिकार न पावे कि शब्दसे कोई पशु भाग न जावे गर्भके समय बच्चा इसका माकी पेटमें नखसे गर्भाशय को घायल करता है तो जब मादा इससे मरने के निकट पहुचती है तो नर शेर उसके खानेके लिये सूस मार लाताहै कि मादा उसको खानेसे आराम पावे और बच्चाजनै इसकी मादा प्रसूतिके समय ज़मीन तर और खारी ढूंढ़तीहै कि चूंटीसे उसके बच्चेको दुःख न पहुंचे और जब बच्चेके पास जातीहै तो अपने पजोंकेचिन्ह मिटाती है कि कोई उसका पता न पाये जब शेर शिकारके वास्ते निकलता है तो उसकाबच्चाभी साथदौड़ताहै और जबकोईशब्द सुनताहै तो भागताहै सो शेरउसकोअपने पेटकेनीचेकरकेउसकेकानोंमें बिजली की तरह गूंजताहै कि उसके मनसे हर एक शब्द का भय जाता रहे कहतेहैं कि पशुओंमेंशेरके बराबर और कोई मुख दुर्गंधिवाला नहीं होता इसकी आंख अंधेरेमें ज्योतिकी तरह प्रकाशमानहोती है जैसे चीते बिल्ली और सांपकी आंखें कहतेहैं कि शेर भरी हुई मशकसे भागताहै और ऋतुमती स्त्रीसेनही बोलता मल्लाहोंसेसुना है कि एक शेरने एक लंगर में आकर देखा कि किश्ती की रस्सी एक वृक्ष से बंधी है और वह रात्रि का समय था तो यह समझा

इसकेरोंगटे गिरजाते हैं इसकारण बालखोरेकी बीमारी को दाय
स्सालिब कहतेहैं तो जब वहमको खातीहै बालजम आते हैं इसीसे
मकोय को उन्नबुस्सालिब कहते हैं य अपने मकानके पास जंगली
प्याज़डाल देतीहै और निश्चिन्तहोकरआरामकरतीहै और भेड़िये
से नहींडरती क्योंकि जो भेड़िया जंगली प्याज़परपांवरखे तुरन्त
मरजाय जबयह भूखीहो और इसेकुछखानेको न मिले तो जंगलमें
मुरदेकीतरह पेटफुलाकर रहजातीहै कि कईदिनोंकी मरीहुई लाश
समझीजातीहै यहांतक कि पक्षी उसकेशरीरपरआकरइकट्ठे होतेहैं
उससमय उनकाशिकार करती है और यह जानवर शिकारी को
अपनेहाथसेघायल करतीहै जो वहजानवर इससे सबलहोताहै तो
उसकोदेखतेही मुरदा बनजातीहै साहीके शिकारमें बड़ी मक्कारी
करतीहैअर्थात् जहां साहीने इसेदेखा तुरन्त अपने सिरको पेट में
डालकरअपने कांटोंको लंबाकरतीहै उससमयलोमड़ी उसपर मूत्र
करतीहै और उसके मूत्रसे उसको बहुतदुःखहोताहै लाचार अपने
मुहको उठाकर मुख खोलतीहै सो तुरन्त लोमड़ी उसके पेटको
पकड़ कर खाजातीहै बीमारी की दशामें जंगली प्याज के खानेसे
आराम पातीहै जब इसके बदनमें जुयें पड़तीहैं तो एककपड़ा अपने
मुखमें पकड़के पानीमें खड़ी होती है और थोड़ा २ पानीकी गह-
राई की ओर जाती है और जुंये सब ओरसे उसके शिर की ओर
इकट्ठी होजातीहैं फिर थोड़ा २ अपने सिरको भी पानी में डुबोती
है यहांतक कि वहसब जुयें उसकपड़ेपर आजातीहैं उससमय उस
कपड़ेको फेंककर और गोता लगाकर निकल आतीहै और उनके
दुःखसे छुटतीहै एकमनुष्य कहताथा कि मैने मार्गमें देखा कि एक
लोमड़ी दम चुराये हुये ऐसीपड़ीथी कि मैं मुरदा समझा जब कुत्ते
उसकी ओर दौड़े और वह समझी कि कुत्तोंको मेरा मकर मालूम
होगया तुरन्त उठकर भागी और वृक्षों में छिपगई गुणा जिसबुर्ज
यामकानमें कबूतर बहुत रहतेहों और उसका शिर वहां लटकावें

उससे भय पावें और बादशाहों की दृष्टिमे प्याराहो और जो इस का चेहरा दूसरे जंगली जानवरोंकी खालमें लिपटावें उसकारोवां आपसेआप झड़जाय और जो इसके बाल जलाकर उसकी राख सोम रोगन में मिलाकर फफोलेपर लगावें तुरन्त अच्छा होजाय जो इसकी विष्टाको मद्यमें मिलाकर किसी शराबीको पिलावे फिर उसको शरावकी इच्छा न होगी वरन मद्यका शत्रु होजायेगा॥

तसवीर नम्बर ८०३

(बबर) यह पशु शेरसेभी अधिक बलवान् होताहै शेर और चीतेका शत्रुहै जब यहजानवरचीतेके शिकारकरनेका उद्योगकरता है तो शेर इसको सहायता देताहै कुत्ते के मांस के खाने से इसका रोगशान्त होताहै बुढ़ापेमें चाहे यह भूखाभी हो परन्तु भेड़िये के विरुद्ध मनुष्य को नहीं छेड़ता इसकी मादा प्रसूति के समय में संभालूके वृक्षके नीचे जाकर बच्चे जन्ती है और तीन दिनमें एक वेर बच्चेको दूधपिलातीहै और सूसमारकर खाना बच्चोंको सिखाती है (गुण) इसकी त्वचा बड़ी दलदार होतीहै जिसके फफोला हो तो जो इसकीखालका बिछौनाबनावे गुणकारीहो जो इसकापित्ता पानीमें मिलाकर सरसामवाले रोगीके सिरमेंलगावें गुणकरे और स्त्री बत्तीबनाकर भगमेंरक्खे बाझहोजाय यहांतक कि जो गर्भ हो गिरादे और इसकीपांवकीहड्डीको सदेशापहुंचानेवालेमनुष्यकेपैरमें बांधे जो वह साठकोशभीचले दुःख न पावे जो इसकीखालका धुआं चौथिया तपवाले के दामनकी नीचे दिया जावे उपयोगी है और इसके धुयेंकी गन्धसे चीटियां पैदा होतीहै और इसकी विष्टा के धुवेंसे सम्पूर्ण विषैले जानवर भागजातेहैं॥

तसवीर नम्बर८०४

(सालिब) अर्थात् लोमड़ी यद्यपि यह देखनेमे छोटीहै परन्तु छल छिद्रसे बड़े२जानवरोंकी बराबरी करतीहै यहजानवर अपने घरमें बाहर निकलनेके दो छिद्र रखताहै कि जोकोई शत्रु घुसआवे तो वह दूसरे दरवाजे से निकल कर वहदरवाज़ा बंद करदे हरवर्ष

तरह इसके भी दो दांत होतेहैं भैंसकीतरह शिर और बैलकीतरह सुमहोते हैं कामदेव के उपजने के समय शिर नीचे करके आवाज बोलताहै इनकायुद्ध कि जब मादापर लड़ते हैं कठोर होताहै नर-सुव्वर वृक्षोंपर अपने शरीरको रगड़ते हैं कि उनकी खाल कठोर होजावे और इसीकारण फिर इसपर किसी पशुकादांत असरनहीं करता और यह जानवर पृथ्वी को अपने दांत से खोदता है और बहुतही जननेवाला है एकबेर में वीसबच्चे तक होतेहैं और सर्पको नहींखाता और न सर्पका विष इसपर प्रभाव करताहै और लोमड़ी से अधिक छलीहोता है बहुधा सवारके साम्हनेसे भागताहै यहां तक कि जब सवार इनका पीछाकरते थकजाताहै उससमय सवार और उसके घोड़े को अपने दांत की चोट से मारडालता है जब कोई इसपशु को मोटाकरना चाहे तो चाहिये कि इसको तीनदिन भूखा रक्खे फिर बहुत भोजन खिलावे इस उपाय से दोदिन में मोटाहोजावेगा निसारालोग रूम की धरती पर ऐसाही करते हैं जबयह रोगी होताहै केकड़ेके खानेसे आराम पाताहै इसके अद्भुत गुणहैं कि जो सुव्वरको गधेकी पीठ पर बांधें कि वह हिल न सके तो जब गधा पेशाब करे तुरन्त सुव्वर मरजायेगा जोकुत्तेको अपने दांतोंसे काटे तो उसके सम्पूर्ण केश गिरजायँ और जबउसकाशब्द हाथी सुनता है तुरंत मरजाता है (गुण) इसके दांत साथ रखना लोगोंकी दृष्टिमें प्रिय करताहै और कुदृष्टिका प्रभाव नहीं होताइ-सका पित्ता सुखाकर ववासीर पर लगाना गुण दायक है इसका मांस हर प्रकारके मांससे अशुद्धहै जो कईदिनरक्खें कीड़े पड़जावें परन्तु उनकीड़ोंका खाना जंगली जानवरों के विषको गुण कारकहै इसकी चरबी [illegible] जोड़ पर [illegible] उपयोगी है जो इसकीविष्टा कबूतर के अ[illegible] कंठमें [illegible] गुणकारक है और फोड़ोंको भी [illegible] इस [illegible] चरबी ववासीर को गुण [illegible]कहै जो ह[illegible] तो [illegible] [illegible]वदे तुरंतद्दु-[illegible]जावे [illegible] पशुओंकी

बाधनेसे दूरहोतीहै और चौंकना और सोनेमें डरना भी दूरहोताहै और किसीके दाहनी ओरके दांतमें पीडाहो इसका दाहना दांत बाधनेसे दूरहो जावेगा इसी प्रकार बायें से बांयां दांत गुण रखता है जो इसकापित्ता सुरमें में मिलाकर लगावें ढलका बन्दहोजावेगा इसका मांस पकाकर कईदिन खाना कोढ़ और अर्द्धांग और लकवे को उपयोगीहै जो इसकी छरबी पावँकीहड्डो की पीडापर मलें तुरन्त पीड़ा दूर हो जो उसकी चरबी अनार की लकडी मे लगाकर घरमें रखदें सब खटमल उसपर इकट्ठेहो और इसकागुरदा कठमाले पर लगावें लाभकरे इसका अंड लडको की गर्दनपर बांधना दांतसुगमता से निकालता है और जो इसकालिंग शिरपीड़ाकी बीमारीमें पासरक्खें गुणकारी है इसकीखाल औरों की खालसे उत्तमहोती है शेखरईस ने कहाहै कि इसकी खाल शीतकफ और पित्त के स्वभाव वालों को गुणकारी है लहू इसका लडको के शिरपर लगाना गंजे वालोको गुणकारीहै बाल जमआवें जिसकेपास इसकालहू हो उस पर किसीकाछलऔर छिद्र न चलेगा सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर २०५

(हरीश) एक प्रकार का जानवर बकरी के बच्चेकी तरह पर है इसको दौडनेकी शक्ति बहुतहोतीहै इसके शिरपर एकसींगहोताहै यह जानवर दोनोपैर से दौड़ताहै और कोई इसकी बराबर दौड नहींसक्ता क्योंकि बहुतही दौड़नेवाला है लिखाहै कि यह जानवर मुल्क सजीन और बलगारमें होताहै–(गुण) जिसकागलापड़गया हो या कंठमाला का रोगहो तो उसकालहू गरमपानी में मिलाकर कुल्लीकरें तुरन्त आरामपावे इसका मास क़तूरयोन (एकरूमी औषधि का नामहै) पकाकर खाना क़ूलंजको गुणदायक है इसकी चरबी इसीके पावँकी हड्डीकी राखमें मिलाकर पीड़ित नाड़ियोंपर मलना गुणकारी है ॥

तसवीर नम्बर २०६

खजीर अर्थात् सुअर बहुत कठोर और कुरूपहोताहै हाथीकी

घाट २ कर उसके जोड़ निकालती है और अपने बच्चोंको छोड़कर कफतार अर्थात् हुण्डारके बच्चोंको दूध पिलातीहै इसीकारण अरब कहते हैं कि अमुक मनुष्य रीछकी मादा से भी अधिक अहमक है इसपर कोई जंगली जानवर प्रबल नहीं होता परन्तु शेर एक मनुष्य कहानी कहता था कि शेरने इसके पकड़नेका इरादा किया वहवृक्ष पर चढ़गया मुझे वृक्ष पर देखकर शेर नीचे खड़ाहोगया ऊपर एक डालपर रीछ बैठा था मैं बहुत आश्चर्य करता था कि इन दोनों बलाओंसे क्योंकर छुट्टी पाऊंगा अकस्मात् रीछने अँगुलियोंकी सैन से मनाकिया कि कोई बात नकरना कि शेर मुझे जाने संयोगसे मेरे पास एक छुरीथी मैंने उससे उसडालको जिसपर रीछ था धीरे २ काटना शुरूकिया और रीछ मेरी ओर देखाकिया तो रीछ डालसमेत पृथ्वीपर गिरा और शेरसे लड़ाई हुई निदान शेर प्रबल हुआ रीछ को टुकड़े २ करदिया और खा पीकर अपनी राहली और मैं आनंद पूर्वक अपनी राह आया (गुण) इसके दांत स्त्री के दूध में घिस कर लड़कोंको पिलावें उसके दांत सुगमतासे निकलेंगे जोइसकी आंख अलसीके कपड़ेमें बांधकर चौथिया तपवालेको बांधें गुणकरे इसका पित्ता काली मिरच में मिलाकर गंजपर मलना उपयोगी है यदि कुछ इसका पित्ता कीड़े खाये हुये दांतोंपर लेपकरें गुणकरे आंखमें लगाना अंधेरी दूर करताहै शेखुलरईस कहताहै कि जोकोई जोड़ मिर्गी वाला अपने पास रक्खे आराम पावे जो इसकी चरबी को काले कव्वेकी चरबीके साथ बालों में लगावें जल्दी सपेद न होंगे जो इसकी चरबी पांवकी बिवाई में भरदें आराम होजाय और कोढ़ पर मलना उपयोगी है बरायतेके साथ पीसकर जिस जोड़पर लगावें कभी बाल नजमेंगे जो आंखोंमें इसका रुधिर लगावें प्रबाल दूरहों जो इसका चमड़ा दुश्शील मनुष्यपर बांधे शीलवान होताहै सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २०८

(दिलक) अर्थात् जंगली बिल्ली जिसका काली बिल्लीसे बहुत

हड्डीमें नहीं है जो उसको अलसीके कपड़े में लपेटकर चौथियातप वाले के लटकावें आराम हो जो उसको जलाकर थैली में बांधकर उस मार्गमें डालदें जहांसे पानी धानों के खेत मे जाताहो तो अन्न वहुत होगा और सुव्वरसे कुछ हानि न होगी जोइसकी हड्डीजला कर नासूर पर लगावें गुण कारक है इसकी खाल जहां पर रक्खें मच्छर न होंगे इसका सुम जलाकर शक्करमें मिलाकर उवाल कर जो बिछौनेपर मूत्र करताहो पिये तो यहरोग दूरहोजावे जो इसके पांवकी पीठकी हड्डी को इतना जलावें तो सपेद होजातीहै उसकी राखको कूलंजवालेको पीना गुणदायक है शेखरईशने कहा है कि इसका कोढ़पर मलना लाभकारीहै जोइसका मूत्रअंगूरी शराव में पियें पथरी टुकडे २ करदे इसकीविष्ठा सेवकेवृक्षमें लगाना मेवेको सुर्खरंग करतीहै और वहुत फलदार करतीहै जोस्त्री इसके मूत्रकी वत्तीले श्वासरोगदूरहो औरवच्चेकी झिल्ली दूरहोजाय और फोड़े को पचावै सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २०॥

(दव) अर्थात् रीछ वड़े शरीर वाला मोटा और एकांतस्थल की इच्छारखनेवाला होताहै सर्दीमेंअकेला रहताहै और बहारतकवाहर नहीं निकलता और वहां पर अपने पांव चाट २ कर भूख दूर करताहै बहारकी मौसममें वाहर निकलताहै और पुष्ट होताहै बैल काशत्रुहै जब बैल चाहताहै कि अपनेसींगसे उसको घायलकरें तो यहउसकीपीठपरआकर अपने दोनो हाथों से उसके सींगपकड़कर काटता और उसको घायलकरताहै और उसकीमादा प्रसूतिकेसमय कालापत्थरजिसपर बिजलीगिरीहोढूंढ़तीहै कि उसपरबैठे औरसुगमतासेप्रसूतहो और जवऐसापत्थर नहींपातीहै तो उससेतारेकेसाम्हने खड़ी होती है जिसका नाम वनातुल नाश सग़र है तव इसे सुगमता होती है और इसी कारण उस सितारेको दव्वुल असग़र भी कहतेहैं वहमासप हकीम का वचनहै कि इसकी मादा एक मत्स कालोथड़ा जन्ती हैजिससे कोई रूप प्रकट नहीं होता सो वहमादा

तो चिल्लाकर अपने साथियों को इकट्ठा करलेता है कि वह आकर सहायतादें जब यहजानवर वीमारहोताहै तो अपने समूहसेअलग होजाताहै इसभयसे कि जो इसकेसाथी इसकी वीमारीको मालूम करेंगे तो खालेंगे और तलवार और तीरसे भय नहीं करता परन्तु लाठी और पत्थरके सामने नहींआता और जोकोई उसपर तीर या तलवार लगाये तुरन्त उसके आगे आकर उस पर धावा करता है बीमारी में एकप्रकारकी घासखाताहै जिसको जोदा कहतेहैं और इसके खानेसे आराम पाताहै जब बकरियोंकेपास पहुंचताहै दूरसे शब्दकरताहै कि शिकारीकुत्ते उधरआवें और आपदूसरीओरसे जाता है और बकरियोंको उठालेजाताहै और बहुधा बकरी की दुम पकड़ के दुममारताहै और उसकीदुममें यहप्रभावहै कि बकरी अपनेआप इसकेसाथ चलीजातीहै और यहकाम सूर्यनिकलने के पहलेकिया करताहै क्योंकि जानताहै कि रातभर कुत्ते रखवारी किया करतेहैं और सुवहको सोजातेहैं कहतेहैं कि जो भेड़ियामनुष्य के बाईंओर सेआवे तो उसको सानह कहतेहैं मनुष्य उसपर जीतपाताहै कदाचित् दाहिनीओर से आवेउसको बारहकहतेहैं तो मनुष्य हारजाता है इसबातकी बहुधा शिकारके समय परीक्षाहोचुकीहै और सानह और बारज चिड़ियोंमें भी होताहै कहतेहैं कि भेड़ियेके पीछेघोड़ा नहींदौड़ताहै और जो भेड़िया घोड़ोंकोकाटताहै तो उसको दौड़ने का बल अधिकहोताहै जो बकरीकोकाटे तो उसकामांस उत्तम होजाताहै कहतेहैं कि शेर और ववरकेविरुद्ध जो बुढ़ापे में मनुष्य को दुःखनहींदेते भेड़िया बुढ़ापेमें भी मनुष्य पर चोटकरताहै बलैनास ने गुणोंकीपुस्तक में लिखाहै कि जब पहलेभेड़ियेकी दृष्टिमनुष्यपर पड़तीहै तो मनुष्य सुस्त और वह बलवानहोताहै यदिउसे मनुष्य पहलेदेखले तो मनुष्यप्रबल और वहनिर्बल होजाय (गुण) इसका शिर कबूतर के खाने में रक्खें बिल्लीवहां न जावेगी जो इसकाशिर बकरियोंके रहनेकेस्थान में गाड़ें सबबकरियां वीमारहोकर मरजायँ जो इसकाशिर जलाकर उसकीराख लगावें दांतोंकी पीड़ा दूरहो

रूप मिलताहै और जोकि इसको मनुष्योसे प्रीतिनहीं इससे पालू नहीं होसक्ती कबूतरकी शत्रु है जब कबूतरोंके समूहमे आवे जो सौ कबूतर भी हों सबको मारडाले-अज़दहेकी भी शत्रु है कहते है कि अज़दहा इसके शब्दसे मरजाता है और यहभी वाक्यहै कि मिसर में अज़दहे की अधिकता है जो वहां यह जानवर नहोता तो कोई न रह सक्ता (गुण) इसकी दाहनी आंख तप्र वाले पर बांधना गुण कारी है जो उसी आंख को अलसी के कपडेमें बांध के चौथिया तप वाले के बांधे उपयोगी है जो इसकी बाईं आंख बांधे फिर ज्वर न आवे इसका लहू नाककी तरफ से भेजे पर खींचना मिर्गी को लाभ दायक है इसके बालोंके धुंये से कबूतर भागते हैं और सांप विच्छू भी भागते हैं इसकी खालका बिछौना बनाना बवासीर दूर करता है इसके अंडके धुयेंसे घरके चूहे भागजावेंगे सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर २०६

(जैब) अर्थात् भेड़िया यह ज़ानवर बहुत मलीन और खूनीं दुश्मन और दुःखदाई और मक्कार होता है और जिस तरफ़ कूदता है बहुत कम चूकता है और यह आपुसमें विश्वास नहीं करते जब इकट्ठे होते हैं एक दूसरे से अलग नहीं होते क्योंकि यह समूह अपने आपभी निर्भय नहीं है जोकिसीके घाव पहुंचे या बीमारहोजाय तो और भेड़ियेउसको निर्बलसमझकर इकट्ठेहोकर खाजातेहैं जैसा एककवि ने कहाहै कि वीरपुरुषको उचितहै कि अपनेभाईकी सहायताकरे न भेड़िये के सदृश कि जैसा अपने साथी को घायल देखकर खालेताहै और उसको दुःखदेतेहैं और यहसमूह जब अपने समूह के भयसे सोताहै तो गिर्दागिर्द एकदूसरे के होकर एकआंख बन्दकरके सोताहै और दूसरीआंखसे देखाकरताहै सौरहिलालीके पुत्र हमीदका वचनहै अर्थात् जो मनुष्य एक आंख बन्द और एक आंखखोलकरसोताहै तो वहमानोभयसे जागतारहताहै इसकोमादा नरसे बहुत उत्पात करनेवाली होतीहै क्योंकि उसको अपनेबच्चों कीचिन्ताहै जब भेड़िया दूसरे जीवधारी के सामने दीनहोजाता है

मां उसको प्रीतिके कारण चाटतीहै और कांटेदार जिह्वा के कराण वह मरजाताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८१

(संजाब) चूहेकी सूरतपर होताहै परन्तु उससेबड़ाहै इसकेबाल बहुतनरम होते और इसकेखालकी पोस्ती बनातेहैं जिसको अमीर लोग गरमीमें पहिनतेहैं क्योंकि बहुतठंढी होतीहै इसकामांस दीवानेको गुणदायकहै और जलेहुये दोषोंके रोगोंको भी लाभदायक है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८०

(सनूर) अर्थात् बिल्ली यहपशु बहुतहै और मनुष्य से प्रीति रखता और बहुधा लड़ा करता ईश्वरने चूहेके दूरकरनेकेलिये इसे उत्पन्नकिया जब हज़रतनूह ने शेरकेमाथे पर अपना हाथमला तो शेरकेदोनों नाककेछिद्रों से बिल्लीका जोड़ा उत्पन्नहुआ इसीकारण बिल्लीकाशिर शेरकीतरह पर होताहै यहजानवर शुद्धरहताहै और प्रति समय बिल्ली अपने लार से अपने मुंहको साफ करती है और बिष्टाकर ने पर अपने को शुद्ध करती और उसको पृथ्वी में छिपादेतीहै कामके उपजनेकेसमय नरको बहुतदुःखहोताहै क्योंकि मादाउसके लिंगको दांतसेकाटतीहै परन्तु जब सरदीमें वहकामदेव से बहुत बिकल होताहै तब लाचारहोकर मादाकेवास्ते चिल्लाताहै और वह उसका शब्द सुनकर आतीहै मादाकेप्रसूत के समय भूख बहुतमालूम होतीहै जो उससमयकुछ न पावे तो अपनेबच्चोंकोखाती है और अपनीविष्टाको लोगोंकीदृष्टिसे छिपातीहै बाज़े कहतेहैं कि यहबात इसलियेहै कि चूहोंको उसकी गन्ध न मिले और भाग न जावें और विष्टाके छिपानेके उपरान्त उसेसूंघलेतीहै जब गन्धनहीं आती तब निश्चिन्तहोजातीहै और जब चूहेकोछत में देखतीहै तो अपने हाथ पैर हिलातीहै कि चूहा उसकेभयसे नीचे गिरपड़े और जब चूहेकोपकड़तीहै तो पहलेउसको थोड़ासा दबाकर छोड़देती है और जब वह चलताहै उसपर कूदकर मुहमारतीहै निदान बड़ीदेर

इसकीदाहनीआंख जिसकेपासहो वेहरातको न डरेगा और इसकी बाईंआंख नींद दूरकरतीहै इसकेदांत जिसके पासहों उसपर कोई भेडियाप्रवल न होगा जो घोड़ेपर लटकावें तेज़चलनेवालाहो जो इसकी राखसे दांतोमें मञ्जन करे पीड़ा दूरहो और इसका पित्ता मक्खनकेसाथ मिर्गीवालेको पिलावे गुणकरे और स्त्री इसकी भगमें बत्ती रखनेसे गर्भवतीहोती है और आंख में लगाने से ढलकादूर होताहै इसकारुधिर अखरोटके तेलमेमिलाकर कानमेंडालना बहरे को लाभदायकहै यदि स्त्रीपिये बांझहोजाय इसका अंडा भूनकर खाना कामदेव अधिककरताहै जोकोई उसको अपनेपासरक्खे वह बहुतसी स्त्रियोंको भोगसक्ताहै इसके पांवकीहड्डी अपने पांवमेंबांधे चलनेसे न थकेगा जो मनुष्य दाहनेपांवकी हड्डी अपनेपास रक्खे तो पुरुषोंसे वैरमे प्रबलरहेगा और बायेंपांवके पासरखनेसे स्त्रियों के वैरमें बलवान्होगा इसकेचमड़ेका बिछौना बनाना कुलंजकोदूर करताहै इसकीदुम जिसगांवमेगाड़े वहांमक्खियां न आवेंगी कहते हैं कि जो स्त्री भेड़ियेपर मूत्रकरे बांझहोजाय यदि कुलंजकीबीमारी वाला इसकी बिष्ठानिचोड़कर पिये पीड़ा शान्तहो बलैनास कहता है जो कुलंजवाले की रान मे इसकी बिष्ठा बांधे तो भी लाभ करे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८०

(सनाद) यहहैवानहाथीकी सूरतकाहोताहै परन्तु उससेडील डौल में छोटा और बैलसे बड़ा जब इसकी मादा जननेको होवीहै उसकाबच्चा शिर बाहर निकालकर चारा खाताहै और जहां बच्चा ज़मीन परगिरा तो तुरन्त इस भयसे भाग जाताहै कि उसकी मा उसको चाट२ कर मारडालेगी क्योंकि इसकी मां की जिह्वामें कांटे होतेहैं अबूरैहानख़्वारज़मी का वचनहै कि हिन्दुस्तानकी धरतीपर एकपशु होताहै जो मांकी पेटसे शिर निकालकर चाराखाताहै और फिर अन्दर चलाजाताहै और जब सबलहोजाताहै तब उदरसेबाहर निकलताहै और जानकेडरसे अपनी मां से बहुत दौड़ताहै क्योंकि

क्या जंगली इसका शब्द सुनकर इसके पास इकट्ठे होतेहैं और अति सुंदर स्वरसे मूर्च्छागत होजाते हैं उससमय यह जानवर अपनी इच्छाके अनुकूल शिकार करताहै जो उसको शिकार की इच्छा न हुई तो भयानक शब्द करताहै जिसके डरसे सम्पूर्णपशु भागजातेहैं सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २७५

(शादावार) यहपशु रूमके शहरों की ओरमें होताहै इसके शिरपर एकसींग होताहै जिसके बयालीस दरजे होतेहैं और वह सब बीचमेंसे खाली होतेहैं जबवायु उनमें भरतीहै तो उनमेंसे सुन्दर शब्दनिकलतेहैं जिसके सुननेसे सम्पूर्ण पशु इकट्ठे होजातेहैं कहतेहैं कि इसका सींग भेंटकी तरहपर एकबादशाहके पास लोग लेगये जबवायु उसमेंभरी तो ऐसा रोचक शब्द उसमेंसे निकला कि निकटथा कि बादशाह समेत सम्पूर्णसमाज मूर्च्छितहोती और जब उससींग को उलटाकर दिया तो ऐसा बुराशब्द निकला कि निकटथा कि सबरोने लगें सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २७६

(ज़बह) अर्थात् कफ़्तार जिसेहिंदी में हुंडार कहतेहैं यह जानवर कुरूप और थोड़ा होताहै अर्थात् इसकी उत्पत्ति कमहोती है कबरो को खोदकर मुरदे निकाल लेजाताहै अरब वालोंका बचनहै कि हुंडार साहसी पुरुषोंके भी मांस खानेमेंभी नहीं हटता ज़बीर के पुत्र अब्दुल्लाने काव्यकहीहै जिसकेअर्थ यहहैं कि हुंडार को प्रसन्नताहो कि मरने के पीछे वहमेरा मांस खायेगा क्योंकि मेराकोई सहायक नहींहै और शन्फरी की कविता के यह अर्थहैं कि सबलोग मेरी क़बरके पास आनेको बहुतबुरा समझतेहैं सो अम आमर को प्रसन्नताहो कि वह निर्भय होकर मेरा मांसखाय अम आमर एक प्रकार हुंडारकीहै कहतेहैं कि यह जानवर एकवर्षनर और एकवर्ष मादा रहताहै इसजानवर और कुत्तेसे विरोध है जो इसकी छाया कुत्तेपर पड़जाय चलनसके उससमय हुंडार उसको

में उससे खेलखेलकर उसको मारडालतीहै और उसकेदुःखमें उसे आनन्दहोताहै ईश्वरनेहाथी के दिलमेंयहभय पैदाकियाहै कि बिल्ली से भागताहै (उसकेजोड़ोंकेगुण) जिसकेपास कालीबिल्ली के दांत हों रात्रिकोभय न पाये जो इसकापित्ता आंखमें लगाये रात्रिको भी अच्छी तरह दिनकी तरह देखे जो इसकापित्ता आधादिरम तेलमें मिलाकर लकवेवालेकी नाकमें डालें गुण दायकहै यदि गोंद और नमकमें घिसकर पुरानेघाव पर लगायें लाभकरे यदि कालीबिल्ली की तिल्ली का मासिकधर्म वाली स्त्री के लिये जिसको सदैव काला लहू जारी रहताहो यन्त्रबनावें तुरन्त लहू बन्दहोजाय इसकामांस पकाकर पांवकीहड्डीकी पीड़ापरबांधना गुणदायकहै जो कालीबिल्ली का मांस खाय उसपर जादू न चले कोढ़ी को इसके लहू का पीना लाभदायक है और इसकी विष्ठा गुलाब तेल में मिलाकर लगावें ज्वर नाशहो जो इसकी विष्टा पानी में घोलकर पांवकी हड्डियोंकी पीड़ापर मलें गुणदायक है और सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८३

(सनोबरुल अलबर) अर्थात् जंगली बिल्ली यहकुछ पालूबिल्ली से बड़ी होतीहै यह मकार अपने साथियों की रक्षामें प्रयत्न करती है यहांतक कि दिनमे एकदूसरे को बचातीहै और रात्रिको सब एक जगह रहतीहैं और सबका एक रखवाला होताहै जो वह रखवाला सोजाताहै तोसब मिलकर उसको मार डालतीहैं जो इसका भेजा जरजीर के पानीमें गरम २ पियें पार्श्वशूलको उप योगीहै और मूत्रको खोलताहै जो इसकी बिठाका धुआँलें वीर्य पेटसे गिरपड़े सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८४

(शेरांस) यह जानवर काबल और जावल के जंगल में होताहै इसकी नाकमें बारह छिद्रहोते हैं इसकी श्वासमें बाँसुरीका शब्द पाया जाताहै कहतेहैं कि इसकी नाकके शब्दसे बांसुरी का बाजा निकला है इसके श्वासलेने के समय सम्पूर्ण पशु क्या पालू

क़रे जो इसजनवरकी योनिको ज्वरवाले पर बाँधें दूरहोजाय वलैनास कहताहै कि इसकी भग और नाभिकी खालका बांधना भी ज्वरको उपयोगीहै और जो कोई स्त्रीदेखे उसपुरुषको मित्ररक्खे जोस्त्री बांधे पुरुष उसकी अभिलाप करे जिसपृथ्वीपर उसकी खाल डालदी जावे वहां सरदी और टिड्डीकी आफतनहो जो इसकी खालकी चलनी बनावें और उसमें छानकर गेहूंबोयें सब आफ़तों से बचे शेखरईसका बचनहै कि जिसको कुत्तेने काटाहो वह इस जानवर की खालका प्याला बनाकर उसमें पानीपीवे तुरन्त आरामपाये इसका चमड़ा ससेकी गर्दन में बांधें कुत्ते उससे भागें जो इसकी गुदाकेबाल उखाड़कर जलाकरहिजड़के शरीरमें मलें उसकी आदत दूरहो इसकी विष्टा आसके तेलमें मिलाकर शिरमें लगायें वाल निकलें सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८०

(उनाक) सियाह गोशको कहतेहैं यह कुत्तेसे बड़ा है सुन्दर लाल ऊंटकासा रंगकान काले किये होताहै इसका शिकार चीतेके शिकार की तरह होताहै जबराह चलताहै तो अपने नख चिन्ह मिटाता है और कुलंग अर्थात् कोंचका शिकार करता है जो वह दौड़ताहै तो यह उसका पग पकड़ लेताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८८

(अतरह) एकपशु जंगलमें होताहै इसकी नाक महीन होती है यहजानवर ऊंटके पीछेसे उसको पकड़कर मारडालताहै कहते हैं कि यह जानवर शैतान की तरह होताहै लोग उसको देखते हैं परन्तु ऊंटनहीं देखताहै इसीकारण वह इसका शिकार होजाता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८६

(फल्ला) शेख़रईस कहताहै कि यह जानवर शेरनी से छोटा और मटियाले रंगका होताहै और उत्तम हलका मुंहखुला किये है जब किसी जानवरको देखताहै उसकी ओर दौड़ताहै यह जानवर

मार डालताहै जब बीमार होताहै कुत्ते का मांस खाकर आराम पाताहै और भेड़िये और हुंडारमें मित्रताहै परस्पर भोग करतेहैं जबहुंडार भेड़िये की मादासे जुफ्ती खाताहै तो उसकाबच्चा समा के नामसे प्रसिद्ध होताहै इसका स्वरूप माता पिताके स्वरूप के बीचमें मिलाहुआ होताहै और जब भेड़िया हुंडार की मादासे जुफ्ती खाताहै तो उसके बच्चेको अध्यार कहते हैं कहतेहैं कि यह जानवर सांप की तरह अपनी मृत्यु से नहीं मरता इनकी मौत किसीकारण से होती है कहते हैं कि यह जानवर जब मर जाता है तो भेड़िया इसके बच्चोंको पालताहै अरब में एक जाति ज़ब-ऊन नामी होती है कहते हैं कि जिस समूहमें इस जाति का एक मनुष्य होता है वह समूह हज़ार मनुष्य का हो तो हुण्डार सि-वाय उस मनुष्य के किसीका उद्योग न करेगा हुंडारका शोरबा सम्पूर्ण शीतकी बीमारियों को गुण दायकहै--(गुण) इसका शिर कबूतरों की छतरीपर रक्खें वहां बहुत कबूतर इकट्ठेहोंगे इसकी जिह्वा जिसके पासहो वहबड़ा बाचाल और शत्रुपर सबलरहे और उसकी जिह्वा बातकरनेमें तड़ाक पड़ाकहो इसके दांतका पास रखना समझ बढ़ाताहै और इसका कलेजा जलाकर सुरमा बनाना रतौंधी को लाभ दायकहै इसका पित्ता ढलके को उपयोगी है बलैनासने लिखाहै कि इसका पित्ता गोरय्या चिड़ियाके लहूसे मिलाकर आंखोंपर मलना ढलका बंदकरताहै जो इसकाभेजा मनुष्य बांधे निद्राका बेगहो जो इसके दिलका लड़केके लिये यंत्र बनावें तेज़समझहो इसकी चरबी भौंहपर मलना लोगोंकी दृष्टिमें प्रिय करताहै मुख्य करके स्त्रियोंमे इसका चुंगल जिस वृक्ष पर लटकायें कोई जानवर उसदरख्तको खराब न करेगा हुरमुसहकीम का बचनहै कि जोकोई इसका लिंग सुखाकर दोस्ती के अनुमान खाय कामदेव की बहुतही प्रबलताहो यहांतक कि बीस स्त्रियां रमावे जो उसको किसी व्यभिचारिणी स्त्रीको उसकी खबर बिना खिलादे उसका कामदेव बिल्कुलजातारहै औरफिरपुरुषकी इच्छान

बदलेहै जिसकेद्वारा चारा और पानी अपनेमुखमें पहुंचाताहै और वह सारे शरीर में पहुंचसक्ती है और कान बड़े २ ढाल की तरह होते हैं जिससे मक्खी और मच्छड़ दूरकरताहै क्योंकि इसकामुंह सदा खुलारहताहै जो मक्खी या मच्छड़को उसके कान या मुख में जावे तो तुरन्त मरजाय इसीकारण सदा उसकेकान हिलाकरते हैं उसके दोबड़ेदांत होतेहैं जिसकाभार दोसौमनतक है इसकेजोड़ नहींहैं परन्तु कन्धा रान और टखना रखताहै इसजानवरमें पचास वर्षके उपरान्त कामदेव उपजताहै और सातवर्ष के उपरान्त बच्चा उत्पन्न होताहै क्योंकि इतने समय में इसकेबच्चे के सबजोड़ मज़बूत होतेहैं और यह जानवर सर्पका शत्रुहोताहै सर्प को देखतेही पैरकेनीचे कुचलताहै और सांप भी इसकेबच्चे को काटकर मारडालताहै इसकी बीमारी सांपके खानेसे दूरहोतीहै जब यह जानवर परिश्रमकरनेसे थकजावे तो इसके दोनोंकन्धे तेल और गरमपानी से मलें फिर सबल होजाय जो अपने पहलू के बल गिरे उठना कठिनहै सो और हाथी इकट्ठेहोकर सहायतादेकर उठातेहैं जबकोई वृक्ष उखाड़ना चाहताहै उसकी जड़ में सूंड़लपेटकर जड़से उखाड़ लेताहै जंगीहाथी एक चलनेवाली गढ़ीकीतरह होता है जिसपर बहुत से मनुष्य सवार होते हैं और इसकी सूंड़ में एक लोहे का हथियार नोकदार पहिनाते हैं जिसको अरबवाले क़रतिल कहते हैं और उसीकी चोट से घोड़े और ऊंटको दोटूक करता है इसके गिर्द पांचसौ पैदल आदमी रक्षा को रहते हैं और उसकी पीठपर वीरलोग सवार होते हैं उससमय पांचहज़ार सवार को जीतसक्ते हैं इसकी आयु बहुधा चारसौ वर्ष तक होती है ज़नादी कहता है कि सुल्तान मन्सूर के समय में एकहाथी देखनेमें आया जिसको लोग कहतेथे कि इसने बहुतसी लड़ाइयांजीतीं और हाथी अराक़ की धरती में जल्दी मरजाता है मुख्य करके नर मादासे जल्दी मरता है फीलवान इसके शिरपर बैठता है और अंकुश मारता है जिसकी सैन से हरएक काम होता है और बड़ा किनारखता है

जब किसीको काटे बड़ीपीड़ा पैदा होतीहै जिसकी औषधि कठिन है (गुण) इसके मांसके शोरबेमें कुलंज और पांवकी उंगलियोंकी पीड़ा वालेको बैठना उपयोगीहै सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २६०

(फ़हद) अर्थात् चीता यहबड़ा क्रोधी दौड़नेवाला और महीन कंठवाला होताहै कोई कहतेहैं कि यहपशु शेर और चीतेसे उत्पन्न होताहै जैसा कि खच्चर घोड़े और गधेसे पैदा होताहै और सब जंगली जानवर चीतेकी गंधसे प्रसन्न होते हैं यह जानवर अपने शिकार को शेरकी भेंटकरताहै जबशेरका खाकर पेटभर जाताहै तब उसका जूठाबचा आपखाताहै जाहिज़ कहताहै कि जब यह मोटाहो तो यह जानताहै कि हरएक जंगली जानवर उसके मारने की चिन्तामेंहै सो अपने को उससमयतक छिपालेताहै कि जबतक सबचीते मोटेहों फिर अपने समूह में रहताहै और सम्पूर्ण जंगली जानवरोंसे अलग रहताहै कि वायुसे उसकीगंध जंगलीजानवरोंमें न पहुंचे बीमारीमें कुत्तेकामांसखाकर आरामपाताहै अच्छीआवाज को प्रिय जानताहै और कानलगाकर सुनताहै जब इसजानवरसे और रीछसे जुफ़्तीहोतीहै तो एकअद्भुत पशुउत्पन्नहोता है जिसका नाम कोसाठहै (गुण) जिसघाव से लहूजारी हो इसकापित्ता शहद और नमकमें मिलाकर लगावें बन्दहोजाय इसकामांस बहुत खाना समझ तेज़ और बलवान् करता है जिसजोड़में पीड़ाहो वहां इसके लहूका लेपकरना लाभकरे जो इसका लहू पियें अहमक़ होजायँ जो इसके नख मकानमें रक्खें चूहे भागजायँ सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर २६१

(हाथी) यह सम्पूर्ण पशुओं से मस्तभारी और मोटा होता है और सूंडको धरतीपर झुकाये रहताहै बाजे के दांत तीनसौमनके होतेहैं और हाथी इन सबबातों के होनेपर हंसोढ़ और बुद्धिमान् होताहै ईश्वर की इस जानवर की उत्पत्ति में अद्भुत कारीगरी है इसकी गर्दनछोटी और सूंड लम्बीपैदा की जो मनुष्य के हाथों के

बदलेहै जिसकेद्वारा चारा और पानी अपनेमुखमें पहुंचाताहै और वह सारे शरीर में पहुंचसक्ती है और कान बड़े २ ढाल की तरह होते हैं जिससे मक्खी और मच्छड़ दूरकरताहै क्योंकि इसकामुंह सदा खुलारहताहै जो मक्खी या मच्छड़को उसके कान या मुख में जावे तो तुरन्त मरजाय इसीकारण सदा उसकेकान हिलाकरते हैं उसके दोबड़ेदांत होतेहैं जिसकाभार दोसौमनतक है इसकेजोड़ नहींहैं परन्तु कन्धा रान और टखना रखताहै इसजानवरमें पचास वर्षके उपरान्त कामदेव उपजताहै और सातवर्ष के उपरान्त बच्चा उत्पन्न होताहै क्योंकि इतने समय में इसकेबच्चे के सबजोड़ मज़-बूत होतेहैं और यह जानवर सर्पका शत्रुहोताहै सर्प को देखतेही पैरकेनीचे कुचलताहै और सांप भी इसकेबच्चे को काटकर मारडा-लताहै इसकी बीमारी सांपके खानेसे दूरहोतीहै जब यह जानवर परिश्रमकरनेसे थकजावे तो इसके दोनोंकन्धे तेल और गरमपानी से मलें फिर सबल होजाय जो अपने पहलू के बल गिरे उठना कठिनहै सो और हाथी इकट्ठेहोकर सहायतादेकर उठातेहैं जबकोई वृक्ष उखाड़ना चाहताहै उसकी जड़ में सूंड़लपेटकर जड़से उखाड़ लेताहै जंगीहाथी एक चलनेवाली गढ़ीकीतरह होता है जिसपर बहुत से मनुष्य सवार होते हैं और इसकी सूंड़ में एक लोहे का हथियार नोकदार पहिनाते हैं जिसको अरबवाले क़रतिल कहते हैं और उसीकी चोट से घोड़े और ऊंटको दोटूक करता है इसके गिर्द पांचसौ पैदल आदमी रक्षा को रहते हैं और उसकी पीठपर बीरलोग सवार होते हैं उससमय पांचहज़ार सवार को जीतसक्ते हैं इसकी आयु बहुधा चारसौ वर्ष तक होती है ज़नादी कहता है कि सुल्तान मन्सूर के समय में एकहाथी देखनेमें आया जिसको लोग कहतेथे कि इसने बहुतसी लड़ाइयांजीतीं और हाथी अराक की धरती में जल्दी मरजाता है मुख्य करके नर मादासे जल्दी मरता है फ़ीलवान इसके शिरपर बैठता है और अंकुश मारता है जिसकी सैन से हरएक काम होता है और बड़ा किनारा रखता है

कहावत है कि किसी फीलवान ने हाथी के पैर वृक्ष में बांधे और आपदूरजाकर सोरहा फीलवान के शिरमें बालबहुत लम्बेथे हाथी ने अपने फीलवान को सोयापाकर एकडालतोड़ी और उसकोसूंड़ में पकड़ कर फीलवान के बालों में लपेटकर अपने साम्हने खींच लिया और पांवके नीचे दबाकर मारडाला (गुण) बलैनासनेलिखा है कि जो इसके कानका मैलपिये एकसप्ताहपर्यन्त निद्रा न आवेगी और जोइसकापित्तातीनदिनतक कोढ़परलगावेंआरामहोजाय जो इसकीचर्बी का धुवांकिसीके शरीरपर पहुंचे कोढ़पैदा होइसकी हड्डी मिर्गीवालेकी गर्दन में बांधनागुणकारिकहै जो इसके दांतका धुवांवृक्ष में पहुंचायें उसकाफल खट्टा न होगा और उसकेकीड़े दूर होजायेंगे जो इसकेदांतो का बुरादा शहद के साथझाईं पर मलें झाईं शीघ्रनाश हो जो इसके दांत दरख़्त परलटकायें उस वर्ष न फलेगा जोघरमें धूनीदेंमच्छड़ मरजायेंगे जो इसके दांतकाबुरादा उपद्रवकारक घावपरछिड़कें वहघाव अच्छाहोजाय और जलेहुये जोड़को भी गुणदायक है इसकाचमड़ा हरबुरी बीमारी में बांधता गुणदायक है कहते हैं जिसके जोड़ सूखे हो और खालमें झुर्रियां पड़गई हो उसको इसकी खालपर सोनालाभकरे इसकीखाल का धुवां बवासीरखोता है इसकामूत्र जिसघर में छिड़कें चूहे न आवेंगे इसकीविष्टा का धुवांहरतपवालेको गुणकरे जो कूलंजवाला इसकी विष्टापिये लाभकरै और फिरउसको यहदुःख न हो जो इसमें सर्प की केचुल मिलाकर सुरमा बनावें तो प्रबाल ढरका और आंख के बदगोश्त के लिये उपयोगी है जिसकेपास इसकीविष्टा हो उसपर को बुरी नज़र न लगेगीयदिस्त्री इसकीविष्टाअपनी योनि में रक्खे गर्भवती न होगी बहुधा हिन्दुस्तान की व्यभिचारिणी स्त्रियांऐसा करती हैं कि युवावस्था को चमत्कार वर्त्तमानरहे नहीं तो कईबार के लड़काहोनेऔरदूधपिलानेसे वहसुन्दरतानहीं रहतीसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर२६७

(क़रद) अर्थात् लंगूर एकवदरूपपशुहोताहै और सदाशिरनीचे

रखताहै और जल्दी समझनेवाला और महीनकारीगरियां सीखता है चौड़ेकपड़ोंको जिसके दोनों ओर जुलाहे काहाथनहींपहुंचता तो वहकपड़ा जुलाहाइसीकी सहायतासे बुनताहै मलिक नौबने दोलंगूर भेंटकी तरहपर ख़लीफ़ाके वकील को भेजे जो एक दरजी और दूसरा सुनारथा यमनके लोगोंने उनको यहांतक सिखाया कि जब बनियां औरकस्साब कहींजावें यहपशुदूकानकी रक्षाकरें और सौदा बेंचें मादाबारह बच्चेतक जन्तीहै और इसकोमनुष्यकी तरह अपनी मादासेबड़ी लज्जा आतीहै सफाय यमनके रहने वालोंमेंसे एकका वर्णनहै कि एकदिनमैं किसीपहाड़पर गया वहांएक लंगूरको देखा कि अपनी मादाके घुटनेपर शिररक्खे सोरहाहै संयोगसे एकदूसरा लंगूर आया उस मादाने अपने पतिका शिर हलकेसे हटाके उस लंगूरसे कोनेमें जाकर भोगकिया जब यह जगा और उसको ढूंढ़ा जब उसको पाया तो सूंघनेसे समझा और चिल्लाया उसके चीखने के साथही बहुतसे लंगूरइकट्ठे होगये और वृत्तान्तके मालूमकरने के उपरान्त उस मादाको एक गढ़ेमें बैठाकर पत्थर फेंककर मारडाला (गुण) जो इसके किसी जोड़को मनुष्य अपने पासरक्खे जो मनुष्य उसको देखे उसका मित्र होजायेगा और जो इसके दांतको घिसकर आंखमें लगाये सपेदी दूरहो इसका मांस पकाकरखाना कुष्ठको गुणदायक है यह गुण शेरसे मालूम हुआहै क्योंकि जब शेरको कुष्ट होताहै तो इसका मांस खाने से अच्छा होजाता है इसका लहू मनुष्य पीवे गूंगाहो और लोगोंकी दृष्टिमें अप्रतिष्ठापावे और जो इसकी खालकी चलनीमें कोई बीजछानकर बोये तो उस की खेती टिड्डी आदिके उपद्रवोंसे बची रहेगी स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर २९२

(करगदन) अर्थात् गैंड़ा यह जानवर डीलडौल में हाथी की तरह पर होताहै और सूरतमें बैलसे मिलताहै परन्तु इतना अन्तर है कि बैलसे बड़ा होताहै और इसके सुम भी होते हैं और क्रोधी होताहै यह जानवर जिसपर दौड़ताहै नहींचूकता और सम्पूर्ण

क़हावत है कि किसी फीलवान ने हाथी के पैरवृक्ष में बांधे और आपदूरजाकर सोरहाफीलवान के शिरमें बालबहुत लम्बेथे हाथी ने अपने फीलवान को सोतापाकर एकडालतोड़ी और उसकोसूंड़ में पकड़ कर फीलवान के बालो मे लपेटकर अपने साम्हने खींच लिया और पांवके नीचे दबाकर मारडाला (गुण) बलेनासनेलिखा है कि जो इसके कानका मैलपिये एकसप्ताहपर्यन्त निद्रा न आवेगी और जोइसकापित्तातीनदिनतक कोढ़परलगावेंआरामहोजाय जो इसकीचर्बी का धुवांकिसीके शरीरपर पहुंचे कोढ़पैदा होइसकी हड्डी मिर्गीवालेकी गर्दन में बांधनागुणकारिकहै जो इसके दांतका धुवांवृक्ष में पहुंचायें उसकाफल खट्टा न होगा और उसकेकीड़े दूर होजायेंगे जो इसकेदांतों का बुरादा शहद के साथझाईं पर मलें झाईं शीघ्रनाश हो जो इसके दांत दरख़्त परलटकाये उस वर्ष न फलेगा जोघरमें धूनीदेंमच्छड़ मरजायेंगे जो इसके दांतकाबुरादा उपद्रवकारक घावपरछिड़कें वहघाव अच्छाहोजाय और जलेहुये जोड़को भी गुणदायक है इसकाचमड़ा हरबुरी बीमारी में बांधना गुणदायक है कहते हैं जिसके जोड़ सूखे हों और खालमें झुर्रियां पड़गई हों उसको इसकी खालपर सोनालाभकरे इसकीखाल का धुवां बवासीरखोता है इसकामूत्र जिसघर में छिड़कैंचूहे न आवेंगे इसकीविष्टा का धुवांहरतपवालेको गुणकरे जो कूलंजवाला इसकी विष्टापिये लाभकरे और फिरउसको यहदुःख न हो जो इसमें सर्प की केंचुल मिलाकर सुरमा बनावें तो प्रवाल ढळका और आंख के बदगोश्त के लिये उपयोगी है जिसकेपास इसकीविष्टा हो उसपर को बुरी नज़र न लगेगीयदिस्त्री इसकीविष्टाअपनी योनि में रक्खे गर्भवती न होगी बहुधा हिन्दुस्तान की व्यभिचारिणी स्त्रियांऐसा करती हैं कि युवावस्था को चमत्कार वर्त्तमानरहे नहीं तो कईबार के लड़काहोनेऔरदूधपिलानेसे वहसुन्दरतानहीं रहतीसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर२६२

(क़रद) अर्थात्लंगूर एकबदरूपपशुहोताहै और सदाशिरनीचे

वायुचली कि सबचोर गिर२ पड़े और किसी से खड़ा न रहागया सो सर्वसमूह वहां से निकलकर आनन्द से चलागया और किसी को उनमें दुःख न पहुंचा जबहम गज़नीपहुंचे शेखअलीइब्न सेनाके मिलने को उसमनुष्य के साथगये और बातचीत में उस उपायका वर्णनकिया शेख ने उत्तरदिया कि यह मनुष्य मेरे मित्रों में से है और इसके पास गैंड़े का सींगहै जिससे ऐसी अद्भुतबातें होती हैं इसने मुझे कई सौगातेंदी हैं उसमेंसे एकगांठ गैंड़के सींगकी और एकछुरी जिसकादस्ता उसी सींग का है उसका गुण यहहै कि वह छुरी जो ऐसे खाने या शरावके पासरक्खीहो जिसमें विषमिलाहो तो विषके बलको तोड़ती है जो मनुष्य इसकी दाहनी आंखका यन्त्र बनावे सर्वपीड़ाओंको दूरकरे देव परी और सर्प कोई उसकेसामने न आवे यदि बाईंआंखहो ज्वर दूरकरे जो इसकीखाल का जौशन बनावें कोई हथियार न लगे सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २६४

(कलब) अर्थात् कुत्ता यह पशु बड़ा परिश्रमीदुःख सहनेवाला और मनुष्य का मित्र परमहितैषी होता है और सर्व्वदा भूखा और जगा हुआ रहता है और थोड़े से उपकार में बड़ी सेवा करता है और मुख्य इसी से चोरों और चौकीदारों की रक्षा है जाहिज़का वचन है कि यह ऐसा बुद्धिमान् होताहै कि जो इसको हिरणके समूहपर छोड़दें तो मादाको छोड़कर नरको पकड़ता है क्योंकि चाहे मादासे नर अधिक दौड़ता है परन्तु यह आशरखता है कि यह भयखाकर जल्दी पेशाब करेगा उससमय इसको ठहरनेकी आवश्यकता होगी और मैं पकड़लूंगा परन्तु मादा को कि मूत्र करने के समय ठहरनेकी कुछ आवश्यकता नहीं होती नहींपकड़ता और अधिक आश्चर्य यहहै कि बरफके दिनों में जब पृथ्वी बरफसे छिप जातीहै तो शिकारी को बुद्धि होनेपर भी शिकार की पहिचान नहीं रहतीहै तो यह शिकारीको शिकारकी जगह बताता है परन्तु यह बात मुख्य करके शिकारी कुत्ते में है यह जानवर

पशु इससे डरतेहैं हिन्दुस्तान में होताहै इसके शिरपर एक सींग होताहै जो बहुत कठोर और मोटा और नोकउसकी बहुततेज और जड़ उसकी मोटी और नोकका मुंह पीठकी ओर और झुका हुआ मुखकी ओरहै आश्चर्य है कि इसके सुम और सींग दोनों हैं क्योंकि सुमवाले जानवरके सींगनहीं होते और यह जानवर कमहोता है और आयु सातसौ वर्षकीहै पचासवर्षके उपरान्त उसकाकामदेव प्रबल होता है और तीन वर्षके उपरान्त बच्चापैदा होताहै हिन्दके लोग कहतेहैं जिसधरतीपर गैंड़ाहो वहां और पशु नहींरहते जब हाथीकोदेखताहै तो उसकेपीछेसे आकर उसके पेटमें सींगमारता है और अपनेदोनों पांवपर खड़ाहोजाताहै और हाथीको उठालेताहै परन्तु जबवह चाहताहै कि हाथीको अपने सींगसे अलगकरै नहीं होसक्ता निदान दोनोंगिरके मरजातेहैं कहतेहैं कि इस जानवरपर कोई हथियार नहीं लगता और कोई पशु इसका साम्हना नहीं करसक्ता और इसको फ़ाख़्तासे प्रीति है जिस वृक्षपर फ़ाख़्ता का घोंसलाहो उसके नीचे खड़ाहोकर उसकाशब्द सुनता और प्रसन्न होताहै (गुण) कहतेहैं कि किसीगेंड़े के सींगमें एक गिरह होतीहै और उस गिरह में सवार का चित्र होताहै ऐसा सींग हिन्दुस्तान के किसी राजा के पास होताहै इसकागुण यहहै कि कूलंजवाले के हाथमेलेतेही आराम होजाताहै जो उसको घिसकर पांवे मिर्गी दूर हो जोड़ों की ऐंठन फड़कने की बीमारी जल्दी नाशहो इब्नुलख़ैर अस्तराबादी कहताहै कि एकदिन एक मनुष्यों का समूह गज़नी को जाता था उसमें इसकापिता था अकस्मात् ख़बरआई कि राह में डकैतलोग लूटमारकरतेहैं यह सुनकर हरएक घबड़ाया हमारे समूह में से एक मनुष्य ने कहा कि मतडरो मैं उनको दूर करता हूं इसशर्त्तपर कि मुझे उनकेपास पहुंचादो सो एकमनुष्य ने उसको चोरोंकी जगहपर पहुंचादिया जब डकैत पहाड़की गुफ़ा से बाहर निकले उसने कोईचीज़ अपनेपाससे निकाली और पृथ्वीपर रगड़ कर वहां की मट्टी उनकीओर उड़ादी मट्टी के उड़ातेही ऐसी प्रचंड

दे खलिया वह जब आता उसकुयेंकी मिट्टी उड़ाता और जबमारने वालेको देखता भौंकता लोगोंने कुयेंकामुंह खोलकर लाशनिकाली और मारने वालेको भी उसी निशानसे पकड़कर दण्डदिया अन्तको उसने अंगीकार किया और मारडाला गया कहतेहैं कि एकमनुष्य के पास कुत्ता था संयोगसे उसने चाहा कि दरियामें जायेंकुत्तेने उसका पांव पकड़ा और उसको दरियाकी ओर जानेसे मनाकिया उस पुरुषने क्रोधित होकर तलवारसे उसे मारकर दरियामें फेंक दिया एक घड़ियाल पानीके नीचे घातमें था वह कुत्तेकी लाशखींच लेगया उस समय वह मनुष्य समझा कि इसीवास्ते इसने मना-किया था और बहुत पछिताया (गुण) जिस मकान की दीवार के नीचे कालेकुत्ते की आंख गाड़ें वह मकान उजाड़ होजाय जो किसी के पासहो उसपर कुत्ते न भूकेंगे यदि इसके दांत दुखदाई कुत्तों के बांधे कभी न काटेंगे जो लड़केके गण्डा बनावें दांत सुगमता से निकलें और कमल वायु वालेके गुणकरे और स्वप्नमें बर्रानेको भी उपयोगी है यदि दीवाने कुत्ते के दांत अपने पास रक्खें फिर कोई दीवाना कुत्ता इसको न काटेगा जो इसकी जिह्वा किसीके मोजेमें सियें उसपर कुत्ता न भूंकेगा बहुधा चोर यह काम करतेहैं जो इसका पित्ता सुरमेकी तरह पर लगायें आंख की अँधेरी को गुणकारकहै इसका कलेजा खाना भी गुण करताहै मुरदे कुत्ते की चरबी कण्ठ-मालाको गलातीहै विशेष करके जब दाना कण्ठ या मुखमेंहो बलै-नास कहताहै जो कुत्तेका काटा हुआ मनुष्य पानी न पीवे कुत्ते का दाहना पैर पकाकर उसको खिलावें तो वह पानी की इच्छा करे इसकालिंग सुखाकर रानपर बांधना कामदेवकी अतिशक्ति करता है काले कुत्तेके बाल मिर्गीवालेके बांधना गुणकारी है कुत्तेका मूत्र मलना मस्सों को दूर करताहै इसके चिचड़े खाना कूलंज वालेको लाभकरे जो इसके दूधको शराब या शहदके साथखावें मुरदा बच्चा गिरायें इसकी विष्टा पीतसके रोगीको गुणदायकहै और इसकीबत्ती रखना गर्भ गिरादे सूरत यहहै॥

वरफसे दुःख पाताहै और यही कारण है कि बादल को देखकर चिल्लाताहै अरबवाले दृष्टान्त कहते हैं कि कुत्तेके चिल्लानेसे बादल की कोई हानि नहीं पहुंचती रात्रिको जब किसी मनुष्यको देखता है तोभौंकताहै और जब वह मनुष्य बैठ नहीं जाताहै तबतक यह भीचुप नहीं होता और जब वह बैठ जाताहै तो यह चुप होरहता है इस बिचारसे कि अब मैं इस मनुष्यपर प्रबल हुआ और उसको हरादिया इस जानवर को गर्मीके दिनोंमें उन्माद रोग होताहै इसका स्वभाव गरम और खुश्क है ज्यों २ गरमी अधिक होतीहै उसका रोग बढ़ता जाताहै इसकी लार हलाहल विषहै जिसका उपाय नहीं इसके उन्माद रोगका लक्षण यहहै कि सदा जिह्वा निकाले रहै नेत्र लालहों गर्दन टेढ़ीकिये रहै शिरको नीचे डालेरहै और पूंछको रानोंमें दबायेरहै और मस्तकी तरहहर एकपर लपके जिधर दृष्टिकरे उस ओर दौड़े चाहे वह दीवारहो या दरख़्त यहां तक कि उसके साथी इससे भागतेहैं जो किसी को काटे असाध्य हुवै वहभी कुत्तेकीतरह भूकनेलगे और जबपानीमेंअपनी सूरतदेखे कुत्तेकी सूरत मालूमहो और कभी पानी न पिये यहांतककि बहुत प्याससे मरजाय बलैनास कहताहै कि एक दीवाने कुत्ते ने घोड़ेको काटा उसका सवारभी दीवाना होगया कुत्तेकी बीमारी गेहूं की बालियां खानेसे दूर होतीहै गधेकी आवाज़से इसके शिर पीड़ा उत्पन्न होतीहै जो किसीने मेहँदी लगाई हो उस समय सपेद या पीलेरंग का कुत्ताचिल्लावे कभी अच्छारंग न होगा कुत्ते की प्रकृति उष्णता और खुश्कताकेकारण चिपनेवालीहोतीहै सो उसकीखुश्की लिंगके छिद्रमें इकट्ठी होकर गांठकी तरहपर होजाती है और जो कोईपत्थर किसीकुत्तेपर मारे और कुत्ताउसको पकड़कर फेंकदे जो उसपत्थरको कोईशराबमें छोड़करपिये लड़ाईकरनेलगे जो कबूतरों की छतुरीमे रखदें सब कबूतर चलेजायँ अस्फ़हान में एकमनुष्य ने एक आदमीको मारडाला और कुयेंमे डालकर उसकामुख बन्दकर दिया उस मरेहुये मनुष्य के पास एक कुत्तारहा करता था उसनें

फँसजातेहैं छूटनहींसक्तेहैं तो दीनहोकर चिल्लाताहै उससमय लोग पहुंच कर पकड़ लेतेहैं (गुण) इसका मांस शरावमें पकाकर लड़कों को खिलाना समझ अच्छी करताहै इसकी खालका बिछौना ववासीरको गुणदायक है जो इसके पांवकी हड्डी पैर में बांधें चलने से न थकें सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २६०

छठाप्रकार पक्षियों का वर्णन ॥

ईश्वरने इसप्रकार को हलका और छोटेजोड़ोंका बनायाहै जब निर्बलताके कारण सामनानहीं करसक्ता तो परोंसेभागनेकी शक्ति कृपाकी और यहभी समझनाचाहिये कि यह उड़जाना हलकाहोने के कारणहै नहीं तो भारीहोकर क्योंकर परमारसक्ता वरन जो वायु पर बहुतठहरतेहैं वह बहुतहीछोटेहैं ईश्वरकीअद्भुतमायाहै कि चाहे हवा पक्षियोंसे हल्कीहै परन्तु पक्षी उसपर ठहरारहताहै और नीचे नहींगिरता मानो वायु उसकीकिश्तीकेवदलेहै तथाच ईश्वरकावचन है कि पक्षियोंकी ओर नहींदेखतेहो कि क्यों वह आकाश के नीचेहैं सो सिवाय परमेश्वर के उनको कौन वायु पर ठहरासक्ता है और उनमे वहुतसेजोड़ हलकेपन के सववनहींहै जैसे कान दांत फुकना अर्थात् मूत्राशयआदि और इनकेबदले छोटेजोड़पैदाकिये जैसा कि मेदे के वदले पोटा और दांत के वदले चोंच और कान की जगह थोड़ा छिद्र और वालोंकी जगहपर और इसीतरह हर भारी जोड़ की जगह हलके पेदा किये और कई जोड़ोंको इनमें से गिराहुआ कर दिया जिसकी गर्दन लंबी होगी उसके पांवभी लंबेहोंगे जिस की गर्दन छोटीहै उसके पावभी छोटेहैं जो इनकी पूंछ काट डालें तो उड़नेकीशक्ति कमहोजातीहै जाहिज़कावचनहै कि जोपक्षी तेज उड़नेवालाहो वह वहुत हलकाहै जैसे कवूतर और चमगादरऔर गोरय्या जो इनके पांव न हों तो उड न सकें जैसा कि जो मनुष्य के पांव न हों तो चल नहीं सक्ता जिस पक्षी के कान बाहर नहीं होते वह अंडदेताहै जिसकेकान बाहर होते हैं वहवच्चा देताहै और

तसवीर नम्बर २८५

(निमर) अर्थात् तेंदुआ यह जानवर बलवान् क्रोधी बड़ागुस्से वालासुन्दर और मनुष्यका शत्रुहोताहै इसकाजंगलीपन किसीतरह पर दूरनहींहोता और यह अन्य पशुओंकाशत्रु होताहै और किसीसे नहींडरताहै यहांतक कि जो एक लश्कर इसपर धावाकरे तो भी न भागे यह जानवर (शेरकेविरुद्ध कि वहपेटभरेपरनहींबोलता) चाहे भूखाहो चाहे पेटभरा हर जीव धारीपर लपकता है इसकी पीठका मोहरा बड़ा कमज़ोर होताहै जो हलकीसी चोट कमरपर पहुंचे टूट जावे इसके जागने पर इसके खरखरे से पशुभाग जाते हैं और जानतेहैं कि यह शिकारकी इच्छा रखताहै कहतेहैं कि इसकेमुखमें सुगन्ध होतीहै परन्तु शेरके मुखमें नहीं कहतेहैं कि जो किसी के इसका घाव होगयाहो तो उसपर चूहे मट्टी डालतेहैं कि घाव सड़ कर घायल मरजाय और इसीकारण ऐसे घायल की रक्षा अच्छी तरह पर करतेहैं और चूहों के डरसे बिल्लियों को पास रखते हैं यह जानवर बीमारी में चूहेखाकर आराम पाता है इससे और सर्पसे मित्रताहै जब यह बच्चादेताहै तो भुजंग इसके बच्चे के गिर्द कुंडल बांधकर रखवाली करता है (गुण) कहते हैं कि इसके सम्पूर्ण अंग हलाहल विष हैं जहां इसका शिर गाड़े वहां चूहे बहुत इकट्ठे हों इसके पित्तेका सुरमा आंखोंको प्रकाश अधिक करता है जो इसका मांस पांच दिरम बलसांके तेलके साथ खाय सर्पका विष प्रभाव नकरे इसकी चरबी लगाना पुराने घावोंको साफकरता है इसकी हड्डी लड़कोंके लिये यंत्र बनाना खांसी दूरकरे जो बवासीरका रोगी इसकी खालका बिछौना बनावे गुणकारी हो इसकी खाल जिसके पासहो भयानक मालूमहो सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २८६

(यामूर) एक जंगली जानवरहै इसके दो सींग होते हैं इसका स्वरूप बारासिंगे से मिलताहै बहुधा नदियों के किनारेपर रहताहै और झाड़ियों में घुसकर खेलकरताहै इसके सींग जब झाड़ियों में

उत्तम करतीहै इसका लहू नमक और खारी पानी के साथ पीना फुकनेकी पीड़ाको गुणदायकहै तो इसका बायां पंख चौथियातप- वालेकेदाहिनी ओर बांधे रोग नष्टहो इसकीहड्डी जलाकर सम्पूर्ण जोड़ोंके बीच मर्दन करना गुणकारीहै इसके अंडेका खाना काम- देव अधिक करताहै इसके अंडेकी सपेदी सुखाकर पानी के साथ पीनेसे सूखी खांसी दूर होतीहै स्वरूप यहहै॥

[तसवीर नम्बर ३००

(बाज़) यह जानवर सब पक्षियों से अहंकारी कोप युक्त तुर- क़िस्तानमें होताहै कहते हैं कि यह नर नहीं होता इसकानर चील या अन्य पक्षीहै इसीलिये इसकीशकल और सूरतमेंअन्तरहै उत्तम बाज़ वहहै कि उसमें सपेदी अधिकहो और मोटा और साहसी और अच्छे स्वभाव का हो परन्तु काले रंगका सपेदी लिये आर- मीनियां और हरज़के सिवाय दूसरी जगह नहीं होताहै हारूंर- सीदके अख़बार में लिखाहैकि एक दिन सपेद रंगके बाजको छोड़ा वह हवापर जाकर छिपगया लोगोंको उसकी आशा जातीरहीकि अकस्मात् वह आकाश से एकमछली या सांपको लियेहुये आया और बादशाहकी आज्ञानुसार बुद्धिमानोंसे पूछागया कि यह क्या बातहै मक़ातिल नामी एक मनुष्यने उत्तर दिया कि आपके दादा अबुद्दीन अब्बासकी कहावतहै कि वायु एकप्रकारके जीवधारियो से बसी हुईहै और वहांपर एक जानवर सांपकीतरह परदारहोता- है उसका सपेद बाज शत्रुहै ख़लीफ़ाने थाल मँगवाकर उस जान- वर को बाज़से अलग किया और वैसाही पाया सो मक़ातिल को बहुतसा पारितोषिक दिया यह जानवर घोंसला अपना ऊंचे वृक्ष पर बनाताहै जिसकी डालें गुंजान होती हैं और अपने घोंसले में छत बनाताहैकि गर्द और मेहसे बचारहै बीमारीकी दशामेंगोरख्धा खाकर आरामपाताहै परझाड़नेके समय चूहेको खाताहैकि जल्दी पर निकल आवें और [illegible] मेरारह नाम से होती है उसको अपने [illegible] में अ[illegible] है [illegible] उसके गिर्द न आवें

अपनेबच्चेको दूध भी पिलाताहै कई पक्षी कई रंगके होतेहैं जैसे मोर और बाज़े बहुत उत्तमकबूतर और कई गानेवाले जैसे बुलबुलऔर फाख़्ता अब यहांपर पक्षियोंके नाम उनके गुणो समेत लिखेजातेहैं (अबूबराक़श) एक पक्षी सुन्दर खुश रंग होताहै जिसकी गर्दन लंबी और पांवभी लंबे चोंच लाल और लंबी और यह हर समय रंग बदलता है कभी लाल कभी पीला कभी सब्ज़ और कभी श्याम एक कवि कहताहै कि मैं बराकश पक्षी के सदृशहूं कि हर समय रंग बदलता हूं इस पक्षीके रंगोपर रूममें कपड़ा बुनते हैं जिसका नाम बोकलमूंहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर २६८

(अबूहरबन) इस पक्षीका सुन्दर स्वरहै कि इसका सामना कोई बोलनेवाला नहीं कर सक्ता रातभर सुबहतक चहकताहै और बहुतसी चिड़ियां उसका शब्द सुननेको इकट्ठी होतीहै प्रीति करने वाले लोग अधिकतर अभिलाषा करके वहांपर ठहर जातेहैं सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २६६

(अवज़)अर्थात् बतख यह जानवर अन्य देश गामी होताहै जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै तुरन्त दरियामें चला जाताहै और दृढ़ होताहै इसका स्वभाव यहहै कि इसका नर अंडेकी रखवाली नहीं करता और इसके अंडे नो या ग्यारह होतेहै जबमादा अंडोंकी रक्षा करती है तो नर खडाहोकर चौकीदारी करताहै और बच्चा उन्नीसवें दिन निकलताहै या एक महीनेके पीछे कहते है कि इनके पेटमें एक पत्थर होताहै जो उसको घिसकर गूंगेको पिलावें गुणकरे इसका भेजा सोंफके साथ काढ़ा करके बवासीरवाले और उदर पीड़ावाले को पीना गुणकारीहै इसकी जिह्वा मूत्रके बूंद २ आनेके रोगको उपयोगीहै और इसका पित्ता बिनपसे के तेल के साथ नाकमें डालें आधासीसी को लाभकरे इसकी चरबी बिवांई को लाभकरे शेख़रईस कहताहै कि इसका मांस खाना स्वरूपको प्रकाशमान और वीर्यको अधिक करताहै इसकी चरबी रंगरूप

छोटासा पक्षी और तेज़ उड़नेवाला और बाचाल होता है बाग़ में घोंसला बनाता है और बाहर की मौसममें प्रसन्न होता है फूलसे प्यार रखताहै जब किसीको फूल तोड़ते देखता है असंतुष्ट होकर चिल्लाताहै जो कि इसकास्वभाव गर्म्म है इसलिये पानी में बहुत नहाताहै और बहुत पिया करताहै आंधीके समय घोंसले से नहीं निकलता इसमें अद्भुत स्वभावयहहै कि घरमें या पिंजड़ेमें सिवाय वर्गजुफ़्ती नहीकरता जो इसकामांस केकड़ेकी आंखकेसाथ पहाड़ी बकरी के चमड़े में सीकर भुजापर बांधे जो जादू अपना प्रभाव न करे सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०४

(बूम)यहप्रसिद्ध जानवरहै दिनमें बाहर नहीं निकलता क्योंकि दिनको उसे दिखाई नहींदेता सदा अकेला उजाड़ों में रहता है इसको मनुष्य अशकुन जानते हैं यहांतक कि इसका दृष्टान्त देते हैं इसके शब्दसे सर्पभागते हैं इसको कौवेसे विरोधहै रात्रिको इसके सामने कोई चिड़िया नहीं उड़सक्ती क्योंकि औरोंको रात्रि के समय दिखाईनहींदेता जैसाकि इसको दिवसमें अंधेराहै यहीकारणहै कि जब उल्लूको और सबजानवर दिनको देखलेतेहैं तो उसकेगिर्दइकट्ठे होकर उसको सतातेहैं (गुण) इसका भेजा आंखमें लगाना आंखकी अंधेरीकोगुणदायकहै जो तेलमेंमिलाकर नाकमेंटपकायें आधासीसी दूरहो कहते हैं कि यह एकआंखसे सोताहै अर्थात् इसकी एकआंख बंद और एक आंख खुली रहतीहै पहिचान इसकी यहहै कि दोनों को पानी में डालें जो पानी में सीधी रहे वह सोती है और जो टेढ़ी होजाय वह जागती है तो जो सीधी आंख को किसी के सिरहाने रखदे तो वह न जागेगा और उल्टीआंखको अंगूठीके नगीनेके नीचे जमाकर कोई पहिने तो उसको नींद न आयेगी जो इसकी आंखें कस्तूरी में मिलाकर जिस को सुंघावें वह उसका मित्र होजायगा इसका दिल भूनकरखाना लकवे और फालिज़ को गुणदायक हैं इसका शिर बलूतकी लकड़ीमें चिपकाकर पथरीवाले रोगी को बांधें

(गुण) इसके पित्ते का सुरमा लगाना मोतियाबिन्द के प्रारम्भ में उपयोगी है और इसकी पहिचान यह है कि रोग के पूर्व में दृष्टि के सामने मच्छड़ या धुवां उड़ता दिखाई देता है जो इसी को एक बूंद भी लकवे वाले की नाक में टपकावे लाभ करे सपेद बाज का पित्ता आंखों की सपेदी और अँधेरी और पानी के उतरने को लाभ करे शेखुरईस का वाक्य है कि सम्पूर्ण पक्षियों का पित्ता आंख की अँधेरी को दूर करता है इसका नख जिस वृक्ष पर लटकावे चिड़ियों की हानि से बचे इसकी हड्डियों की राख जले हुये जोड़ पर छिड़कना गुण दायक है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३०१॥

(बाशक) अर्थात् बाशा यह सब शिकारी जानवरों से छोटा है और यह गोरय्या का शत्रु है और जो पक्षी कि गोरय्या के बराबर हो और फ़ाख़्ता का भी शिकार करता है जो इसका भेजा एक दिरम बादरजबोया के साथ पिये उन्माद रोग को गुण करे सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३०२

(बबग़ा) अर्थात् तोता यह बहुत सुन्दर उत्तम रंग का लाल पीला और सब्ज और सपेद होता है परन्तु बहुधा सब्ज होता है चोंच मोटी होती है और जिह्वा चौड़ी जो बात सुने उसे दूसरी बेर तुरन्त ठीक कहे उसके अर्थ जाने इसके सिखाने का हाल यह है कि इसे पिंजड़े में शीशा रखकर उसके पीछे से कोई बात करे वह अपनी सूरत को कहनेवाली समझकर उसी के वचन से उत्तर देता है इसकी अद्भुत बातों में से यह है कि पानी नहीं पीता किन्तु जलपान से मरजाता है (गुण) इसकी जिह्वा खाना वाचाल करता है जो कोई इसका पित्ता खाय उसकी जिह्वा भारी होजाय इसका लहू सुखाकर जिन दो मनुष्यों के बीच में छिड़कें परस्पर विरुद्ध होजाय इसकी झिल्ली को हींग के पानी में पीसकर सुरमा लगाना ढलका और धुंध को भी लाभदायक है सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३०३

(बुलबुल) इसको फ़ारसी में हज़ारदास्तां कहते हैं यह एक

निकलने के समय अपने स्वरूपके विरुद्ध देखकर उससे भागताहै सदा सांप ऐसाही इस पक्षीके साथ किया करता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर २०८

(हुवारी) इसको फ़ारसी मे चिरज़ कहते हैं यह पक्षी सुन्दर है परन्तु बेवक़ूफ़ जब दूसरे पक्षी का अंडा देखता है अपने अंडे को छोड़कर उसको सेता है जो इसकी विष्टा और पक्षियोंपरगिरे उनके पर आपस में जुड़ जाते हैं और उड नहीं सक्ते हैं तथा अरबवालों का वचन है कि हुवारी पक्षी का हथियार उसकी बीठ है तो जब इस पक्षी का किसी शिकारी चिड़ियासे साम्हना होता है तो यह समय पाकर अपनी विष्टा उसके परों पर डाल देता है तो सब पर उसके बेकाम होजातेहैं और यह भागजाताहै और अपने साथियों को इकट्ठा करके चरग़ पक्षी जो इसको शिकारकरता है उसकेपरों को नोचकर उसको मारडालता है और यही उपाय जिस पक्षीसे विरोध होता है उसके साथ करता है (गुण) जो इसके पेटको सुखा कर इन्दरानी नोन और बराबर जलीहुई रोटी के साथ आंखों में लगावें आंख की सपेदी नष्ट हो इसकी सूखी चरबी बालछड़ और किरतके साथ खाना अतीसारको गुणदायक है शेख़रईस कहता है कि हुबारी के अंडेका ख़िजाब उत्तम है और इसकी सपेद डोरे पर परीक्षा करनीचाहिये सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर २०९

(हदात) अर्थात् चील बहुत निर्बल है बहुत से पक्षी इसपर प्रबल रहते हैं कहते हैं कि एकबर्ष नर और एकबर्ष मादा रहती है कव्वा इसका शत्रुहै यहांतक कि अपना अंडा इसके अंडेको खाकर उसकी जगहपर रखदेता है और चील उसको अपना अंडासमझ कर सेती है जब बच्चा निकलता है तो वह कव्वा होता है सो नर को बड़ा आश्चर्य होताहै और अपने साथियोंको इकट्ठा करके बच्चे को दिखलाता है और मादा को संदेहासे इतना मारता है कि वह मरजाती है और यह जानवर बीमारीमें अपने पर खाकर आराम

तो तुरन्त पथरी निकलजाय जो इसका पित्ता झाड़ की लकड़ी में लगाकर जिसका मूत्र बिछौनेपर निकलजाता हो बांधें गुणदायक है इसका कलेजा हलाहल विप है और कूलंज पैदा करता है जिसकी औपधि नहीं इसका मांस बमनका रोग उत्पन्नकरता है जो सुखाकर जिस समूहके भोजनमे दें उनमें परस्पर शत्रुताहो इसका ताज़ालहू लकवे वालेके मुखपर लगाना गुणदायक है इसका मेदा सुखाकर जिसको खिलावें कूलंज अर्थात् पहलूकी पीड़ा दृढ़ उत्पन्न हो सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३०५,

(तदर्ज) अर्थात् चकोर इसको फारसीमें तदर्व कहतेहैं यहपक्षी रोचक शब्द बोलता और बागका मित्र है जब उत्तरीय वायु हो तो मोटा होता और दक्षिणी पवनमें क्षीण होता है अंडा देते के समय मट्टीका घेरा बनाता है उसमें अंडादेताहै कि उपद्रवोंसे बचारहे जब उसका बच्चा निकलता है उसीसमय दानाखाताहै कहतेहैं कि यह पक्षी भूकम्पहोनेसे पहलेइकट्ठे होकर चिल्लाते हैं सूरतउसकीयह है ॥

तसवीर नम्बर ३०६

(तानूत) फ़ारसीमें इसको कबतूकहते हैं यह अद्भुतपक्षी होता-है अर्थात् वृक्षों की छालके रेशों से घोंसला बनाता है और उसको वृक्षसे लटकाता है और बच्चोंको उसमें रखता है (गुण) जो उस को शीशेके टुकड़ेसे मारें और उसका रुधिर पीलेवे तो किसी चीज़ के नशे यामद मे व्यर्थ लड़ाई से छुट्टी पावें इसका पित्ता शक्कर के साथलड़कोंकाखिलाना मनुष्योंकीदृष्टिमें प्रियकरताहै महीनेकेप्रा-रम्भमें जब चन्द्रमा निकले तो इसकी हड्डी लड़केके बांधे तो चाहे कितनाही बुराहो परन्तु सृष्टिकी दृष्टिमें प्रियहो सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०७

(ख़ासतुल अफ़ई) जिसको अभईभी कहते हैं यह पक्षी वायुके पक्षियों मे से है जब यह अंडा देता है सांप आन कर खाजाता है और अपना अंडा उसके स्थानपर रखदेता है जब उक्त पक्षीआता है तो अपना अंडा समझकर उसकी रक्षा करता है और बच्चे के

बराबर प्रीतिकरता है इसकी मादा परस्पर मादासे जुफ़्ती खाकर चार अंडे देती हैं परन्तु उन अंडोंमे बच्चे नहीं निकलते अद्भुत बात यहहै कि जब मादा बच्चे देनेको होती है तो नरको खबर होजातीहै और तिनके इकट्ठे करके आरामके बराबर अपने और अंडोंके घोंसले बनाताहै नर और मादा दोनोंपरस्पर अंडेकी रक्षाकरते हैं और अंडोंकेपास चाहे आगभीलगे अकेला नहीं छोड़ते और वहांपर एक नियमितसमय तक स्थितरहते हैं मादाबहुत रक्षाकरती है जब वह उठतीहै नर उसकेस्थानापन्न होताहै कि अंडेकी गर्मी दूर नहो और जब बच्चा निकलता है तो नर और मादा आपुसमेंउसको भराते हैं पहिले अपने बच्चेकेकंठमें वायु फूंकतेहैं कि भोजनकामार्ग खुलाहो फिर अपने मुखकी लार पहुंचाते हैं जब मालूम होजाता है कि भोजनका मार्ग खुलगया उस समय दीवारोंकी खारोलोनी भरातेहैं कि पोटा उसका मज़बूत हो जो कोई यहचाहे कि कबूतरका बच्चा रंगबरङ्ग पैदा हो तो चाहिये कि कपड़े का कबूतर बनाकर उसको जैसे रङ्ग चाहे रंगदे और जहांपर कबूतर पानी पीतेहों वहां रखदे कि कबूतरकीदृष्टि उस अनुकर्णी कबूतर पर पड़े तो जब बच्चे पैदाहोंगे तो वही रङ्ग उनका होगा कबूतर बीमारी के समय टिड्डी को खाकर आराम पाताहै और जंगली कबूतर बीमारीमें नरकुलकी पत्तीखाने से आरोग्य होताहै इस समूहमें अद्भुतयहहै कि इसका बच्चा जवानीके पहिले कनसर अर्थात् करगस जो मुरदा खाने वाला जानवरहोताहै और उक़ाबको पहिचानताहै तात्पर्य यह कि नसरसे न डरे और उक़ाबसे भागजाय और शाहीन को देखना मार डालने वाला समझे जिस तरहसे कि बकरी हाथी ऊंट और भैंस से नहीं डरती और भेड़ियेसे भय पातीहै जाहज कहिताहै कबूतर हरएक जानवर से उत्तम होताहै परन्तु जब वह अपने शत्रुओंकोदेखे भयमान होताहै जैसा कि गधा शेरको देखकर चुप होताहै या बकरी भेड़िये से और चूहा बिल्लीसे डरताहै (गुण) इसका पित्ता रतौंधी और धुंधलेको उपयोगीहै और ऐंठहुये जोड़पर मलना उत्तमहोता-

पाता है जो लाल रंगकी चीज़ देखता है तो मांसके विचारसे उस पर झपट्टा मारता है साहबुलफलाहा कहता है कि कभी उकाब चील और कभी चील उकाब होजाता है-(गुण) जो इसका पित्ता सुखाकर सर्पके चलनेके मार्गपर डालदें जो सर्प उसपरसे जावेगा मरजायेगा जिसको बिच्छू काटे उसी ओरकी आंखमें उसका पित्ता सुरमेकी तरह लगावे गुण करे इसका भेजा गादना और शहद के साथ उबालकर अतीसार और बवासीरमें पीना लाभ करे इसका लहू पीना हलाहल विषोंका दूर करनेवाला है इसकी हड्डी जलाकर घावपर लगाना दुरुस्त करनेवाला है और इसका लेप कठोर फोड़ोंको पकादेता है सूरत उसकी यह है॥

(तसवीर नम्बर ३१०)

(हमामा) अर्थात् कबूतर बड़ा बुद्धिमान् और दूर देशोंसे अपने पहले मकानमें आसक्ता है और अपने शहरके चिन्होंको खूब पहिचानता है जो उसको किसी दूर जगहसे छोड़े तो वह पहिले आकाश में छिपजाता है फिर ऊंचेसे अपने मार्ग के चिन्ह याद करता जाता है यहां तक कि अपने मुख्य स्थानमें आजाता है बहुधा इतना ऊंचा उड़ता है कि बादल उसके नीचे होजाता है जिससे बहुत जल्दी अपने मुख्य स्थानपर आने से लाचार होजाता है या कोई उसका जोड़ शिकारी पक्षी के कारण घायल होजाय या उसको कोई पकड़कर रक्खे इन कार्य्योंसे निस्सन्देह अपने मुख्य स्थानपर आनेसे लाचार होजाता है और इनमें मनुष्यों की तरह परस्पर प्रीति है जिसतरह चुम्बन मिलन आदि मुसन्ना का पुत्र जबीर कहता है कि यह पक्षी स्त्री पुरुषों की तरह बर्त्ताव करता है और मैंने कबूतर केनर और मादाके बीचमें देखा कि इसकी मादा दूसरे नरकी ओर ध्यान नहीं करती जिसतरह कि पतिव्रता स्त्रियां और बाज़ी मादा व्यभिचारिणी स्त्री की तरह दूसरे नरसे भी जुफ्ती खाती है और कोईमादा नरकी आधीनी नहीं करती और कितनाही नरबुलाताहै वह उसका कहना नहीं मानतीहै और एक नरकी दो मादाभी होती हैं और नर दोनोंसे

बराबर प्रीतिकरता है इसकी मादा परस्पर मादासे जुफ़ती खाकर चार अंडे देती है परन्तु उन अंडोंमे बच्चे नहीं निकलते अद्भुत बात यहहै कि जब मादा बच्चे देनेको होती है तो नरको खबर होजातीहै और तिनके इकट्ठे करके आरामके बराबर अपने और अंडोंके घोंसले बनाताहै नर और मादा दोनोंपरस्पर अंडेकी रक्षाकरते हैं और अंडोंकेपास चाहै आगभीलगे अकेला नहीं छोड़ते और वहांपर एक नियमितसमय तक स्थिररहते हैं मादाबहुत रक्षाकरती है जब वह उठतीहै नर उसकेस्थानापन्न होताहै कि अंडेकी गर्मीदूरनहो और जब बच्चा निकलता है तो नर और मादा आपुसमेंउसको भराते हैं पहिले अपने बच्चेकेकंठमें वायु फूंकतेहैं कि भोजनकामार्ग खुलाहो फिर अपने मुखकी लार पहुंचाते हैं जब मालूम होजाता है कि भोजनका मार्ग खुलगया उस समय दीवारोंकी खारीलोनी भरातेहैं कि पोटा उसका मज़बूत हो जो कोई यहचाहे कि कबूतरका बच्चा रंगबरङ्ग पैदा हो तो चाहिये कि कपड़े का कबूतर बनाकर उसको जैसे रङ्ग चाहे रंगदे और जहांपर कबूतर पानी पीतेहों वहां रखदें कि कबूतरकीदृष्टि उस अनुकर्णी कबूतर पर पड़े तो जब बच्चे पैदाहोंगे तो वही रङ्ग उनका होगा कबूतर बीमारी के समय टिड्डी को खाकर आराम पाताहै और जंगली कबूतर बीमारीमें नरकुलकी पत्तीखाने से आरोग्य होताहै इस समूहमें अद्भुतयहहै कि इसका बच्चा जवानीके पहिले कर्गस अर्थात् करगस जो मुरदा खाने वाला जानवरहोताहै और उकाबको पहिचानताहै तात्पर्ययह कि नसरसे न डरे और उक़ाबसे भागजाय और शाहीन को देखना मार डालने वाला समझे जिस तरहसे कि बकरी हाथी ऊंट और भैंस से नहीं डरती और भेड़ियेसे भय पाताहै जाहज कहिताहै कबूतर हरएक जानवर से उत्तम होताहै परन्तु जब वह अपने शत्रुओंकोदेखे भयमान होताहै जैसा कि गधा शेरको देखकर चुप होताहै या बकरी भेड़िये से और चूहा बिल्लीसे डरताहै (गुण) इसका पित्ता रतौंधी और धुंधलेको उपयोगीहै और ऐंठहुये जोड़पर मलना उत्तमहोता-

है जो कबूतर का अण्डा घावपर रक्खे भरे और चोट और पुराने घावको दूर करताहै और आंखमें लगाना रतौंधीनाश करताहै इसके मांसका सदा खाना समझ बहुत करता है इसकी हड्डी की राख उपद्रव कारक घावको दुरुस्त करे यदि स्त्री इसकी बीटकी बत्ती भगमें रक्खे प्रसूति सुगमतासे हो जो निर्जीव मांसपर छिड़कें उसके घाव दूर करदे कदाचित् गरमी अर्थात् आतशकपर मलें लाभ करे यदि लाल कबूतरकी बीटको हुकनेमें मिलावें कूलंजको उपयोगी है और मूत्ररोधको लाभकरे जो इसके पांव ज़रूरक (एकप्रकारकागोंदरूमीदवाहै) और हबुलनील (अर्थात् मिरचाई किनीलोफर केबीजहैं) बराबर घिसकर अखरोट के तेलमें मिला कर सपेद कालेदाग वाले कोढ़पर मलें उसका रङ्ग दूरहोगा सूरत यहहै॥

सर्पयोंनम्बर ३११

(खताफ़) अर्थात् अबाबील इसको फारसी में बिलवाया कहते हैं इसके बहुत प्रकारहैं यह जानवर ठंढे देशोंसे गरमदेशोमें जाता है और मुख्यकरके बसन्त ऋतु को प्रिय जानताहै और बहार के प्रारम्भमें घोंसला बनाता और अण्डे देताहै कि वायुगर्म होनेतक इसका बच्चा बलवान् होजाय इसके घोंसले हरदेशमें होतेहैं और जिसदेशके घोंसलेको उद्योग करे वहां जापहुंचे घोंसला बनाने के समय परोंको मिट्टीमें मिलाकर काम में लाता है बहुधा दीवारों और छतों की दरारों में बनाता है और ऐसा उपाय करता है कि दोनोंओर से उसका घोंसला छत में मिला और मज़बूत हो यह विचित्रताहै कि थोड़ा सा घोंसला बनाकर छोड़ देता है कि सूख जावे और फिर बाकी बनाताहै इस विचार से कि एकहीबेर बनाने से गिर न पड़े और इसके घोंसला बनाने के समय बहुत अबीलें सहायक होती हैं और जब घोंसलाबन चुकता है तो उसे बराबर करनेके वास्ते अपनी चोंचमें पानी लाकर घोंसले को चिकनाता है और घोंसलेमें मक्खी मच्छड़ और सांपके दूरहोने के लिये तितली की पत्ती रखताहै प्रसिद्धहै जो अबाबीलका घोंसला पानीमें घोल

करे और छानकर प्रसूतिकी पीड़ाके समय स्त्रीको पिलावें बच्चा पैदा होनेके समय सुगमताहो (गुण) इसके भेजेका गूदा तेलमें मिलाकर शिरमें लगाना जूं दूरकरताहै इसकी आंख पोटलीमें बांधकर जिसके बिछौने पर रखदें उसको निद्रा न आवेगी इसका दिल सुखाकर शराबके साथ खाना वीर्य्य बढ़ाताहै इसका मांस खाना आंख को मज़बूत और तेज़करताहै यदि स्त्रीको खिलावें उसकी भोगकीइच्छा इतनी दूरहो कि कभी पुरुषकी इच्छा न करे इसकीबीटके मरहम से फोड़ेपकजातेहैं और उनकामैलभी दूरहोजाताहै सूरत यहहै ॥

तिसवाँनम्बर ३०

(खफ़ाश) अर्थात् चमगादड़ यह प्रसिद्ध जानवर सूर्य्य की किरणों में अन्धा रहताहै परन्तु अँधेरे या संध्याको ज्योतियुतहोताहै इसके पर नहीं होते परन्तु बाजुओंसे जो चौड़े खालकी तरह होतेहैं उड़ताहै इनकी उत्पत्ति चूहेकी तरह पर होतीहै कहतेहैं कि बनी इसराईल ने हज़रत ईसासे एक करामात चाही कि आपएक ऐसा पक्षी बनाइये जो और पक्षियों के विपरीत बाह्यकर्ण और दांत रखता हो और अपने बच्चोंको दूध पिलाये सो आपने मट्टीसे यह जानवर बनाके उसपर हवाफूंकी और ईश्वर की आज्ञा से यह जानवर प्राणयुक्त होगया और उड़ने लगा और यह सब उसमें विद्यमानहैं इसीका वर्णन ईश्वरने कियाहै कि हज़रत ईसाको हमने यह भी करामातदी कि उन्होंने एक मट्टीका जानवर बनाकर हवा फूंकी और वह मेरी आज्ञा से पक्षी होगया निदान यह जानवर मक्खी और मच्छड़ आदिका शिकार करताहै बहुधा उड़नेके समय अपने बच्चे को मुखमें रखताहै और दूध पिलाताहै अनारको खाता है और उसका छिलका खाली करके छोड़देताहै जब इसके बदले चिनारके पत्तेदेवें तो भागता है कहतेहैं कि जो किसी गांवमें इस चिड़िया को दरख़्तपर लटकावें उस जगह टिड्डी न आयेंगी (गुण) इसका शिर कबूतरोंकी छत्तुरी पर रखनेसे कबूतरोंको उसछत्तुरीसे हुतलागू करताहै जो इसकाशिर मनुष्यके सिरहाने रक्खें उसको

है जो कबूतर का अण्डा घावपर रक्खे भरे और चोट और पुराने घावको दूर करताहै और आंखमे लगाना रतौंधीनाशक है इस- के मांसका सदाखाना समझ बहुत करता है इसकी हड्डी की राख उपद्रव कारक घाव को दुरुस्त करे यदि स्त्री इसकी बीटकी बत्ती भगमें रक्खे प्रसूति सुगमतासे हो जो निर्जीव मांसपरछिड़कें उस के घाव दूर करदे कदाचित् गरमी अर्थात् आतशकपर मलें लाभ करे यदि लाल कबूतरकी बीटको हुक्केमे मिलावे कूलंजको उपयोगी है और मूत्ररोध को लाभकरे जो इसके पांव मिस्तुरक (एकप्रका- रकागोंदरूमीदवाहै) और हबुलनील (अर्थात् मिरचाई किनीलो- फर केबीजहैं) बराबर घिसकर अखरोट के तेलमें मिला कर सपेद कालेदाग़ वाले कोढ़पर मले उसका रङ्ग दूरहोगा सूरत यहहै॥

[illegible] सर्वधोटनम्बर ३११ [illegible]

(ख़ताफ़) अर्थात् अबाबील इसको फ़ारसी में बिलवाया कहते हैं इसके बहुत प्रकारहैं यहजानवर ठंडे देशोंसे गरमप्रदेशोमें जाता है और मुख्य करके बसन्त ऋतु को प्रिय जानताहै और बहार के प्रारम्भ मे घोंसला बनाता और अण्डे देताहै कि वायुगर्म होनेतक इसका बच्चा बलवान् होजाय इसके घोंसले हरदेशमें होतेहैं और जिसदेशके घोसलेको उद्योग करे वहां जापहुंचे घोंसला बनाने के समय परोंको मिट्टी में मिलाकर काम में लाता है बहुधा दीवारों और छत्तों की दरारों में बनाता है और ऐसा उपाय करता है कि दोनोंओर से उसका घोंसला छत मे मिला और मज़बूत हो यह विचित्रताहै कि थोड़ा सा घोंसला बनाकर छोड़देता है कि सूख जावे और फिरबाकी बनाताहै इस विचार से कि एकहीबेर बनाने से गिर न पड़े और इसके घोंसला बनाने के समय बहुत अबाबीलें सहायक होती हैं और जब घोंसलाबन चुकता है तो उसे बराबर करनेके वास्ते अपनी चोंचमें पानी लाकर घोंसले को चिकनाता है और घोंसलेमें मक्खी मच्छड़ और सांपके दूरहोने के लिये तितली की पत्ती रखताहै प्रसिद्धहै जो अबाबीलका घोंसला पानीमें घोल-

[illegible] और [illegible] नौसावत की होतीहै तो नौ पर [illegible] कहाहै कि ईश्वर ने आकाश के नीचे ये [illegible] हैं जो दोनोंफैलावे पूर्वसे पश्चिम [illegible] अपनेपर खोलकर उत्तमशब्दसे नाम [illegible] के मुर्गेभी उसकेजपनेका उत्तरदेते हैं [illegible] मुर्गा जिसकी दाढ़ी और ताज कंगरेदार [illegible] और अपनीमादोंकी प्रीति बहुत करताहै [illegible] की आवाज से जागे उसको नींद का भारीपन [illegible] शेरभागताहै और जङ्गीमुर्गीउत्तमहोताहै [illegible] कि उसकी चोंच सुर्ख और भारी गर्दन और [illegible] और तेज चुंगल ऊंची आवाज होतीहै और [illegible] यहमुर्गा जब परोगू मुर्गेको देखताहै तो अपजीचोंच में दाना लेकर उसके सामने डालता है कहतेहैं किवह यह बात कामकी प्रबलता और युवावस्था में करताहै बुढ़ापेमें नहीं और परोगू मुर्ग को शत्रुसे बचाताहै और आपरक्षा करने वाला होताहै कहतेहैं कि नरमुर्गा अपनी आयु भरमें एक अंडा देताहै जिसको बैज़तुल असर कहतेहैं और वह बहुत छोटा होताहै कहतेहैं कि जब पुरुष सपेद मुर्गेको मारताहै उसके धनद्रव्यमें हानि पहुंचतीहै जिसघरमें सपेद मुर्गा हो वहां शैतान नहीं आताहै (गुण) मुर्ग सपेद की दाढ़ी को पीस कर जिस लड़के को बिछौना पर पेशाब होताहो पिलावें गुणकरें और इसका धुआं बावलेको [illegible] इसका पित्ता आंखमें लगाना रतौंधी और आंखकी सपेदी [illegible] है [illegible] बचन है कि इसका पित्ता बहुत सुबह [illegible] मिल [illegible] स्मरणाव [illegible] होताहै २ [illegible] चांदीके [illegible]

आंखकी [illegible]

लाभकार [illegible] अपने [illegible]

से न थके [illegible] लगाने [illegible]

जो इस [illegible]

नींद न आयेगी शेख़रईस का विचारहै कि जो ढलके के प्रारम्भ मे इसका भेजा सुरमा बनाकर लगावे गुणकरे और इसकी राख भी लाभकरे जो मनुष्ययन्त्र बनावे वीर्य्य अधिकहो इसकालहू आंखो मे लगाना रतौंधी को लाभकरे जो बगलके बाल दूर करके इसका रुधिर लगावे फिर बाल न जमैंगे इसकी विष्टाका सुरमा लगाना आंखकी सपेदीको नष्ट करताहै जो च्यूंटीके छिद्रमें रखदे च्यूंटियां भाग जायगी जो इसकी विष्टा चूने और हरतालमें मिलाकर लिंगके स्थलपर लगावें मुद्दततक बाल न निकलैंगे और कईबेर इसक्रिया के करनेसे कभी बाल न निकलैंगे स्वरूप यहहै [illegible]

[illegible]

[illegible] (दुर्राज़) अर्थात् तीतर यह जानवर प्रसिद्ध शुभ है इसकी पीठ ऊंची होती और यह बहुत जानने वालाहै और इसके शब्द से ऐसा मालूम होताहै यहां अरबी आयतहै जिसके अर्थ यहहैं कि ईश्वर के धन्यवाद से पदार्थ सर्वदा स्थिर रहते हैं और बसन्त ऋतु के आनेकी खबर देताहै उत्तर की वायुसे प्रसन्नहोता और दक्षिण की पवनसे अप्रसन्न होताहै जाहिज़ कहता है कि यह वह जानवर है कि घरोंमें मादासे जुफ़्ती नहीं करता परन्तु बाग़में खाता है और समझदारभी होताहै अबूताळिबुलत्योहीकी कहावतहै कि किसीने तीतर पर बाज़को छोड़ा सो तीतर अपने घोसलेमें गया और अपने दोनो पैरोमें दो कांटे लेकर अपनेको पीठके बल उलटा करदिया निदान इस उपायसे बाज़ उसका शिकार न करसका शेखरईस कहताहै कि इसका मांस भेजेका बल कारक और समझको बढ़ाताहै और वीर्य्य भी अधिक करताहै सूरत यहहै [illegible]

[illegible]

[illegible] (दिक) अर्थात् मुर्ग़ा यह कामदेवकी अधिकता और लोभ में हर एक पक्षीसे अधिक है सुबह होने की खबर देनेवालाहै विचित्रता यहहै कि रात की घड़ियां और समयका अनुमान जानता है जैसे जब रात्रि पन्द्रह साअत (ढाईघड़ी)की होतीहै अपनी आवाज़ को

फ़िर धूपमें रखकर सुखावें फिर छीपपर लेपकरें तो लाभ दा
है इसका आधा भूना अंडा वीर्यको अधिक करताहै जो इसका
जाड़ेमें घासके अंदर और गर्मीमें भूसेके अंदर रक्खें देरतक ख़
न हो इसके अंडेका तेल तकरसकी पीड़ापर लगाना पीड़ा दूर
रताहै इसकी बीट सिरकेमें या शराबमें पीना कूलंज दूर करती
और पथरी की बीमारी मेंभी लाभदायकहै बलैनासका वचनहै
काले मुर्गकी बीट जिस मकानके दरवाज़ेपर चिपकादें वहां वि
ध उत्पन्न हो सूरत यहहै ॥

(रखम) अर्थात् करगस यह अपने अंडा देनेको पहाड़ों के कि
नारे और कंदरा ढूंढ़ता है कि कोई वहां न पहुंचे जब अंडा देने
समय आताहै हिन्दुस्तान की धरतीमें जाकर एक पत्थर (अबू
कून) नामी लाकर उसपर बैठता है और अंडा देता है वह ए
पत्थर गोल खोखला होताहै और हिलाने में उसके पेटसे सूखे ज
रियलकी तरह खड़खड़ाहटका शब्द आताहै यह पक्षी सदा लश
र के पीछे उड़ताहै क्योंकि इसका भोजन मुरदार है और हा
लोगोंके पीछेभी उड़ता चला जाता है कि जो वार पायें उनके म
जायँ तो खालें और बकरीके बच्चा देनेके समय भी बाट देखता
कि बच्चा मुरदा पैदाहो तो खालूं इसका पित्ता कानमें टपका
बहेरे को गुणदायकहै और आंखोंमें लगाना आंखकी सपेदी औ
पीड़ाको निष्टकरताहै यदि चौथिया तप वाले को पिलावें लाभक
यदि पारेके तेलमें मिलाकर मुखपर उबटन करें तो जिस अधिष्ठा
के सामने जावें प्रतिष्ठापूर्वक आवें बलैनास लिखता है कि उस
दाहने बाजूकी लंबी हड्डीको जलाकर जिसको खिलावें वह उस
प्यार करे और बायेंकी हड्डी शत्रुता के लिये इसीतरहपर खिलान
लाभकरे और स्त्री इसकी बीटकी बत्ती बनाकर भगमें रक्खें पेटगि
जाय सूरत यहहै ॥

(जाम) कहते हैं यह प्रसिद्ध पक्षी काले रंग का हज़ार वर्षकी आयु

को भोजन में खिलावें तो उनमें परस्पर विरोध होजाय जो इसको शहदमें जोशदेकर लिंगपर मलें बलवीर्य कारक है-इसका मांस सुखाकर माजू और समाक जिसको हिंदीमें तित्रक वातमा तीर कहते हैं सब बराबर मिलाकर चनेके बराबर खाना अतीसार वालेको उपयोगीहै कहतेहैं कि इसके पेटमें पथरी बाज़ी गेहुआं रंग और बाजीबिल्लोरके तौरपर होतीहै उसका यंत्रबनाना बावले को गुणदायक है और बीर्यभी विशेष होताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३१५

(दजाज) अर्थात् मुर्गी कभी किसी समय मुर्गी भी बांग देतीहै और नरसे लड़तीहै कभीऐसाहोताहै किनरसे जुफ़्ती खानेकेबिना मट्टीमें लोटने व दक्षिणी पवन के प्रभाव से अंडादेतीहै इस अंडेसे बच्चा नहीं निकलता है और खानेमें भी बेस्वाद होताहै और जब मादर के पेटमें इसतरह के अंडे बहुत से इकट्ठे होजायँ और अंडा देनेके पहले एकबेरभी नरसे जुफ़्तीखाले तोपेटके अंडे दुरुस्त होजातेहैं जो अंडे सेनेके समय बादल गरजा और उसने सुना तोवह सब अंडे बिगड जातेहैं और दक्षिणकी पवनमें भी यह प्रभाव है जो नर मुर्गेकी कम जोशीमें अंडाहो वह खालीहोताहै उससे बच्चा नहीं होता क्योंकि बच्चा अंडे की सपेदी से पैदाहोताहै और जर्दी उसका भोजन होताहै और ऐसे मुर्गीके अंडे में जर्दी नहीं होती है और जब इसकी मादा मोटी होतीहै अंडा नहीं देती जिसतरह कि बहुत मोटी स्त्रियां गर्भवती नहीं होतीं (गुण) सपेद मुर्गीको दश प्याज और एक हथेली भर तिलके साथ पकाकर उसका शोरवा मांस समेत खाय बीर्य अधिक होयदि इसके और चकोर के मांस को सदाखाये बवासीर और नकरसकी बीमारी पैदाहो और इसकी चरबी के उबटनसे मुंहकी सुर्खझाई जाती रहती है और पैरोंकी बिवाई भी दूरहोतीहै ढलके के लिये आंखमें इसका पित्ता लगाना गुणदायकहै बलैनास कहताहै कि इसकापोटा खाना बिछौने परमूत्र करने वालेको लाभकरे तीनअंडे लेकरसिरके में तीनदिन तकरक्खें

हैं और आराम पाते हैं इसका मांस नेत्रकी ज्योति अधिक करताहै जो इसके मांसको सुखला कर गले के दर्दमें निहार खावें गुण करे और इसकी राख घावपर छिड़कना लाभकरे सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३१९

(जमक़ख़) इसको फ़ारसीमें जमक कहतेहैं इसका पित्ता आंख में लगाना रतौंधी को नाश करताहै और अंधेरी के दूरकरने में आज़माया हुआहै सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३२०

(समानी) इसको फारसी में समाना कहतेहैं यह वह पक्षी है जिसको ईश्वरने बनी इसराईल के वास्ते कृपाकियाथा सलवी इसी का नामहै यहपक्षी सदाचुप रहताहै परन्तु रात २ भर बहार में चिल्लाता है और सांप को खाता है और उसका विष इसके कुछ अवगुण नही करता सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३२१

(सन्क़र) यह शिकारी मुर्ग़ा शाहीन से मिलता हुआ होता है परन्तु इसके पांवमोटे होतेहैं और पिंडली इसकी लड़कोंकी तरह पर होती है बहुधा तुर्क़िस्तान के शहरों में होता है ठंढे देशों में आराम पाताहै कहतेहैं कि जब इसकोशिकारपरछोड़तेहैं तो पहिले शिकारपर जाकर दौरा करताहै और ऐसेचक्कर लगाताहै जो हज़ार पक्षीहों तो निकलने न पावें निदान वहपक्षी आसक्त होकर शिकारियों के हाथमें आतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३२२

(शाहीन) यह प्रसिद्ध पक्षी है कबूतरों का शत्रुहै जब कबूतर इसको देखता है इससे उड़ने की अधिक शक्ति रखनेपरभी क्षीण होजाताहै और परनही मारसक्ता जैसे गधा शेरके साम्हने भेड़िये के आगे बकरी और चूहा बिल्लीकेआगे और कछुआ इसको देखकर छिपजाता है और यह उसकी पीठपर चोंचसे चोटकरता है परन्तु कुछ असर नहींहोता फिर शाहीनउसको उठाकर हवापर लेजाता है और कठोर पत्थरपर फेंकताहै वह उसकी चोटसे मरजाताहै तो

का होताहै और उल्लूका शत्रु परन्तु हाराहुआ जाहिज़ कहता है कि सम्पूर्णपक्षी अपने बच्चेको उसके बड़े होनेपर नहीं पहिंचानते परन्तु कव्वा पहिंचानता है जो इसके पर जलाकर जहां चाहें लगावे बालनिकल आयेंगे यदि दो मनुष्योंकेबीचमे कव्वे और उल्लू की आंख का धुआंकरें तो दोनो मे शत्रुता होजाय जो इसकादिल सुखाकर पीसकर रखछोड़े और जब गर्मीमे सफ़र करें और पानी में घोलकर पोले प्यास न होगी क्योंकि कव्वा गरमी मे पानी नही पीता कई कहते हैं कि इसका दिलपास रखना प्यासबुझाता है जो इसका और मुर्गेका पित्ता शहदमें मिलाकर आंखमे लगावें सपेदीदूरकरे और बालोमें खिजावकरनेसे कालाकरदे इसकामांस और पोटा सुखाकर शहदके साथ तीनदिन छीपवाले को खिलावें गुणदायकहै जिसकी आंखों के सामने मक्खी उड़तीहुई मालूमहो वह रोगभी दूरहो यह नजलेके रोगका प्रारम्भ है बलैनासकहतेहैं कि इसकी चरबी गुलाब तेलमे बदन पर मलकर राजा के पास जाने से कार्य की सिद्धि करता है जो इसको सुखाकर नासूर पर लगावें उत्तम होगा इसका अंडा बवासीरपरमलें लाभदायकहै जो शराबमे पीवें तो मद्यपीनेकी आदत जाती रहे इसकी बीट तिल्लोपर लगाना गुणदायकहै जो खांसीवालेके कंठमें छिड़कें खांसी जाती रहे सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३१८

(जरजोर) इसको फ़ारसीमें सार कहते हैं यह अच्छीहवापसंद करताहै हिन्दुस्तानसे अराक़को जाताहै बहुधा यह पक्षी दरियामें नष्टहोताहै और मरजाने के पीछे सूखकर और बहकर किनारेआता है उसको वहांके लोग लकड़ी की जगह पर जलाते हैं बुक़रात का वचनहै कि इसके बच्चों को लेकर केसर में रंगकर उनके घोंसलोंमें छोड़देते हैं जब उनकी मा उनको देखती है बीमार समझती है तो इलाजकेवास्ते एक पीला पत्थर लातीहै सो वह लोगघोंसलेसे वह पत्थर उठालातेहैं और पानीमेघिसकर कमलबायुवालों को पिलावें

तसवीर नम्बर ३२७

(तायरुलबहर) यह दरियाईपक्षी सदा दरियामें उड़ताहै दरिया वाले कहतेहैं कि यह कभी घोंसला नहींबनाता परन्तु जब अण्डा देताहै तब बनाताहै और घोंसला समुद्रफेन का बनाता है इसके सिवाय सदा उड़ाकरता है और वायु पर जुफ़्ती भी खाता है यह अपने अंडोंको सेतानहीं है किन्तु उसमें अपने आप बच्चा पड़ताहै और जब बच्चा ताकतदार होताहै उससमय अडे को तोड़के वहभी अपनेमाता पिता के सदृश उड़ने लगता सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३२८

(ताऊस) अर्थात् मोर यहपक्षी स्वरूप और सुन्दरतामेंसम्पूर्ण पक्षियोंसे उत्तम होताहै और अति विचित्ररंगों से रंजित बताया गयाहै इसके परोंपर आश्चर्य आताहै कि हरपर में सुनहरी घेरा बनाहोताहै जो नीला सब्ज़ीलियेहै क्योंकि जो सोनेको सुर्खीज़र्दी या सपेदी पर रक्खें इतना सुंदर न होगा जैसा कि नीलेरंग और सब्जीपर अच्छा मालूमहोताहै मोरकी आयु पच्चीसवर्ष की होती है और इसीसमयमें सबरंग उसमें उत्पन्नहोतेहैं इसकेपर पतझाड़ में झड़तेहैं और बहार में नयेरंग निकलते हैं शेखरईस कहता है कि मोर का पालना दुःखदाई जानवरों से बचाता है (गुण) इसकी हड्डीका गूदा तितली और शहद मे खाना कूलंज की पीड़ा और पक्काशय की पीड़ावाले को उपयोगी है जो कोई इसका ताजा लहू पिये बावलाहोजाय इसकापित्ता सिकंजबीन के साथ गरमपानीमें पीना अतीसारके रोगीको दूरकरताहै और जिह्वाका भारीपन भी नष्ट होता है इसका मांस चरबी समेत खाना जातुलजन अर्थात् दृष्टिपीड़ा को गुणदायक है और इसकामांस वीर्य अधिककर्त्ता है और घुटने की पीड़ा को लाभकरे इसकी चरबी पीड़ा में लगाना शांतिकरता है इसकीहड्डी जिसकेपासहो उसपर दुर्दृष्टिका प्रभाव न हो इसका चंगाल प्रसूति की पीड़ा में स्त्रीकी रानपर बांधना या योनिमें धूनीदेना बहुत गुणदायक है सूरत उसकी यहहै ॥

यह खालेता है जब बीमार होताहै तो ज़रारीह जोएक प्रकार का उड़नेवाला कीटहै उसके खानेसे आराम पाताहैसूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२३

(शफ़ीन) फ़ारसीमें इसको तीरक कहतेहैं यह जानवर खाकी रंगका कबूतरके बराबर होताहै जाहिज कहताहै कि इसकी विचित्रता यहहै कि जब इसकीमादा मरजातीहै तोदूसरी मादासेजुफ़्ती नहींकरता और जो नर मरजाय तो मादा भी दूसरेसे भोग नकरे इसकीचरबी कानमे डालना बहरेपनको गुणकारक है और सुरमा लगाना रतौंधी को लाभकरे जो इसकीबीट गुलाबतेल मे मिलाकर स्त्री भगमे बत्तीलें गर्भाशयकी पीड़ा शांतहो सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२४

(शकराक) इसको फ़ारसी में क़ासक़ीना कहतेहैं यह सब्ज़रंग या ज़र्द या सुर्ख़ चोंचवाला होताहै यह छुहारेकेवृक्षका शत्रुहोताहै जब इसकापेट छुहारो के खानेसे भरजाता है तो बाक़ीफलों को गिरादेता है सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२५

(साफ़र) यहपक्षी कभी आराम नहींकरता रातसे सुबहतक चिल्लायाकरता है कहते हैं कि इसको यहडर होता है कि आकाश मेरे शिरपर न गिरपड़े सो इसी चिन्ता में सारीरात शिर झुकाये रहताहै और जबतक सुबह हो नहींलेटती चिल्लाना नहींछोड़ता इस साफर का स्वरूप यह है॥

तसवीर नम्बर ३२६

(सक़र) अर्थात् चर्ख़ यह शिकारी पक्षी विचित्रता से शिकार खेलताहै जब दोचर्ख़ हिरण या जंगली गाय पर छोड़ें एक उसके शिरपर आताहै और उसकीआंखो को अन्धाकरदेता है उस समय वह शिकार खड़ा होजाता है और दूसरा भी पहुंचकर उसको आंखोपर चोंचें मारता है उस समय आखेटक पहुचकर शिकार करताहै यद्यपि यहपक्षी भेड़ियेसे छोटाहै परन्तु उसकाभी शिकार करताहै उसमें यह साहस ईश्वर की ओरसेहै॥

तसवीर नम्बर ३८७

(तायरुलबहर) यह दरियाईपक्षी सदा दरियामें उड़ताहै, दरिया वाले कहतेहैं कि यह कभी घोंसला नहींबनाता परन्तु जब अण्डा देताहै तब बनाताहै और घोंसला समुद्रफेन का बनाता है इसके सिवाय सदा उड़ाकरता है और वायु पर जुफ्ती भी खाता है यह अपने अंडोंको सेतानहीं है किन्तु उसमें अपने आप बच्चा पड़ताहै और जब बच्चा ताक़तदार होताहै उससमय अडे को तोड़के वहभी अपनेमाता पिता के सदृश उड़ने लगता सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३८८

(ताऊस) अर्थात् मोर यहपक्षी स्वरूप और सुन्दरतामेंसम्पूर्ण पक्षियोंसे उत्तम होताहै और अति विचित्ररंगों से रंजित बनाया गयाहै इसके परोंपर आश्चर्य्य आताहै कि हरपर में सुनहरी घेरा बनाहोताहै जो नीला सब्ज़ीलियेहै क्योंकि जो सोनेको सुर्खीज़र्दी या सपेदी पर रक्खें इतना सुंदर न होगा जैसा कि नीलेरंग और सब्जीपर अच्छा मालूमहोताहै मोरकी आयु पच्चीसवर्ष की होती है और इसीसमयमें सबरंग उसमें उत्पन्नहोतेहैं इसकेपर पतझाड़ में झड़तेहैं और बहार में नयेरंग निकलते हैं शेखरईस कहता है कि मोर का पालना दुःखदाई जानवरों से बचाता है (गुण) इसकी हड्डीका गूदा तितली और शहद में खाना कूलंज की पीड़ा और पक्वाशय की पीड़ावाले को उपयोगी है जो कोई इसका ताज़ा लहू पिये बावलाहोजाय इसका पित्ता सिकंजबीन के साथ गरमपानीमें पीना अतीसारके रोगीको दूरकरताहै और जिह्वाका भारीपन भी नष्ट होता है इसका मांस चरबी समेत खाना जातुलजन अर्थात् पृष्ठिपीड़ा को गुणदायक है और इसकोमांस वीर्य अधिककर्त्ता है और घुटने की पीड़ा को लाभकरे इसकी चरबी पीड़ा में लगाना शांतिकरता है इसकीहड्डी जिसकेपासहो उसपर दुर्दृष्टिका प्रभाव न हो इसका चुंगल प्रसूति की पीड़ा में स्त्रीकी रानपर बांधना या योनिमें धूनीदेना बहुत गुणदायक है सूरत इसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३२९

(तैहूज)अर्थात् तैहू इसकामांस पुष्टकर्त्ताहै और वीर्य के अधिक करने वाला भी है सूरत उसकीयह है ॥

तसवीर नम्बर ३३०

(असफूर) अर्थात् गोरय्या यहपक्षी दोप्रकारका होताहै एक जो दानाचुनता दूसरा मांस खाता है और यह टिड्डियो का शिकार करतेहैं यह पक्षी अपनी घोसला बस्ती में बहुधा छत्तो में बनाता क्योकि शिकारी पक्षियोसे भयमान रहताहै जो शहर उजाड़होतो यहपक्षी कभी वहां न रहेगा इससे और सर्पसे शत्रुताहै जब साप इसके बच्चोके खानेको इसके घोसलेमें जाना चाहताहै तो यह चिल्लाताहै और इसके साथी शब्दसुनकर इकट्ठेहोतेहैं और चिल्लातेहै बहुधा सर्प को अवकाशपाकर घायल करतेहैं यदि घावहोगया तो सर्पकीमृत्यु है क्योकि सर्प के घावपर मक्खी और च्यूंटी इकट्ठी होजातीहैं और सर्पमरजाताहै और यहपक्षी गधेका भी शत्रुहोती है क्योकि गधेकेशब्दसे इसकेअंडे खराबहोतेहैं सो यहपक्षी अपनी चोंचसे गधेको घायल करता है उसपर मक्खी और मच्छड़ एकत्र होतेहैं और यहपक्षी बीमारी में गधेका मांस खाकर आरामपाता है इसके बराबर दूसरे किसी जीवधारी मे मैथुनशक्ति नहींहै इसी कारण इसकी आयु थोड़ीहोती है इसकामांस बलवीर्य बढानेवाला और वातघ्नहै क्योकि गर्महै इसका अण्डाखाना मैथुनकीइच्छा का प्रेरकहै इसकाअण्डा पृथ्वीमें गाड़कर फिर निकालकर नासूर पर लगानागुणदायकहै इसकीबीट आंखमेंलगाना रतोंधी दूरकरे जो मद्यमेंडालकर किसीकोपिलावे मूर्च्छितहोकरगिरपड़े सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३१

(उकाब) यह शिकारी पक्षीहै धरतीके छोटे २ पक्षियों का शिकार करताहै जैसे खरगोश और लोमड़ी और जिसका शिकार करता है केवल उसका कलेजा खा लेता है क्योकि उसका कलेजा उसके रोगको गुणदायक है किसी समय इसपक्षी की चोंच लम्बी हो;

जाती है इससे शिकार से हार मानकर मरजाताहै साहबुलफ़लाहा कहताहै कि चील उक़ाब और उक़ाब चील होजाता है जाहिज़ का वचनहै कि उक़ाबके चुंगलमें इतना बलहै कि भेड़ियेको फाड़डालता है और सदैव काल सेनाओं के साथ रहताहै कि निर्जीव मांसमिले शिकारियों का वाक्यहै कि उक़ाब अपने शिकारको डराता नहीं है किन्तु आपही किसी ऊंची जगह पर जा बैठताहै जब देखताहै कि कोई शिकार लियेउड़ा आताहै उसके सामने कूदताहै और शिकार उसका छीन लेताहै और जब शिकारी जानवर उक़ाबको देखताहै उसका तो उद्योग नहीं करता किन्तु अपने छुटनेका उपाय करता- है और अपने शिकारको उक़ाब के वास्ते छोड़ देता है कहते हैं कि जब उक़ाब बूढ़ा होता है उसके बच्चे उसको पालते हैं जब उसकी आंखें बुढ़ापे से अन्धी होजाती हैं या कमजोर होती हैं तोआकाश की ओर यहांतक उड़ता है कि सूर्य्य की गर्मी से उसके पर जल जाते हैं उस समय नीचे गिर पड़ता है जो पृथ्वी पर गिरा तो मरगया और जो दरियामें गिरा तो कई बार गोते लगाता है और जब दरिया से निकलताहै तो ईश्वर की इच्छासे युवा होजाता है बुढ़ापे के चिन्ह नहीं रहते और पर भी निकल आते हैं इसकी आयु बड़ी होतीहै और बहुत दिनों तक जवान रहता है और ऐसा तेज़ पर होताहै कि जो सुबह इराक़में है तो शामको यमनमें पहुँचताहै उक़ाबके बच्चेको भी बहुत स्वाभाविक अभ्यास होताहै बहुधा इसके घोंसले पहाड़ की चोटियों पर होते हैं और वह पहाड़ ऐसे तिरछे होतेहैं कि जो उनके बच्चे तनक भी घोंसलेमें हिलें तुरन्त पहाड़से नीचे आगिरें सो इसके बच्चे इसी परीक्षा के ज्ञानसे नहीं हिलते जबतक कि सब पर न निकल आवें और उड़नेकी शक्ति भलीभांति न आवे इसीकारण अरबके निवासियोंका वचनहै कि अमुकमनुष्य उक़ाबके बच्चेसे भी अधिक अभ्यासित है कदाचित् कोई पालूपक्षी अर्थात् मुर्ग़ चकोर और कबूतर आदि के बच्चे जंगली पक्षियों के घोंसले में रखदे तो तुरन्त हिलने में गिरपड़ते हैं विचित्रता यह है

कि उक़ाब का बच्चा जबतक कि उसके पर निकल कर ठीक और बरावर न होजावे नहीं हिलता और जानता है कि हिलनेमें गिर पड़ूंगा(गुण) कहतेहैं कि इसका भेजा हरी मूलीके रसमें गर्महम्माम के अन्दर बैठकर पीना जातुल जनव अर्थात् पीठकी पीड़ाको गुण- दायकहै और नेत्रकी ज्योति भी अधिक करताहै और जिन स्त्रियां की छातियोंमें दूध जमगयाहो मर्दन करें दूधजारी होजाय इसका लहू सुखाकर पीले हड़के साथ पीसकर सुरमा बनाकर लगाना धुंधले को उपयोगी है इसकी चरबी तिलोके तेलमें पिघलाकर पांव की हड्डीकी पीड़ा पर लगाना उपयोगी है और बन्दरकी पीडा को गुण दायक है इसकी हड्डीकी मींगी शहद और एलवे के साथ नासूरके लियेलाभकारीहै दो तीन बेरमें अच्छा करे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८२

(अक़अक) एकप्रकारकाकव्वा फ़ारसी में इसको शमीर दुबा- अका और कुन्दश कहतेहैं यहवड़ा चोर होताहै चांदी सोनेके गहने और जवाहिरकी कोईचीज़ या सुन्दर वस्तुको देखता है तो उठा- लेजाताहै और दूसरी जगह फेंक देताहै और छत आदि के नीचे छायामे घोसला वनाताहै और चिनारके पत्तोको अपने घोसले के गिर्द रखताहै कि चमगादर उसके अण्डे बच्चा का इरादा न करे क्योंकि बहुधा यह अपने अण्डे बच्चोंकोअकेला छोड़कर चलाजाताहै इसका भेजा पिघलाकर लकवे और फालिज वालेकी नाकमें टप- कावें तो तुरन्त छींक आवे और रोग नाशहो इसका लहू छाया मे सुखाकर गुलाबमेंपीना वाचालता उत्पन्न करताहै और जहां कांटा या तीर गडके टूटजाय वहांइसकी चरबी मलदें तो सुगमता पूर्वक निकल आवे इसकी हड्डीकी मींगी लड़को को खिलावे वाचालता उत्तमहो इसके परकी राख च्यूंटीके बिलमें छोड़नेसे च्यूंटियां भाग जातीहैं इसकेअण्डेकी ज़र्दीका हम्मामसे निकलकर सुरमालगाना रतौंधीको गुण दायकहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३३३

(उनक़ा) अर्थात् सीमुर्ग़ इसका सम्पूर्ण पक्षियों से शरीर बड़ा होताहै कि हाथी और भैंस को उठालेजाताहै कहते हैं कि पूर्व समयमें यह मनुष्यों में रहताथा जब इसकी दुष्टता यहांतक पहुंची कि एकदिन एक दुलहिनको जो भूषणों से अलंकृत थी उठालेगया सो एक पैग़म्बरके चेलेने शापदिया तो ईश्वरने उसे मध्यरेखाकेनीचे समुद्रकेकिसी टापूमें डालदिया कि मनुष्यकी ओर न पहुंचसके उस द्वीपमें हाथीगैंड़े और भैंस आदि बहुतसे पशुहैं परन्तु उनक़ा उनका शिकार नहीं करता क्योंकि यह सब उसके आधीन हैं जब इनमें से कोई बाग़ी होता है तो उससमय उसका शिकार करताहै नहीं तो बड़ी मछली या अज़दहे को शिक़ार करता है और अपना जूठा अपने आधीनी अन्य पशुओं को खिलाता है और आपऊंचे बैठकर उनके खाने का तमाशा देखता है उसके उड़ने के समय परों की खड़खड़ाहट से ऐसा मालूम होताहै कि मानो बहाव आताहै कहते हैं कि इसकी उमर अठारह सौ वर्षकी होतीहै जब पांचसौ वर्षकी आयु होतीहै तब जुफ़्ती करताहै अण्डादेनेके समय इसको मादाको बड़ा कष्ट होताहै उस समय इसका नर दरिया का पानीचोंच में लाकर हुकना करताहै और इस उपाय से अण्डा सुगमता पूर्वक निकलता है सो नर अण्डेकी रखवाली करताहै और मादानिकल कर शिकार में जाती है और एकसौ पचीस वर्ष में उस अण्डे से बच्चा निकलता है जब वह बच्चा जवान होता है तो जो वह मादा हुआ तो उसके मां बाप लकड़ियां इकट्ठी करके परस्पर अपनी २ चोंच को रगड़तेहैं और उस रगडने से आग निकलतीहै और वह लकड़ियां जलने लगती हैं उससमय मादा उस आग में जलकर राख होजाती है और वह नर अपने मादा बच्चे से जुफ़्ती खाता है कदाचित् बच्चा नर हो तो उसका बाप यूंही जल जाता है और वहीनर बच्चा उसके स्थानापन्न होकर अपनी मां से जुफ़्ती खाता है इसके सिवाय बहुतसी कहानियां सीमुर्ग़ की हैं परन्तु

उनका विश्वास न होने से वर्णन नहीं कीगई सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३४

शराब अर्थात् एक प्रकारका कव्वा महवड़ा सफ़र करनेवाला है और सुबहको सब पक्षियोंसे पहिले उड़ता है यह पक्षी अखरोट को बहुत पसन्द करताहै किन्तु उसका सचय करताहै और अपनी चोंचमें अखरोट में छेद करताहै और मनुष्यों की आंख फोड़नेका इरादा करता है और भूखे होनेपर मारने सेभी भागता नहीं है और बड़े २ जानवरों से नहीं डरता यहां तक कि ऊंट और बैल की पीठ पर बैठता है और कछुवे की पीठमें चोंचसे छिद्र करता है और उसका मांस खाताहै और जब ऊंटकी पीठमें घाव होकर उसमें वदगोश्त होजाताहै तो लोग उसको जंगलमें छोड़ आतेहैं क्योंकि कव्वा उसके वदगोश्त को खालेताहै इसके नरके मरनेपर मादा दूसरा नर नहीं करती और मादाके मरनेपर नर दूसरी मादा नहीं करता जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै सपेदरंग विनापर के होताहै इसीसे मां डरतीहै और उसको छोड़ देती है सो ईश्वर मक्खियों को उसके कंठमें पहुंचाताहै जिसको खाकर बच्चा काला होताहै और पर और बाज़ू निकालता है मकहूलका वचनहै कि हज़रत दाऊदका आशीर्वादथा कि ईश्वर उन चिड़ियोंको जो शिकार नहीं करतीहैं घोंसलेमेंही भोजन पहुंचाताहै तो जब वहकाला और बड़ा होजाताहै उसकी मा आनकर पालतीहै और मक्खी और मच्छड़ उसमें दूर करतीहै खलफ अहमर का वचनहै कि मैंने कव्वे के बच्चेको देखा कि कोई और सूरत बहुतबुरी उससे न देखी शिर बहुतबड़ा बदन छोटा चोंच लंबी पंखछोटे २ बेपरके जवयह बीमार होताहै मनुष्यकी विष्टाखाकर आराममें पाताहै बाज़ा कव्वा तोतेसेभी बढ़कर बातें साफ़ २ करताहै (गुण) इसकी दोनों आंख और उल्लूकी आंख सुखाकर जिसजाति के बीचमें जलावें सबमें विरोध होजाय बलैनासका वचनहै कि इसके दिलको मनुष्य सुखाकर पानीमें पीसकर गरमी की ऋतुमें पिये बहुत तपनमें भी प्यास

तसवीर नम्बर ३३३

(उनक़ा) अर्थात् सीमुर्ग़ इसका सम्पूर्ण पक्षियों से शरीर बड़ा होताहै कि हाथी और भैंस को उठालेजाताहै कहते हैं कि पूर्व समयमें यह मनुष्यों में रहताथा जब इसकी दुष्टता यहांतक पहुंची कि एकदिन एक दुलहिनको जो भूषणों से अलंकृत थी उठालेगया सो एक पैग़म्बरके चेलेने शापदिया तो ईश्वरने उसे मध्यरेखाकेनीचे समुद्रकेकिसी टापूमें डालदिया कि मनुष्यकी ओर न पहुंचसके उस द्वीपमें हाथीगैंड़े और भैंस आदि बहुतसे पशुहैं परन्तु उनका उनका शिकार नहीं करता क्योंकि यह सब उसके आधीन हैं जब इनमें से कोई बाग़ी होता है तो उससमय उसका शिकार करताहै नहीं तो बड़ी मछली या अज़दहे को शिकार करता है और अपना जूठा अपने आधीनी अन्य पशुओं को खिलाता है और आपऊंचे बैठकर उनके खाने का तमाशा देखता है उसके उड़ने के समय परों की खड़खड़ाहट से ऐसा मालूम होताहै कि मानो बहाव आताहै कहते हैं कि इसकी उमर अठारह सौ वर्षकी होतीहै जब पांचसौ वर्षकी आयु होतीहै तब जुफ़्ती करताहै अण्डादेनेके समय इसको मादाको बड़ा कष्ट होताहै उस समय इसका नर दरिया का पानीचोंच में लाकर हुकना करताहै और इस उपाय से अण्डा सुगमता पूर्वक निकलता है सो नर अण्डेकी रखवाली करताहै और मादानिकल कर शिकार में जाती है और एकसौ पच्चीस वर्ष में उस अण्डे से बच्चा निकलता है जब वह बच्चा जवान होता है तो जो वह मादा हुआ तो उसके मां बाप लकड़ियां इकट्ठी करके परस्पर अपनी २ चोंच को रगड़तेहैं और उस रगड़ने से आग निकलतीहै और वह लकड़ियां जलने लगती हैं उससमय मादा उस आग में जलकर राख होजाती है और वह नर अपने मादा बच्चे से जुफ़्ती खाता है कदाचित् बच्चा नर हो तो उसका बाप यूंही जल जाता है और वही नर बच्चा उसके स्थानापन्न होकर अपनी मां से जुफ़्ती खाता है इसके सिवाय बहुतसी कहानियां सीमुर्ग़ की हैं परन्तु

उनका विश्वास न होने से वर्णन नहीं कीगई सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर २३४

शराब अर्थात् एक प्रकारका कव्वा, यहबडा सफर करनेवाला है और सुबहको सब पक्षियोंसे पहिले उड़ता है यह पक्षी अखरोट को बहुत पसन्द करताहै किन्तु उसका सचय करताहै और अपनी चोचमें अखरोट में छेद करताहै और मनुष्यों की आंख फोड़नेका इरादा करता है और भूखे होनेपर मारने सेभी भागता नहीं है और बड़े २ जानवरों से नहीं डरता यहां तक कि ऊट और बैल की पीठ पर बैठना है और केकुवे की पीठमें चोंचसे छिद्र करता है और उसका मांस खाताहै और जब ऊटकी पीठमें घाव होकर उसमें बदगोश्त होजाताहै तोलोग उसको जगलमें छोड़ आतेहैं क्योंकि कव्वा उसके बदगोश्त को खालेताहै इसके नरके मरनेपर मादा दूसरा नरनहीं करती और मादाके मरनेपर नर दूसरी मादा नहीं करता जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै सपेदरंग बिनापर के होताहै इसीसे मां डरतीहै और उसको छोड़ देती है सो ईश्वर मक्खियों को उसके कठमें पहुंचाताहै जिसको खाकर बच्चाकाला होताहै और पर औरबाजू निकालता है मकहूलका बचनहै कि हज़रत दाऊदका आशीर्वादथा कि ईश्वर उनचिड़ियोंको जो शिकार नहीं करतीहैं घोंसलेमेंही भोजन पहुंचाताहै तो जब वहकाला और बड़ाहोजाताहै उसकी मां जानकर पालतीहै और मक्खी और मच्छड़ उससे दूरकरतीहै खिलफअहमर का बचनहै कि मैंने कव्वे के बच्चेको देखा कि कोई और सूरत बहुतबुरी उससे न देखी शिर बहुतबड़ा बदन छोटा चोंच लबी पंखछोटे २ बेपरके जबयह बीमार होताहै मनुष्यकी विष्ठाखाकर आराम पाताहै बाज़ाकव्वा तोतेसेभी बढ़कर बातें साफ़ २ करताहै (गुण) इसकी दोनो आंखें और उल्लूकी आंख सुखाकर जिसजाति के बीचमें जलावे सबमें विरोध होजाय बलैनासका बचनहै कि इसके दिलको मनुष्य सुखाकर पानीमें पीसकर गरमी की ऋतुमें पिये बहुत तपनमें भी प्यास

मालूमनहो जो इसका पित्ता शराबमें डालकरपियें पहले प्यालेमें उन्मत्त होजायँ जो जंगली कव्वेकाशिर पकाकर बहुत दिनोंकी शिरपीड़ावाले को खिलावें गुणदायकहै जो इसका रुधिर शराबके साथ पीवें फ़िर कभी शराबकी इच्छानहो किन्तु उसकाबड़ा शत्रु होजाय इसकी बीट रेशमी रंगीन कपड़ेमें बांधकर खांसीकी बीमारी में हाथमें बांधें आराम पावें सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३५

(गज़ीबक़) यह जानवर दरियाई परिन्दों से हैं और बोलने वालेहोतेहैं यह वे पक्षीहैं जो दरियाकिनारे रहते हैं और जब वायु ख़राब होजातीहै तो वहांसे शहरोंमें आतेहैं उससमय अपने समूह मे कोतवाल और चौकीदार नियत करते हैं कि सबकीरक्षा अच्छी तरहसेहो उड़नेके समय बहुत ऊंचे होजातेहैं कि कोई शिकारीपक्षी इनसे न बोलसके जब बादल आकाशपरहो या रात्रिको बहुत अंधेराहो या पृथ्वीपर भोजन के लिये नीचे उतरें तो चुपरहें और कुछभी न चिल्लावें कि शत्रुको मालूमनहो जबसोनेकी इच्छा करते हैं अपनें शिरको पंखके नीचे छिपातेहैं इस दृष्टिसे कि शिरकेलिये बहुतसी आफतें हैं और यहजोड़ सर्वोत्तमहै जो इसमें कोई उपद्रव हो सम्पूर्ण शरीरमें हानिहो जबयह जानवर सोते हैं तो एकपांव धरतीपर रखतेहैं और एक उठाये रखतेहैं क्योंकि यहभय लगा रहताहै कि जोदोनोंपैर पृथ्वीपररक्खेंगे तो वेगसेनिद्राआजायेगी इनका रखवाला और कोतवाल कभी नहीं सोता और अपना शिर पंखके नीचेनहीं रखता किन्तुहर ओर दृष्टिलगाये रहताहै और जब शत्रु दिखाई देताहै तुरन्त चिल्लाकर अपने समूह को ख़बर देताहै (गुण) इसकी बीटमें बत्ती भिगोकर नाकमें रखना हरघाव को जो नाकके अंदरहो गुणदायकहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३३६

(गव्वाज़) इसको फ़ारसीमें माहीख़्वार कहतेहैं बुसरे के शहरोंमें दरिया किनारे होताहै इसके शिकार का यहहालहै कि पानी

उनका विश्वास न होने से वर्णन नहीं कीगई सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर २३४

गराब अर्थात् एक प्रकारका कव्वा,यहबड़ा सफ़र करनेवाला है और सुबहको सब पक्षियोंसे पहिले उड़ता है यह पक्षी अख़रोट को बहुत पसन्द करताहै किन्तु उसका सचय करताहै और अपनी चोंचमें अखरोट में छेद करताहै और मनुष्यों की आंख फोड़नेका इरादा करता है और भूखे होनेपर मारने सेभी भागता नहीं है और बड़े २ जानवरों से नहीं डरता यहां तक कि ऊंट और बैल की पीठ पर बैठता है और कछुवे की पीठमें चोंचसे छिद्र करता है और उसका मांस खाताहै और जब ऊंटकी पीठमें घाव होकर उसमें बदगोश्त होजाताहै तो लोग उसको जंगलमें छोड़ आतेहैं क्योंकि कव्वा उसके बदगोश्त को खालेताहै इसके नरके मरनेपर मादा दूसरा नरनहीं करती और मादाके मरनेपर नर दूसरी मादा नहीं करता जब इसका बच्चा अंडेसे निकलताहै सपेदरंग बिनापर के होताहै इसीसे मां डरतीहै और उसको छोड़ देती है सो ईश्वर मक्खियां को उसके कंठमें पहुंचाताहै जिसको खाकर बच्चाकाला होताहै और पर और बाज़ू निकालता है मकहूलका बचनहै कि हजरत दाऊदका आशीर्वादथा कि ईश्वर उनचिड़ियोंको जो शिकार नहीं करतीहैं घोसलेमेंही भोजन पहुंचाताहै तो जब वहकाला और बड़ाहोजाताहै उसकी मा आनकर पालतीहै और मक्खी और मच्छड़ उससे दूरकरतीहै खिलफ़अहमरका बचनहै कि मैंने कव्वे के बच्चेको देखा कि कोई और सूरत बहुतबुरी उससे न देखी शिर बहुतबड़ा बदन छोटा चोंच लंबी पंखछोटे २ बेपरके जबयह बीमार होताहै मनुष्यकी विष्टाखाकर आरामपाताहै बाज़ाकव्वा तोतेसेभी बढ़कर बातें साफ़ २ करताहै (गुण) इसकी दोनों आंखें और उल्लूकी आंख सुखाकर जिसजाति के बीचमें जलावे सबमें विरोध होजाय बलेनासका बचनहै कि इसके दिलको मनुष्य सुखाकर पानीमें पीसकर गरमी की ऋतुमें पिये बहुत तपनमें भी प्यास

दरख़्तभी नरमादा होताहै और जब नरकी हवा मादाके दरख़्ततक पहुंचतीहै तब फलदार होताहै और यहपक्षी पंद्रह अंडे देताहै और दोजगह रखकर एकजगह नर सेता है और दूसरी जगह मादा सेतीहै यहजानवर बस्तीमें जुप्ती नहींखाता और सुन्दर स्वरोंको प्यार करताहै बहुधा अच्छे शब्दसे यहांतक विह्वल होताहै कि गिर जाताहै फिर शिकारी लोग उसको पकड़ लेतेहैं इसका शिर आंखमें लगाना ढलकाको लाभ कारक है हरमहीने की पहली तारीखमें इसकापित्ता नाकमें छोड़ना समझ बढ़ाताहै इसकापित्ता खजल एकप्रकारका चकोरहोताहै उसकी बीट और अनबेधे मोती सब बराबर लेकर पीसकर सुरमा लगावें आंख की सपेदी जाती रहे इसका कलेजा भूनकर लड़कोंको खिलाना मिर्गी के रोगको दूर करताहै और इसका रुधिर नेत्रोंमें लगाना घाव और रतौंधी को लाभदायक है इसका मांसखाना पुष्ट करताहै और जलंधरकी बीमारी जाती रहतीहै और कामदेव के बढ़ानेवाला भी है और इसका अंडा सिरकेमे मिलाकर जगली प्याजके साथ कच्चा खाना विषको गुणकारक है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ५३९

(क़बरा) अर्थात् हुदहुद सुन्दर स्वरोंको प्रिय रखताहै इसके शिरपर मोरकी तरह एकचोटी होतीहै और बड़ा चैतन्य होताहै जहां उतरताहै दाहें बायें देखा करताहै और बहुत कठिनतासे शिकार होताहै इसका घोंसला अति विचित्रतासे बना होताहै अंगूरकी तीनलकड़ियोंसे घोंसला बनाताहै और घास उत्तम और सुंदर लाताहै और उनलकड़ियों के बीचमें रखताहै और उसमें बच्चा देताहै और घाससे छिपाताहै कि शिकारी पक्षी न देखपाये इसका मांस भूनकर खाना लकवेको गुणदायक है स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ५४०

(क़ता) अर्थात् कतू जिसको लवा कहते हैं इसपक्षी का नाम इसके शब्दपर रक्खा गया है क्योंकि यहकता २ कहा करता है

में बड़ी देरतक गोता लगाताहै और मछली को पकड़ के बाहर निकालताहै विचित्रता यहहै कि शिर झुकाये पानीमें रहताहै और जलके वेगसे नहीं हिलता कोई कहतेहैं कि हमने माहीख्वारपक्षी को डुब्बी लगाकर मछली लाते देखाहै और कव्वेने इसकापीछा किया और उसपर प्रबल होकर मछली लेगया सो यहपक्षी दूसरी बार डुब्बी खाकर मछली लाया और कव्वेके साम्हने गया जब कव्वा मछली खानेलगा यह उसकी टांग पकड़के दरियामें लेगया और कव्वेको पानीमें मारके आप आनदसे निकल आया इसका लहू आदमी के जलेहुये वालोंमें मिलाकर जिसको खिलाये प्रीति करने लगे और इसकी हड्डीमें भी यहीगुण है सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३३७

(फ़ाख़्ता) प्रसिद्धहै इसेलोग शुभजानते हैं इसके शब्दसे सर्प भागतेहैं एककहानी है कि किसी धरतीपर सर्प बहुत हुये और उन्होंने उपद्रव मचाया लोगोंने विचारा कि फ़ाख़्ता मँगानी चाहिये और इस विचारसे सांपोंसे छूटे फ़ाख़्ता और कबूतर के लहू और ज़फ्‌तनामीगोंद और कतराननामी तैलको जलाकर धुंआँकरें जिस की नाकमें गंध पहुंचे निद्रानाश का रोग होजाय सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३३८

(क़ौह) अर्थात् चकोर यह सुन्दर विचित्र चित्रित होता है पहाड़ोंमें रहताहै जब शिकारी इसके पकड़ने की इच्छा करताहै यह बेचारा अपनाशिर बरफके अदर छिपाताहै इसविचारसे कि जिस तरहमैं शिकारीको नहीं देखताहूं वैसाही शिकारीभी मुझको न देखताहोगा सो शिकारी सुगमता पूर्वक सबको पकड़ लेताहै इस पक्षीके नर बड़े लज्जा युक्त होतेहैं जो दो नर एकमादा पर लपकें बड़ी लड़ाईहो जबतक कि एक प्रबल और दूसरा भाग न जाय उससमय मादा प्रबल चकोरके आधीन होतीहै विचित्रता यहहै कि जब यहपक्षी बोलताहै और उसका शब्द मादाके कानमें पहुंचता है तुरन्त उसके पेटमें अंडा पैदा होजाताहै जैसा कि छुहारे का

से दो जानवर उत्पन्नहोतेहैं और उनके पर निकलतेहैं अन्तको बड़े होकर क़ोक़नस होजाते हैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३४३

(करकी) अर्थात् कुलंग हिन्दीमें कोंचकहते हैं इनमें बड़ीसम्मति होतीहै शायद कोई किसीका शत्रुहो और इनमें एक सर्दार होताहै जिसके सब आधीन होते हैं और बारी २ एक २ उनका रखवाला होकरइनकेगिर्दफिराकरताहै और रक्षाकरताहै और शत्रुकोदेखकर ऊंचे शब्दसे अपने साथियों को इत्तिला देताहै रात्रिको ऐसी जगह जातेहैं जो बस्ती से दूर होतीहै और अच्छी तरह पांव धरती में जमाकर नहीं सोते कि निद्रा का वेग न हो जाहिज़ कहता है कि कुलंग दोनों पांव पृथ्वी पर रखकर नहीं खड़ा होताहै इस भय से कि जो दोनों पावँ धरती पर रक्खूंगा तो ऐसा न हो कि बोझके कारण पृथ्वी के नीचे धँसजाऊं (गुण) इस की आंखको घिसकर सुरमा करना निद्रादूर करता है यदि इसका पित्ता मरजनूंजोश अर्थात् मरवाके साथ कजली करके जिसतरफ़ लक़्वा हो उस ओरके नाकके छिद्रमें डालें और दूसरी ओर अखरोटका तेलडालें और सातदिनतक अँधेरे मकान में बैठावें तो लक़्वादूर होजाय इसका मांस चरबी समेत पकाकर बहरे के कान में डालें अच्छा होजाय और भेजा सिरके और जंगली प्याजकेसाथ हम्माम में खाना तिल्ली के रोगी को गुण दायक है इसका मेदा सुखाकर चनोंके पानीके साथखावे तो अण्डकोषकी पीड़ा और फुकने को गुणदायक है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३४४

(करवान) यह एक पक्षी है जिसको फ़ारसीमें चोबीनिया कहते हैं इसका मांस चरबी समेत पकाकर खाना बहुतही वीर्य करता है यहां तक कि मनुष्य बेचैन होजाय सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३४५

(लकलक़) इसका भी स्वरूप लवासे मिलताहै इसका भोजन

अरब कहताहै कि अमुककता अर्थात् सचकहनेवालाहै और अधिक तरयहभी वचनहै कि अमुककता अर्थात् सीधा मार्ग जानता है और यह जानवर जंगलमें अंडेदेके पृथ्वीमें गाड़ताहै और आपगुप्त होजाताहै और कई दिनके पीछे आकर वहां अंडासेताहै इसपक्षी की चाल उत्तम होतीहै यहांतक कि इसकीगतिसे सुन्दरस्त्री पुरुषों की चालका दृष्टान्त देतेहैं इसका घोंसला पृथ्वीपर बहुत छोटा घासकेअन्दर होताहै पैग़म्बरसाहब ने दृष्टान्तकहाहै कि जो मनुष्य ईश्वरकेवास्ते मसजिद बनावे चाहेवह कतापक्षी के घोसलेकी तरह छोटीहो तो ईश्वर उसकेवास्ते बिहिश्तमें घरबनावेगा (गुण) इसका रुधिर शरीरमें मलना बालखोरेको गुणदायकहै यदि लिङ्गपरमलै बीर्य अधिककरे इसकामास जलन्धर को लाभकरे और प्रकृति के उपद्रव और कलेजेके पकड़नेको सुधारे और इसकोजलाकर तेलमें मिलाकर जिसजगह बाल जमानाचाहै लगावें जल्दी निकलआवें इसके पेटके जोड़ उनस्थानोपर पीसकर लगाना जहां कि हड्डियां इधरउधर होगईहों तो उन अस्थियोंको अपने मुख्यस्थानमे लाता है यदि नेत्रमेंलगावें घावको गुणदायक और रतौंधीको उपयोगीहै सूरतयहहै ॥ तसवीर नम्बर ३४१

(कुमरी) टोटरू प्रसिद्ध पक्षीहै बहुधा लोग इसको पालते हैं कहतेहैं कि इसकीमादा नरके मरनेपर दूसरे नरकेपास नहींजाती और सर्वदा अपनेमरेहुये नरको यादकरतीहै यदि कुमरीका अण्डा फ़ाख़्ताके नीचेरक्खें या फ़ाख़्ताकाअण्डा कुमरीकेनीचेरक्खे हरदशा में उसअण्डेसे कुमरीहीका बच्चा निकलेगा सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३४२

(कोकनसअरज) यहजानवर हिन्दमें अद्भुतहोताहै तोहफतुलगरायबका निर्मापक लिखताहै कि जब यह जानवर जुफ्ती की इच्छाकरताहै तो पहले नर और मादा लकड़ीइकट्ठीकरके उसपर बैठकर जुफ्तीकरतेहैं और फिर परस्पर चोंचरगड़के अग्निनिकालते हैं और उसआगमें जलजातेहैं और जब मेहबर्षताहै उसीमट्टीमें

समय आताहै इसकानंतर हिन्दुस्तानमें जाकर एकप्रकारका दरियाई पत्थर लाकर मादाके नीचे रखताहै कि सुगमतासे प्रसूवहो बीमारी में मनुष्यका मांस खाकर आराम पाताहै जबइसकी ज्योतिमें कुछ उपद्रव होता है तो मनुष्यके पित्तेको आंखोंमें मलकर आरामपाता है और इसको गुलाबकी सुगंध हानि करतीहै किन्तु सम्पूर्ण प्रकार कीसुगन्धनहींसहसक्ताहै क्योंकि निर्जीव जीवधारियोंकेखानेवाला है दुर्गन्धिकी रुचि रखता है लश्करोंके साथ मुरदार जीवोंके लोभ से रहताहै और हज्ज करने वालेके साथभी रहताहै क्योंकि बहुधा हज्ज करनेवाले बेकाम चारपायों को जंगलमें छोड़ देते हैं इसका पित्ता कानमें टपकाना बहरे को अच्छा करता है जो सातबेर सुरमेकी तरहपर लगावें कीचड़ आंखकी दूर करे और पानी उतरने को बंदकरे इसके मांसको नमक वरश (रूमीदवा) जीरा और शहद के साथ खाना विषको दूरकरे और चरबी इसकी बहरे के कानमें डालना गुणदायक है सूरत यह है ॥

(लगामा) अर्थात् शुतरमुर्ग यह कई पशुओंके संसर्गसे उत्पन्न होताहै इसकी गर्दन और पांव ऊंटसे मिलते हैं और चोंच और पंख पक्षीकेसे होते हैं इसके पक्वाशय में इतनी गर्मी होती है कि कंकड़ पत्थर जो पेटमें हो पच जाता है और इसमें सूंघने और सुनने की शक्तिबहुत तीक्ष्ण होतीहै और पचनेकी शक्तिकी तो यह दशाहै कि जो सेरभरका पत्थरभी आगमें लालकरके उसके आगे डालदें तो यह खाले और उसके मुंह और पेटको कुछहानि न पहुंचे और वह पचजाय और कोई जानवर दौड़नेमें इसके आगे नहीं जासक्ता जब गर्मीमें छुहारा लालहोता है तो इसकी पिंडलीभी सुर्खहोती है जब अंडा देताहै और गिन्तीमें बीस होजातेहैं तो उनके तीनभाग करता है एक भाग सूर्यके साम्हने रखताहै दूसरा पृथ्वीमें गाड़ताहै एक अपने नीचे रखता है जब अपने नीचेके अंडोंके बच्चे निकलते हैं तो जो अंडे सूर्यमें रक्खेहैं उनको तोड़कर बच्चोंको खिलाताहै कि उन

केवलसर्प है इसके दोघोंसले होते हैं एकठंढेदेशमें दूसरा गर्मदेशमें इसको रबीकी फ़सलपसन्द है और अपना घोंसला ऊंचे बनाता है और मज़बूत इतना होता है कि ख़राब करने से ख़राब नहीं होता इसकी बुद्धिमानी में शेख़रईसका बचन है कि महामारी पर यहपक्षी वहांका रहना छोडदेताहै इससे सम्पूर्ण कांटेदार कीड़े मकोडे आदि भागते हैं इसका अंडा ख़िज़ाबके वास्ते उत्तम है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ६४६

(मालिकुलहज़ीं) अर्थात् बगला इसकी गर्दन और पांवलम्बे होते हैं जाहिज़ कहता है कि यह जानवर नहरों के क़िनारे होता है और जो किसी कारण नहर का पानी कमहोजाता है तो अति चिन्तित होता है और फिर जल इस भयसे नहीं पीता कि जो मैं पीलूंगा तो पानी कम होजायेगा और लोग प्यासे रहेंगे यहां तक कि आपही प्याससे मरजाता है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ६४७

(मका) इसको फ़ारसीमें शबानगरीब कहते हैं जंगलमें रहता है और विचित्र घोंसला बनाता है इसको सर्प से शत्रुता होती है क्योंकि वह उसके बच्चोंको खालेता है सालिम के पुत्र हुशामका वचन है कि एक सर्प उसके बच्चोको खाताथा मका चिल्लाता था सर्प ने बच्चे छोड़कर इसकी ओर मुखखोला इसने उसके मुखमें एक कांटा उसी जगहसे तोड़कर डालदिया सांप उसी समय मर गया सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ६४८

(नसर) अर्थात् करगस यहपक्षी भोजनका लोभी होताहै जब मुरदार पाताहै इतना खाताहै कि उडनहीं सक्ता कहतेहैं कि हज़ार बर्षकी आयुपाता है बहुधा इसके घोंसले ऐसी जगह होते हैं जहां किसी जीवधारीकी पहुंच नहोसके कहते हैं कि जब इसकी मादा अंडे सेतीहै तो दलब अर्थात् चिनारके पत्ते लाकर घोंसलेमे रखती है कि चमगादड़से उसके अंडेको दुःखनपहुंचे जब बच्चा पैदा होनेका

रूपका होताहै) पर बाँधेंतो यह फोड़ा जल्दी गलजावे (गुण)इसका ताजा शिरपर बांधना शिर पीड़ाको दूरकरता है बलैनासका निश्चयहै कि इसका शिर सुखाकर तेलके साथ मुखपर उवटन करना सृष्टिकी दृष्टिमें प्रियरखता है इसका शिरहाने रखना निद्रा नाश करता है और पास रखना भूली हुई बातको याद दिलाता है यदि कुष्टीकी गर्दनमें बांधें गुणकरें इसकी जिह्वा निकट रखना शत्रु पर प्रबल करता है इसके दिलका यंत्र बनाना मैथुनकी इच्छा अधिक करता है यदि भूनकर एकरोटीके साथ दोमनुष्य खावें उन दोनोंमें प्रीति हो और इसका पित्ता अर्द्धांग रोगी को मलें गुणकरें इसका दाहना पंख शिरहाने के नीचे रखना निद्राका वेग करता है और बाँयां रखना नींद दूरकरताहै जो इसको कबूतरों के खानेमें जलावें सब कबूतर भागजावें इसके मांस को सुखा कर आटे में मिलाकर रोटी पकावें और जिसको खिलावें वह मित्रहोजाय जो इसकीहड्डी को घरमें धुआँकरें सम्पूर्ण दुःखदायी कीड़ेमकोड़े मरजावें जो इसके नख जलाकर उसकी राख जिस स्त्री को खिलावें और उससे मैथुन कियाजाय तुरन्त गर्भवतीहो यदि हुदहुदको इस्माईलनामी मनुष्य के दरवाज़ेपर मारें और उसके रुधिरको शक्कर और उबटन के साथ मिलाकर मलें सम्पूर्ण मनुष्य उसके मित्र होजायँ सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५१

(बतबात) इसको फ़ारसीमें बालवाया और हिन्दीमें अबाबील कहते हैं बलैनासका बचन है कि जोकोई अबाबील पानीमें डूबकर मरजाय जोमनुष्य वह पानीपीवे एकमहीनेतक नींदनआवेजो किसी मनुष्य के बाल किसी अबाबील की गर्दनमे बांधकर उसको उड़ावें तो उस मनुष्यको नींद नआवेगी जबतक अबाबीलको मार न डालें या कि वह आप नमरजाय या उसकीगर्दनसे बाल खोल न लिये जायँ उसके शिरको शिरहाने के बीचमें रखना निद्राका बेगलाता है जो इसकाभेजा शहदकेसाथ आंखोमेंलगावें ढलका बन्दकरदे जो उसको गुलाब तेल मे पकाकर रांघन पर मलें पीड़ा ठहर जायगी

को बलही और मक्षीवाले तोड़कर मैदानमेंरखताहै कि मक्खीआदि उनपर इकट्ठीहों सो उन मक्खियोंकोभी बच्चोंको खिलाताहै अरब के निवासियोंके निकट यह अहमकहै क्योंकि बहुधा दूसरेका अंडा देखकर उसको सेताहै और अपना भूल जाता है और दूसरी निर्बुद्धि यहहै कि भोजनके विचारसे दोभाग अपने अंडोंको नष्टकरता है इसका पित्ता आंख में लगाना आंख की अंधेरीको दूर करता है और इसका मांस बात और श्लेष्माके रोगोंके दूर करने वाला है और इसकी चरबी सूजनोंको गलाती है जो इसके अंडेका छिलका मांसमेंछोडदे बहुतजल्दीप कजाताहै चाहे आंचकमभीहो सूरतयहहै

तसवीर नम्बर ३५०

(हुदहुद) यह प्रसिद्ध पक्षी है पैगम्बर साहब का बचन है कि हुदहुदको मतमारो क्योंकि उसने सुलेमानको सबान शहरमें मार्ग बतायाथा और मैं इसबातको प्रिय जानताहूं कि वह ईश्वरका भजन करता है जिसका साथीकोई नहीं है लिखा है कि हुदहुदने एकवेर हजरत सुलेमानसे विनयकी कि आपमेरा न्यवता अंगीकार कीजिये हजरतने कहाकि मैं अकेला आऊं या सेनासमेत हुदहुद ने विनय की आप सेनासमेत अमुकद्वीपमें सुशोभित हूजिये हजरत नियमित दिवसको उसद्वीपमें गये हुदहुदने क्या कामकिया कि एकटिड्डी को पकड़कर गर्दन उसकी काट डाली और दरिया मे डालदिया और हजरत सुलेमान से विनय की कि आप सेना संयुक्त इसको खाइये यह दरिया नहीं है यह टिड्डी के मांस का शोरवा है इस बातसे आप और आपका लश्कर एक वर्ष तक हंसतेरहे हुदहुद के बच्चोंमें दुर्गंध आतीहै कइयोंका वचन है कि यहपक्षी अपने घोसले को मनुष्यकी विष्टासे भरा रखता है इसी कारण यह दुर्गंध उनके शरीरसे आती है जब यह बूढा होता है इसके बच्चे इसके पंख और पर उखेड़ डालतेहैं और उसको अपने परोंके नीचे रखतेहैं यहनये सिरे से जवान होजाता है इसको बीमारी में जंगली बिच्छू खाना गुणकारी है जो इसके बच्चेको सरतान (पीठका फोड़ा जोगंगटे के

कि हवा में कोई उत्पात नहो और महामारी का कारण नहो जिससे जीवधारियों और वृक्षोंमें उत्पात होताहै यद्यपि इसउत्पत्ति में उनके काटने की भी हानि है परन्तु बहुत से लाभ भी हैं और यह बात समझने के लायक़ है कि मक्खी और कीड़े कस्साब और हलवाई की दूकानोंमें होतेहैं और बज़ाज और लुहारोंकी दूकानों में नहीं होते इससे सिद्धहोगया कि इश्वरने कीड़े मकोड़ोंको उसी दुर्गंध से उत्पन्नकिया ईश्वरने छोटे कीड़ोंको बड़ोंका भोजनबनाया जो ऐसा न होता तो सम्पूर्ण पृथ्वी इस बलासे भरजाती सो निश्चयकरके जानना चाहिये कि ईश्वर के राज्यमें ऐसी बात नहीं है जिसमें ईश्वर की बुद्धिमानी मिली न हो इसप्रकार में यह आश्चर्यहै कि जो इनमें विष किसी जीवधारी की हानि का कारण है,तो ईश्वरने इन्हीं के मांस में उसके दूर होनेका गुणभी रक्खा हकीमोंने सर्प के मांस में जो विषकी बराबरी में है सो तिर्य्यक्र की औषधियों में इसका मांस गिना तिर्याक ज़हर की औषधिओं का नाम है और इस बातकी परीक्षा भी होचुकी है कि जिसको बिच्छू ने काटाहो जो वह बिच्छू को मारकर उसकी बीटकी तरी घावपर लगावे तुरन्त पीड़ा दूरहोगी कई प्रकार इसके सर्दीमें मरजाते हैं जैसे मच्छड़ पिस्सू और कोईपृथ्वीके नीचे जाघुसते और कुछनहीं खाते हैं जैसे सांप और बिच्छू कोई इनमें से इस मौसमके वास्ते संग्रह रखते हैं जैसे च्यूंटी क्योंकि च्यूंटी बेखाये नहीं रहसक्ती है अब हम उनका बर्णन करते हैं जो इसप्रकार से संबन्धित हैं (अरज़ा) अर्थात् दीमक सफ़ेदरंग छोटासा होताहै इसको फारसी में चोबख़्वार कहते हैं और च्यूंटी आदि शत्रुओं के भयसे अपने शरीरपर दहलीज़ की तरह बनाता है जब यह कीड़ा एक वर्ष का होताहै तब इसके दोपर लंबे निकलते हैं और उनसे उड़सक्ता है और यह वह कीड़ा है जिसने जिन्नोंको हजरत सुलेमान की मृत्यु बताई अर्थात् हज़रत सुलेमान की लकड़ी को खालिया जब इस कीड़े का घर ख़राब होजाता है तो उसके साथी उसके मकान की

औरदो तीनबेर मलने से फिर पीड़ा न होगी उसकी सूरतयह है॥

तसवीर नम्बर ३७२

(यराग़ा) अर्थात् पटवीजना यह पक्षी बहुत छोटा होताहै जब दिनको उड़ता है पक्षीके स्वरूपका दिखाई देता है और रात्रि को आगकी लपटके सदृश मालूम होता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३७३

(यमामा) यह जोटीदार कबूतर है जो घरोंमें होता है और बहुत अंडे देता है और मनुष्योंके सदृश इस समूह में भी मादा से प्यार आदि होताहै वह अंडोपर बैठती है और नर बच्चो को पालता है इसमें विचित्रता यह है कि जब बच्चा अंडे में पूर्ण होजाता है उस समय उस अंडेको पहले अपनी चोचमे तोड़ता है जिसमे नर होता है क्योंकि नर मादा से पहले अंडे में तय्यार होता है वह परमेश्वर शुद्ध है जिसने कबूतरके मनमें डालदिया कि वह अंडे को बच्चे के पूरे होजानेके समय तोड़ता है और आगे पीछे नहीं तोड़ता जब यह बीमार होताहै तो नकुल की पत्ती खाकर आराम पाता है और इसके जोड़ोंका गुण कबूतर के वर्णन मे होचुका॥

छोटे २ कीड़े मकोड़ों का वर्णन

यह प्रकार जीवधारियो का ऐसा नही है कि मनुष्य उसे गिन सके कई बुद्धिमानोने लिखा है कि जो कोई चाहे कि इनको मालूम करे तो रातको जंगल में आगजलावे उस समय देखे कि कितने प्रकार इन विचित्र जीवधारियों के इकट्ठे हैं जिनके स्वरूप अन्य२ हैं और जिनको न कभी देखाहो और विचार नहीं होता कि ईश्वर ने ऐसी चीज़े भी पैदा कीहैं और वह जीवधारी पृथक् २ स्थानोंके रहने से अन्य २ होतेहैं जैसे पहाड़ दरिया बाग़ रेतीली जगह कूड़े के स्थान आदि हर जगह इनकी उत्पत्ति अन्य २ रीतिपर है और इनकी उत्पत्ति बिगड़ेहुये मल और दुर्गंध से होतीहै कि वायु उन दुर्गंधों से साफरहे इस बात का निश्चय है कि ईश्वरने कीड़े मकोड़ो को बिगड़ेहुये मल और सड़ीहुई दुर्गंधियों से उत्पन्नकिया

पाया जो उसपर पैररखकर निकले तुरन्त उसको काटखाये इसका विष तुरन्तही प्रभाव करता है कहते हैं किसी भुजंग ने ऊंटनी के होंठ में काटा उसका बच्चा दूध पीरहा था बच्चा पहले मरगया, और ऊंटनी फिर मरी लोगोंने आश्चर्य किया कि इतना जल्दी प्रभाव दूधमें पहुंचगया कि मां से पहले बच्चामरा जब सर्पबीमार होता है तो ज़ैतून के वृक्ष के पत्ते खाकर आराम पाता है॥

गुण इसका पित्ता हलाहल विष है जो कोई पिये असाध्य है इसका रुधिर नेत्रकी ज्योति को बढ़ाता और रतौंधी को नष्टकरता है यदि आंख में लगावें आंख की अंधेरी और ढलके को उपयोगी है जो बग़ल के बाल उखाड़कर वहां पर इसका रुधिर लगालें तो फिर बाल न निकलेंगे बुक़रात हकीम इसके मांस के लिये लिखता है कि जो कोई खालेवे कठिन रोगसे निर्भयहो और पट्ठों को बलवान् करता है और बूढ़ा नहीं होने देता है और जलंधर रोग को गुण दायक है बलैनास कहता है कि इसका मांस पका-कर खाना कोढ़ और आंखकी अंधेरी को गुण दायकहै और मैथुन की इच्छा अधिक करता है इसके मांस की चरबी जिस जगह के बाल उखाड़कर मर्दन करें फिर बाल न निकलेंगे इसका मांस सांप और काले सांप के काटने में बहुतही लाभदायक है (कहानी) कोई मनुष्य वृक्ष के नीचे सोरहा था काला सर्प जो उधर से निक-ला उसके हाथ में काटा उसने जागकर जाना कि सर्प ने काटाहै सो उसपर मूर्च्छा और प्यास का वेगहुआ उसके निकट एकहौज़ था उसने उसमें से जल पिया तुरन्त पीड़ा दूरहोकर आरामपाया इससे उसको आश्चर्य हुआ एक लकड़ी हाथ में ली और पानी में ढूंढ़नेलगा अकस्मात् दो सर्प दिखाई दिये कि दोनों परस्पर लड़ कर मरेपड़े हैं और उनका मांस सड़गया है सो वह समझा कि यह गुण उनके मांस का है शेखरईस कहता है कि इसकी खाल जलाकर उसकी राख मलना बालखोरे को गुण दायक है और यह भी कहता है कि काले सर्प को दो टुकड़े करके उसके

दुरुस्ती केलिये इकट्ठे होतेहैं और उसके छिद्रोंको थोडीदेरमें दुरुस्तकरदेते हैं कहते हैं कि इस जीवधारी की प्रकृति ठंढी और तर है और इसका शरीर खोखला रहता है और जहां इसके परोंकी जगह होती उसमें दोछिद्रहोतेहैं और उसीसे वायु खींचताहै और वह हवा सरदी के सबबसे पानी होकर उसके शरीर से गिरती है और मट्टीके भाग जैसे गर्द आदि सदा उसपर गिरके जमजाते हैं सो वही उसके शरीरपर मैल होजाता है और वह उस मैल से अपने शरीरपर घरकीतरह बनालेता है उसके दोनो होठ तेज़होते हैं जिनके कारण लकड़ी ईंट पत्थर को काटाकरता है इसकीशत्रु च्यूंटी होतीहै कि अपने घरतक उसको घसीट लेजाती है परन्तु जब च्यूंटी इसके पीछेसे आती है तो इसपर प्रबल होतीहै और जब इसके साम्हने से आती है तो निर्बल होजाती है जब इसके पर निकलते हैं तो चिड़ियो का भोग होताहै साहबुलमन्तक कहताहै कि पहले पहल इसने लोगोके बहुत से मकान नष्टकिये थे उससमय ईश्वर ने च्यूटीको उसपर बलवान् बनाया कहते हैं कि यह हरताल और गायके गोबर से भी दूर होताहै ॥

(अफई) छोटीपूछ का काला नाग यह सबसांपोमें बुराहोताहै जब यह अंधा होजाताहै तो फिर पलक नही मारसक्ता और गर्मी के कारण चार महीने पृथ्वीमे छिपा रहता है फिर धरतीसे वैसाही अधा बाहर आताहै तो सौंफके वृक्षमें आंख रगड़कर फिर आंखें अच्छी करलेता है जो इसकी दुम काटडाली जाय तो तीन दिनके पीछे फिर सुधर आती है जो इसको मारडाले तीनदिनतक हिला करता है और जंगली गाय इसकी काल है जहां वह सर्प को देखती है खालेती है यह काला सर्प मनुष्यो का महा विरोधी है जाहिज कहता है कि भुजंग गरमी के दिनोमें पिछलेपहर रातको जब गर्मी कम होजाती है प्रकट होताहै और बहुधा मार्गोमें कुंडल बांधकर अपना शरीर पृथ्वी में गड़ोकर बैठता है और गर्दन ऊंची करता है मुख्य उसका यह प्रयोजन होता है कि मनुष्य या चार-

ध्यानकीशक्तिभी दी कि जब उसको किसीजोड़से दूरकरें फिर उसी जोड़पर लपकेइससे मालूमहुआ कि वह अपने भोजन के स्थान को पहिचानताहै और विचारका प्रमाण यहहै कि मनुष्यकेहाथहिलतेही भागताहै और चैतन्य रहनेका प्रमाण यहहै कि जब अपनी सूंडको काटनेके वास्ते गड़ोता है और लहू चूसनेमें प्रवृत्त होताहै तो अचैतन्य नहीं होता और बहुत जल्दी भागजाता है इस विचारसे कि जब उस मनुष्यको पीड़ाहोगी तो उसके मारडालनेका उपायकरेगा इसकी सूंड बालसे बहुत महीन होतीहै और इतनी महीन होने पर भी खाली होती है और तेज इतनी कि हाथी और बैलके चमड़े तक में सूंड चुभोकर रक्तपानकरताहै और हाथी और बैल इससेपानीमें भागते हैं सो यह जीवधारी छोटा होनेपरभी ईश्वरकी ऐसी२बुद्धिमानीसे भराहुआ है सो उसमनुष्यकी मूर्खता पर रोना चाहिये जो कि कहता है कि परमेश्वरने मच्छड़ और मक्खीका वर्णन कुरान में किया है तो ईश्वरने इस वचनके रद्दकरनेमें यह आज्ञा दी है कि मैं मक्खी और मच्छड़के उपजानेमें लज्जा नहींमानता वास्तवमें कोई ईश्वरकी बुद्धिमानीको नही जानसक्ता कहते हैं कि जो बबूलके गोंद की तीन गोलियां बनाकर और हरगोलीमें एक २ मच्छड़ लपेटकर चौथिया तपवाला हर वारी के दिन एक २ निगल जायँ तो तुरन्त ज्वर दूरहोजाय (साबान) अर्थात् अजदहा यह जीव बड़ा भयानक रूप होता है शेखरईस कहताहै कि छोटेसे छोटा अजदहा पांचगज़ का होता है और बड़ा तीस गजका और इससे भी अधिक इसकी दो आंखें बड़ी होतीहैं और उसके दाढ़के नीचे एकगांठ होतीहै और दांत असंख्य होते हैं कई लोगोंका वचन है कि यह अज़दहा हिन्द और नोबेकी धरतीमें बहुत होता है इसका मुखपीला या कालेरंग का होता है और मुंह चौड़ा भवें बहुत लंबी यहां तक कि उसकी आंखे छिपजाती है और गर्दन मोटी शेखरईस कहता है कि मैंने एक अजदहा देखा जिसकी गर्दनमें बहुत मोटे२ बालथे इनकेनर मादाओंसे बहुत बुरे होते हैं जिस जीवको पाते हैं निगलजाते हैं

कोटेहुये स्थान पर रक्खें पीड़ा ठहरे कहतेहैं कि जो कोई नीलेसूत्र के डोरे बनाकर काले सर्पकी गर्दनमे बांधे इस दिनसे कि सांपको दुःखपहुंचे फिर उस डोरेको खोलकर जिस मनुष्यके गलेमे पीड़ाहो उसके बांधदें तुरन्त पीड़ा जातीरहे स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर २७४

(बरगौस) अर्थात् काला पिस्सू बहुत होताहै जब मनुष्य की दृष्टि उस पर जाती है इधर उधर कूदता है कि मनुष्य की दृष्टि गुप्त होजाय जाहिज़ कहता है कि इसकी सूरत हाथी कीसीहोती है और अण्डा देता है और उससे बच्चा निकलता है सक़्फ़ियान सूरीकी कहावतहै कि मच्छड़ की उमर पाँच दिनकी होतीहै और यह्यमा यहब्याइन्न खालिदसे कहतेहैं कि जब पिस्सू के पर निकल आतेहैं तो दीपकका पतंगा होजाताहै कहते हैं कि पिस्सू कपडोकी जूंको खाताहै और सुर्ख कनेरकी गंधसे मर जाता है महबूब बसी॰ रावी एक कवि बुगदामें था जब उसने बहुत दुःख उठाया तो कुछ पद्य लिखे जिनका सारांश यहहै कि बुगदाद शहरमें पिस्सुओं की बहुतही अधिकताहै और मुझपर संसारके कामोकी चिंताका वेगहै रात्रिके दोभाग होजातेहैं आधीरात तो मैं चिन्ता और दुःखशोकमें बिताता हूं और दूसरा हिस्सा आधीरात में पिस्सुओं के कारण सोना नहीं मिलता मानो इस खींचा खींच मे मेरी सम्पूर्ण रात्रि गुजरती है (बावज) अर्थात् मच्छड हाथीके रूपका होताहै बहुत छोटा ईश्वरने कुछजोड़ हाथीके मच्छड़में उत्पन्न किये और दो पख हाथीसे भी अधिक इसमें उपजाये क्या ईश्वरकी मायाहै कि मच्छड़ को वह जोड कृपाकिये जो बड़े जीवधारियो को दिये यह मच्छड़ इतना छोटाहै कि जब किसी चीजमें गिर जाताहै तो मनुष्य विवेक नहीं करसक्ता जब यह दशा उसके सम्पूर्ण शरीरकी है तब उसके शिर और भेजेका क्याअनुमान होसके परन्तु ईश्वरने उसके ब्रह्माण्ड में पाँचों शक्तियां कृपाकी और मालूम करनेवाली भी शक्तिदी कि वह जीव धारीकी ओर जाताहै दीवारकी ओर नहीं जाता उसको

गंध उनकी नाकमें पहुंचेगी तुरन्त सब मरजायेंगी या भाग जायेंगी (गुण) लंबे पांवकी टिड्डी को चौथिया तपवाले की गर्दन में बांधना उपयोगीहै और बवासीरमें धूनीलेनागुणकरे और जिसका मूत्र बंद होगयाहो उसको गुणदायकहै और इसकी राख नासूरको अच्छा करती है शेखरईस कहताहै कि इस कीट का लेप करना मस्सों को दूरकरताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३५६

(हरबा) इसको फ़ारसीमेंआफ़ताब परस्त और हिन्दीमें गिर-गिट कहतेहैं यहजीव जंगली छिपकलीसे बड़ा होताहै इसका मुख सूर्यकी ओर रहताहै और उसीओर फिरा करता है जबतक कि अस्त न हो इसका असलीरंग खाकीहोताहै फिर सूर्यकी गर्मी से कभीपीला और कभी सब्ज़होजाताहै जैसे एक आयतका मतलबहै किगिरगिट सूर्यकीगर्मीके कारणकभी पीला और कभी सब्ज और कभीसुर्खीलियेहोजाताहै और यहअपनामुख सूर्यके साम्हने रखता है जिस २ ओर सूर्य फिरता है उस २ तरफ यहभी फिरता है और इसीकारण इसकानाम आफ़ताब परस्त अर्थात् सूर्य पूजक रक्खा गया निदान इसका रंग बदला करता है जब किसीको देखताहै कि उसका उद्योग करता है तो तुरन्त अपने शरीरको विस्तीर्ण करता है कि भयखाय और कुछ उसको इससे हानि नहीं होती कहते हैं कि जो उसकोधरतीमेंगाड़के उसकीख़ाल गांव या खेतमें किसीऊंची जगहपर लटकावें वहांपर शर्दी या टिड्डीकीआफ़त न आवेगी और जो इसको तीन दिनतक आगके नीचे गाड़े फिर मिर्गीवाले के गले में बाँधे तुरन्त आरामपावे सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५७

(हरक़ूस) यह जानवर छोटा होता है परतु पिस्सूसे कुछ बड़ा जब इसके पर निकलते हैं तो मानो इसको मौत का संदेशा आता है इसकाकाटना पिस्सूसे अधिक दुखदायीहै कहते हैं कि यहजान-वर बहुधा स्त्रियोको काटताहै जिस तरह कि च्यूंटी पुरुषों के लिंग

और यह वृक्ष की जड़ या पत्थर में लिपटकर जोर करते हैं कि जिसको निगलाहै उसकीहड्डियां आदि टूटजायँ इसके अन्दर ऐसी गर्मी होती है कि जो चीज़खावे तुरन्तपचे बहुधा धरतीका पानी में रहने लगता है और फिर वह दरियाई अज़दहा कहलाता है और बहुधा दरिया के रहनेसे धरती का होजाता है और बहुधा बड़े २ पहाड़ोंपर चढ़जाताहै कि विषकी गर्मीके वेगसे ठंढी हवा में आराम पावे (गुण) इसका दिल खाना बहादुर करता है और इसकीखाल प्रेमीजनपर बांधनी प्रीतिके दूर करने वालीहै और इसकी खालका पास भी रखना सम्पूर्ण जीवोंको भगाता है और जहां इसकाशिर गाड़ें वहां केलोगोंकी दशा अच्छीहो और शुभकार्य हो आगे ईश्वर जाने स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ३५५

(जराद) अर्थात् टिड्डी यहजीव दोप्रकार का होता है एक प्रकारको फारसकहतेहैं और यह वायुमेंउड़ताहै और दूसरे प्रकार को राजल कहते हैं जो कूदतीहै और वसन्त ऋतुमें चरा करतीहैं और नरम और श्रेष्ठ जमीनकी इच्छारखती है और वहींपर ठहरती है और अपनी दुमसे जमीन खोदकर अंडे रखकर छिपाती है और उड़जाती है कि गर्मी और शर्दी और दूसरे प्रकार का दुःख न पहुंचे पर तौभी कुछशर्दी और कुछ कई जानवरोंके कारण नाशहो- जातेहैं जब रबीकी फसल आतीहै टिड्डी उनवाकी अंडों को धरती से निकालकर तोड़ डालतीहैं और उसमेंसे बच्चे छोटे २ सोने के टुकड़े की तरह निकलतेहैं और खेती आदिको खाकर पुष्टहोते हैं और उड़जातेहैं तोवह वहांसे और किसी दूसरी ओर मुखकरती हैं और वहांभी यही हालकरतीहै और अंडे रखती हैं साहबुलफलाहा कहतेहैं कि जब इससमूहको देखें कि किसगांवकी ओर ध्यानकिया वहांके रहने वालोंको उचितहै कि अपनेको छिपारक्खें और कोई बाहर न निकले जो टिड्डियां वहां किसीको न देखेंगी वहां से चली जावेंगी जो एक को भी इन जीवों में पकड़ के जलावें जब उसकी

गंध उनकी नाकमें पहुंचेगी तुरन्त सब मरजायेंगी या भाग जायेंगी (गुण) लवे पांवकी टिड्डी को चौथिया तपवाले की गर्दन में बांधना उपयोगीहै और ववासीरमें धूनीलेनागुणकरे और जिसका मूत्र बंद होगयाहो उसको गुणदायकहै और इसकी राख नासूरको अच्छा करती है शेख़रईस कहताहै कि इस कीट का लेप करना मस्सों को दूरकरताहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३५६

(हरवा) इसको फ़ारसीमेंआफ़ताव परस्त और हिन्दीमें गिरगिट कहतेहैं यहजीव जंगली छिपकलीसे बड़ा होताहै इसका मुख सूर्यकी ओर रहताहै और उसीओर फिरा करता है जवतक कि अस्त न हो इसका असलीरंग खाकीहोताहै फिर सूर्यकी गर्मी से कभीपीला और कभी सब्ज़होजाताहै जैसे एक आयतका मतलबहै किगिरगिट सूर्यकीगर्मीके कारणकभी पीला और कभी सब्ज और कभीसुर्खीलियेहोजाताहै और यहअपनामुख सूर्यके साम्हने रखता है जिस २ ओर सूर्य फिरता है उस २ तरफ यहभी फिरता है और इसीकारण इसकानाम आफ़ताव परस्त अर्थात् सूर्य पूजक रक्खा गया निदान इसका रंग वदला करता है जब किसीको देखताहै कि उसका उद्योग करता है तो तुरन्त अपने शरीरको विस्तीर्ण करता है कि भयखाय और कुछ उसको इससे हानि नहीं होती कहते हैं कि जो उसकोधरतीमेंगाड़के उसकीख़ाल गांव या खेतमेंकिसीऊंची जगहपर लटकावें वहांपर शर्दी या टिड्डीकीआफ़त न आवेगी और जो इसको तीन दिनतक आगके नीचे गाड़े फिर मिर्गीवाले के गले में बाँधे तुरन्त आरामपावे सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५७

(हरक़ूस) यह जानवर छोटा होता है परंतु पिस्सूसे कुछ बड़ा जब इसके पर निकलते हैं तो मानो इसकी मौत का संदेशा आता है इसकाकाटना पिस्सूसे अधिक दुखदायीहै कहते हैं कि यहजानवर वहुधा स्त्रियोंको काटताहै जिस तरह कि च्यूंटी पुरुषों के लिंग

को काटती है एक गँवारकी स्त्रीकीयोनिमें जब हरक़ूसनेकाटा उस समय उसने अपनेपतिकोपुकारा और कहा कि ऐमेरेपति ध्यानकर हरकूस ने मेरे ऐसे स्थान पर काटा कि संसार का आनन्द मुझसे जाता रहा सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५८।

(हलज़ून) हिन्दीमें शख कहते हैं यह वह कीड़ा है जोपत्थर के भीतर उपजाता है और दरिया और नहरोंके किनारे मिलता है यह कीड़ा पत्थरके पेटमें सीपीकी तरहपर निकलताहै और अपने हाथों को उठाता है और दहिने बायें जाताहै और भोजन ढूंढ़ताहै तो जो तरी और नर्मी देखता है अपनेको विस्तीर्ण करता है जो कठोरता देखताहै अपने को समेटताहै और उसके पेटमें चला जाताहै और हरदुखदायीसे डरताहै जोकोई देखनेवाला उसकोदेखै तो समझता है कि एक सीपी पड़ीहुई है शेख़रईस का वचनहै कि इसको माथे पर मलें ढलका वन्दहोजाय सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३५६

(हिया) अर्थात् सर्प यह सबजीवधारी और दुखदायी जानवरों में बहुत बुरा और बहुत कठोर होताहै और कम खानेवाला और बड़ी उमरवाला होताहै कहतेहैं कि जीवधारियों में इससे बढ़कर कोई बुरानहीं और न कोई ऐसा विषैलाहै कि जिसका विष आकर्षण करनेवाला बहुतहो और सांपके सिवाय मट्टी खानेवाला कोई जीवधारी नहीं और यह ऐसादुखदायी है कि जिसका मारनाकाबे के स्थान में उचित है हजरत पैग़म्बर साहब की आज्ञा है कि जो कोई सर्पको मारे भलाइयां पावे अब्बासके पुत्र अब्दुल्लाका वाक्य है कि मेरी समझ में सर्पका मारना नास्तिक के मारनेसेभी उत्तम है और जोकि सांपको भागने का हथियार कृपा नहीं हुआ इसलिये ईश्वरने उसको एक ऐसा हथियार दियाहै जिससे उसके शत्रुभागते हैं जैसे कोई सुने कि अमुकस्थानपर सांपहै कभी उधर न जायेगा नहीं तो जो सर्पके दांत न होते तो लोग उसकी रस्सीबनाते और

लड़के खिलौना बनाते कहतेहैं कि जो मनुष्यकाबाल सीधा पान
गिरे और दरिया और सूर्य्यके बीच कोई चीज़ न हो तो वही ब
सांप होजाताहै और इसके प्रकार बहुतसेहैं और मनुष्यका शत्रु
है और इसीसे भागताभीहैतो कोई तो ऐसेहैं कि वह उससमय
नहींकाटते जबतक किसीका पांव उनपर न पड़े और कोई ऐसेहो
कि वह नहींकाटतेजबतक कि उनकेअण्डे और बच्चेकोकुचल नड
औरकई ऐसेहैं कि मनुष्यको दुःख नहीदेते कि जबतक उनको दु
न पहुंचे कई उनमेंसे कालेहोतेहैं जो शत्रुतारखतेहैं और समय ढूं
करतेहैं बाज़े इनमेंसे सांपकी तरह पर होतेहैं परन्तु सांप नहीं अ
इनकी श्वासामें काले सर्पोंसे कठोरता होतीहै और यह दुःख न
पहुंचाते और न इनमें विष होता है बहुधा और सांप इनको मा
डालते हैं कई इनमें से ऐसे होते हैं जिनको मलक कहते हैं इन
लम्बाई एक बालिश्त या कुछ अधिक होतीहै और इनके शिर प
सपेद रेखा होती है जहां पर यह निकल जावें वहां की तर औ
सूखी चीज़ जल जाती है जो इन परसे कोई पक्षी उड़े तो गिर प
और जो पक्षीइनके निकटहोताहै भागजाताहै जो जीव इनका शब
सुनले मरजाय और कभी यह जीव अपने शरीर को मोटाकरता
और उससे लहूबहताहै तो जो कोईजीव उसमेंसे खालेताहै मरजात
है अबुलफरहअबीदउल्लाका वचनहै कि इनके तीनप्रकार हैं पहिल
प्रकार कि बहुत कठोर और उनका विष तुरन्त मारडालताहै दूसर
प्रकार कि उनका विष उपाय से दूर होसक्ता है तीसरा प्रकार वि
उनकी इलाज सुगमहै इसकी विचित्रता यहहै कि जब इसको अपन
माराजाना मालूम होजाता है अपने शिरकोशरीर में छिपा लेता है
और शरीरका क़िला बनाता है इस विचारसे कि शिरपरचोट न पड़े
क्योंकि इसकी जान शिरमें होतीहै सर्पकीहज़ार वर्षकीआयु होतीहै
और हरवर्ष केंचुल छोड़ता है और हरबेर एकबिन्दु पीठ पर प्रकट
करताहै वही बिन्दु उसकी आयुकी गिन्तीहै जो थोड़ा बिलकेअंदर
और थोड़ा बाहर हो और कोई खींचता जाय तो कभी न खिंचेगा

को काटती है एक गँवारकी स्त्रीकीयोनिमें जब हरकूसनेकाटा उस समय उसने अपनेपतिकोपुकारा और कहा कि ऐमेरेपति ध्यानकर हरक़ूस ने मेरे ऐसे स्थान पर काटा कि संसार का आनन्द मुझसे जाता रहा सूरत उसकी यह है॥

तसवीर नम्बर ३७८

(हलज़ून) हिन्दीमें शख कहते हैं यह वह कीड़ा है जोपत्थर के भीतर उपजाता है और दरिया और नहरोंके किनारे मिलता है यह कीड़ा पत्थरके पेटमें सीपीकी तरहपर निकलताहै और अपने हाथों को उठाता है और दहिने बायें जाताहै और भोजन ढूंढ़ताहै तो जो तरी और नर्मी देखता है अपनेको विस्तीर्ण करता है जो कठोरता देखताहै अपने को समेटताहै और उसके पेटमें चला जाताहै और हरदुखदायीसे डरताहै जोकोई देखनेवाला उसकोदेखै तो समझता है कि एक सीपी पडीहुई है शेख़रईस का वचनहै कि इसको माथे पर मलें ढलका बन्दहोजाय सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३७९

(हिया) अर्थात् सर्प यह सबजीवधारी और दुखदायी जानवरों में बहुत बुरा और बहुत कठोर होताहै और कम खानेवाला और बड़ी उमरवाला होताहै कहतेहैं कि जीवधारियों में इससे बढ़कर कोई बुरानहीं और न कोई ऐसा विषैलाहै कि जिसका विष आकर्षण करनेवाला बहुतहो और सांपके सिवाय मट्टी खानेवाला कोई जीवधारी नहीं और यह ऐसादुखदायी है कि जिसका मारनाकाबे के स्थान में उचित है हजरत पैग़म्बर साहब की आज्ञा है कि जो कोई सर्पको मारे भलाइयां पावे अब्बासके पुत्र अब्दुल्लाका वाक्य है कि मेरी समझ में सर्पका मारना नास्तिक के मारनेसेभी उत्तम है और जोकि सांपको भागने का हथियार कृपा नहीं हुआ इसलिये ईश्वरने उसको एक ऐसा हथियार दियाहै जिससे उसके शत्रुभागते हैं जैसे कोई सुने कि अमुकस्थानपर सांपहै कभी उधर न जायेगा नहीं तो जो सर्पके दांत न होते तो लोग उसकी रस्सीबनाते और

यदि गर्भवती स्त्री प्रसूति की पीड़ा में बांधे सुगमता से सन्तानहो इसका शरीर जलाकर उसकी राख का सुरमा लगाना सिल की बीमारी को गुणदायकहै और नजलेको भी दूरकरे जालीनूस कहता है कि इसकाशोरवा आंखमेंबल करताहै जो इसका अंडा ओखलीमें पीसकर सपेद कालेदागोंके कोढ़में लगावें गुणकरे सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६०

(खरातीन) यह एककीड़ा लम्बा सुर्ख़ रंगतर ज़मीनमें होताहै इसको भूनकर कमल वायु वालेको खिलावें आरामहो जो इसको सुखाकर पानीमें भिगोवें और गर्भवती स्त्री को पिलावें सुगमतासे प्रसूतिहो इसकी राखगुल रोगन अर्थात् गुलाब तेलमें मिलाकर लगाना वाल जमादेताहै जो शहदके साथ बालूमें लगावें गलेकी पीड़ाको गुणदायकहै जो उसको लेकर किसीस्त्री की चोटीमें बांधदें इसशर्त्तपर कि उसे मालूम न हो तो उसस्त्रीका स्वप्नमें वीर्य निकल जायेगा और रातभर शैतान उससे भोग करेगा और जो इसको अकरकरा और फरीफयूनके साथ जैतके तेलमें तलकर लिंगपर मलें मैथुनकी शक्ति अधिकहो सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६१

(ख़नफ़सा) यहछोटा कीड़ा काले रंगका गोबरमें उपजताहै इसको हिंदीमें गोबरदरह कहते हैं और इसमें दुर्गंध होतीहै इसको तेलमें तलकर ववासीर पर मलना गुणदायक है जो इसको दो टूक करके उसकी तरीमें सलाई डुबोकर आंखमें लगावें आंखोंकी पीड़ाको लाभकरे और जोकिसी तेलमें तलकर कानमेंडालें कानका भारीपन दूरहो जो इसको ऊंटचारेमें खाय तो यह जानवर उसकी विष्टामें जीता निकल आताहै जो हिरणके दोनों तरफ़से यहकीड़ा निकलजाय तो हिरण मरजाय इसकीड़ेमें एकप्रकार जालनामी होताहै जो विष्टाकी गोली वनाकर अपने छिद्रमें लेजाताहै जो इस को कीचड़में डालदें तो नहीं हिलता मानो मुरदा होजाताहै जो गोबरपर डालें तो हिलता रहताहै (कहानी) किसी मनुष्यने इस

चाहे बैलोंकी जोडीसे खीचे किन्तु कटजायेगा इसके तीनअंडे पस-
लियोंकी हड्डियोंकेअनुसार होते हैं उनअंडोपर च्यूंटी और मच्छड़
आदि इकट्ठे होतेहैं और बहुधा अडों को खराब करडालते हैं और
जव बिच्छू सर्पकोकाटताहै तो सांप नमकपर सोकर आरामपाता
है जो नमक न पावे मरजाय बाज़े लोग कहतेहैं कि एक ऐसासर्प
होताहै कि जो उसको लकड़ी से मारे तो वह आदमी तुरन्त मर-
जाय और हवाज़ की पृथ्वी मे एक सर्प होताहै लाल महीन जब
मनुष्य को देखताहै उसपर कूदताहै और काटखाता है तो मनुष्य
तुरन्त मरजाता है अबूजाफ़र कहते है कि हमारे देश में एक ऐसा
सांप होताहै जो छोटे २ पक्षियो को एक विचित्ररीति से शिकार
करताहै और वह उपाय यह है कि गर्मीके मौसम में जब दोपहर
को धूप तेजहोतीहै और मार्ग चलनेवालों से राह खाली होजाती
है तो यह दुष्ट अपना सम्पूर्ण शरीर मट्टी में छिपाता है और शिर
बाहर निकाले रहताहै यह मालूमहोताहै कि किसी वृक्ष की जड़
निकलीहुई है तो जब कोईपक्षी गर्मीके जोरसे उसको सूखीलकड़ी
जानकर उसपर आबैठता है यह उसको शिकार करताहै (गुण)
जो इसके दांत कि जीतेहुये उखाड़े गये हों चौथिया तपवाले को
बांधना उपयोगीहै शेखुलरईस का वाक्य है कि इसका मांस बल
अधिक करताहै और इन्द्रियोंको दृढ़करता है और युवावस्था को
बहुत समयतक रखताहै और कोढ़ और बालखोरे को लाभदायक
है जो इसका मांस जलंधर का रोगीखावे आराम पावे बुकरातका
बचनहै कि इसकामांस खाना कठोररोगों से बचाताहै जो इसकी
चरबीको नमकके साथ बवासीर पर लगावें गुणकरे इसकी केंचुली
जो जीने के समय गिरीहो सिरकेमें पकाकर कुल्लीकरना दांतो की
पीड़ा दूरकरता है जो इसकी खाल को तांबे के बरतन में जलाकर
लगावे हरप्रकार की नेत्रपीड़ा को लाभकरे और सब्ज़ आंख को
काला करताहै लोगों में प्रसिद्धहै कि जो एक खपड़ा उसका [illegible]
वर्षभर आंखमें पीड़ा न हो और जो दो खालें दोवर्षतक आं[illegible]

यदि गर्भवती स्त्री प्रसूति की पीड़ा में बांधे सुगमता से सन्तानहो इसका शरीर जलाकर उसकी राख का सुरमा लगाना सिल की बीमारी को गुणदायकहैऔर नजलेको भी दूरकरे जालीनूस कहता है कि इसकाशोरवा आंखमेंबल करताहै जो इसका अंडा ओखलीमें पीसकर सपेद कालेदागोंके कोढ़में लगावें गुणकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६०

(खरातीन) यह एककीड़ा लम्बा सुर्ख़ रंगतर ज़मीनमें होताहै इसको भूनकर कमल वायु वालेको खिलावें आरामहो जो इसको सुखाकर पानीमें भिगोवें और गर्भवती स्त्री को पिलावें सुगमतासे प्रसूतिहो इसकी राखगुल रोगन अर्थात् गुलाव तेलमें मिलाकर लगाना बाल जमादेताहै जो शहदके साथ बालूमें लगावें गलेकी पीड़ाको गुणदायकहै जो उसको लेकर किसीस्त्री की चोटीमें बांधदें इसशर्त्तपर कि उसे मालूम न हो तो उसस्त्रीका स्वप्नमें वीर्य निकल जायेगा और रातभर शैतान उससे भोग करेगा और जो इसको अक़रकरा और फरीफयूनके साथ जैतके तेलमें तलकर लिंगपर मलें मैथुनकी शक्ति अधिकहो सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६१

(ख़नफसा) यहछोटा कीड़ा काले रंगका गोबरमें उपजताहै इसको हिंदीमे गोबरदरह कहते हैं और इसमें दुर्गंध होतीहै इसको तेलमें तलकर ववासीर पर मलना गुणदायक है जो इसको दो टूक करके उसकी तरीमें सलाई डुबोकर आंखमें लगावें आंखोंकी पीड़ाको लाभकरे और जोकिसी तेलमें तलकर कानमेंडालें कानका भारीपन दूरहो जो इसको ऊंटचारेमें खाय तो यह जानवर उसकी विष्टामें जीता निकल आताहै जो हिरणके दोनों तरफ़से यहकीड़ा निकलजाय तो हिरण मरजाय इसकीड़ेमें एकप्रकार जालनामी होताहै जो विष्टाकी गोली वनाकर अपने छिद्रमें लेजाताहै जो इस को कीचड़में डालदें तो नहीं हिलता मानो मुरदा होजाताहै जो गोबरपर डालें तो हिलता रहताहै (कहानी) किसी मनुष्यने इस

पशुको देखा और कहा कि ईश्वरने इसकी उत्पत्तिसे क्याप्रयोजन रक्खाहै कि उसका स्वरूप अच्छाहै या उसकी गंध अच्छीहै सो ईश्वरने उसकेघाव पैदाकिया जिसके इलाजसे अच्छे २ हकीम लाचारहुये सो उसने इलाजकरना बंदकिया एकदिन उसके कानमें वैद्यका शब्द सुनाई दिया उसको बुलवाया लोगोंने आश्चर्यकिया कि इतने बड़े हकीम इसरोग के इलाजसे हारगये इस गलियों के फिरनेवालेसे क्या होगा सोउसवैद्यने उसकोदेखकरकहा कि गोबर दरेको लाओ उसकी राख इस घाव पर छिड़को सो इसी औषधि से वह अच्छा होगया और उस रोगी को पहिली बात याद आई और ईश्वरकी बुद्धिमानीको माना सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३६२

(दूदअबफर) अर्थात् रेशमका कीड़ा यह छोटा कीड़ा होता है जब चरचुकता है अपने मकानमें जो दरख़्तों और कांटोमें होता है आकर रहता है और अपनी लारसे महीन २ जाल काढ़ता है और अपने शरीरका उसको पहिनाव बनाता है कि गर्मी और शर्दी और मेह और गर्दसे बचे और एक नियमित समय तक सोताहै प्रकट रहै कि इस कीडे का घर में रखना अति विचित्र है इसके पालने की यह रीति है कि बहारके प्रारम्भमें कि जब शहतूतके दरख़्त में पत्ते निकलते हैं इसकीड़ेके बीजको बहुतसा इकट्ठाकरे और कपड़ेमें लपेट कर स्त्री इसको अपनी छातियो के नीचे रक्खे कि शरीर की गर्मी उस बीजको पहुंचे एक सप्ताहतक ऐसाहोकरे सोउस बीजको किसी चीजपर छिटकादें और तूतके पत्तोंको मिकराज़से महीन २ काटकर डालदें सो वह बीज हिलकर उन पत्तोंको खालेंगे फिर एक सप्ताह तक खाना छोड देंगे तीन दिनके पीछे फिर सात दिन तक वह पत्तेखायेंगे फिर तीनदिन तक खाना बन्दकरदेंगे इसतरह तीन बेर होताहै चौथीबेर बहुतसाचारादें और इसबेर वह बहुतसा चारा खाते हैं उससमय उनके शरीरपर ऐसी चीज़ प्रकटहोती है जैसेकि मकड़ीका ज़ाला और जो उससमय मेह बरसे तो उनसबको मेहमें

रखदें कि खोल उनका नरमहोजाय सो वहकीड़े उनको छेद करके निकल आते हैं और कभी इनके दोपरभी निकलते हैं परन्तु परोंके कारण वह कीड़े उड़जाते हैं और रेशम नहीं मिलता और जोवर्षा न हो तो उनसबको धूपमेंरखदें कि सब मरजायँ फिर उनकोउठालें रेशम मिलेगा और जितनाबीजको रखनाचाहैं धूपमें न रक्खें और पानीसे भिगोदें कि खोल नरम हो और कीड़े उसमें छिद्रकरें और निकलें और अंडेदेवें और उन अंडोंकी रक्षा आनेवाले वर्ष के लिये करें परन्तु उनको मट्टी के बरतन या शीशे में रक्खें रेशम के कपड़े पहिनना खुजलीको गुणकरैं और इसमें जूंनहींपड़ती हैं इसी वास्ते मुसल्मानोंके शरह कहनेवाले इसका पहिनना खुजली और जूंवाले के वास्ते उचित जानते हैं सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३६३

(देकुलजिन) यह छोटासा कीड़ा बहुधा बागोंमें होताहै बलैनास कहताहै कि इसको पुरानी शराब में डालें कि मरजाय फिर निकालकर मट्टीके बरतनमें रक्खें और शिरबन्द करके गाड़दें उस घरमें फिर दीमक न होगी और उसकी आफत से मकान की लकड़ियां बचीरहेंगी सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६४

(मगस) अर्थात् मक्खी यह दुर्गंधसे उत्पन्न होतीहै कोई कहते हैं कि चारपायों की बिष्ठा से उपजतीहै ईश्वर ने इसके पलक नहीं बनाये क्योंकि इसकी आंख छोटी हैं और पलकका गुण यहहै कि आंखकी स्याहीको गर्द आदिसे बचाये रक्खे सो इसीकारण मक्खी सदा अपने दोनों हाथसे आंखोंको साफ़किया करतीहै और उसके एक सूंड़ भी होतीहै कि जबलहू चूसना चाहतीहै तब बाहरनिकालतीहै जब उसकापेटभरजाताहै तो मुंह के अन्दर करलेतीहै बाजी मक्खी ऐसीहै कि भिन भिनातीहै और इससे एक शब्द निकलताहै जिसतरह कि नरसुलसे आवाज़ निकलती है और चलनहीं सक्ती क्योंकि उसके जोड़ नहीं होते परन्तु च्यूंटी और जूंकि इनके

पशुको देखा और कहा कि ईश्वरने इसकी उत्पत्तिसे क्याप्रयोजन रक्खाहै कि उसका स्वरूप अच्छाहै या उसकी गंध अच्छीहै सो ईश्वरने उसकेघाव पैदाकिया जिसके इलाजसे अच्छे २ हकीम लाचारहुये सो उसने इलाजकरना बंदकिया एकदिन उसके कानमें वैद्यका शब्द सुनाई दिया उसको बुलवाया लोगोने आश्चर्यकिया कि इतने वड़े हकीम इसरोग के इलाजसे हारगये इस गलियों के फिरनेवालेसे क्या होगा सोउसवैद्यने उसकोदेखकरकहा कि गोबर दरेको लाओ उसकी राख इस घाव पर छिड़को सो इसी औषधि से वह अच्छा होगया और उस रोगी को पहिली बात याद आई और ईश्वरकी वुद्धिमानीको माना सूरतयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३६२

(दूदअतफर) अर्थात् रेशमका कीड़ा यह छोटा कीड़ाहोता है जब चरचुकता है अपने मकानमें जो दरख़्तों और कांटोमे होताहै आकर रहता है और अपनी लारसे महीन २ जाल काढ़ता है और अपने शरीरका उसको पहिनाव वनाता है कि गर्मी और शर्दी और मेह और गर्दसे बचे और एक नियमित समय तक सोताहै प्रकट रहे कि इस कीडे का घर में रखना अति विचित्र है इसके पालने की यह रीति है कि वहारके प्रारम्भमें कि जब शहतूतके दरख़्त में पत्ते निकलते हैं इसकीड़के बीजको बहुतसा इकट्ठाकरें और कपड़ेमें लपेट कर स्त्री इसको अपनी छातियो के नीचे रक्खे कि शरीर की गर्मी उस वीजको पहुंचे एक सप्ताहतक ऐसाहीकरे सोउस बीजको किसी चीजपर छिटकादें और तूतके पत्तोंको मिकराज़से महीन २ काटकर डालदें सो वह बीज हिलकर उन पत्तोंको खालेंगे फिर एक सप्ताह तक खाना छोड़ देंगे तीन दिनके पीछे फिर सात दिन तक वह पत्तेखायेंगे फिर तीनदिन तक खाना बन्दकरदेंगे इसतरह तीन वेर होताहै चौथीवेर बहुतसाचारादें और इसवेर वह बहुतसा चारा खाते हैं उससमय उनके शरीरपर ऐसी चीज़ प्रकटहोती है जैसेकि लकड़ीका ज़ाला और जो उससमय मेह बरसे तो उनसबको मेहमें

एकको कुत्तेकी मक्खी और एक को शेरकी मक्खी बोलते हैं क्योंकि यह मक्खियां मुख्यकरके इन्हीं पशुओंपर बैठती हैं और जब इनके घाव पड़जाता है तो यह मक्खी उनसे अलग नहीं होतीं यहां तक कि वह पशु मरजाता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३६५

(जरहर्ज) यहकीड़े छोटे २ लाल काले रंगों से चित्रित होते हैं इनको फ़ारसी में कोजरवार् कहते हैं यह जीव बिषेला होता है जो कोई इसको पानीमें पीजाय उसके फुक्कनेमें घाव पड़जाय और मूत्र बंद और आंख अंधीहोजाय और लिंग और पेड़ूपर सूजन आजाय इन सब दुःखोंके सिवाय उसकी बुद्धिमें भी भ्रमपैदाहो शेख़रईस कहताहै कि जिसपानीमें यह गिरताहै उसका स्वाद गोंद और गंधक के सदृश होजाता है यह पशु सुगंध से मरजाताहै और ऐसा लाल कीड़ा चौथिया तपवालेको बांधना रोग शांत करता है और जोयह जानवर क़बरिस्तानमें होता है उसके लगानेसे झाईं दूर होती है और मट्टीमें रहता है जो उसको तेलमें कई घड़ी डालदें कि रेज़ा २ होजाय तो उस तेलको उन हथियारोंपर मले जिनसे अंगूर छानते हैं तो उस वृक्षमें कीड़ा नलगेगा और न कोई जानवर उसके फल को खराब करेगा शेख़रईस का बचन है कि इसका सिरके के साथ मलना लंगड़े और फालिजवाले और छीपके रोगी और काले सपेद दागवाले कुष्ठीको बहुत जल्दी गुणकरनेवाला है जो उसको इस्पंद के साथ महीन पीसें और बालखोरे पर लेपकरें बाल जमआवें जो सरतानके फोड़ेपर लगावें गलादेता है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३६६

(रतीला) इसको फारसीमें दीलमक कहतेहैं शेख़रईसका वचन है कि दीलमक मकड़ी की तरह पर होता है जिसको अरबवाले फहदभी कहते हैं इनमेंसे बहुत बुरामिसरीहै शिर और पेट इसका बड़ा होता है जिसको काटे बड़ी पीड़ाहोतीहै और नींद नहींआती है और रंग पीला होजाता है और बहुधा ऐसा होता है कि जिसको

इतने कठोर होते हैं कि जो यह किसी बराबर जमीन के घाव पर गिरते हैं नहीं हटते और सदा मच्छड़ का शिकार करती हैं और इसकारण दिनमें मच्छड़ नहीं निकलता और रातको निकलता है जब कि मक्खी नहीं होतीं जाहिज़कहता है जो मक्खी मच्छड़ को न खाती तो हर एक मकान के कोने में मच्छड़ों की अधिकता हो जाती जब किसी जीवधारीके कोई घाव होताहै तुरन्त मक्खी उस पर बैठतीहैं और वह बैठना उसकी मृत्युका कारण होता है परन्तु जो घाव ऐसी जगह परहो जहां उस जीवधारीका मुंह पहुंचताहै तो उसको चाटकर अच्छा करताहै और मक्खी का बैठना घावपर इसकारण मृत्युका कारणहै कि मक्खी जहां बैठती है वहां परबीट करतीहै और उसकी बीटसेकीड़े पैदाहोते हैं कहते है कि जो मक्खी सपेदी पर बीटकरे वहचीज तुरन्त काली होजाय जो कालेपर हगे वहसपेद होजाय क्योंकि मक्खीकी विष्टा दोरंगकी होतीहै.कालेको सपेद और सपेदको काला करतीहै जैसे कि गोरय्या पक्षीकी विष्टा भी उससे विरुद्ध रंगपैदा करती है (गुण) जो इसका शिर काटकर जहां पर भिड़ने काटाहो मलदे पीड़ा दूरहो कहते है कि जोमक्खीके शिरको पकड़के एक सिरा शिरके बालका उसके पैरसे बांधे और दूसरा सिरा उसबालका आंखकी पीड़ा वाले के बांधे बहुत गुणकरे इसीतरह जो मक्खी को कपड़ेमें बांधकर आंख की पीडा के वास्ते बांधे लाभकरे जो इसको जलाकर शहदमें मिलाकर लगावें गंजेके बाल निकलआवें जो इसको सुखाकर सुरमेमें मिलाकर लगावें आंख में फायदाकरे और आंखकी ज्योति बढ़ावे पलके उगावे जो स्त्री यह सुरमा लगावे सुन्दर मालूम हो जो इसको भून कर खावें पथरी को उपयोगी है जो इसको दूधमे कजली करके बिच्छूके काटेहुये घाव पर लगावें पीड़ा शांतहो पैग़म्बर साहब का वचनहै कि जब मक्खी तुम्हारे खाने या पानी पीने में गिरे तो उसको निकाल कर खाना आदि खालो क्योंकि उसके एक परमे बीमारी और दूसरे परमेदवा है इसप्रकारकी कई जाति होतीहै एकप्रकारकी गधेकी मक्खी और

होता है यह सांपका विष पीताहै और लोगोंके बरतनोंमें डालता है तो मनुष्यको उसविषसे बड़ा दुःख पहुंचता है यह जानवर उस घरमें नहींजाता जहां केसर होता है जो इसको चौथिया तपवाले को बांधें गुणदायक है यह जानवर जहां नमक को पाता है उसमें लोटजाता है तो जो कोई उस नमक को खाता है काले और सपेद दागोंके कुष्टमें पड़जाताहै जो इसको मारकर सांपकी बांबीमें डाल दें सब सांप वहांसे निकलभागेंगे जोउसके दोखंड करके ऐसी जगह पर बांधें जहां कांटा या गांसी गड़गईहो तो वह निकल जाय यदि मरसोंपर इसका लेप करें दूर होजाय जो इसको सुखा कर तेलके साथ गजमें लगावें बाल निकल आयें इसका मांस बिच्छूके घाव पर लगाना उपयोगी है ॥

तसवीर नम्बर ३६८

(सलहफात) अर्थात् कछुआ यह जानवर धरती और पानी दोनोंका होताहै इसको फ़ारसीमें कशफ कहतेहैं जब खेती या बाग़ में पाला पड़ने का भय होता है लोग इसको लेकर उलटा लटका देते हैं फिर पालेकी हानिनहीं पहुंचती जो बड़े कछुवे खुश्की वाले को लेवें और उसके पेटकी सबचीज़ोंको बाहर निकाले और उसमें मिर्गीवाले लड़केको बिठादें आराम पावे अरस्तातालीस ने अपनी 'किताबुल हैवानमें लिखाहै कि मैंने पहाड़ी कछुवोंको देखा कि उन के दोनों हाथ कुत्तेकी तरह परथे और दोनोंहाथ हाथीकी तरह और शिर सांपकासा जोइनमेंसे एकभी दरियाकी ओर जाताथा तो और कछुवेभी उसकेसाथ जातेथे और जो एकपानी पीताथा तो और उस की ओर देखते थे सो देखनेहीसे उसकीप्यास दूरहोजातीथी इससे मुझे बड़ा आश्चर्यहुआ और जोहम उनको न देखते निश्चय न करते जो इसकी खालको जंगली जानवरकी खालके साथ बराबर रक्खें वह खाल फटजावे अब खुश्की वाले कछुवे का हम वर्णन करते हैं जो कोई जोड़ मनुष्य का पीड़ा करे और उसके सदृश कोई जोड़ कछुवे का लेकर उसपर बांधें पीड़ा दूरहोजाय परन्तु दाहनादाहने

काटे उसका लिंगखड़ा होजाताहै और विना इच्छा वीर्य निकलता है और दीलमक काटेहुये को वहुत जोरकी शिरपीड़ा पैदा होती है और उसीसे मरजाता है हकीमोंने इसकी चिकित्सा यह नियतकी है कि जो मनुष्यकी विष्टा निचोड़कर पिये और उस काटे हुये जोड़ को तन्दूरमें लटकाये उससे पसीना टपके तो निश्चयहै कि आराम होजाय सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६०

(जंबूर) भिड़ शहदकी मक्खीकेसदृश होताहै सर्दीमें अपने घर से नहीं निकलता और सम वायु में बाहर निकलता है और मक्खी को शिकार करता है जो कोई उसके छत्तेको छेड़े सब भिड़ें इकट्ठी होकर उसे डंक मारती हैं जब यह जानवर तेल में गिरता है मुरदे की सूरत होजाताहै जो फिर उसको तेलमें से निकालकर सिरके में डालदें हिलने लगता है क़तामी कहता है कि यहबात न जानीगई कि भिड़ किससे घर बनाती है हां इतना मालूम होता है कि वह कागजकी तरह होता है और यह जानवर सर्दीमें गरम जगह चला जाता है और वहां मुरदेकी तरह पड़ा रहता है और सर्दीके वास्ते कोई खानेकेलिये भोजन इकट्ठा नहीकरता परन्तु चींटी इकट्ठाकरती हैं और यह मक्खी सर्दीकी अधिकता और न खानेसे सूखीलकड़ी की तरह सूखजाता है जब बहारआती है उससमय ईश्वर उससूखी हुई लकड़ीमें जीव दौड़ाताहै कि नये सिरसे जीकर बाहर निकलता है और अपने छत्तेको बनाताहै और अंडे देकर पालताहै और जैसे उसके घर बनानेका हाल समझ में नहीं आता उसीतरह मकड़ी का घर बनानाभी बुद्धिमें नहीं आता तो सिवाय ईश्वरकी बुद्धिमानी के क्या कहाजाय सूरत उसकी यह है ॥

तसवीर नम्बर ३६८

(सामअबरस) यह एक प्रकार का कीड़ा है छोटा लंबी पूछ करके उमरका बेटा यहय्या कहताहै कि इसका मारना सौगुलामके छुड़ानेके बराबर है और यह पुण्य इसकारण है कि यह बहुत बुरा

जाकर शिकार कर लेतीहै और मज़बूत पकड़ के अपने मकान में लातीहै इसका तीसरा प्रकार लेसनामी है जिसकी छः आंखें होती हैं जब मक्खी को देखती है अपनाको धरतीमें चिपकातीहै और सब जोड़ ठहरातीहै फिर मक्खी पर कूदती है बहुधा यह चूकती नहीं चौथा प्रकार रतीला होताहै यह सर्व प्रकारों में बुरी होती है जो आदमी परसे जावे आदमी मरजावे और यह दुःख उसकीलार से पहुंचताहै न डकसे इसका वर्णन पूर्व होचुका है इसको अक़रबुस्सा बान भी कहतेहैं अर्थात् अजदेहका बिच्छू क्योंकि यह अज़देहकी शत्रुहै इनमेंसे पांचवीं प्रकार ऐसी है जो पत्थर या पृथ्वीपर जाला लगातीहै उसमें जोकोई मक्खीआदि आजातीहै तोशिकारकरलेती हैछठीप्रकार अपनाजाला सबसे बारीक बनातीहै और जहां जाल लगातीहै वहांसे चली जातीहै तो जब इसके जालमें मक्खी गिरती है तो घबरा जातीहै फिर मरजातीहै और यह मकड़ी दूरसे देखा करतीहै तोजो भूखी होतीहै तो मक्खीकी तरीको चाटतीहै नहीं तो ख़ज़ानेकी तरह इकट्ठा करतीहै बहुधा सूर्य्यास्त के समय बहुतसी मक्खियां उसके जालोमें गिर पड़तीहैं कोई कहतेहैं कि मकड़ी की मादा जाला बनाने का काम जानती है और नर नहींजानता और कइयोंके निकटदोनों मिलतेहैं और बाज़े कहतेहैं कि नर और मादा शागिर्द और उस्तादकी तरह परहैं यदि मकड़ीको काले कपड़े में लपेटकर तप वालेके बांधें दूरहोजाय बलैनासका बचनहै कि इसको घिसकर शराबमें पीना कफके ज्वर वालेको उपयोगीहै इसके जाले को जिस जगह लहू जारीहो लगावें तुरन्त बन्द होजाय जो इसका धुआँ मकानमें करें उस घरसे खटमल जातेरहतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ६०७

(फ़ारह) चूहा यह बड़ा छली होताहै यह जानवर पांचपापियों मेंहै जिसका मारना हल और हाममें उचितहै जिस तरह सर्प का हज़रत रसूलने इसके मारडालने पर आज्ञाकीहै क्योंकि यह बड़ा उपद्रवी होताहै बहुधा जलती हुई चिराग़ की बत्ती लेजाता है और

पर और बायां बायें पर इसका पित्ता मिर्गीवाले की नाक में टपकाना गुणदायक है यदि गलेको उससे भिगोवें गलेकी पीडा दूर होजाय जो इसके लहू का धुवां देवें मिर्गीवाले को लाभकरे और डंकदार जानवरके घावको फायदाकरे जो इसकी खाल को देगका सार्पोशबनावें तो उबाल न आयेगा चाहेकितनी बहुत आगदे इसका पित्तापांवकी हड्डीको पीड़ापर बांधना पीड़ा दूर करता है इसका अंडा खाना लड़को की खांसी को गुणदायक है और मिर्गी और पांवकी हड्डीकी पीड़ा और कूलजको बहुतउपयोगीहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०० (यह संख्या पढ़ने में अस्पष्ट)

(सरर) पतंगाहै जिसको अरबनब्त वरदान कहते हैं शेख़रईस कहता है कि यह जानवर सम्पूर्ण ववासीर और दुखदायी जानवरोंकेघावोंको लाभकारकहै जो इसकोजलाकरपीसकर औरउसमें सुरमेंका पत्थर मिलाकर आंखमे लगावें आंखकी ज्योतिअधिक करे जो गायके पित्तेके साथ सुरमा लगावें नाखना दूरहोजाय॥

तसवीर नम्बर ३०१

(जाजा) एक प्रकारका पशुहै जिसके शरीरकी लंबाई की प्रशंसानहीं करसके जिसने नहींदेखा वह निश्चय न करेगा कहते हैं कि मक्केकी ज़मीनमें होताहै और कोस भरके गिर्दमें अपनाघर बनाताहै इसका स्वभाव यहहै कि जोपशुकी दृष्टि इसपर पड़े वह तुरन्त मरजाय या इसकी दृष्टि किसी जानवरपर पड़जाय तो वह जानवर तुरन्त मरजाय जोकि इस पृथ्वीके पशुओंने इसकी परीक्षा कीहै इसलिये जब इसके साम्हनेसे जाते हैं और अपनी आंखेंबंद करलेतेहैं सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३०२

(जब) जिसको सूसमार और हिंदीमें गोहकहतेहैं यहपशुबुद्धिमान् होताहै कि और अपनाघर सिवाय सख़्त ज़मीनके और कहीं नहीं बनाता कि चारपायोंके सुमसे दुःख न पहुंचे और ऊंचे स्थान पर रहताहै किसीलन पहुंचे और किसी पहाड़या बड़े वृक्ष या बड़े

तो प्रवलहोगा और जो बिच्छू उसको बहुत डंक मारेगा तो चूहा न जीतेगा जोकोई दो जंगली चूहोंकीदुममें इसतरहपर रस्सीबांधे कि कि एक इसकिनारे और एक उस किनारे पर तो दोनोंके बीचमें लड़ाई शुरूहोगी कि किसी पालू या जंगली जीवधारीमें न देखीगई होगी जब रस्सी खुलजायेगी तो एकदूसरेसे भागजायँगे एकजाति इनकी आफरीनी नामी होती है यह प्रकार रुपये और असरफ़ी से प्रीति करती है जहां पाये चुरालेजाय किसी ने वर्णन किया है कि उसके घरमें एकचूहा था कि उससे मैंने बड़ादुःखपायाथा सो मैंने उसको चूहेदानमें पकड़ा और उसके मारडालने के विचारमें था कि उसका नर आया और अपनी मादाको क़ैदमें पाकर अपने बिलमें चलागया और वहांसे एक अशर्फ़ी लाकर चूहेदान के पास रखदी और आप राह देखतारहा कि शायद यह मनुष्य उसको छुड़ावेजब मैंने नछोड़ा तो कईबार उसी तरहकी अशर्फ़ी लाया जब उसनेदेखा कि अभी यह मनुष्य मेरी मादाको नहीं छोड़ता उस वेर एकटुकड़ा कपड़ेका लाया निदान मैंने समझा कि अब उसके पास अशर्फ़ियां नहीं रहीं तोउतनीही लेकर मैंने उसको छोड़दिया सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३०८

एकप्रकार इनमेंसे (हिल्द) नामी है ईश्वर ने इनको अंधा पैदा किया यहजाति जंगलों के सिवाय और कहीं नहींहोती परन्तु उन को सुननेकी शक्ति बहुत कृपाहुई है यहां तक कि दूरकी आहटपा-कर अपने बिलमें भागजाता है और घास की जड़े खाता है कहते हैं कि इसकी मादा जब जननेको होतीहै मर जातीहै जोकोई उस के शिकारकी इच्छाकरे उसके बिलमें थोड़ी प्याज डालदे जिसकी गन्धसे वहबाहर आवेगा और शिकार करलेवे सूरतउसकीयहहै ॥

तसवीर नम्बर ३०९

एक प्रकार इनमें से (कारतुलमसक) होती है इसकी उत्पत्ति तिब्बतमें है इसचूहे की नाभिमें मुशक होता है जैसा कि हिरनमें तो शिकारी उसका शिकार करते हैं कि और उसकी नाभिको

घरको मैंभाल और असबाबके जला देताहै और मनुष्यके उत्तम २ वस्त्र किताब और अन्न और खाने पीनेकी चीजों को खराब करता और बिथराताहै और उनमें बीट करताहै और बहुधा कुयें में गिर कर मरजाताहै और मनुष्यो को उसके साफ़करनेमें दुःख होताहै जब मनुष्य को चीता या बावला कुत्ता काटताहै तब यह जानवर उस मनुष्यको बहुत ढुंढ़ताहै और हर प्रकारके छलसे अपना कार्य करताहै यदि चीतेका घावहै तो उसपर मट्टी डालताहै यदि बावले श्वानका घावहै तो उसपर मूत्र करताहै और इससे मनुष्यकी मृत्यु होतीहै कई लोगोंका वचनहै कि इस पशुको स्मरणनहींहै क्योंकि जबबिल्लीदेखताहै अपनेबिलमे जाछिपताहै और तुरन्त फिरनिकल ताहै और इसनायादनहीं रखता कि बिल्ली छिद्रके दरवाजेपर खड़ी है और बाज कहते हैं कि इसके स्मरण शक्ति होने को क्योंकर कहसक्ते हैं क्योंकि यह अपने भोजन के विचारसे संग्रह करता है और बहुधा आनन्द के पदार्थों मे उपाय करता है इस जीव के विचित्र उपाय होते हैं उनमेंसे एक यह है कि जब कोई तेल शीशे में डालता है तो जब वह तेल ऊपर तक होताहै तो उसको पीता है और जो उसका मुंह छोटा होता है या तेल ऊपर तक नहींहोता तो उसमे अपनी पूछ डालता है और उसको तेलमें डुबोकर निकालता है और चाटता है यहां तक कि सबतेल पीलेता है कोई चूहा जब अंडा लेजानेको होता है तो अपने पेट के नीचे रखता है और अपने चारों हाथ पांवसे उसको पकडताहै और दूसराचूहा उसकी दुमको पकड़कर खींचता है कि वह अपने घर चलाजाय बाजे चूहे जब चाहते हैं कि अखरोट लेवें एकचूहा वह अखरोट उठाकर दूसरे चूहेपर रखता है और वह अपनी दुमको उस अखरोट पर लिपटा कर अपने सूराख़तक लेजाता है यह जानवर बिच्छूका शत्रु है जो इसको और बिच्छूको एकशीशेमे रक्खें इनदोनोमे बड़ी लडाईहोगी क्योंकि बिच्छू चूहेको डकमारेगा और चूहा चाहेगा कि इसकीदुम को किसीतरह काटलूं तो जो चूहेकी पकड़मे उसकीदुम आजावेगी

करताहै कि हर अपने २ बिलमें छिपजातेहैं यदि राजा शत्रुसे बेखबर होजावे और शत्रुअकस्मात् उनपड़ टूटपड़े और कुछ उनको पकड़ले तो बाक़ी भागजाते हैं और फिर इकट्ठे होकर उस बेखबर राजाको अलग करते हैं वरन उसको मारडालतेहैं और दूसरे को उसका राज्य सौंपतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३८२

इनमें एक प्रकारको (समन्दर) कहते हैं यहभी इसी स्वरूप का है परन्तु मूसनहीं है ग़ोरके शहरोंमें पायाजाता है यह जानवर आग में जानेसे नहीं जलता है अग्निसे जीता जागता निकल आता है किन्तु उसके बदनका मैल जलकर रंगसाफ़ होजाता है और उसके बाल आदिको कुछभी दुःखनहीं पहुंचता बादशाहोंके भोजनके वस्त्र इसीके होते हैं क्योंकि बहुत नरम होताहै तो जब वह दस्तरख्वान, मैलाहोता है आगमें डालनेसे साफ होजाता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८३

कहते हैं कि जोकोई जंगली मूसको पकड़कर उसकी दुम काट डाले या उसको खस्सीकरे और छोड़दे तो वह दूसरे जंगली और घरवाले मूसोंको बहुत दुःखीऔर पीड़ित करेगा और कोई उसपर प्रबल नहोगा यहां तक कि बिल्ली और नेवले उससे हारजातेहैं उस चूहेमें ऐसी वीरता और पुरुषार्थ प्रकट होता है बहुधा खलियान वाले इस क्रियाको करते हैं (गुण) जोकोई चूहेके दोखंड करके बांधे गांसी या कांटा जो जोड़में गड़गयाहो निकलजाय जो इसको जलाकर इसकी राख तेलमें मिलाकर गंजमें लगावें बाल निकल आयें अलसीकेकपड़ेमेंबाँधकर बाँधना शिरपीड़ा और मिर्गीकोलाभ कारकहै जो इसकीआंख टोपीमें रक्खें चलनेका दुःख मालूम नहो और जो किसीजातिमें वह मनुष्यजाय बहुतलोग उसजातिकेउससे बेख़बर होंगे यदि उसटोपी को ज्वरका रोगी पहने तुरन्त आराम पावे जो समन्दरके पत्तेको कोढ़ीपिये आरामहोजावे और समन्दर का लहू लिंगपर लगाना वीर्यबढ़ाताहै और सम्पूर्ण चूहोंके लहूमें

बांधतेहैं कि लहू जमजाय और वह कस्तूरी हिरनसे दशगुनी तेज़ होती है सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३८०

एकप्रकार इनमें (ज़ातुन्ताक)है यह प्रसिद्ध चूहाहै इसकाआधा ऊपरका शरीर सपेद होताहै और नीचेकाकाला और इस चूहेको ऐसी स्त्री से उपमा देते हैं जो दो बस्त्र दुरंगेपहिने हो और कमर अपनी बांधे हो और ऊपर के कपड़ेको लटकाये हो सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ३८१

और एक प्रकारका उनमें से (कारतुलवेश)है बाज़े कहतेहैं कि यह जानवर छोटासा चूहेके सदृश होताहै परन्तु चूहानहीहै वहघा घासमें रहताहै और उसीको खाताहै यह घासहलाहल विषहै और हिन्दुस्तान की पृथ्वीमें है और उनमें एक प्रकार (यरबूअ) होतीहै यह जंगली चूहाहै इसके दोबिलहोतेहैं एकको कासेआकहतेहैं और दूसरेको नाफ़क़ा कहतेहैं और यहअपने मकानमें बहुतसे मकान बनाताहै इसके बिलकीबनावट ऐसीहोतीहै कि नीचे ऊपर दहनेबॉयें जमीनको खोदता है और अपनी जगहको छिपाता है तो जो शत्रु से सूसमार या नेवला इसकाउद्योगकरें तो उसपर प्रबल नहोसके क्योंकि जब उसको कुछ भी खटका मालूम होता है तो दूसरेमार्ग सेनिकल जाता है इसके मकान में बहुत से दरवाज़े होते हैं और जगली मूषकोंकाराजा होताहै जब जंगली मूस अपने२बिलसे निकलनाचाहतेहैं तो उनका राजापहिले निकलताहै औरचारों ओरदृष्टि करके जब शत्रुको नहीं देखताहै तो शब्द करताहै और उसके शब्द पर और चूहे निकलतेहैं और जो कोईशत्रु दिखाई देताहै तो तुरन्त छिद्रमें जाछिपताहै और अपने आधीनोंको भीमनाकरताहै नहीं तो सब बाहर निकलतेहैं और उनकाराजा किसीऊंचे टेकड़ पर जाकर बैठताहै और सबकी रक्षा करताहै और आधीनोसे भोजन मांगता है तोजो कुछ इनके हाथमेवा आदि लगताहै अपने राजा के वास्ते लातेहैं और जब वह राजा किसी शत्रु को देखता है सबको चैतन्य

मैंने इकट्ठा करके सबकोगिना तो उनमें उत्तम प्रकारथे (किसाकिस) अर्थात् खटमल शेखरईसका वचन है कि यहजीव बुरी गंध वाला लकड़ीमें होता है जो इसको सिरकेमें पीसकर पियें जोंक जोकण्ठमें चिमट गईहो उसको बाहर निकालताहै जो इसको हाथसे मलकर सूंघे उदरकी पीड़ाको अति लाभ करे जो इसको घिस कर लिंगके छिद्रमें रखदें तो बन्द पेशाब जारी होजाय जो कोई सात खटमल चौथिया तपके आनेके पहले बाक़लेके साथ निगल जाय गुण करे जो इनको अकेला खाय तो दुःखदायी पशुओंसे बचा रहे (क़मल) अर्थात् जूं यह मनुष्यके पसीने और मैलसेउत्पन्न होती है क्योंकि पसीना मनुष्यके केश या बालों की गर्मीसे सड़ जाता है और यह उससे उपजती है और उसमें अंडेदेती है और उनको ऐसा मज़बूत चिपका देतीहै जो दूरनहीं होसके और यह जूं कालेबालो में काली सफ़ेदमें सपेदी सुर्खमें सुर्ख और सपेद काले बालोमें कुछसपेद और कुछ काली पैदाहोतीहै यदि गर्भवती स्त्री के बच्चेका नर और मादा मालूम करना हो तो उस स्त्री का दूध हथेली में लेकर उसमें इस जानवरको छोड़ें जो वह दूधसे निकल जाय तो गर्भवती के पेटमें बेटी है और इसके विपरीत बेटाहोगा क्योंकि बेटी का दूध पतला होता है और बेटेका गाढ़ा सो जूं पतले दूधसे निकलजाती है और गाढ़ेसेनहीं (क़नफ़ज़) इसे फ़ारसीमें ख़ारपुश्त और हिन्दी में सेई कहते हैं इसकी पीठ पर कांटे होते हैं जिनके बीच अपने सम्पूर्ण शरीरको छिपा लेता है और यह जानवर अपने घरमें दो दरवाज़े रखता है एक उत्तरी पवनके साम्हने दूसरा दक्षिणके हवा के साम्हने यह सर्पका शत्रुहोताहै जोसांपका गर्दन इसके मुख में आजातीहै तो सुगमतासे खाजाताहै और जो सांपकीदुम इसकेमुखमे आई तो दुमको मज़बूत पकड़के अपने सम्पूर्ण शरीर को अपने कांटों में छिपा लेता है और उसकी ओर पीठ कर देता है जब सांप उसपर फनमार कर मरजाता है उससमय खालेता है अंगूरके वृक्ष पर भी चढ़जाता है और उसके गुच्छोको तोड़कर ज़मीनमें गिरा देता है

यह प्रभावहै कि आंखके प्रवालको उखेड़कर लगावें फिर कभी प्रवाल न निकलेंगे इसकी चरबी गुलरोग़न में पिघलाकर मलें मुख की झाइयां दूरहोजायँ और जो इसकामांस भूनकर लड़केको खिलावें उसकी लार वहना वन्दहोजाय इसका अण्डे स्त्रीकी रान में बांधना बांझकरदेताहै इसकी दुम मिर्गीवालेके बांधना बहुत गुणकारीहै और शिरपीड़ा में भी उपयोगीहै जो इसकीखाल सुबह को निकालकर घरमें लटकावें सब चूहे भागजावें इसकी विष्ठा तेल में कजली करके शिरमें मलें वालखोरेकी बीमारी दूरहो यदि इसकी विष्ठा और प्याज़ कचलोन और लालशक्कर और अशनान बराबर लेकर कूलंजका रोगी शाफाले लाभहोगा इसकीविष्ठा शहदमें मिलाकरलगाना नाखना जो घोड़ेकीआंखमेहोताहै बिल्कुलदूरहोगा और इसकाखाना लड़कोंकीपथरीकोभीउपयोगीहैऔर जिसकामूत्र बन्दहोगयाहो उसकोभी लाभकरे कदाचित् मूसकी बिष्टाकासुरमा बनावें आंखकीसपेदी नष्टहो इसकाजूठाखाना भूख बहुत करता है और पैग़म्बर साहबने कहा कि पांचचीजें मनुष्यके लिये विस्मरण की कारण हैं एक उनमेंसे मूसका जूठा खाना है (फ़राश) परवाना अर्थात् पतंगा यह जीव अपनेको दीपकमेंजलाता है कहते हैं कि पहले यह जीव अमूज़ होता है जब पर निकलता है तब परवाना होजाता है अमूज़ एक सुर्ख़रंगका छोटा कीड़ा बहुधा सागमें होता है इसके आग पर गिरने का यह कारण है कि इसकी आंख बहुत छोटी होती है तो जब रात को चराग देखता है तो उसको यह मालूम होता है कि मैं अंधेरेमेंहूं और चराग को रोशनदान समझता है इस विचारमें अंधेरेसे उस रोशनीकी ओर जाता है जब ज्योति के पास जाता है और गर्मी मालूम होती है तो लौट आता है और यह विचार करता है कि मैं रोशनदान तकनहीं पहुंचा फिर दूसरी वेर उसका उद्योग करता है निदान इसी आवागमनमें जलजाता है खफ़ीफ़ समरकन्दीकी कहावत है कि एकदिन बहुतसे परवाने खलीफ़ा मोतजिदबिल्लाके साम्हने शमा को रोशनी पर इकट्ठे हुये तो

और गोल परमेश्वरने इसके शरीरपर चार पर पैदा किये इस जाति में एकराजा भी होता है और उसकी सेवा इस प्रकार की सम्पूर्ण मक्खियां करतीहैं और यह राज्य उसको अपने बाप दादाकी थाती से मिलता है उसको अरबी में यासूब और हिन्दी में रानी मक्खी कहते हैं इनका राजा घरसे बाहर नहीं निकलता क्योंकि जो बाहर निकले तो सम्पूर्ण मक्खियां उसके साथ बाहर निकलें सोसब किया हुआ उनका वृथा जाय जो उनका राजा मरजाय तो सम्पूर्ण मक्खियां शहद बनना छोड़दें और हरएक इसी दुःखसे मरजाय इन का राजा बड़ा होता है दो मक्खीके बराबर और वह मक्खियोंको काम बताता है और हरएक को कार्यपर नियत करता है किसीको घर बनाने और किसीको शहद बनानेमें लगाता और जिसको यह काम करनहीआता उसको अपनेअधिकारसे बाहर करदेताहै और जहां कि शहद बनाया जाता है वहां इनका पहरा खड़ा रहता है कि वह ऐसी मक्खियोंको वहां न जानेदे जो मैलपर बैठती हैं और यह अपने घरों को छः कोनेका बनाती हैं और वह बराबर ऐसेहोते हैं कि बुद्धि उसमें कुंठित है और छःकोने का इसलिये बनाया कि ऐसा स्वरूप किसी तिकोनी चौकोनी पचकोनी और गोल में नहीं तो देखना चाहिये कि ईश्वरने उनको किसतरहकी बुद्धि कृपा की कि ऐसे बराबर घर बनातीहैं कि जिनके पहलू और किनारे एक दूसरे सेनीचे और ऊंचे नहींहोते यदिकोई बड़ा कारीगरभी मिस्तर और परकारसे बनाना चाहे तो ऐसा बराबर नकरसकेगा यह मक्खियां पतझाड़ और बहार में कार्य करती हैं और हाथ और मुहके द्वारा दरख़्तोंके पत्ते और कंड़ियों की तरी चिकनाई लेकर घरके बनानेमें ख़र्च करती हैं इसके दोनोहोंठ ऐसे तेज होते हे कि दरख़्तों के मेवों से उनकी तरी जिसकी पहिचानमें बुद्धिमान आश्चर्य करते हैं जमा करतीहैं और ईश्वरने इनके उदरमें एक ऐसी शक्ति कृपा की है जो उसतरीके समूह को शहद बनादेतीहै कि वह और उसके बच्चे उस से पलें और जो कुछ बच्चों के भोजनसे बचताहै उसको किसी जगह

फिर वृक्षसे उतरकर उन गुच्छों पर लोटता है और उनको अपने कांटोमें छेदकर बच्चोके वास्ते घरलेजाता है और एक प्रकार इनमें से बड़ीहोती है वह इस सईसे इस तरह पर है कि जिस तरह भैंस गायसे कहते हैं कि इसतरहकी राई अपनी पीठसे कांटा उखाड़कर शत्रुको मारतीहै और वह कांटा तीरकी तरहपर जाकर उसको मार डालेता है और नही चूकता (गुण) इसकी बाईं आँख तेल में तल कर कानमें डालना भारीपन दूरकरता है जिस जोड़ के बाल नोच कर इसका पित्ता मलदे कभी वहां बाल न उगेगे यदि गंधकमिला कर छीपपर लगावें गुण करे इसकी तिल्ली भूनकर तिल्ली की पीड़ा वालेको खिलावें लाभकरे इसकी गुरदा सुखाकर काले चनेकेपानी के साथ कि जिसे उबाल कर छान लिया हो मूत्ररोध के रोगी को पिलावे पेशाब बंद खुलजाय इसका रुधिर बावले कुत्तेके काटे हुये पर लगाना लाभकरे शेखरईस का वचनहै कि इसके मांसमें नमक मिलाकर खाना कोढ़ और पीलपांवको लाभकरे और अधिक उस लड़केको गुणदायकहै जो स्वप्नमें मूत्र करताहो और दुःखदायी पशु कोढ़ ऐठन सिल और बातकी बीमारी को भी उपयोगी है इसकी खाल जलाकर ज़फ्तके तेलमे मिलाकर बाल खोरेपर मलना गुण करताहै एकप्रकार इनमेंसे दलूक होतीहै जो इसका अडकोष पका कर शहदके साथपियें वीर्य बहुतही उत्पन्न करता है इसके दाहनी ओरके नखका धुआँ देना चौथिया तपदूर करता है जो इसजानवर को जलाकर उसकी राख नासूरपर लगावे लाभकरे सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८४

(नबह) एक छोटा सा कीड़ा होताहै जब ऊंटपर बैठताहै उसका बदन सूज जाता है और बहुधा ऊंट मरजाताहै सूरत यहहै॥ र

तसवीर नम्बर ३८५

(नहल) इसे हिन्दीमें शहदकी मक्खी कहते हैं यह जीव अति विचित्र रूप और सुन्दर होताहै इसकी कमर पतली होतीहै औा आधे शरीरसे चोकोण छीलाहुआ होता है और इसका शिर चोड़

और गोल परमेश्वरने इसके शरीरपर चारपर पैदा किये इस जाति में एकराजा भी होता है और उसकी सेवा इस प्रकार की सम्पूर्ण मक्खियां करतीहैं और यह राज्य उसको अपने बाप दादाकी थाती से मिलता है उसको अरबी में यासूब और हिन्दी में रानी मक्खी कहते हैं इनका राजा घरसे बाहर नहीं निकलता क्योंकि जो बाहर निकले तो सम्पूर्ण मक्खियां उसके साथ बाहर निकलें सोसब किया हुआ उनका वृथा जाय जो उनका राजा मरजाय तो सम्पूर्ण मक्खियां शहद बनना छोड़दें और हरएक इसी दुःखसे मरजाय इन का राजा बड़ा होता है दो मक्खीके बराबर और वह मक्खियोंको काम बताता है और हरएक को कार्यपर नियत करता है किसीको घर बनाने और किसीको शहद बनानेमें लगाता और जिसको यह काम करनहींआता उसको अपनेअधिकारसे बाहर करदेताहै और जहां कि शहद बनाया जाता है वहां इनका पहरा खड़ा रहता है कि वह ऐसी मक्खियोंको वहां न जानेदे जो मैलपर बैठती हैं और यह अपने घरों को छः कोनेका बनाती हैं और वह बराबर ऐसेहोते हैं कि बुद्धि उसमें कुंठित है और छःकोने का इसलिये बनाया कि ऐसा स्वरूप किसी तिकोनी चौकोनी पचकोनी और गोल में नहीं तो देखना चाहिये कि ईश्वरने उनको किस्तरहकी बुद्धि कृपा की कि ऐसे बराबर घर बनातीहैं कि जिनके पहलू और किनारे एक दूसरे सेनीचे और ऊंचे नहींहोते यदिकोई बड़ा कारीगरभी मिस्तर और परकारसे बनाना चाहे तो ऐसा बराबर न करसकेगा यह मक्खियां पतझाड़ और बहार में कार्य करती हैं और हाथ और मुहके द्वारा दरख़्तोंके पत्ते और कड़ियों की तरी चिकनाई लेकर घरके बनानेमें ख़र्च करती हैं इसके दोनोंहोंठ ऐसे तेज होते हैं कि दरख़्तों के मेवों से उनकी तरी जिसकी पहिचानमें बुद्धिमान आश्चर्य करते हैं जमा करतीहैं और ईश्वरने इनके उदरमें एक ऐसी शक्ति कृपा की है जो उसतरीके समूह को शहद बनादेतीहै कि वह और उसके बच्चे उस से पलें और जो कुछ बच्चों के भोजनसे बचताहै उसको किसी जगह

इकट्ठा करती हैं और उसके मुंहको महीन मोमके परदेसें बंदकरती हैं कि शहद मट्टी घट्टेसे बचारहे और सर्दीके वास्ते इकट्ठा रहे और अपने मकानके कईखानोंमें अंडेदेती है और उनको पालती हैं और कई खानोंका सोने और आराम करनेके वास्ते रखतीहैं जिनदिनों में शहदका कामनहीं करती जैसे कि सर्दी गर्मी और बरसातमें तो उससमय उस संग्रहमें से खर्चकरतीहैं परन्तु अतिसमभाव के साथ यहांतक कि सर्दीकी मौसम जाकर बसन्त ऋतु आती है और यह फिर अपने कार्य को आरम्भ करती हैं यह बात इसको ईश्वर की कृपाकी हुई है तथाच ईश्वर का बचन है कि तेरे ईश्वर ने शहद की मक्खी की ओर आज्ञा भेजी कि तू अपना मकान पहाड़ों दरख़्तों और मकानोंमें बना फिर सब फलोंको खा और ईश्वरकी राहमेंअति दीनतासे चल और मक्खियोंके पेटसे एकचीज़ पीनेको निकलतीहै जिसके कईरंग हैं अर्थात् शहद उसमें लोगोंकेरोग की शान्ति है दूसरी आयतके यह अर्थहैं कि वह परमेश्वरशुद्धहै जिसने मक्खियोंके भोजनके फोगमें यह प्रभाव दिया कि शरीर की आरोग्यता उससे सम्बधितहुई और उसकेमैल अर्थात् मोमकेद्वारा अंधेरी रात कीरोशनी सम्बन्धितहुई इसकी एकविचित्रता यहहै कि जब इसके छत्तेके नीचे शहद निकालने के वास्ते धुआँ करते हैं तो यह बात मक्खियां मालूम करके जहां तक होसक्ता है खालेती हैं कहते हैं कि सपेद शहद जवान मक्खी का होता है और पीला अधेड़ मक्खियोंका और सुर्ख बुढ्ढियोंका और ईश्वरकी आज्ञानुसार शहद में बड़े गुण हैं तो जिसका स्वभाव गर्महो वह शहदको सिकंजबीन आदिके सायपिये कि उसकी गर्मी कमहो और ठंढे स्वभावको खालिस शहद खाना लाभ करता है और इसका स्वभाव यह है कि जो चीज देरतक रखछोड़नेसे खराब होजातीहै जोशहदमें उसको रक्खें तोखराब नहोगी जो कस्तूरीमें मिलाकर आंखमें लगावें पानी बहना बन्दहोजाय जो शरीरमें मलें जुयेसब मरजायँ इसकाखाना बावले कुत्तेके घावको गुणदायक है एक प्रकार का शहद हलाहल

विसहोता है यहांतक कि उसकी गंधसे मनुष्य मूर्च्छित होजाता है और मोम इन मक्खियों के मकान की दीवारें हैं काला मोम उनके घोसलेका मैलहै कांटेआदिको घावसे निकालताहै जोमोमको कोई साथरक्खे कभी उसे स्वप्नमें वीर्यपातनहो परन्तु चिन्ता और शोक का पैदाकरनेवाला है सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३८६

(निमल) अर्थात् च्यूंटी यह जीव भोजनके इकट्ठाकरने में बड़ा लोभी होता है यहां तक कि अपने शरीरसे अधिक बोझ उठाता है और ऐसे समयमें यह जानवर एक दूसरेकी सहायता करता है और इतना खाना इकट्ठा करता है जो जीतारहै बरसों को पूरा हो और इसकी एक वर्षसे अधिक आयु नहींहोती नस्साबा बकरी कहता है कि च्यूंटियां दो प्रकार की होती हैं एकको आज्वर कहते हैं और दूसरेको अक़बानआज़र आज़र कालेरंगकी और अकबान लालरंग की होती है और च्यूंटीमें यह विचित्रताहै कि पृथ्वीके नीचे मकान बनाकर उसमें कोठड़ी और दरवाज़े और मकान आदि भी बनाती है और उसमें शीत काल के लिये संग्रह करती है कई मकान ऐसे बनाती है कि उसमेंपानी न पहुंचसके पैगम्बरसाहबकी कहावत है कि च्यूंटियोंको नमारो क्योंकि एक दिन हज़रत सुलेमान निमाज़ पढ़नेकेलिये बाहर निकले एक च्यूंटीको देखा किदोनों पैरोंसे खड़ी हुई हाथोंको उठाये ईश्वरकेलियेयहविनय कररहीहै कि हेपरमेश्वर मैंभी तेरी सृष्टिसेहूं मुझे तेरी कृपासे बेपरवाही नहीं है मुझको अपने अपराधी लोगोंके साथ दडनदें और वर्षा कोभेज कि वृक्षफल समेतहों और खेती पैदाहो कि मेरे भोजन का कारण प्रकटहो सो सुलेमानने उस च्यूंटी की विनती को सुनकर अपनेसभ्योंसे कहा फिर चलो अब वर्षाकेलिये निमाज़ पढ़नेकी आवश्यकतानहीं क्योंकि इसकी विनयअंगीकारहुई इसकी विचित्रतामेंसे यहबात भी है कि चाहे इसका इतना छोटा शरीरहै परन्तुइसको वह प्राणशक्ति कृपाहुई है कि किसी जीवधारीको यहबलनहीं तो जहां मनुष्य के

इकट्ठा करती हैं और उसके मुंहको महीन मोमके परदेसें बंदकरती हैं कि शहद मट्टी घट्टेसे वचारहे और सर्दीके वास्ते इकट्ठा रहे और अपने मकानके कईखानोंमें अंडेदेती हैं और उनको पालती हैं और कई खानोंका सोने और आराम करनेके वास्ते रखतीहैं जिनदिनों में शहदका कामनहीं करती जैसे कि सर्दी गर्मी और बरसातमें तो उससमय उस संग्रहमे से खर्चकरतीहैं परन्तु अतिसमभाव के साथ यहांतक कि सर्दीकी मौसम जाकर वसन्त ऋतु आती है और यह फिर अपने कार्य को आरम्भ करती हैं यह वात इसको ईश्वर की कृपाकी हुई है तथाच ईश्वर का वचन है कि तेरे ईश्वर ने शहद की मक्खी की ओर आज्ञा भेजी कि तू अपना मकान पहाड़ों दरख़्तों और मकानोंमें बना फिर सब फलोंको खा और ईश्वरकी राहमेंअति दीनतासे चल और मक्खियोंके पेटसे एकचीज पीनेकी निकलतीहै जिसके कईरंग हैं अर्थात् शहद उसमे लोगोंकेरोग की शान्ति है दूसरी आयतके यह अर्थहै कि वह परमेश्वरशुद्धहै जिसने मक्खि-योंके भोजनके फोगमे यह प्रभाव दिया कि शरीर की आरोग्यता उससे सम्वधितहुई और उसकेमैल अर्थात् मोमकेद्वारा अंधेरी रात कीरोशनी सम्बन्धितहुई इसकी एकविचित्रता यहहै कि जब इसके छत्तेके नीचे शहद निकालने के वास्ते धुआँ करते हैं तो यह बात मक्खियां मालूम करके जहां तक होसक्ता है खालेती हैं कहते हैं कि सपेद शहद जवान मक्खी का होता है और पीला अधेड़ म-क्खियोंका और सुर्ख़ बुड्ढियोंका और ईश्वरकी आज्ञानुसार शहद में बड़े गुण हैं तो जिसका स्वभाव गर्महो वह शहदको सिकजबीन आदिके साथपिये कि उसकी गर्मी कमहो और ठँढे स्वभावको खा-लिस शहद खाना लाभ करता है और इसका स्वभाव यह है कि जो चीज़ देरतक रखछोड़नेसे खराब होजातीहै जोशहदमें उसको रक्खें तोखराब नहोगी जो कस्तूरीमे मिलाकर आंखमें लगावे पानी बहना बन्दहोजाय जो शरीरमें मलें जुयेसब मरजायँ इसकाखाना बावले कुत्तेके घावको गुणदायक है एक प्रकार का शहद हलाहल

इसके अंडे को किसी समूहमें डालदें बिखरजावेंगे (वरल) अर्थात् गोई यह गोहसे छोटा और बिल्ली से बड़ा और कुत्ते से लम्बी पूछ किये छोटे शिरका जल्दी भागनेवाला जीव होताहै और सांप और सूसमारका शत्रुभी होताहै और सर्पका शिर अलग करके खाताहै कोई इस जानवरसे बढ़कर सांपको नहीं मारसक्ता और यह जानवर अपना घरनहीं वनाता वरन जिस सांपकी बांबी में चाहा घुस गया तो वह आपही अपनी जान बचाकर भागजाताहै (गुण) इस केमांस और चरबीको तबक़ातुलनिसा कहते हैं अर्थात् इसकेमांस खानेसे मुख्य करके स्त्रियां पुष्ट होती हैं यदि घाव पर रक्खे गांसी आदि घावसे बाहर निकल आती है इसकी चरबी शक्कर और जौ के आटेमें मिलाकर वकरीके मांस में पकाकर उसका शोरबा पियें बहुत मोटेहों और जो इसको जलाकर इसकी राख तेलमे मिलाकर फुकनेपर लगायें उसकी पीड़ा दूरहो जो इसकी विष्ठा को लगावें मुखकी झाईं और मस्सों को दूरकरे और इसका सुरमा आंख की सपेदीको नाश करता है सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ३८०

अन्य २ स्वरूपों के जीवधारियों का वर्णन

इन जीवोंके स्वरूप नियमित पशुओं के विरुद्ध हैं और उनमें से कइयोंका वर्णन तीन प्रकारोंमें करते हैं (पहली प्रकार) यह अति विचित्र सृष्टि ईश्वरने द्वीपों और पृथ्वीकी ओरोंमें उत्पन्न की है (दूसरी प्रसार) यह वह हैं जो दो प्रकारके पशुओंके मैथुनसे उपजे हैं (तीसरीप्रकार) यह वह हैं जिनकी शकल और सूरत चित्र विचित्र है (प्रथमप्रकार) यह वह हैं जिनको ईश्वरने पृथ्वी की ओरों और द्वीपोंमें उत्पन्न किया है उनमें से याजूज और माजूज है यह जाति अधिकतासे हैं कि सिवाय ईश्वरके इनको कोईनहीं गिनसक्ताइनके ऊपरका आधा धड़ मनुष्योंके सदृश होताहै और इनके दांत जंगली दुःखदायी पशुओंकेसदृश होते हैं और नखकेवदले चुंगल और उन को दुम पर बाल होते हैं और कोई इनमें से नहीं मरता जबतक

हाथसे कोईचीज़ गिरे उसकी गंधपर च्यूंटियां वहुत जल्दी इकट्ठा होती हैं जो आप न उठासके तो औरोंको जल्दी खबरकरकेलेआती है और जो च्यूंटी उसके साम्हनेसे जाती है उसके मुख को सूंघती है कि उस गधके द्वारा उस चीजका पतापावे और हर एक समूह को खवर देताहै कि वह समूह उस वस्तुपर इकट्ठा होजाताहै और परिश्रम करता है जो उनको यहमालूम होजाय कि कोई उसके उठाने में आलस्य करता है तो सब च्यूंटियां उसके मार डालने पर मोजूद होजाती हैं और जब कुछदाना अपने घरमें इकट्ठा करलेती हैं और बिलमें तरीहोती है तो डरती हैं कि वहदाना न उगपड़े तो इसविचारसे हरएक दानेको दोखंड करके रखती हैं और धनिये के चार टुकड़े करती हैं क्योंकि धनियाँ दोटूकड़े करके बोया जाता है और जो और बाक़लेकोछीलकर क्योंकि उसमें उगनेकीशक्ति छिल के उतारनेसे जाती रहती है क्या ईश्वरकी माया इनबातों से सिद्ध है किसी समय उससंग्रहको खराब और सड़जानेके भयमें धूपदेती हैं और बादलको देखकर धूपसे उठाकर उसे उचित स्थानमें रखती है और जोकोई दाना पानीसे भीगजाता है तो जबधूप निकलतीहै उसको सुखालेती हैं इनको विचित्रतासे यहभी है कि जबतक कि कोई वस्तु वृक्ष मनुष्य या अन्य जीव जीता है नहीं छेड़तीं परन्तु जब उसमें हानि पहुंचतीहै तोवहां इकट्ठी होकर उसके मारडालने का कारण होती हैं यहांतक कि जो किसी अजदहे या सांपके घाव पड़जाय तो उसके शरीर में इकट्ठी होजाती हैं चाहे वह कितना भयानकहो परन्तु जबतक वहजीताहै उससे अलगनहीं होतीं जो च्यूंटियोंको जलाकर धुआँकरें तो सब घरकी च्यूंटियां मरजावेंगी या भागजायेंगी जबइनके पर निकलते हैं तो मरनेका समयनिकट आता है चिड़ियां खालेती हैं अबुलकहिया कहता हैं जब च्यूंटी में उड़नेकी शक्ति आती है तोउसकी मृत्यु निकट आजाती है जोइसके अंडेकोई आधा दिरम खायतो उसके उदरसे विना इच्छा बात सरे जो इसके अंडों को पीसकर जहां पर मलें वहां बाल न उगेंगे जो

चोंच सेमार एक लोचन करदेतेहैं सूरत और सकलउनकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८३

(उसमेंसे) एक जाति बोज़न्ती जंगके द्वीपोंमें होतीहै इनके शिर कुत्तेकी तौर पर और बाक़ी बदन मनुष्य के सदृश होताहै और जंगली मेवे और पुष्टजीवोंको खातेहैं और दुबलेजीवोंको फलखिला कर मोटा करतेहैं फिर बड़ी रुचिसे खातेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८४

(उनमें से) जेज़ीरे रंग के कई द्वीपों में एक जाति होती है मनुष्य के स्वरूप कीसी और इनका सुन्दर रूप होता पर पांवमें हड्डी नहीं होती चलनेमें पैर घसिटतेहैं यदि किसी चलने वालेको पातेहैं तो उसको अपने पास बिठलाते हैं और जब वह बैठजाताहै तो कूदकर उसकी गर्दन पर सवारहोते हैं और दोनो अपने पांव उसकी गर्दनमें तस्मेकी तरह लपेटते हैं कदाचित् वह मनुष्य उसे अलग करनाचाहताहै तो वह अपने नखसे उसके मुखको घायल करते हैं और उसको इच्छानुसार इधर उधर घोड़ेकी तौरपर जिस ओर चाहतेहैं दौड़ाते हैं॥

तसवीर नम्बर ३८५

(उनमेंसे) एकजात कईद्वीपों में होती है जिनके पर और सूंड होतेहैं और महीजान बोलि और कभी दो पैरसे चलतेहैं और कभी हवा पर उड़तेहैं परन्तु मनुष्यसे भागते हैं कई लोग कहते हैं कि यह मनुष्य के प्रकार से है और कई जिन्नों की जाति से बताते हैं आगे ईश्वरजाने चित्र यह है॥

तसवीर नम्बर ३८६

(उनमेंसे) एकजाति लंबेकद सब्ज़ आंख किये कम उड़नेवाले होतेहैं इनके सिर घोड़ोंकी तरह और शेषसम्पूर्ण शरीर मनुष्य का सा सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३८७

उनमें से एक जाति है जिनके दोमुख होतेहैं और शरीरमनुष्य की सदृश और इनके लम्बे २ बाल होतेहैं सूरत यह है॥

कि एक हज़ार सन्तान अपनी पीढ़ीसे नही देखलेता सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३८८

उसमेंसे एकजाति (मन्सक)नाम होतेहैं और यह जाति पूर्वकी धरतीमे याजूज माजूजके निकट रहती हैं और यहलोग मनुष्यकी सूरत के होते हैं परन्तु इनके हाथीकी तौरपर कानहोते हैं सोनेके समय एक को चादर के तौरपर बिछाते हैं और दूसरे को ओढ़ते हैं सूरत यह है॥

तसवीर नम्बर ३८९

(उसमेसे) एक जाति है जोसद्दसिकन्दरी के निकट पहाड़ों में रहते हैं इनके डील छोटे और हरएककी लम्बाई पांच बालिश्तकी उन्हींके हाथसे होती है और उनके मुंहचौड़े और बदनकाला और उसपर सपेद और पीले नुक़्ते होतेहैं मनुष्योंसे भागकर वृक्षों पर चढ़ जातेहैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६०

(उसमेंसे) एकजातिहै कि ज़ंगियान द्वीपमें मनुष्यके स्वरूपकी होती है और उनके पर होतेहैं कि उनसे उड़तेहैं और पर उनके सपेद काले पीले रंगके होतेहैं और उनकी बातोंको सिवाय उनके और कोई नहीं समझसक्ता और मनुष्यों की तरहसे खाते पीते हैं सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६१

(उसमेंसे) एक नंगीजाति रामी द्वीपमें रहतीहै इनकी लम्बाई चार बालिश्तकी उन्हीं के हाथों से होतीहै और बाल लाल और उनका वचन ढोलके शब्दकी तरह होताहै जिसको सिवाय उन के और कोई समझ नही सक्ता और खाना पीना उनका मनुष्यों के सदृश होताहै स्वरूप यहहै॥

तसवीर नम्बर ३६२

(उसमेसे) एकजाति कई जंगियो के द्वीपों में रहती है जिनका डीलडौल एक गज़का होताहै बहुत से उनमें एक आंखके होते हैं अज़ानीक़एकजानवरोंका प्रकारहै हरवर्ष यहजानवर इनके देश में आते हैं और इनसे बड़ी लड़ाई होती है सो वह जानवर इनको

का निर्मापक लिखताहै कि मैंने अपनी आंखसे इसपशुको देखाहै इसजानवरकी सूरत अच्छी होतीहै किसरा अरदशेर के पास एक घोड़ाथा जिसको अजदर कहतेथे एकदिन वह भागकर जंगलमें चलागया और वहां एक जंगली गधीसे जुफ़्तीकी उससे संतान बहुत सुंदर उपजी उसको अज़दरी कहतेहैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०५

(बाज़े) जानवर वहहैं कि ऊंट और ताज़ी घोड़ेसे उत्पन्न होतेहैं अरबवाले उनको बुख़्ती कहतेहैं और यह ऊंटोंके प्रकारमें उत्तम और श्रेष्ठ होतेहैं सूरत उनकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०६

(बाज़े) पशु मनुष्य और रीछके मैथुनसे उत्पन्न होतेहैं अजायबुलमख़लूकात का निर्मापक कहताहै कि मुझसे एकमनुष्यने इस प्रकारके पशुकाहाल यूं बयानकियाहै कि चाहे यहजानवर मनुष्य की सूरतपर होताहै और मनुष्यकी तरह बातभी करता है परन्तु रीछकी तरह शरीर पर बालोंकी अधिकता होतीहै सूरत यह है ॥

तसवीर नम्बर ४०७

(कई) पशु भेड़िये और हुंडारसे उत्पन्न होतेहैं जो हुंडार नर हो तो उसके बच्चेको वस्मा कहते हैं और जो भेड़िया नरहुआ तो उसके बच्चेको अयार बोलतेहैं सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०८

(कई) पशु भेड़िये और कुत्तेकी जुफ़्तीसे पैदा होतेहैं जिस भेड़ियेको अरबवाले देसमकहतेहैं यह भेड़िया कुतियो के साथ सलूकाकीधरतीपर जो यमनमें है जुफ़्ती खातेहैं और वहां इसप्रकार की एकजाति होतीहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४०९

(एक) प्रकारके पक्षी पालू और पहाड़ी कबूतरकी संगतिसे उपजतेहैं जिनकोराई कहते हैं सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१०

(तीसराप्रकारविचित्रपशुवोंकावर्णन) वैद्योंका वचनहै कि जब

तसवीर नम्बर ३९८

(उसमेंसे) एकजातिहै जिनके दोशिर और बहुतसेपैरहोते हैं और उनका शब्द पक्षियो की तरह दुमलम्बी और शरीर मनुष्यकासा सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ३९९

(उसमेंसे) एक जातिहै जिसके शिरमनुष्यकी तरह और शरीर सर्पका और सर्पही की तरह पृथ्वीपर चलतेहै सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४००

(उसमेंसे) एक जाति चीनकेदरियाके कईद्वीपोंमें होतीहै उनके मुंह और आंखे हृदय पर होतीहैं लिखाहै कि इस जातिसे एकमनुष्य वहांके बादशाह के पास अपनी जातिकी ओर से भेजा हुआ आया था और लोगोंने अपनी आंखो देखाथा सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०१

(उसमेंसे) कईद्वीपोमे एकजाति नसनासनामक होतीहै मनुष्य के रूपकी परन्तु हर एकके आधाशिर और एकहाथ और एक पैर होताहै और यहजातिएकहीपैरसे बहुततेज़ीसेदौड़तीहैसूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०२

(उसमेंसे) एकजाति ऐसीहै जिनकामुख मनुष्यकी सूरतपर और पीठकछुवेकी तरह और शिरपर लंबे २ सींगहोते हैं सूरतयहहै॥

तसवीर नम्बर ४०३

(दूसरा प्रकार) उनजीवो का वर्णन जो दोअन्य २ पशुओं के भोगसे उत्पन्नहों जैसेखच्चर पर दृष्टिकरो तो उसके जोड़घोड़ और गधेके बीचमे पाये जातेहै तो जोजुफ्तीकेसमय गधानरहो तो उसका बच्चा घोड़ेकी शकल होगा और जोघोड़ानरहो तो इसके विरुद्ध और कोई प्रकार इनमेंसे जराफा लिखाहै कि नरहुडार और जंगली ऊंटनीके मैथुनसे एकपशु विचित्र रूपसे उत्पन्न होताहै तो जबवह जंगली गायसे जुफ्ती करता है तो जराफा उत्पन्न होता है सूरत ज़राफेकी यहहै॥

तसवीरनम्बर ४०४

और कई पशु जंगली घोड़े और गधेसे उपजते हैं इसपुस्तक

कर हमारे सामने लाये देखा कि वह बारह गजका लम्बाथा और शिरबड़ी देग़के बराबर और नाकउस की हमारे हाथ से अधिक थी और आंखें बड़ी २ और उसकी हर उंगली हमारे हाथकी बराबर थी उससे हमने बहुत बातेंकीं परन्तु वह न बोला और न हमारी बात समझा फिर उसको उसके स्थानपर लेगये और वह एकसमय तक जीता रहा फिर मर गया यह मालूम न हुआ कि वह किस जाति सेथा और क़हांसे आया था सूरत उसकी यहहै॥

तसवीर नम्बर ४१२

(उसमेंसे) मवरूसल के फ़क़ीरोंकी क़हानीहै कि मवरूसल के कई पहाड़ों मे मनुष्य रहतेहैं एकवेर उस जातिके लड़केको हमने देखा कि उसका डौल नौगजका था और उमर उसकी पन्द्रह वर्षसे कम थी और उसमें इतना बलथा कि हममेंसे बलयुक्त पुरुषको उठाकर अपनी पीठपर लादलेता था सूरत यह है

तसवीर नम्बर ४१३

(उसमेंसे) शाफईने कहाहै कि आज हमने यमनके शहरोंमें ऐसा मनुष्य देखा जो कमरसे नीचे स्त्रीके सदृशथा और ऊपरका शरीर उसका दुशाखा अलग था दो शिर दो मुंह चार हाथ और दोनो मुखसे खातापीता था और परस्पर लड़ता था और फिर सुलह कर लेता था दो वर्षके उपरान्त जबहम फिर उस स्थान पर गये उस मनुष्यको देखा कि एक शरीर उसका बाकी है लोगोंसे हमने पूछा मालूम हुआ कि शरीर उसका ऊपर वाला मरगया था उसको कटवाडाला विचित्रता यहथी कि वह अपने शरीरसे पूर्ववत् अच्छी तरह चलता फिरता था सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४१४

(उसमेंसे) अबसाद सराने लिखाहै कि अकमके पुत्र क़ाज़ी यह ऱ्याके पास एकदिन मेरे जानेका संयोग हुआ अकस्मात् मैनेदेखा कि उसके पहलूमें एक पिजड़ा रक्खाहै और उसमें एकजानवर कव्वे की शक्लका मनुष्यका मुखकिये बन्द है और उसकी छाती और पीठपर दो निशान चिन्हों की तरह परहैं तो मैंने क़ाज़ी से पूछा

स्वभाव सीधा होताहै तो सूरतभी सीधी पैदाहोतीहै और ज्योतिषियों का निश्चयहै कि ग्रहके अनुसार स्वरूप होताहै और मीना के पुत्र वहवने लिखाहै कि ऊकका पुत्र ऊज सम्पूर्ण मनुष्यों में सुन्दर और स्वरूपवान्था जिसकी डीलकी लंबाई और शरीर की पुष्टता वर्णनसे बाहरहै ईश्वरने उसकी आयु इतनी दी कि नूहके समयसे उमरानके पुत्र मूसातक जीताथा और इसमनुष्यने हजरत नूहसे तूफानके समय विनयकीथी कि मुझकोभी अपनी किश्ती में जगह दीजिये परन्तु उन्होंने इन्कार किया उससमय यह मनुष्य निराशरहा परन्तु कहतेहैं कि तूफान अर्थात् प्रलयके बहाव का जल उसकी कमर तकरहा यहमनुष्य बड़ा अन्यायी और अहंकारीथा खुश्की और तरीमें सबको दुःखदिया करताथा जबबनीइसराईल तेकी धरतीमें इकट्ठे हुयेथे तो यहमनुष्य उनके लश्कर को जोचारकोसके गिर्दमें पड़ाथा जानगया और एक पत्थर इस अनुमानका कि सम्पूर्ण सेना को टुकड़े २ करडाले अपने शिरपर उठाकर लेचला कि उनके शिरपर गिरावे और एकहीवेर सबमरजायँ उससमय ईश्वरकी आज्ञासे एक चिड़ियाने उसपत्थरके ऊपर बैठकर उसमें छिद्रकरदिया सो वह पत्थर हसलेकी तरह औजके गलेमें पड़गया और दोनों हाथभी उसके फँसगये तब परमेश्वर ने हजरत मूसाको बताया कि तेराशत्रु क़ैदमें है अब उसको दंडदो उससमय मूसाने पहुंचकर उसको छड़ी मारकर मारडाला लिखा है कि उसके दोनो पांवकी पिंडलियां नीलदरियापर पुलकी तरह बहुत समयतक रक्खीरहीं आगे ईश्वरजाने सूरत यहहै॥

तसवीर नम्बर ४११

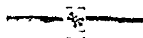
(उसमेंसे) फजलानरसूलके पुत्र अहमदने लिखा है कि मैने बलग़ार के बादशाह से पूछा कि मैने सुना है कि आपके पास कोई मनुष्य अतिविचित्र और बड़ेडीलका है बादशाहने उत्तर दिया कि वह मनुष्य हमारे देशका नहींथा किंतु एकवेर दरिया में बहाव आयाथा वह मनुष्य उसमें बह आयाथा तो जबलोग उसको पकड़

गैंड़ेके एक जानवर में नहीं होते परन्तु ईश्वर की कारीगरी उसकी पैदा कीहुई अद्भुत वस्तु इतनीहैं कि कोई उसको नहीं : सक्ता स्वरूप उसका यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१८

इति ॥

इस पुस्तक को पंडित रामबिहारी व पंडित रामसेवक व पंडित बंदीदीन व पण्डित कृष्णबिहारी ने शुद्धकिया ॥



क़ाज़ीने कहा कि तुम आप उससे पूछोसो मैंने उस पक्षी से पूछा कि तू कौनहै उसने खड़े होकर अतिवाचालता पूर्वक कुछ पद्यपढ़े जिनके अर्थ खूब समझमें न आये तो जब वह पढ़ चुका तो तुरन्त चिल्लाने लगा और अपनेको पिंजड़े में गिरादिया तो मैंने कहा कि ऐक़ाजी यह पक्षी प्रेमी मालूम होताहै क़ाजी ने उत्तर दिया कि जो तुझे मालूमहो परन्तु मैं इसके भेदको नहीं जानता और उनपद्यों के अर्थ जानताहूं किन्तु खलीफाके पास एक किताब मोहर कीहुई है उसमें इसका हाल पूरा लिखाहै सूरत यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१५

(उनमेंसे) संजाबके हाकिम अबूरैहान ख्वारजमी ने मन्सूरुस्सामानीके पुत्र नूहको एक लोमड़ी भेजी थी जिस के दो पर थे जब मनुष्य उसके निकट जाता था तो दोनो अपने पर बिछादेती थी और जब मनुष्य अलग होजाताथा तो दोनों परोंको अपने पहलूमें चिपका लेतीथी सोअबूरैहान ख्वारज़मीने कहाकियह कुछविचित्रता नहींहै क्योंकि क्थानोंके बादशाहों के पास गतसमयमे इससेउत्तम उड़ने वाली लोमड़ियां थीं जो आज्ञा पर उड़तीथीं और फिर चली आतीथीं स्वरूप यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१६

(उसमेंसे) एक यह भी कहावत है कि खुरासान की पृथ्वी के अन्तर्गत मौज़े गुलावसाभान में एक स्त्री ऐसा बच्चा जनी जिस के दो शिरथे जैसा किइस समयमे अथडोंसे बहुधा दो शिर या चार पैर के बच्चे पैदाहुआ करतेहैं बुद्धि मानोंका वचनहै कि यह बात अति विचित्रहै सूरत उसकी यहहै ॥

तसवीर नम्बर ४१७

(उनमेंसे) एक कहानी अबूरैहान ख्वारजमी ने लिखाहै कि कई बाद शाहोंने मन्सूरके पुत्र नूको एक घोड़ा सौगातकी तरहपर भेजा था जिसके शिर पर एक सींग था और यह उस रीतिके विपरीत है जैसा बुद्धि मानों ने लिखा है कि सींग और सुम दोनो सिवाय

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
राग	मसनवीमीरहसन	गोपीचन्दभरथरी
	मनोहरकहानी	भरथरीचरित्र
रागप्रकाश	दास्तानअमीरहमज़ा	भरथरीगीत
रागसंग्रह	क़िस्सा औरत और मर्द	गुरुसुमिरण
मनमोहन	मोतीबिनौलेकाझगडा	काशीभजनावली
युगलविलास	सोनेलोहेका झगडा	दानलीला व ना॰
लावनी बनारसी	सोनेरूपेकाझगडा	दोहावली, रत्नावली
शृंगारबत्तीसी	मनमौजचरित्र	ह ... कुण्डलु
भजनमाला	**वैद्यक**	अयोध्याविंशतिका
श्रीकृष्णगीतावली	निघण्टभाषा	जनक ...
नवरत्नभाष्य	अमरविनोद	क सहित
वीणाप्रकाश	वैद्यजीवन	वनयात्रा
वंशीलीला	औषधसंग्रहकल्पवल्ली	कल्पभाष्य व कल्पसू:
प्रेमाऽमृतसार	अमृतसागर बडा	विनयप्रकाश
सांगीतप्रहलाद	तथा छोटा	हरिहरसगुणनिर्गुण प
बारहमासा बलदेवप्रसाद	वैद्यमनोत्सव	हरिनामरत्नावली
बारहमासा अलावख्श	इलाजुलगुरबा	शिवसहस्रनामउर्दूटी
बारहमासी कृष्णचन्द्र	वैद्यप्रिया	महारामायण
सूरसागर	कवितरंग	प्रश्नोत्तरी
क़िस्से	दिललगनवैद्यक	जलझूलन
	रसमंजूषा	होरराशा
वैतालपच्चीसी	**ज्योतिषभाषा**	लोकेश्वरमाहात्म्य उ:
सिंहासनबत्तीसी	जातकचन्द्रिका	नागरी
पद्मावतीखण्ड	जातकालंकार	रसायनप्रकाश
शुकबहत्तरी	दैवज्ञाभरण	व्याजकीपुस्तक
सौदागरलीला	रमलसार	विश्वविनय
बकावलीगुलमन	रमलनवरत्न	विसातिनलीला
क़िस्साचहारदरवेश	इन्द्रजाल	शिक्षापत्र
क़िस्साहातमताई	ज्ञानस्वरोदय	वचनाऽमृत
रूपवंदकथा	पत्रा सं० १९२३	गुरुउपकारकथा व
क़िस्सागुलसनोबर	ज्योतिस्सारावली	विनयप्रकाश
सहसूरजनीचरित्र	अन्य उत्तम पुस्तकें	और भी अन्य ८
माधिमनकुमोदाड़तिहास	ज्ञानमाला	उत्तम पुस्तकें हैं॥
पद्मावत भाषा		

नामकिताब

रामायण गीतावली मूल
श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण
कांडकांडभी मिलसक्तेहैं
रामचन्द्रिका सटीक
अद्भुत रामायण
रामायण रामविलास
अध्यात्मरामायण सटीक
रामायण अध्यात्मविचार
विनयपत्रिका मूल
विनयपत्रिका सटीक
विजयदोहावली
ब्रजविलास
ब्रजविलास सारावली
गर्गसंहिता
अवतारकथाऽमृत
सीतावनवास
श्रीरामव्याहोत्सव
कृष्णबाललीला
नाममाहात्म्य
मिथिलामाहात्म्य
गोकुलमाहात्म्य
कालिंजरमाहात्म्य
मिश्रितमाहात्म्य
विजयचन्द्रिका
रामकलेवा
अवतारसिद्धि
कृष्णसागर
विश्रामसागर
प्रेमसागर
भक्तमाल
अनिरुद्धकी कथा
बलिचरित्र
कथा श्रीगणाजी की

नामकिताब

रासलीला
हनूनाटक
चौरासीवार्त्तिक
शिवविवाह व वंशावली
सुदामाचरित्र
दुर्गायन नवकांड
विजयमुक्तावली
शंकरदिग्विजय

भाषापुराण

देवीभागवत भाषा
लिंगपुराण
सुखसागर
गरुडपुराण
ब्रह्मोत्तरखण्ड
विष्णुपुराण
भविष्यपुराण
स्कन्दपुराण
श्रीवाराहपुराण
शिवपुराण भाषा
शंकरचरितसुधा

वेदान्त

योगवाशिष्ठ भाषा
सांख्यतत्त्वकौमुदी
श्रीभगवद्गीतापचरन
श्रीमद्भगवद्गीता भाषा टीका सहित
तथा मूलउर्दूटीकासहित
रामगीता
कैवल्यकल्पद्रुम
बीजककबीरदास
पारसभाग
ब्रह्मप्रकाश
ज्ञानतरंग

नामकिताब

आनन्दाऽमृतवर्षिणी
अद्वैतप्रकाश
युगलसम्वाद
सुन्दरविलास
सत्यनामनिरूपणवृन्दावन
समनिरूपणवृन्दावन

काव्य

नानार्थनवसंग्रहावली
कृष्णप्रिया
छन्दोर्णवपिंगल
रसराज
कविकुलकल्पतरु
सतसई बिहारीलाल
सभाविलास
तुलसीशब्दार्थप्रकाश
प्रेमरत्न
चित्रचन्द्रिका
पीयूषलहरी
गंगालहरी
यमुनालहरी
जगद्विनोद
भारतीभूषण
रसचन्द्रोदय व रसदृष्टि
घनरागरागिनी
नवीनसंग्रह
मनमोहनी
सुन्दरीतिलक
कुण्डलियागिरिधरदास
भुवनेशभूषण
श्रृंगारलतिका
भुवनेशविलास
शिवसिंहसरोज